حصّہ اوّل

साम वेद

آشو رام آریہ

مترجم :- پنڈت آشو رام آریہ چنڈی گڑھ

بار اوّل :- سنہ ۱۹۸۸ء   تعداد دو ہزار (۲۰۰۰)

طباعت :- آریہ آفسیٹ پریس دہلی

کتابت :- رام نارائن گروور، 31/5 گورونانک پورہ، پانی پت ضلع کرنال (ہریانہ)

ناشر - وید پرکاشن - 1594 سیکٹر 7 سی چنڈی گڑھ (بھارت)
فون نمبر 29462

वेदव्याख्याकार

जन्म सन् 1913 खानगढ़ (मुजफरगढ़ मुलतान) 1932 में आर्यसमाज के मन्त्री बने। 1946 में नगर पालिका सदस्य निर्वाचित। नगर पंचायत तथा सनातन धर्म गोशाला के मन्त्री, बज़मे मुशायरा के 15 वर्ष तक सदर रहे।

1947 बटवारे के पश्चात् काठगढ़ (होश्यारपुर) आर्यसमाज की स्थापना की और मन्त्री रहे। 1949 से 73 तक आर्यसमाज अम्बाला, और चण्डीगढ़ के पौरोहित्य तथा डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं में अध्यापन सेवा। माडल टाउन अम्बाला मुहाली आदि अनेक आर्यसमाजों की स्थापना, प्रधान तथा सरक्षक रहा। पंजाब हिन्दी सत्याग्रह में 4 मास का कारावास। विश्व वेद परिषद चण्डीगढ़ का 12 वर्ष तक मन्त्री, मातृ मन्दिर कन्या-गुरुकुल वाराणसी के संयुक्त मन्त्री, कई दैनिक तथा साप्ताहिक पत्रों की पत्रकारिता। 1975 आर्यसमाज स्थापना शताब्दी देहली में वेदों के उर्दू भाष्य की घोषणा कर 1984-85 में यजुर्वेद, ऋग्वेद का उर्दू प्रकाशन, अब सामवेद का संस्कृत, उर्दू, हिन्दी भाषाओं में प्रकाशन प्रस्तुत है।

आशुराम आर्य

हरियाणा राज भवन
चण्डीगढ़

HARYANA RAJ BHAVAN
CHANDIGARH

No. 1-H.R.B.-Psq-84/682

آنریبل گورنر ہریانہ سیّد مظفر حسین برنی کا پیغامِ مسرّت

ویدوں کے وِدوان پنڈت آشو رام آریہ نے یجُروید (حصّہ اوّل) کا اُردو ترجمہ کرکے بلاشبہ ایک عظیم کام سرانجام دیا ہے، اِس سے پنڈت جی کی بے پناہ قابلیت اور علمیت کا اندازہ ہوتا ہے، اِس گرنتھ کے پڑھنے سے جہاں ایک طرف قدیم بھارت ورش میں طرزِ زندگی کی تصوّیر ذہن میں آتی ہے، وہیں پرانے وقتوں میں رائج دھارمک ہَونوں، یگیوں اور اُن سے متعلق تہذیب و تمدّن کے بارے میں بھی بیش قیمت معلومات حاصل ہوتی ہیں ۔

جناب آشو رام آریہ، وِشو وید پریشد کی چنڈی گڑھ شاخ کے سیکرٹری ہیں اور ویدوں کے اُردو مترجم کے طور پر اُنہوں نے علمی حلقوں میں ایک خاص مقام حاصل کر لیا ہے، میری دُعا ہے کہ وہ یہ کارِ عظیم تکمیل تک پہنچائیں تاکہ اُردو داں اور اُردو خواں طبقہ اِس الہامی صحیفہ سے واقف ہو سکے ۔

(سیّد مظفر حسین برنی)
گورنر ہریانہ

★ आशीर्वाद ★

स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज

चंडीगढ़ के मेरे आदरणीय मित्र भाई आशूराम जी इधर कई वर्षों से वेद संहिताओं के उर्दू अनुवादों को जनता को भेंट करने का प्रयास कर रहे हैं। ऋग्वेद और यजुर्वेद के बाद अब आपने सामवेद का भाष्य हाथ में लिया है। आर्य जगत् पं० आशूराम जी के पाण्डित्य से परिचित है। इतने विशाल कार्य को इतनी अच्छाई से सम्पादित करना कोई सरल बात नहीं। मूलमंत्र देवनागरी अक्षरों में, और उर्दू में मंत्र का सरलार्थ, और हिन्दी में भी अनुवाद हम सबके काम की वस्तु है।

मुझे पूरा भरोसा है, कि आशूराम जी के परिश्रम से वेदों के प्रचार और उनकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी। इस सेवा के लिए पंडित जी को बहुत-बहुत बधाई।

—**स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती**

4.4.88

देश देशान्तर में वेद प्रचार करने वाले आचार्य

विश्वश्रवा व्यास महा महोपाध्याय

महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती जी हर भाषा में वेदादि सब शास्त्रों का अनुवाद कराकर प्रचार कराना चाहते थे। और सब भाषाओं के बोलने वालों की मण्डली बनाना चाहते थे, ऐसा उन्होंने अपने वसीयत नामे में लिखा है। पं. आशु राम जी उर्दू भाषा में वेदों का भाष्य छाप रहे हैं, यह एक प्रशस्त कार्य है। केवल हिन्दी से सब जातियों और देशों में प्रचार नहीं हो सकता। आर्य जगत का कर्तव्य है कि वे इन उर्दू अनुवादों को ले कर उर्दू जानने वालों को पहुचावें। यह वेद प्रचार में आपका सहयोग होगा। उर्दू जानने वाले परिवारों में आज कल की नई पीढ़ी हिन्दी भी जानते है। तो वे भी लाभान्वित हो सकते हैं।

विश्व श्रवा व्यास

5-11-86

— सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली —

। ओ३म् ।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। आर्य समाज के इस नियम को क्रियात्मक रूप देने के लिए अत्यन्त आवश्यक है कि जन जन तक ईश्वरीय ज्ञान को पहुंचाने के लिए संसार की सभी भाषाओं में वैदिक मंत्रों का अनुवाद करके प्रचार और प्रसार किया जाये। इस समय तक वेदों का भाष्य संस्कृत, अंग्रेजी तथा हिन्दी में किया जा चुका है किन्तु उर्दू भाषा में वेदार्थ नहीं हुआ था।

पं. आशु राम जी ने इस कमी को अनुभव किया और अपने जीवन के अमूल्य समय को इस कार्य में लगाकर सर्व प्रथम यजुर्वेद भाष्य उर्दू में प्रकाशित करने का संकल्प किया था। इस कार्य में माननीय पंडित जी को जिन कठिनायों का सामना करना पड़ता है, उसे हम सब लोग भली प्रकार जानते हैं।

देश बटवारा होने के पश्चात् उर्दू पत्रकारिता एवं इसका पठन-पाठन भी कम होता गया। उर्दू के अच्छे सुलेख में लिखने वाले कातिबों का भी अभाव होता जा रहा है। उर्दू भाषा अब भारत के मुसलमान भाई अवश्य पढ़ते और जानते हैं। हिन्दुओं में पुरानी पीढ़ी समाप्त प्राय: होती जा रही है। आज के युवक स्कूल और कालिजों में हिन्दी-अंग्रेज़ी तो पढ़ते हैं किन्तु उर्दू केवल मुस्लिम विद्यार्थियों तक ही सीमित होकर रह गई है।

ऐसी अवस्था में उर्दू भाष्य मुस्लिम जनता तक वैदिक ज्ञान की अमूल्य धारा को प्रवाहित करने के लिए कितनी कठिनाईयां आ सकती हैं, इसका अनुमान सहज में ही किया जाना चाहिए।

हमने उर्दू यजुर्वेद भाष्य देखकर पंडित जी को कहा कि यदि आपके सामर्थ्य से चारों वेदों का उर्दू भाष्य प्रकाशित करा दिया जाये तो वैदिक धर्म की यह बहुत बड़ी सेवा होगी।

हज़ारों लाखों उर्दू भाषी जनता जिनमें हमारे मुसलमान भाई अधिक हैं, जब वे इस भाष्य को सरल उर्दू में पढ़ेंगे तो निश्चत ही वैदिक धर्म के तत्वज्ञान को समझने में उन्हें सुविधा मिलेगी। किसी भी ग्रन्थ को पढ़ने से पूर्व पाठक उसके बाहरी रूप-रंग, सौन्दर्य और साफ़ शब्दावली को देखता है। पं. आशु राम जी ने बड़ी मेहनत करके अच्छे कातिब और बढ़िया कागज़ पर सुन्दर छपाई एवं उर्दू में वेदार्थ को जो सरलीकरण किया है, उससे पाठकों को परम पुनीत वेद ज्ञान को समझने में सरलता होगी।

यह एक सर्वोतम कार्य है जो आज तक नहीं हुआ था। इस की विशेषता यह है कि सामवेद के इस भाष्य में उर्दू के साथ नई पीढ़ी के लिए हिन्दी में भी मंत्रों का अभिप्राय पंडित जी ने स्पष्ट कर दिया है। दूसरी विशेषता यह है कि प्रत्येक मंत्र के भाव को कविता के एक बन्द में प्रकट कर दिया है, जिससे सहृदय पाठकों को अत्यन्त रुचिकर होगा।

कतिपय समाचार पत्रों में भी पं. जी द्वारा प्रकाशित उर्दू वेदार्थ को छापा जा रहा है इससे भी जन सामान्य का बड़ा लाभ हो रहा है।

पं. आशु राम जी के सामने जो कठिनाइयां हैं, मैं उन्हें भली प्रकार जानता हू। धनाभाव में भी वे अपने मार्ग पर अविचल रूप से चल रहे हैं। इस कठिनाई को धनिक आर्य परिवार एवं दानी महानुभाव पूरा कर सकते है।

प्रस्तुत सामवेद भाष्य को पाण्डुलिपि मैंने देखी है, मुझे प्रसन्नता है कि इसे पूर्ण रूप में सुन्दर एवं सरल उर्दू में प्रकाशित करके एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है।

सामवेद में अनेक प्रश्नों को हल किया गया है जिनका ज्ञान अभी तक संस्कृत अंग्रेजी और हिन्दी भाष्य तक सीमित था। उर्दू वेद भाष्य के प्रकाशन से लाखों उर्दू भाषी बन्धुओं तक वैदिक रहस्यों को पहुंचाने के लिए मैं पं. आशु राम जी के सद्‌प्रयासों की सराहना करते हुए उन्हें बधाई देता हूं और परमपिता परमेश्वर से उनके संकल्पों को पूरा करने की अन्तरात्मा से प्रार्थना करता हूं।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली
17-3-88

सामवेद का उर्दू भाष्य एक श्लाघनीय प्रयास

वेदत्रयी में सामवेद का महत्व निर्विवाद है। मीमांसा के अनुसार सामवेद में गीतिप्रधान मंत्रों का संकलन है। गीता में भगवान् कृष्ण ने "वेदानां सामवेदो ऽस्मि" कह कर सामवेद के महत्व का निरूपणा किया है। आकार में लघु होने पर भी उपासना की दृष्टि से सामवेद को गौरवास्पद स्थान प्राप्त है। इस वेद

के यद्यपि अनेक भाष्य उपलब्ध होते हैं किन्तु आर्य समाज के प्रकांड विद्वान् और कर्मकाण्डी आचार्य पं. आशु राम आर्य ने उर्दू आर्य भाषा में जन समुदाय के लिए सामवेद उर्दू भावानुवाद प्रस्तुत कर परमात्मा की इस दिव्य वाणी के प्रसार में अपूर्व योगदान दिया है। साथ ही हिन्दी भाषी पाठक वर्ग को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक मंत्र का हिन्दी अभिप्राय तथा उसका पद्यात्मक अर्थ भी दे दिया गया है। इस प्रकार सभी प्रकार के पाठकों के लिए साम वेद का यह संस्करण अत्यन्त उपयोगी तथा लाभप्रद बन गया है आशा है कि उर्दू और हिन्दी के वेदाभ्यासी पाठक इस भाष्य का स्वागत करेंगे और अपने दैनिक स्वाध्याय में सामवेद की पावमानी ऋचाओं तथा उनके अर्थों का चिन्तन और मनन कर अपने जीवन को सार्थक करेंगे। इससे पूर्व भी पं. आशु राम जी ने ऋग्वेद और यजुर्वेद के कुछ अंशों का उर्दू भाष्य प्रस्तुत किया है। यदि पाठक वर्ग ने उनका उत्साह वर्धन किया तो वह दिन दूर नहीं जब सम्पूर्ण वैदिक संहितायें उर्दू भाषा में अनुदित हो कर पाकिस्तान सहित भारतीय महाद्वीप के लाखों उर्दू जानने वालों द्वारा अपनाई जायेंगी।

(डा०) भवानी लाल भारतीय
प्रोफ़ैसर एवं अध्यक्ष दयानन्द शोध पीठ
पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़। दिनांक 7-3-88

सामवेद भाष्य-उर्दू हिन्दी अनुवाद

आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द ने वेद का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म बताया है। वर्तमान में आर्य समाज इसी परम धर्म को प्राय: त्याग चुका है। इसी कारण उस में शिथिलता आ रही है। इस निराशामय समय में भी कतिपय आर्यमनीषी वेद की व्याख्या रूप परम दुरूह एवं लोक प्रवाह विपरीत दिशा में लगे हुए हैं। यही एक आशा की क्षीण सी रशमी मन को कुछ सान्त्वना दे रही है।

जो वेद मनीषी वेद व्याख्या में लगे हुए हैं उन में पं. आशु राम जी का नाम अग्रिम पंक्ति में रखने योग्य है। आप ने ऋग्वेद और यजुर्वेद के उर्दू व्याख्या का एक एक भाग छापा है। अब सामवेद का प्रथम भाग प्रकाशित कर रहे हैं। इस में लगभग 700 मन्त्रों की उर्दू के साथ हिन्दी में भी सरल व्याख्या दी है।

वेद प्रेमी आर्य महानुभावों का कर्तव्य है कि वे माननीय पण्डित जी के इस महत्वपूर्ण कार्य में खुले दिल से सहयोग प्रदान करें। जो आर्थिक मदद नहीं दे सकता वह एक एक प्रति खरीद कर उर्दू भाषी व्यक्ति को भेंट में दे कर वेद प्रचार में सहायक बनें

युधिष्ठिर मीमांसक (महाविद्वान)

प्रस्तावना–धन्यवाद

उर्दू वेद व्याख्या के संकल्प अनुसार ईश्वर की कृपा से ऋग् और यजुर्वेद के प्रथम भागों के पश्चात अब यह तीसरा ग्रन्थ सामवेद का प्रथम भाग संस्कृत उर्दू, हिन्दी तीनों भाषाओं में पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। उर्दू ग्रन्थों की मांग और खपत उत्तरोत्तर कम होने के कारण हिन्दी की व्याख्या भी साथ देने का निश्चय कुछ देर बाद ही हुआ इस लिए 50 मन्त्रों के पश्चात हिन्दी की व्याख्या आरम्भ करके पिछले सभी पचास मन्त्रों की व्याख्या भी साथ ही जोड़ दी गई। पाठक ध्यान रखेंगे।

2. फिर यह विचार हुआ कि क्या ही अच्छा हो कि प्रत्येक मंत्र व्याख्या के नीचे काव्य का एक बंद जोड़ दिया जाये जिस से सहृदय पाठकों की रुची वेदाध्ययन की बढ़ती जाय। क्यों कि काव्य (शायरी) की दीवानगी बचपन से थी अतः इस कला को चिरकाल के पश्चात भी फिर से जागृत करने में विशेष कठनाई नहीं हुई।

3. संस्कृत को उर्दू में लिखना और पढ़ना कठिन और अशुद्ध तो रहा ही है सदा, फिर भी उर्दू की मांग विगत एक हज़ार वर्ष से अधिक होने से संस्कृत के ग्रन्थ उर्दू में छपते रहे। परन्तु अब उस की आवश्यकता का अनुभव न होने के कारण बहुत सोच विचार कर संस्कृत शब्दों का अर्थ 370 मन्त्रों के पश्चात उर्दू में लिखना छोड़ कर सीधी सरल व्याख्या ही कर दी गई।

वेद परिचय

सामवेद में केवल 1875 मन्त्र होने से आकार में सब से छोटा यह वेद है। परन्तु महिमा और विषय की दृष्टि से सर्व उत्कृष्ट भी है। क्योंकि यह उपसना और अध्यात्म विद्या का स्रोत

है जिस से आत्मा परमात्मा के ज्ञान का आरम्भ संसार में हुआ और फिर भगवत प्राप्ति का सीधा सम्बन्ध सामवेद की संगीत कला से ही जुड़ा हुआ सृष्टि पर परमेश्वर से सर्वप्रथम ही अवतरित हुआ, जिस के सम्बन्ध में महाराज कृष्ण जी ने गीता में जहां यह कहा कि वेदानां सामवेदो ऽस्मि'। अर्थात वेदों में मैं साम वेद हूं वहां छांदोय उपनिषद् के ऋषि ने कहा कि सामवेद एव पुष्पम्। मानो सामवेद एक ऐसा पुष्प है जिस से आत्म, तथा ब्रह्म ज्ञान की सुगंधी सम्पूर्ण जगत में अनादि काल से फैलती हुई आ रही है। यही नहीं अपितु बेद ज्ञान की व्याख्या करने वाले ऋषियों का कथन है कि ऋग् से सत्य विद्या ज्ञान की प्राप्ति और यजुर्वेद से कर्म, जिस को यज्ञ अर्थात श्रेष्ठतम् कर्म बतलाया है फिर सामवेद से पूर्ण फल अर्थात ईश्वर की प्राप्ति। अथर्व से प्रत्येक पदार्थ के तत्व ज्ञान वा विज्ञान की प्राप्ति से धर्म अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि हो कर मानव जन्म की सफलता हो जाती है।

2. सामवेद में तीन आर्चिक हैं पूर्व आर्चिक महानाम्नी और उत्तर आर्चिक, पूर्व में 640 मन्त्र है महानाम्नी आर्चिक में 10 और उत्तर में 1225, जिनका योग 1875 होता है आर्चिकों के अतिरिक्त यह वेद प्रपाठकों अर्ध प्रपाठकों, अध्यायों, खंडों तथा दशतियों में भी बटा हुआ है। फिर भी भाष्यकारों ने बड़ी कृपा करके इसको सामान्य रूप में सीधी संख्या अर्थात संख्या 1 से 1875 तक में छाप कर आम लोगों के लिए सरल मार्ग बना दिया है जिस से प्रमाण ढूंढने के लिए भी केवल संख्या का ही संकेत कर दिया जाता है। प्रस्तुत सामवेद पूर्व आर्चिक तथा महानाम्नी आर्चिक तक है। पाठक ध्यान कर लेवें।

3, मेरी विदेश यात्रा (इंगलैण्ड, अमेरिका और कैनेडा) में भी जब मैं ने बी. बी. सी. लंदन और वाईस आफ़ अमेरिका से उर्दू वेद का प्रसारण और परिचय आकाश वाणी से कराया आर्य समाज तथा सभी लोगों के मध्य व्याख्यान हुए तो वेद के इंगलिश अनुवाद की ज़ोर दार मांग भी सामने आई। और यहां स्वदेश भारत में भी बढ़ रही है अत: यदि भगवद् कृपा हुई विज्ञ विद्वानो की आशीर्वाद भी रही, विशषकर इस वेद भाष्य को उत्कट इच्छा से पढ़ते हुए पाठकों ने मूल्यांकन किया तो संभवत: वह दिन निकट आ जायगा जब वेदों के अगले भाग संस्कृत उर्दू हिन्दी और इंगलिश चारों भाषाओं में एक ही ग्रन्थ में छपे हुए पायेंग। केवल चाहिये आप की आशीर्वाद और पूरा सहयोग।

धन्यवाद

वेद के इस प्रकाशन में सामवेद के आज तक छपे लगभग सभी भाष्यों को सामने रखा गया है ।विशेष कर श्री पं. विश्व नाथ जो विद्यार्तण्ड के भाष्य को आधार बनाया गया है । इस के दो हेतु हैं एक तो वेद प्रकाशन के उत्साही प्रेरक स्वर्गिय राय साहब चौ. प्रताप सिंह जी की विशेष इच्छा और दूसरे महाविद्वान आचार्य विश्वश्रवा जी की भी सम्मति, अतिरिक्त इनके श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी आचार्य वैद्यनाथ जी पं. जयदेव जी पं. तुलसी राम स्वामी जी आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री जी, स्वामी ब्रह्ममुनी जी पं. हरिशचन्द्र जी, आचार्य विद्यानिधि शास्त्री जी (कविता मय सामवद के निर्माता) इन सभी आदरणीय विद्वानों का अत्यन्त श्रद्धा मय हृदय से आभार प्रगट करता हुआ बारम्बार धन्यवाद दे रहा हूं ।

2. जिन विद्वान महानुभावों ने वेद का अवलोकन कर अपने प्रशस्ति पत्र प्रदान कर मूल्यांकन किया है जो वेद के पृष्ठों में अंकित है उनका मैं कितना आभार प्रगट करूं, मेरे लिए अवरणीय है पुनः पुनः धन्यवाद ।

3. दैनिक प्रताप, मिलाप दिल्ली, मिलाप हिन्द समाचार और पंजाब केसरी जालन्धर तथा साप्ताहिक आर्य गजट जो वर्षों से परमेश्वर की वेद वाणी को प्रकाशित कर जो लाखों लोगों को विद्या के प्रकाश से आनंदित कर रहे हैं, इस परोपकार के लिए इनको हार्दिक धन्यवाद, विशेष कर प्यारे श्री नवीन जी मालिक एवं सम्पादक मिलाप हिन्दी के लिए मेरे हृदय में बड़ा सम्मान है जो प्रत्येक समय मुझे सत्कृत करते हैं ।

ब्राह्मण की गौ को घास कौन डाले ?

वही दानी महानुभाव जिन के हृदय में वेद रूपी इस गौ से प्राप्त अमृत ज्ञान दुग्ध पीने और सब को पिलाने की तीव्र इच्छा है । ब्राह्मण का कर्म तो वेद पढ़ना पढ़ाना, यज्ञ करना करान1 है जो रात दिन इस में रत रहता है, किन्तु बिना लक्ष्मी के ब्राह्मण की गौ को घास कौन डाले । जिस से अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि हो, इस ज्ञान यज्ञ में आहुति प्रदान कर इस का जो संचालन करते जा रहे हैं उन के लिए मेरे हृदय में श्रद्धा की गंगा बह रही है प्रभु कृपा से उन के परिवारों में भी दान शीलता के भाव सदा भरे रहें । जिन से वे सदा फलते फलते रहें । शुभ नाम ग्रन्थ में लिख दिये हैं ।

अन्त में मैं अपने प्यारेकातिब श्री राम नारयण जी ग्रोवर पानीपती का उर्दू की सुन्दर किताबत के लिए और प्यारे संजीव जी मालिक, ग्रेट इण्डिया प्रैस चण्डीगढ़ का हिन्दी की छपाई बड़े प्यार से करने के लिए आभार प्रगट करता हुआ अपनी प्रिय सह धर्मिणी श्रीमती नारायण देवी जी को शतशः धन्यवाद देता हूं जिन की सहायता के बिना वेद प्रकाशन का यह अत्यन्त श्रम साध्यकार्य होना असंभव था। अन्त में परमपिता परमेश्वर का कोटिशः धन्यवाद है जिनकी महती कृपा के साथ ही उन्हीं का ही यह कार्य सम्पन्न कर सका हूं। भगवान की वस्तु भगवान के ही समर्पण।

आशु राम आर्य
वेद धर्म प्रचारक, उर्दू वेद व्याख्याकार
1594, सैक्टर 7-सी चण्डीगढ़160019 दूरभाष 29462
26-3-88 राम नौमी वि.सं 2045

वेद गीतिका

वेद पढ़ो नर नार घर घर वेद पढ़ो
वेद वाणी ईश्वर की प्यारी, शिक्षा जिस की न्यारी
हो जाए उद्धार, घर घर वेद पढ़ो।
वेद का अमृत पान करें जो।
इस के जल से स्नान करे जो।
हो भवसागर पार, घर घर वेद पढ़ो
सब के सुख की बात इसी में।
शान्ति गति प्रगति सब इसमें।
सब धर्मों का सार, घर घर वेद पढ़ो
वेद पाठ में सब का हित है।
परम पिता का इस में चित है।
पढ़ लो बारम्बार, घर घर वेद पढ़ो
सब ज्ञानों का सार यही है, मानव शक्ति महान
है यह मोक्ष का द्वार घर घर पढ़ो,

वेदों का दिव्य प्रकाशन

वेद जीवन के निर्माण और मानुषिक सत्ता के विकास के दर्शन से सम्बन्धित प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। ये मानवता और जीवन दर्शन के प्रत्येक विषय पर पूर्ण प्रकाश डालते हैं और हिन्दु धर्म तथा संस्कृति का संपूर्ण सर्वस्व हैं। अतः यह आवश्यक है कि इन्हें विस्तृत रूप से जाना और समझा जाये। संस्कृत भाषा में होने के कारण वेद प्रत्येक मनुष्य के लिए गम्य नहीं हैं। श्री पं० आशु राम आर्य ने सामान्य रूप से समझी जाने वाली उर्दु भाषा में दो वेदों का अनुवाद कर के एक प्रशंसनीय योगदान किया है। और अब तृतीय साम वेद का अनुवाद भी कर रहे हैं।
मुझे पूर्ण आशा है कि इसके बाद वे चतुर्थ वेद का आनुवाद भी करेंगे। यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है कि श्री आशु राम जी वेदों का अनुवाद देश में विस्तृत रूप से बोली जाने वाली राष्ट्रीय भाषा हिन्दी में भी कर रहे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन के प्रयास अवश्य सफल होंगे। ये उर्दु, हिन्दी के साथ अंग्रेज़ी भाषा में भी वेदों का अनुवाद करना चाहते हैं। इनका वेदों को हिन्दी तथा अंग्रेज़ी भिन्न भिन्न भागों में अनुवाद करने का अन्तिम लक्ष्य बहुत सराहनीय है।
मुझे विश्वास है कि समस्त मानव जाति को इस से लाभ होगा। मैं इनके लिए सफलता की हार्दिक कामना करता हूं।

मोहन लाल पंडित

प्रधान सनातन धर्म प्रतिनिधी सभा पंजाब, हिमाचल, हरियाणा और उत्तर प्रदेश एवं भूतपूर्व गृह तथा वित्त मंत्री - पंजाब

* ओ३म् *

सामवेद-संहिता

पूर्वार्चिकः

अथ प्रथमः प्रपाठकः

سام وید

پُورو آرچِک ۔ آگنئے کانڈ ۔ پہلا ادھیائے ۔ پہلا کھنڈ

کھنڈ پہلا | منتر نمبر ۱

آؤ بھگوان آؤ

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥१॥

لفظی معنی :۔ (اگنے) گیان پرکاش رُوپ پرماتمن! (آیاہی) آئیے، سب اور سے میرے ہردیہ میں پرگٹ ہو جائیے (وی تیئے) گیان کی پراپتی کے لئے (جس سے میرے پاپ تاپ سنتاپ سب دُور ہو جائیں) (گِرنانہ) ہم آپ کی سُتتی کرتے ہوئے پکار رہے ہیں۔ حمد و ثنا کر رہے ہیں۔ (ہوتا) آپ داتا ہیں (ہویہ دلتیئے) اُتم بھوگ پدارتھوں کی پراپتی کے لئے (برہشی نی ست سی) ہمارے ہردیہ آسن پر سدا براجمان رہیں۔ ہمارے دِلوں میں آپ کا نُور ہر سُو چمکتا رہے۔

تشریح :۔ پرم آتما پیارے سکھا بھگوان! مَیں تیرے ہمیشہ گیت گاتا رہوں اور تجھے رِجھاتا رہوں۔ تُو میرے اندر گیان کی روشنی بھر دے۔ میرا تیرا تو ایک ازلی

ناطہ ہے۔ میں آتما ہوں اور تو ہے پرم آتما۔ ہاں یہی فرق بے شک ہے کہ میں چھوٹا ہوں اور تو بڑا ہے۔ میں کم علم ہوں اور تو عالم کل ہے۔ لیکن ہم جنس تو ضرور ہیں ہم دونوں۔ اِس لئے ہم دونوں سدا سے چلے آرہے سچے اور پیارے دوست ہیں۔ اور ایک دوسرے کے ساتھ جڑے ہوئے۔ پھر بھی نہ جانے میں تجھے دیکھ نہیں پاتا۔ کیوں؟ میرا خیال ہے کہ تم مجھے اپنا نہیں بناتے۔ بس یہ احساس اور یہ درد مجھے تڑپاتا رہتا ہے۔ اس لئے چاہتا ہوں پیارے سکھا کہ ؎

مجھ میں سما جا اِس طرح تن پران کا جو طور ہے
جس سے نہ کوئی کہہ سکے میں اور ہوں تو اور ہے

منتر نمبر ۲ | کھنڈ پہلا

گیان داتا

१२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
देवेभिर्मानुषे जने ॥२॥

لفظی معنی:۔ ہے (اگنے) پرمیشور! (توم) آپ (یگیانام ہوتا) یگیوں، شریشٹھ کرموں، اُتم ویوہاروں کے گیان داتا اور گرہن سویکار کرنے والے ہو (وشویشام ہتہ) سب کا سب کال میں ہت کرنے والے ہو۔ تتھا (دیوے بھی مانشے جنے) پیدا ہونے والے ہر ایک آدمی میں اپنے دویہ گنوں کے ساتھ براجمان ہوتے ہو۔ ودوان اُپاسکوں سے منش سماج میں دھارن کئے جاتے ہو۔

پرماتما:۔ سب گیان یگیوں کا سوامی ہے اور ادھشٹاتا۔ اِس لئے سبھی منش اُسی کا ہی دھیان ہمیشہ کرتے ہیں، کرنا ہی چاہیئے۔ منش جنم کی

سپھلتا اور سکھ، شانتی کا مارگ یہی ہے

منتر نمبر ۳ — کھنڈ پہلا

پاپیوں کا دَنڈ داتا

अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥३॥

لفظی معنی :- (اگنیم) جگت کے سوامی پرم آتما کو (ورنی مہے) ہم ورن کرتے ہیں، سویکار کرتے ہیں۔ جو (دُوتم) سب جگہ موجود ہونے۔ اپنے کرم پھل ودھان اور وِشو پر کنٹرول کرنے کی شکتی کا سندیش پل پل میں دے رہا ہے۔ تتھا پاپیوں کا دَنڈ داتا ہونے سے ہماری بُرائیوں کا ناش کرتا ہے۔ (وِشو ویدسم) سب کچھ جاننے ہارا، ویدوں کے دوارہ گیان دے کر (اسیہ یگیہ) اس سنسار کا یگیہ (سُوکرتم) اُتم پرکار سے سنچالن کر رہا ہے۔

تشریح :- جگدیشور ہی وید گیان سے سب کا گیان گورو ہے۔ سب کے کرموں کا پھل دینے والا۔ سب جگہ حاضر ناظر۔ سب کو اپنی پکڑ میں رکھنے والا اور دھارن کرتا ہے۔ اور ہمارے دوارہ کی ہوئی اُپاسنا کے سُندر پھل کا سمپادک بھی، وہی ہے۔ اُسی کی ہی ہم بھگتی کریں۔ یہ ہے منتر کی شکھشا۔

کب ہوتے ہیں اُس کے درشن

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया ।
१ २ ३ १र २र
समिद्धः शुक्र आहुतः ॥४॥

لفظی معنی :- (اگنی) جگت کا نیتا پرمیشور (وِرتزانی) اُپاسک (عابد) کی آتما پر غلبہ کیئے ہوئے کام آدی بُرائیوں، اَوِدیا جہالت کے اندھکاروں، اگیانوں اور دُکھوں کا ناش کر دیتا ہے۔ (دروِنسیئو) سمپورن دھنوں کا وہ سوامی بھگتوں کے آتم بل اور گیان الیشوریہ بل کو چاہنے والا (وِپنیہ یا) وِشیش (خصوصی) اُپاسنا (عبادت) ارتھات بھگتی پورن حمد و ثنا، یوگ سمادھی اور آتم ویوہاروں دوارہ (سمِدّھا) اُپاسک کی آتما میں منوّر ہوتا ہے۔ وہ (شکر) اننت ویروان، بلوان اور طاقت بخش شدھ سورُوپ (آہُوتا) اُپاسک کے آتم سمرپن (خدا کے حضور میں اپنی سپردگی کر دینی) کو سویکار (منظور) کر لیتا ہے۔

تشریح :- دنیاوی انسان جب بھگوان کی عبادت حقیقی یعنی اننیہ بھگتی، پریم اور محبت میں سرشار ہو جاتا ہے، تو وہ خداوند کریم اُس کی آتما میں ظاہر ظہور ہو کر اُس کی تمام جہالت، بطالت، گناہوں یا پاپوں کا قلع قمع کر کے اُسے سب سُکھوں اور خوشحالیوں سے بھرپور کر دیتے ہیں۔

زندگی کی منزل کا رتھ

१२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम् ।
२ ३ २ ३ १र २र
अग्ने रथं न वेद्यम् ॥५॥

لفظی معنی (اگنے) ہے گیان سوروپ پرماتن! (وہ) تجھ (مترم ادپریم) مترکے سمان پیارے (ودیم رتھم نہ) بھومی پر چلنے والے سندر رتھ کی طرح سب کے سہارے۔ آتما کے اندر رمن کرنے والے (پریشٹھم اتھیم) اتی پریہ آدرنیہ اتھی دیو کی میں (ستیش ستتی (حمد وثنا) کرتا ہوں۔

تشریح :۔ پرمیشور دیو ہماری جیون یاترا کا رتھ ہے۔ ہماری زندگی کی منزلیں کبھی سکھ پوروک طے نہیں ہو سکتیں بنا پربھو کو اپنی سواری یا سہارا اپنانے کے۔ مایا کی سواری کرتے کرتے خوش قسمتی سے ملا انسانی جامہ گناہوں نے داغ داغ کر دیا۔ کس طرح ہوگا یہ ہمارا مانوی جیون سپھل؟ جب تک ہم "سپردم بتو مایۂ خویش را۔ تو دانی حساب کم و بیش را۔" کے مطابق اپنے آپ کو بھگوان کی جھولی میں ڈال نہیں دیتے یعنی الیشور پرندھان۔ دوسرا یہ کہ بھگوان سرو ویاپک ہر جگہ حاضر و ناظر ہیں تو لیکن زہے قسمت اُس کے درشن کبھی کبھی آتما میں ہو جاتے ہیں مانندِ خواب۔ پھر ہم مایا (پرکرتی) کے چکر میں پھنس جاتے ہیں اور خدا پھر غائب۔ آؤ! اس صدہا قابلِ عزت اتھی (مہمان) کو زندگی کا رتھ مان کر ہر وقت حاضر حضور رہنے کے لئے کوشاں ہوں۔

منتر نمبر ۶ | پہلا کھنڈ

رکھشا کرو

त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः ।
उत द्विषो मर्त्यस्य ॥६॥

لفظی معنی :۔ (اگنے) بھگتی مارگ پر لے جانے والے الیشور! (توّم) آپ (مہوبھی) اپنے مہان گنوں اور شکتیوں دوارہ (نہ) ہماری (پاہی) رکھشا کیجئے۔ (وشوسیا ارانے) سبھی سوارتھ (کنجوسی) کی بھاوناؤں سے بچائیں (اُت) اور (دوشو مرتسیہ) دولیشی (دشمنی رکھنے والے) منش سے رکھشا کیجئے۔

تشریح:۔ منتر میں انسانی زندگی کے دو دوشوں (نقائص) سے بچنے کی پرارتھنا کی گئی ہے پہلا ہے ادان یعنی نہ دینے کے سوبھاؤ یا عادت۔ پراپکار یا دان کے بنا کوئی سامایک اُنتی نہیں ہو سکتی اور نہ ہی خدمتِ خلق۔ دانی جہاں اپنے دان یا خیرات بانٹنے سے اپنی کمائی کو پوتر کرتا اور سَوَرگ (جنّت) کے ماحول کو نیار کرتا ہے۔ وہاں ضرورت سے زیادہ زر و مال رکھنے والا کنجوس اپنے ہاتھ سے نرک یعنی دوزخ کے واتاورن کو بناتا رہتا ہے اور دو دیشی دوسرے سے اندر ہی اندر جلنے والا منش اپنی طاقت کو اپنی ہی ترقی پر خرچ نہ کرکے دوسرے کو گرانے پر لگا رہتا ہے جس سے معمولی سے لے کر بڑی بڑی جنگ و جدل کی آگ بھڑک اُٹھتی ہے۔ جس میں سبھی بھسم ہو جاتے ہیں۔ اِن دونوں سے محفوظ رہنے کی پرارتھنا منتر میں کی ہے۔ ویسے ہی ہمارا عمل بھی ہونا چاہیئے۔

منتر نمبر ۷ | کھنڈ پہلا

ستیہ بانی سے ہی بھگوان پرسّن

एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः ।
एभिर्वर्धास इन्दुभिः ॥७॥

لفظی معنی:۔ (اگنے) گیان داتا ایشور! (ایہی) ہمیں پراپت ہو و۔ آکے ہمارے ہردیہ میں بس جاؤ اور تمہارے ذریعے سے ہی ہیں (اِتھّا) ستیہ۔ ویدک بانی اور (اِترا گرا) لوک بانی (لوگوں کے ساتھ رہ بار کی بات چیت) کو (سُو بروانی) بھلے پرکار بول سکتا ہوں۔ آپ (ایے بھی) اِن سُتتی بانیوں برہم گیہ دوارہ (وردھاس) بڑھتے ہو۔ پرسن ہوتے پرپھلت ہوتے ہو۔ جیسے (اِندوبھی) چندر کرنوں دوارہ سمندر اُچھلتا ہے، بڑھتا ہے۔ ایسے اُپاسنا گان اور ستیہ بول سے تیری عظمت میں اضافہ ہوتا ہے۔

تشریح:۔ پرمیشور نے سب سے پہلے وید بانی دی۔ جس کے ذریعہ انسانوں کے بولنے کی مشق

شروع ہوئی ۔ تب پھر وہ لوگوں کے ساتھ عام برتاؤ میں بات چیت کرنے میں بھی سمرتھ ہوئے لیکن ہمارا گیان کب بڑھتا ہے، جب ہم ایشور کی بانی وید کو پڑھتے پڑھاتے ۔ اُس کی مہما کا کیرتن کرتے اور ایک دوسرے سے سبھی سچ بولتے ہیں اسنیہ نہیں ۔ تب بھگوان ہم پر پرسن بھی ہوتے ہیں ۔ اور اُن کی مہما بھی پھیلتی ہے ۔

منتر نمبر ۸ — **ایک ہی کامنا** — کھنڈ پہلا

१ २ ३ १र २र ३ १ २ ३ १ २
आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच्चित् सधस्थात् ।
२ ३ १ २ ३ २
अग्ने त्वां कामये गिरा ॥८॥

لفظی معنی :۔ ہے پربھو! (تے وتس) آپ کا پتر یہ اُپاسک (عابد) (پرمات چت) دور دور کے (سدھستھات) دُور دُور سمقانوں میں بھٹکنے والے (من) من کو وہاں سے ہٹا کر (تے) تجھ میں (آ یمت) سمیٹ لیتا ہے رما دیتا ہے ۔ اس لئے کہ میں تیرا پیارا پتر اُپاسک (گرا) ستتی پرارتھنا کی بانی دوارہ (تواُم) آپ کے درشنوں کی (کامئے) کامنا کرتا رہتا ہوں ۔

تشریح :۔ میں اپنے پربھو کا وتس ارتھات پیارا پتر ہی بن کے سدا رہنا چاہتا ہوں مجھے موکھش یا مکتی سے بھی زیادہ اپنے سچے پیارے سدا ساتھ رہنے والے پتا پرمیشور کا ہی پیار چاہیئے یہی کامنا ہے، یہی اچھا ہے اور یہی دیرینہ خواہش اُس کے درشنوں کی اور اُس کے حضور میں سدا رہنے کی

منتر نمبر ۹ — **ہردیہ میں بھگوان کے درشن** — کھنڈ پہلا

१ २ ३ १ २ ३१र २र ३ १ २
त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत ।
३ १र २र ३ १ २
मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः ॥९॥

لفظی معنی :- (اگنے) ہے پرکاش سورُوپ پرمیشور! (اتھروا) سِتھر اور شانت چِت والے آپ کے شردھالو بھگت نے (پُشکرات ادھی) شریر کے زندگی بخش ہردیہ (دل) میں (امنتھت) منتھن کرکے (نِر) آپ کو پرگٹ کیا ہے اور وِشوسیہ (وا گھت) سارے جسمانی وجود کو چلانے والے (مُوردھنا) مستشک (دماغ) سے بھی منتھن (ولوڑ) کر آپ کو پرگٹ کیا ہے۔

تشریح :- پرماتما کا پیارا اُپاسک اُس کو پانے کے لئے شانت چت ہو کر یکسُوئی سے جب دوارنیوں کی طرح (ایک قسم کی لکڑی کے دو ٹکڑے جن کو نیچے اوپر رکھ کر متھنے ارتھات رگڑنے سے آگ پیدا ہو جاتی ہے) اپنے شریر کو نچلی اور پربھو کے پیارے اصلی نام اوم کو اوپر کی ارنی بنا کر دونوں کو لگاتار دھیان اور ابھیاس (مشق) سے بار بار رگڑتا جاتا ہے تو تب اُس پرم اگنی ایشور کا پرکاش (نُورِ تجلّی) کو دل اور دماغ میں پرگٹ کر لیتا ہے۔

منتر نمبر ۱۰ | کھنڈ پہلا

پرکاش کے دیوتا

२३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
अग्ने विवस्वदा भरास्मभ्यमूतये महे ।
३ १र २र ३ २
देवो ह्यसि नो दृशे ॥१०॥

لفظی معنی :- (اگنے) ہے پرکاش مئے پربھو! (وِوسوَت) سُوریہ کے سمان اندھکار کو دُور کرنے والے اپنے جیوتر مئے سورُوپ کو (اسمبھیم) ہمارے لئے (آبھر) پرگٹ (ظاہر ظہور) کیجئے (مہے اُوتیئے) جس سے ہماری مہان رکھشا ہو سکے۔ آپ (نہ) ہمارے (دِرشے) انتہکرن میں پرکاش (اندرونی حقیقی روشنی) عطا کرنے کے لئے (دیو) پرکاش داتا ہو۔

تشریح :- اندھکار دُکھوں کا کارن اور روشنی سُکھوں کا آدھار ہے۔ بھگوان کی اپار کرپا سے ہم کو روشنی کے تین مینار باہر کے ملے ہوئے ہیں۔ دھرتی پر لکڑی سے جلائی ہوئی اگنی۔ آسمان (خلا) میں بجلی رُوپ اور اُوپر دیُو لوک میں سُوریہ کی روشنی (یاد رہے کہ چاند سُوریہ سے ہی

روشنی لینا ہے) اور اندرونی حقیقی روشنی وہ ہے جو آتما کے اندر بھگوان اپنی کرپا سے اپنے پیارے اُپاسک کو بخشش کرتے ہیں۔ جس سے اندھیرا مِٹ جاتا ہے، نصیبہ جاگ جاتا ہے۔

آنند بھیا میری مائے ستگورو مَیں پایا

منتر نمبر ۱۱ — نمسکار ہو — دوسرا کھنڈ

नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः ।
अमैरमित्रमर्दय ॥११॥

لفظی معنی: (اگنے) نورِ مجسّم! (نمہ تے) نمسکار ہو۔ (دیو) داتاؤں کے پرم دانا پرکاش سوروپ (کرِشٹیہ) تمام انسانوں کی زندگیوں میں اوصافِ حمیدہ کے بیج بونے والے (او جسے) گیان شکتی اور بَل کے لئے (گرِننتی) آپ کی سُتتی گاتے ہیں، حمد و ثنا یا بھگتی کے مدھر گیت یا کیرتن (امئی) آپ اپنے قدرتی گیان بَل اور بے پناہ طاقتوں کے ذریعے (امترم) ہمارے ساتھ مترتا اور پیار نہ کرکے خواہ مخواہ کا وَیر ورودھ کرنے والے شرارتی عناصر اور کام کرودھ وغیرہ اندرونی دشمنوں کو نشٹ کر دیجئے۔

دُشٹوں کو ونڈ: — پیارے پرماتمن! مَیں آپ کی اور آنا چاہتا ہوں۔ آپ کو اپنی طرف کھینچنے کے لئے اور اپنا آتم بل بڑھانے کے لئے بارہا آپ کے بھگتی رس گیت گاتا ہوں۔ یکسوئی سے آپ کی عبادت میں بھی بیٹھنے کی کوشش کرتا ہوں۔ لیکن ایک دم اندر کے شترو کام کرودھ اور باہر کے دُشٹ سوبھاؤ منشیوں کا دھیان آپ کی ملن کی راہ میں وِگھن پیدا کر دیتے ہیں۔ جس سے من اشانت ہو کر ہماری ہماری منزل دُور ہو جاتی ہے، لہٰذا اپنی عالمی طاقتوں کے ساتھ دُشٹوں کو ڈنڈ دے کر ان کا سُدھار کیجئے۔ انتظارِ وصل ختم ہو اور پیار کا راستہ صاف ہو۔

منتر نمبر ۱۲ **حمد و ثنا کس کی؟** دوسرا کھنڈ

दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहममर्त्यम् ।
यजिष्ठमृञ्जसे गिरा ॥२॥

جگت کے سوامی پرمیشور! (دُوتم) دُوت کی طرح کاریہ سدّھ کرنے والے۔ دُکھ ناشک (وِشو ویدسم) مالکِ کُل اشیاء۔ سب کچھ جاننے والے (ہویّہ واہم) سب کو دان اور بھوگ کے لئے سب پدارتھوں کے حاصل کرانے والے (امرتیم) انسانی جامے سے رہت امر اوِناشی (یجِشٹھم) یگیہ کرموں میں سپھلتا دینے والے۔ اُپاسنا کے یوگیہ (وہ) آپ کی (رِنجسے گرا) وید بانیوں کے ذریعے سُتتی کرتا ہوا آپ کو پرسن کرتا ہوں۔

منتر نمبر ۱۳ **سبھی دُعائیہ کلمات تیرا اشارہ دے رہے ہیں!** دوسرا کھنڈ

उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः ।
वायोरनीके अस्थिरन् ॥३॥

میرے معبود اگنے پرمیشور! (ہوِش کرتا) عابد، اُپاسک کی دی ہوئی آہوتی، سچے دل سے دیا ہوا ساتوک دان جو آہوتی کی طرح سب کا کلیان کرنے والی ہے اور (گِرہ) سُتتی پرارتھنا کی بانیاں (جامیہ) ایک ساتھ پیدا ہونے والی بہنوں کے سمان پیاری (دِشتی) آپ کے بھکار کھ (ہُوبُو) سورُوپ کو تبلاتی یا اشارہ کرتی ہوئیں (وایو) وایو کی طرح پران پریہ پرمیشور! آپ کے پاس (رِنیکے) اُپسھت (حاضر ہیں) سویکار ہو۔

بھگتی رس میں ڈوبی ہوئی پرارتھنا ئیں، دُعائیں سبھی وایو منڈل کی لہروں کے ساتھ سرو ویاپک مُحیطِ کُل پرمیشور کو پہنچ جاتی ہیں۔

منتر نمبر ۱۴ — ## شرن کی اوٹ گہی — دوسرا کھنڈ

उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम् ।
नमो भरन्त एमसि ॥४॥

ہے اگنے روشن بالذات (دِوے دِوے) روزانہ (دوشاوستہ) صبح وشام (ویمؔ) ہم اُپاسک (دِھیا) دھارنا دھیان بُدھی اور کرم سے (نمہ بھرنت) نمسکار کرتے ہوئے (نوا) آپ کی (اُپ ایمسی) شرن میں آتے ہیں۔

● تیرے وصال کا اور کوئی راستہ ہی نہیں سوائے (۱) من سے ہر وقت دھیان (۲) عقلِ سلیم کو تیری رہبری دینا اور (۳) ہر ایک کام میں تیرے اوصاف اعلےٰ کو دخل دے کر پاک وصاف کرنیکے۔

منتر نمبر ۱۵ — ## تیری رعیّت خُوشحال ہو — دوسرا کھنڈ

जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय ।
स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ॥५॥

(جرابودھ) بڑھاپے میں جا کر جس کا گیان اپنے آپ ہو جاتا ہے، ایسے سُتتی پرارتھناؤں سے جانے یوگیہ پرمیشور! (اگنے شبد سے ایشور کا ارتھ پیچھے سے آ رہا ہے) (تت) اُن ہمارے ہر دلوں میں (وِوِڈّھی) پرویش کیجئے۔ داخل ہو دیں۔ تاکہ آپ کی سبھی پرجا (رعایا) خوش حال ہو۔ (یگیایئے) ہمارے یوگ اُپاسنا یگیہ سپھل ہوں، یکسوئی سے نکلی ہوئی دلی دُعائیں کامیاب ہوں (رُدرائے) دُشٹوں کو رُلانے والے آپ کی ہم اُپاسک (دِرشی کم) منوہر سُتتی کرتے رہیں۔

● گناہوں سے پاک صاف ہو کر ہی ہماری دُعائیں آپ کے ہاں منظور ہوں گی۔ پاپوں میں لت پت ہو کر نہیں۔ لہٰذا آپ نیائے کاری، مُنصفِ اعلےٰ کے حضور میں ہم پوتّر

پرارتھنا میں بھینٹ کرتے ہیں۔

منتر نمبر ۱۶ **یوگا بھیاس اور گیانیوں کے ذریعے پربھو ملن** تیسرا کھنڈ

२ ३ १र २र ३१ २ ३ २ ३ १ २
प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे ।
३ १ २ ३ १ २
मरुद्भिरग्न आ गहि ॥६॥

(اگنے تیم چارم) پرکاش رُوپ پرماتمن! آپ کے رچے ہوئے دِلکش (ادھورم پرتی) خوبصورت ہنسارہت سنسار میں اور آپ کی منوہر بھگتی رس میں بھرے ہوئے (پرہُویسے) شردھا اور پریم سے آپ کو بلاتے ہیں (گوپی تھام) تاکہ ہماری اِندریوں اور اِن کے دیوہار کی رکھشا ہو سکے - ہے پربھو! (مُردبھی) پرانایام یوگا بھیاس کی مشق اور گیانی جیوں کے دوارہ (آگہی) ہمارے ہردلوں میں پرگٹ ہو دیں!

منتر ۱۷ **ہماری کامیابی کا راز** تیسرا کھنڈ

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१र २र
अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः ।
३ १ २ ३ १ २
सम्राजन्तमध्वराणाम् ॥७॥

(وار ونتم اشوم نہ) اُتم نسل اور بالوں والا گھوڑا جیسے اپنے اُوپر حملہ کرنے والے مکھی مچھر وغیرہ دُکھ دینے والے جیوؤں کو گردن اور لُوپنچھ (دُم) کے بالوں سے ہٹا دیتا ہے اور راجہ اپنی پرجا پر پَے در پَے حملہ کرنے یا ستانے والوں کو اپنی شکتی سے نوارن کر سُکھ پہنچاتا ہے یا جیسے سُوریہ اپنے پرکاش سے اندھکار کو مٹا دیتا ہے' ویسے (تُوا اگنم) آپ پرماتما اگنی رُوپ میں ہمارے اندر براجمان ہوتے ہوئے کام کرودھ آدی دوشوں اور اندر کی بُرائیوں کو اپنی پریرنا سے چھڑا دیتے ہیں۔ لہٰذا (دمتم) اُس آپ کی ہم اُپاسک عابد لوگ (نموبھی) نمسکاروں اور اَن وغیرہ اُتم پدارتھوں کی آہوتی دیتے ہوئے آپ کے سہارے پرانیوں کی سیوا کرتے ہوئے (وند دھئے) حمد و ثنا کرتے ہیں۔ کیونکہ (ادھورانام) ہنسا وغیرہ بُرائیوں سے الگ نھلگ جو اُپاسنا سیوا پرا اُپکار وغیرہ کے یگیہ کاریہ ہیں اُن کے آپ (سمراجم) سمراٹ ہیں ـــــ ہماری کامیابی کا راز پرماتما ہے جس کی پریرنا (رغبت) سے ہماری بُرائیاں دُور ہو کر ہمیں سپھلتا یا کامرانی حاصل ہوتی ہے۔ لہٰذا اُس یگیہ سوروپ سب کو بدی سے دُور کرنے اور اچھائیوں کے راستے پر ڈالنے والے ایشور سے ہی ہمیشہ جُڑے رہیں۔

پربھو کا آہ وان

३   १र   २र   ३१र   २र
और्व भृगुवच्छुचिमप्नवानवदा हुवे ।
३ १   २ ३ १ २
अग्निं समुद्रवाससम् ॥८॥

(سُمدرواس سم) زمینی سمندر، آسمانی سمندر (آکاش) اور ہردیہ ساگر میں بسنے والے (شُچِم) شُدھ اور تیجسوی (اگنم) پرکاش روپ جگت پتی رہنمائے دُنیا کا (آہوُے) شردھا بھرے دل میں آہ واہن کرتا ہوں، بُلاتا ہوں جو (اَوُرَو بھرگو وت) زمین کے اندر پدارتھوں کو پکانے والے سُورج تاپ اگنی کی طرح اور (اپن وان وت) اوشدھی رسوں میں موجود اگنی کی طرح موجود ہے۔ اُس کو مَیں کرم یوگیوں کے سمان پکارتا ہوں۔

تشریح:۔ ایک اگنی پرتھوی کے گربھ میں رہ کر تمام اشیاء کو اپنے تاپ سے پکاتی ہے، تو دوسری اگنی پیڑ، پودوں، اوشدھیوں، پھول، پھلوں میں شانت بھاؤ سے رہتی ہوئی اُن کے اندر مٹھاس، کھٹاس، نمکین اور تلخ وغیرہ چھ رسوں کے رُوپ میں ظاہر ہوتی ہے۔ اِسی طرح وہ پرمیشور اگنی سارے برہمانڈ میں رما ہوا ہے، ؎

جیوں تِل ماہیں تیل ہے جیوں چقمق میں آگ
تیرا صاحب تُجھ میں بسے جاگ سکے تو جاگ

اِس لئے کرم یوگی تپ اور ریاضت سے اُسے من میں پکارتے رہتے ہیں ؎

چُپکے چُپکے جو کوئی دِل سے دُعا کرتا ہے
اُس کی منظور یقیناً وہ خدا کرتا ہے

منتر نمبر ۱۹ **بھگوان کا دھیان اُوشا کی چمک میں** دوسرا کھنڈ

अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः ।
अग्निमिन्धे विवस्वभिः ॥९॥

(اگنِم) جیوتی سوروپ پرمیشور کو (اِندھانہ) آتما میں پرکاشت کرتا ہوا (مرتیہ) موت کے بھےّ سے بچنے والا منش (منسا) من کی پوری شردھا یا عقیدت سے (دِکھاوے سے نہیں) (دِھیّم) بُدھی اور کرم کو (سچیت،) ملاکر ایشور کی بندگی کرے (دوِسوبھی) اُوشا کی پہلی کِرن کے ساتھ۔ گیان جیوتیوں یاگیانی مہاتماؤں کی سنگتی سے (اگنِم) اُس دُنیا کے والی خدائی نور کو ہردیہ میں (اِندھے) روشن کرے۔

بھگتی کے مطابق کرم:- منش کا مرتیہ نام اس لئے ہے کہ وہ موت کے سُپرد ہو جائے گا۔ اِس لئے اُس سے مُکتی یا نجات پانے کے لئے اُس رہبرِ اعظم اگنی پرمیشور کا پلّہ پکڑتا ہے۔ منتر کا اُپدیش ہے کہ پَو پھٹنے کے اُوشا کال میں بھگوان کے دھیان میں بیٹھ کر اُس کو دل میں روشن کرے (۲) اور اپنے تمام کام ایشور کے گنُوں کے مطابق کرنے میں کوشاں رہے، جو سچی عبادت ہے۔ پوتّر جیوتی (۳) ایشور کا گیان پراپت کرنے کے لئے گیانی وِدوانوں کا ست سنگ کرتا ہے۔

منتر نمبر ۲۰ **اَزلی اَبدی اَمر جیوتی** دوسرا کھنڈ

आदित् प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति वासरम् ।
परो यदिध्यते दिवि ॥१०॥[१।२]

(آت اِت) ایشور اُپاسنا، ابھیاس (مشق) کے پھل من کی شُدھی اور اُس کے مطابق کرم کرنے کے بعد ہی عابد (پرتنسیہ) سناتن (ہمیشہ سے آرہی) (ریتسیہ) سنسار کی بیج رُوپ (جیوتی) ایشوری روشنی، خدائی نُور کا (پشینتی) درشن کر سکتے ہیں۔ (تت) جو جیوتی کہ (واسرم) دن کی طرح

پھیلی ہوئی (پرا) سب سے اُتم ہے اور (دِوی) دیُولوک یعنی سورج چاند ستاروں وغیرہ میں چمک رہی ہے۔

لیکن اُس کے درشن کا نصیبہ کب جاگتا ہے۔ جب شریمد بھگودگیتا کے مطابق اپنے روزمرّہ کے کام کاج میں اُس کی پوجا کا عمل استعمال ہو۔ جیساکہ خواجہ دِل محمدؐ نے لکھا ہے کہ ؎ وہی ذات جس سے خدُائی ہوئی

جو سارے جہاں پہ ہے چھائی ہوئی

اُسی کی پرستش ہے تعمیلِ فرض ۔ ہے تکمیل انساں کی تکمیلِ فرض

منتر نمبر ۲۱ نیک کاموں کیلئے بھگوان کی طرف چلو تیسرا کھنڈ

अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम् ।
अच्छा नप्त्रे सहस्वते ॥१॥

ہے منشیو! (اَدھوَرانام) تمہارے ہنسارہت یگیوں، ستنیہ برتوں، وید شاستروں کے مطالعے وغیرہ نیک کاموں کو (ورِدھنتم) بڑھانے والے (پُوروتمم) سب سے اونچے، سب کے پالک، سب جگہ سمائے ہوئے (اگنِم) پرکاش رُوپ اگنی پرمیشور کے (اچھا) سامنے نمر ہوا کرو۔ اور (سہسوتے) بل شالی، دھرم ساہسی یعنی دھارمک کاموں میں ہمت اور حوصلہ رکھنے والے پُتروں پوتروں کے لئے پربھو کے گیان کا اُپدیش دیا کرو۔ بھگوان کی شرن لینے سے اچھائی کے راستے فراخ ہوتے ہیں۔ یاد رکھیں ؎

وہ نیکوں کو نیکی کا دیتا ہے پھل

بُروں کو ہے دیتا سزائے عمل

منتر نمبر ٢٢ — **پرچنڈ اگنی ایشور** — تیسرا کھنڈ

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ १ २
अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यंसद् विश्वं न्या३त्रिणम् ।
३ १ २ ३ २
अग्निर्नो वंसते रयिम् ॥२॥

(اگنی) اگرنیہ راجہ کے سمان پرمیشور ! (تگمین شوچشا) اپنی پرچنڈ (آگ کی اُٹھتی ہوئی تیز لپٹوں کی طرح) شکتی سے (اترِنم) پرجا کے دھن اور پرانوں کو کھا جانے والے دُشٹوں کو (نی یںسںت) نیم میں رکھتا ہے۔ اپنے ازلی قانون ودھان کے ذریعے اُن پر حکومت کرتا ہے۔ دوسروں کو پیڑا پہنچانے والوں کو ڈنڈ دیتا ہے۔ اور وہی (اگنی) دھرماتماؤں کا پیارا پربھو (نہ) ہمیں (رئیم) دُنیاوی اور رُوحانی خوشیاں پوتر دھن وغیرہ سمپدائیں (ونستے) بخشش کرتا ہے۔

١- پرماتما نیائے کاری ہے۔ پرانیوں کی ہنسا کرنے والوں کو ڈنڈ دیتا ہے اور دھرمی جنوں کو اُن کے شُبھ کرموں کے مطابق زر و مال وغیرہ دے کر سُکھ دیتا رہتا ہے۔

٢- اندر سے اُٹھنے والے پاپ تاپ سنتاپ کام کرودھ لوبھ وغیرہ اندرونی دشمنوں کو بھی وہ بھگوان اپنے تیج سے نحس نحس کر کے اپنے دھارمک اُپاسکوں نیک آدمیوں کو سُکھ شانتی دیتا ہے۔

منتر نمبر ٢٣ — **دیوگنوں سے ہی پربھو کی پراپتی** — تیسرا کھنڈ

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ २
अग्ने मृड महाँ अस्यय आ देवयुं जनम् ।
३ १ २ ३ २ ३ १ २
इयेथ बर्हिरासदम् ॥३॥

(اگنے) آگے لے جانے والے پربھو (مرڈ) ہمیں سُکھی کرو (مہان اسی) آپ

مہان ہو۔ بڑوں کے بڑے (دیویم جنم) جو آپ دیو داتا پر کاش سوروپ پربھو کی کامنا کرتا ہے۔ اُس بھدر جن بھلے مانس پاک انسان کو ہی پراپت ہوتے ہو (برہی آسدم۔ آ ا میبھۃ) لہٰذا آؤ اور میرے ہردیہ آسن پر آ کر وراجمان ہوؤو۔

بھگوان! مَیں آپ کا پیارا ہوں۔ وہ جس نے اپنے اندر سے بُرائیوں کے کُوڑے کرکٹ کو نکال کر ہردیہ کو شُدھ پوتّر اور پاک وصاف بنالیا ہے۔ اب مَیں آپ سے پیار کرنے کا حوصلہ کر سکتا ہوں اور پھر آپ کے جو امرت گُن اوصاف اعلےٰ ہیں۔ اُن کو بھی اپنے اندر بسانے کا تہیہ کر لیا ہے، یہ سمجھ کر کہ ؎

پربھُو پریم اِک شربتِ دِل کُشا ہے
گناہ کے مریضوں کی لازم دَوا ہے

منتر نمبر ۲۴ **ناش کرنیوالے پاپ سے ہماری رکھشا کرو** تیسرا کھنڈ

अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति स्म देव रीषतः ।
तपिष्ठैरजरो दह ॥४॥

ہے اگنے دیو ایشور! (دِرنگ ہسا) ہنسا پاپ اور ہنسک پاپی سے ہماری رکھشا کرو۔ (ری شتہ) ناش کرنے والے (پرتی) کام کرودھ دویش وغیرہ چوروں کی طرح گھُسے ہوئے اندر کے دُشمنوں سے بھی ہمیں بچاؤ (اجر) آپ بڑھاپے کی کمزوری اور بیماریوں سے بھی اوپر ہیں۔ اتہ (تپشٹھئی) اپنے تپ اور تیج سے (دہ سم) اِن پاپوں کو بھسم کر دیویں۔ جلا دیویں۔

ترقی کا راستہ حقیقی صرف دُنیاوی عیش وعشرت زر و مال راجیہ سنتان وغیرہ حاصل کر لینا ہی نہیں بلکہ اپنے اندر کے وَیریوں سے پنجہ چھُڑا کر سدا کے لئے آتم شانتی اور پائدار سُکھی زندگی بسر کرنا ہے۔ جس کے ذرائع ہیں ریاضت، ایمانداری، نیکی، سچائی اور صاف دل زندگی سے

اپنے حقیقی محبوب خداوند کریم کو ہمیشہ اپنا بنائے رکھنا، جس سے عابد سر اُٹھا کر کہہ سکے کہ ؎

میرا گر محافظ ہے ایشور تو وہ کون ہے جو دبا سکے
تیری کیا مجال ہے او فلک! جو جہاں سے مجھ کو مٹا سکے

منتر نمبر ۲۵ **اِنسانی زندگی کو چلانے والے گھوڑے** تیسرا کھنڈ

अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः ।
अरं वहन्त्याशवः ॥५॥

ہے اگنی دیو۔ دُنیا کی مقدس روشنی رُوپ پرماتما! اِس شریر رُوپی رتھ (گاڑی) کی اِندریاں گھوڑوں کو (یُنگ کھشو) آپ ہی جوڑ دیجئے۔ جو تیئے (یے اشو اسہ) یہ جو اِندریاں روپ گھوڑے (نوہی) آپ کے ہی کے ہیں۔ آپ سے جوتے یا جوڑے ہوئے ہی گیان اور کرم کی دس اِندریوں کی شکل میں گھوڑے اُپاسک (عابد) کو (سادھوہ) سادھنا مارگ (کامیابی کی راہ) پر لے جاتے ہیں۔ (آشوہ) جلدی لے جانے والے یہ اِندریاں رُوپی گھوڑے (ارم) تیزی سے اور خوبصورتی یعنی آرام سے (وہنتی) اپنی منزل پر پہنچا دیتے ہیں۔

دُنیاوی اور رُوحانی آنند

انسانی زندگی کے دو مقاصد ہیں۔ ابھی اُودے اور نی شریے لیں یعنی دُنیاوی خوش حالی اور رُوحانی خزانہ۔ جس کی آخری منزل مُکتی، نجات یا ایشور کی پراپتی ہے۔ اُس کے لئے ذرائع بھی دو ہیں۔ دس گھوڑے جو ہمیں ملے ہوئے ہیں، گیان اور کرم اِندریوں کی شکل ہیں۔ آنکھ، کان، ناک، زبان اور جسم اور کرم اِندریاں ہاتھ، پاؤں، بانی، پیشاب

اور حاجت روائی کی دو اِندریاں یہ دس گھوڑے سیدھے اور غلط دونوں راستوں پر چلاتے ہوئے ہمیں ہانی، لابھ، دُکھ اور سُکھ روزمرّہ دیتے رہتے ہیں جن سے ہمیشہ محفوظ رہنے کے لئے دوسرا ذریعہ ہے گیان رُوپی کرنوں (شعاعوں) یعنی وید شاستروں کا مطالعہ۔ از خود یا بلند اخلاق سادھو چرتر مہان آتماؤں کی قربت یا سنگتی سے دونوں مقاصد کو حاصل کرکے اس نصب العین دُنیاوی اور رُوحانی دونوں خوش حالیوں کی پراپتی۔

منتر نمبر ۲۶ ہر گھڑی تیرا دھیان رہے تیسرا کھنڈ

नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं धीमहे वयम् ।
सुवीरमग्न आहुत ॥६॥

لفظی معنی:۔ (نکھیہ) شرن لینے یوگیہ حصولِ زندگی (وِش پتے) پرجاؤں کے سوامی راج ادھیراج! (آہُت) سب سے پکارے، بُلائے اور یاد کیے جانے اور آپ کی سیوا میں ہمیشہ رہنے والوں کے پیارے محبوب! (اگنے) سب سے آگے رہنے والے ایشور (دیومنتم) روشنی کے مینار (سُووِیرم) اُتم دھرم ویرا اور شرن میں آئے ہوؤں کو ویر بلوان بنا کر دھرم کا بیج دھارن کرانے والے وِشیش پریرناؤں کے داتا (توا) آپ کا (ویَم) ہم (ندِھی مہی) ہمیشہ دھیان کرتے ہیں، کرتے رہیں۔

ہمیشہ ہمیشہ ہر گھڑی ہم کس کا دھیان کریں؟ کس راجاؤں کے راجہ کی ہم رعایا بن کر رہیں اور کون ہماری فریادوں کو سُننے کا واحد دربار ہے۔ اِس کا جواب ہی اِس منتر کا مفہوم ہے۔ من لگا کر پڑھیے۔

منتر نمبر ۲۷ | **دُنیا کے بیج کو بونے والا** | تیسرا کھنڈ

अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ।
अपां रेतांसि जिन्वति ॥७॥

(ایم اگنی مُوردھا) دُنیا کے اندھکار کو مٹانے والی یہ روشن آگ سنسار کا سِر ومنی یا ہیڈ ہے (دِوا ککُہ) دیُولوک کی سب سے اونچی چوٹی گیان شِکھر (پرِتھویا پتی) پرِتھوی کا سوامی یا پالک (ایام ریتانسی) سب لوگوں کے بیج رُوپ سے جان کر سب کو کرم پھل سے تر پت کرتا اور جڑ چیتن سنسار کو جنم دیتا ہے۔

تشریح :۔ وہ مجسّم اگنی مالکِ ارض وسما ہے، جو مادی دُنیا کو اپنی روشنی سے پُرنور کرتا رہتا ہے۔ (۱) زمینی آگ جو لکڑی وغیرہ سے جلائی جاتی ہے (۲) آسمانی آگ (خلا میں) بجلی اور (۳) دیُولوک کی آگ سُورج۔ یہ تینوں اُسی کی دی ہوئی آگ سے روشن ہیں (کٹھ اُپنشد اور یجروید آخری منتر) وہی مادی دُنیا کو پیدا کر کے سب کو کرم پھل دینے سے زندگی بخشتا ہے۔

منتر نمبر ۲۸ | **وید بانی کا داتا** | تیسرا کھنڈ

इमम् षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम् ।
अग्ने देवेषु प्र वोचः ॥८॥

(اگنے) امرت وِدّیا مئے پرمیشور! جیسے آغازِ دُنیا میں (دیویشُو) پُنیہ آتما (پاک رُوح) اگنی، وایُو، آدتیہ اور انگرہ رشیوں کی آتماؤں میں (توّم) آپ نے (نویانسم) نیا گیان دینے والے (گایترم) گایتری آدی چھندوں سے بھرا ہوا (سنم) سب کو سکھ دینے والے

چاروں ویدوں کا (پرووچ) اُپدیش کیا تھا اور آگے کے کلپوں (سرشٹیوں) میں بھی کرتے رہوگے۔ ویسے (اسماکم) ہماری آتماؤں میں (اینم) اس ویدودّیا کا اُپدیش (سُو) اچھی پرکار کیجئے۔

منتر نمبر ۲۹ **بھگوان کے درشن کن کو؟** تیسرا کھنڈ

तं त्वा गोपवनो गिरा जनिष्ठदग्ने अङ्गिरः ।
स पावक श्रुधी हवम् ॥९॥

(اگنے) گیان کے ساگر (انگرہ) ایک ایک انگ میں رس اور بل دینے والے، ذرے ذرے میں ویاپک بھگوان! (گرا) وید بانی کے ذریعے (گوپ ونہ) اندریوں کو پوتر کرنے والا اُپاسک (عابد) جس نے گیان اور کرم کو شُدھ کرلیا ہے (تم توا) اُس آپ کو اپنے ہردیہ میں (جنشٹھت) پرگٹ کرلیتا ہے۔ساکھشات کرلیتا ہے۔پالیتا ہے۔ دیدارِ نُورِ تجلّی (پاوک) ہے پوتر کردینے والے، سنرناگت کے اندرونی مَل، بُرائیوں، دوشوں اور گناہوں کے انبار کو جلا کر شُدھ کر دینے والے پرمیشور! (ہوم) ایسے بھگت کی فریاد کو (شرُدھی) سُنیئے۔

اپنے دِل کے مندر میں بھگوان کو ظاہر ظہور کر لینے کا ادھیکاری یا حق دار کون ہے؟ کیا کیول بانی سے، کیرتن ماتر کر لینے سے ہم پرمیشور کو پالیں گے؟ ہرگز نہیں۔ وید منتر کا اُپدیش صاف ہے کہ جب تک ہم اپنے حواسِ خمسہ گیان اور کرم اِندریوں، من، بُدھی وغیرہ کو بدیوں سے علیحدہ کرکے پاک وصاف نہیں کرلیتے۔ اُس کے درشنوں کا نصیبہ نہیں ملے گا۔

اگیانیوں سے رہتا ہے کیول وہ دُور دُور
کھُل جائیں گیان چکھشو (آنکھ) تو وہ ہے ملا ہوا

منتر نمبر ۳۰ — **دینے والوں کو دیتا ہے** — تیسرا کھنڈ

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ।
२ ३ १ २ ३ १ २
दधद्रत्नानि दाशुषे ॥१०॥

(واج پتی) اَنّ، بل اور گیان کے سوامی (کوی) وید کا وید کا بنانے والا (اگنی) پرکاش روپ ایشور (ہویانی) اُپاسک، سچے بھگت یا عابدوں کے دوارہ سمرپت پدارتھوں یا لشکام دان کو (پری اکرمیت) آگے بڑھ کر سویکار کرتا ہے۔ استقبال مے آید (داشُوشے) آتم دان یعنی اپنے آپ کو جو بھگوان کے سپُرد کر دیتے ہیں اُن کے لئے (رتناتی دھت) اُتم اُتم (رتن) پدارتھوں دھن، زر و مال، راجیہ اور اپنی خصوصی نعمتوں، برکتوں کو جو سب سے افضل ترین دولت ہے، دے دیتا ہے۔

تشریح :- ماں مجھے وہ چیز لا دو جو تمہیں اچھی لگے ایسا بیٹا اچھا ہے۔ جیسا آپ میرے لئے مناسب سمجھیں وہی دوا دیں جس سے مجھ شفا حاصل ہو جائے، ڈاکٹر صاحب ایسا ہی مریض اچھا ہے۔ جو شکھشا آپ میرے لئے اُتم سمجھیں وہی مجھے دیں گورودیو! ایسا طالب علم ہی اچھا ہے۔ سچا عابد یا بھگت بھی وہ ہے جو بھگوان کو کہے۔ پربھو میرے پیارے!

راضی ہیں ہم اُسی میں جس میں تیری رضا ہے
یاں یُوں بھی واہ واہ ہے اور وُوں بھی واہ واہ ہے

منتر نمبر ۳۱ — **کیسے جانیں کہ یہ دنیا پرمیشور کی ہے؟** — تیسرا کھنڈ

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।
३ १ २ २ ३ १ २
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥११॥

(تیّم) اُس (جات ویدسم) پیدا ہوئے سب پدارتھوں میں موجود اور سب پدارتھ اُس

ہیں موجود ہیں۔ جس سے چاروں وید پرگٹ ہوئے (سُوریم) جڑ چیتن سنسار کی آتما سُوریوں کے سُوریہ (دیوم) دیووں کے دیو پرم دیو کو (وِشوائے دِرشے) سب ودیاؤں کی پراپتی کے لئے، سب کے دِکھانے کے لئے (کیبتو ہ) گیان کرنے والی جھنڈیوں کی طرح ندی، ساگر، پہاڑ، چند، تارے، بدلتی ہوئی موسمیں دن اور رات وغیرہ (اُدوہنتی) اونچا گھوش (بآ آوازِ بلند) کر رہے ہیں۔

تشریح :۔ جس پرمیشور کو وید گیان اور جگت کے سبھی عجیب وغریب ادبھت پدارتھو اور شریروں کی بناوٹ وغیرہ کا بے مثال نظام جتلا رہا ہے۔ کہ ان سب کا بنانے والا کوئی عظیم عالم، کاریگر یا وشو کرماں ہے۔ ٹھیک ویسے جیسے جھنڈیاں کسی مقام کا پتہ دے رہی ہوں۔ اُسی آتما کی پرم آتما پیارے پرمیشور کی اُپاسنا (عبادت) ہم سدا کیا کریں۔

منتر نمبر ۳۲ — جب ذرا گردن جھکائی دیکھ لی — تیسرا کھنڈ

कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे ।
देवममीवचातनम्   ॥१२॥

پربھو کے گُن گانے والے پیارے آتما! (ادھورے) روزمرّہ دُنیا میں ہونے والے سب کے لئے زندگی بخش سُکھ دائیک ہنسا رہت پریم یگیہ میں تُو بھی اپنا ہاتھ بٹاتے اور تھات کسی کو دُکھ نہ دیتے ہوئے سب سے پیار اور سب کا اُپکار کرتے ہوئے (اگنِم) تیجسوی پرماتما کی (اُپستوہی) یہ سمجھتے ہوئے کہ بھگوان میرے سب سے نکٹ ہیں اور مَیں اُن میں رم رہا ہوں بڑی شردھا اور عقیدت سے اُپاسنا (عبادت) کر۔ وہ پرمیشور (کوی) وید منتروں کا گان کرنے والا آدی کوی ابتدائے آفرینش میں پہلا شاعر سرتاج الشعرا سب کچھ جاننے اور دیکھنے والا، جس سے وہ سب کو ٹھیک ٹھیک انصاف دے سکے (ستیہ دھرمانم) سچا دھرمی ستیہ رُوپ جس کے دھرم

(ازلی ابدی قواعد' قوانین الٰہی) پُرانے اور ہمیشہ سے چلے آرہے اور چلتے جائیں گے (دیوم) سب کا داتا (ابھیو چاتنم) اُدّیا آدی دوش اور روگوں کے وناش کرنے والے بھگوان کے مندرجہ صفات کو اپنے عمل میں لاتا ہوا یہ سمجھ کر اُس کی پُوجا میں بیٹھ کہ ؎

دِل کے آئینے میں ہے تصویرِ یار ۔ جب ذرا گردن جُھکائی دیکھ لی

منتر نمبر ۳۳ — ## منو کامنا اور پُورن آنند — تیسرا کھنڈ

शं नो देवीरभिष्टये शं नो भवन्तु पीतये ।
शं योरभि स्रवन्तु नः ॥१३॥

(دیوی آپہ) سب کا پرکاشک اور سب کو آنند دینے والا سب جگہ حاضر ناظر پرمیشور! (ابھشٹیے) من چاہے سُکھ اور (پیتیے) پُورن آنند کی پراپتی کے لئے (نہ) ہم کو (شم) کلیان کاری (بھونتو) ہو۔ وہی پرمیشور (نہ) ہم پر (شَینو) سُکھ کی (ابھی سرونتُو) چاروں طرف سے ورشا کرے۔

پرماتما کی دِویہ شکتیاں اور گیان جیوتیاں (نورِ الٰہی) ہمیں دونوں یہ مل جائیں تو بلاشک زندگی کے دونوں مقاصد ہمارے پورے ہو جائیں گے یعنی من کی خواہشات کا حصول اور پورن آنند کی پراپتی' خواہشات بھی ہماری بدی سے بالاتر ہوں۔ اپنی بھلائی، ترقی اور جاہ جلال کے ساتھ سب کی بھلائی اور بہبودی۔ پھر تو حقیقی مسرّت یا آنند کا راستہ کُھلا ہوا ہے۔ اُٹھ اور دیکھ ؎ ذرا جلدی جلدی قدم اُٹھاؤ درِ باغ ہے وہ کُھلا ہوا

منتر نمبر ۳۴ — ## ست پُرشوں کا رکھشک — تیسرا کھنڈ

कस्य नूनं परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते ।
गोषाता यस्य ते गिरः ॥१४॥[१।३]

(ست پتے) ہے ست پُرشوں، سنتوں، سجن لوگوں کے رکھشک پالک سوامی! آپ (نونم)

نشچے ہی (کسیہ) کس کی (دھیہ) بُدھیوں من کے خیالات، کرموں یعنی من بُدھی چت اہنکار کو (ہری نسی) بھرپور (جنوسی) پوتر اور شانت پرسن کر دیتے ہو (لیسیہ) جس کی (تے گرا) آپ کے لئے پرگٹ ہوئی وید بانیاں امرت بھری اور (گوشانہ) جس کی اندریاں پوتر اور شانت ہو گئی ہیں ۔

۱ - ایشور سچے آدمیوں کا دوست اور محافظ ہے (جھوٹے کذب و بطالت سے بھرے ہوؤں کا نہیں ۔ (۲) اُن پر اُس کا رحم و کرم سدا رہتا ہے جو اُس پرمیشور کی وید بانیوں کے ستتی گان اور بھجن کرتے رہتے ہیں (۳) جنہوں نے اپنے من اندریوں بُدھی اور کرموں کو پوتر بنا لیا ہے ۔ پاک اور صاف ۔ (تیسرا کھنڈ ختم ہوا)

منتر نمبر ۳۵ اُمرت پیارے متر ایشور کے گُن گائیں چوتھا کھنڈ

यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं
प्रियं मित्रं न शंसिषम् ॥१॥

(یگیایگیا) ہر ایک یگیہ میں (وہ) آپ (اگنے) ایشور کی (گراگرا) وید کی بانیوں سے ستتیوں کے دوارہ (دکھشے) بل اُتساہ پراپت کرنے کے لئے (وییم) ہم لوگ (امرتم جات ویدسم) امرسروگیہ سب کچھ جاننے والے وید کے پرکاشک یعنی پرگٹ کرنے والے (پریم) پیارے (مترم) متر دوست (نا پرسنشی سم) کی طرح اُتم پرکار سے گُن واد کرتے ہیں ۔ مہا گاتے ہیں ۔

گُن واد یا کیرتن یا پرماتما کے اوصافِ حمیدہ کا بار بار ذکر کرنے کا ارتھ ہے ۔ اُس کے اُن اوصاف کو زندگی میں عمل میں لانا ۔ وہ ہی ہمارا سچا متر اور پیارا سکھا ہے ۔ اُس کے ساتھ ہی پیار بڑھانے کے لئے ہر وقت کوشاں رہنے سے ہمیں بل ، اُتساہ اور امرت کی پراپتی ہوتی ہے ۔

منتر نمبر ۳۶ گیان کرم اُپاسنا اور وگیان کے چاروں ویدوں سے رکھشا چوتھا کھنڈ

पाहि नो अग्न एकया पाह्युत द्वितीयया ।
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते
पाहि चतसृभिर्वसो ॥२॥

(اگنے) اگرنی پرمیشور! (پاہی) رکھشا کیجئے (نہ) ہماری (ایے کیا) ایک (پہلے) رگ وید کے گیان سے (اُت) اور (پاہی) رکھشا کیجئے (دُوتیہ) دوسری دید یانی یجر وید کے یگیہ کرم سے (اُورجاپتم) ہے بل شکتی اور پرانوں کے سوامی پالک (تسری بھی) پہلی دوسری رگ، یجر کے ساتھ تیسری سام وید کی بانی سے بھی اپنی اُپاسنا بھگتی یوگ کے دان ارتھات (گربھی) اِن بانیوں کے گیان سے (پاہی) رکھشا کیجئے۔ (وسو) ہردے اور سارے وِشو کے واسی پربھو! (پاہی) ہماری رکھشا کیجئے۔ (تسری بھی) پہلے تین ویدوں کے ساتھ چوتھے اتھر وید کی بانی سے رکھشا کیجئے۔ جس سے ہم اتھرو یعنی بغیر ڈگمگائے یجر وید سے تمام دُنیا کی اشیا وکیڑی سے ہاتھی اور انسان تک، پرتھوی سے پرمیشور تک کا گیان اور یجر وید سے اِن تمام پدارتھوں سے یگیہ کرم، پر وپکار یا رفاہِ عام کرتے ہوئے سام وید سے آپ کی اُپاسنا بھگتی یا عبادت کے سرورِ حقیقی کو حاصل کر اتھرو وید سے اِن تمام اشیاء کی سائنس کو جان کر اِس پر ہمیشہ چٹان کی مانند مضبوطی سے قائم رہیں۔ خُدا حافظ!

منتر نمبر ۳۷ ایشور کا پرکاش کس میں چوتھا کھنڈ

बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा ।
भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य
रेवत् पावक दीदिहि ॥३॥

(پاوک اگنے دیو) ہے پوتر کرنے والے پرماتما دیو! (برہدبھی ارچی بھی) ہم سے کی گئی بہت

ارچناؤں، پرارتھناؤں کے دوارہ اپنی پُرنُور روشنیوں کے ساتھ (شُکرین شوچشا) اپنے سنیہ گیان پرکاش، شدُھ تیج سے (بھردواجے) گیان، بَل، ویریہ سے یکت پُرشارتھی منش میں (سمدھانہ) پرکاشت ہو ویں۔ (یوِشٹھ) ہے مہان یُوا۔ بڑھاپے سے سدا الگ ہمیشہ نوجوان رہنے والے (دریوت) اپنے آگیا پالک، فرمانبردار شرناگت اُپاسکوں کو، سچے عابدوں کو دنیاوی اور رُوحانی دَولتوں وِدّیا، گیان، دھن کو (دی دِیہی) دیتے ہوئے اُن کے جیونوں میں پرکاشت ہو ویں۔ نُورِ الٰہی سے اُن کی زندگیاں مُنوّر ہو جائیں۔

پوتّر من، شدُھ بُدھی (پاک وصاف دماغ) اور بلوان شریر میں ہی پربھو کے پرکاش یا آنند جیوتی کے درشن ہوتے ہیں۔

منتر نمبر ۳۸ — **پربھُو کے پیارے کون؟** — چوتھا کھنڈ

त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः ।
यन्तारो ये मघवानो
जनानामूर्वं दयन्त गोनाम्   ॥४॥

(سُواہرت اگنے) اُتم وِدھی سے بھگتی پُورن ہردیہ کی آہوتی کو سویکار کرنے والے اگنے پرمیشور! (یے) بھگتی کرنے والے جو اُپاسک (مگھوانہ) روحانی دولت آتم ایشوریہ کو پا لیتے ہیں (گونام اُوروَم) اپنی اِندریوں کو وش میں کرنے والے۔ وید بانیوں کا اُپدیش کرنے والے اور گئوؤں کا پالن کرنے والے اور ان سب کو (دیَنت) نیم میں رکھ کر محفوظ کر لیتے ہیں۔ (توے) وہ (سُوریہ) سب کو پریرنا دینے والے گیانی روشن دماغ وِدوان آپ کے (پریاسہ) پیارے (سنتُو) ہو ویں ہو جاتے ہیں۔ اور (جنانام) پرجا لوگوں کے (ین تارہ) نیم یا قاعدے میں چلانے والے پرمکھ، اگوا، اُپدیشک اور راجہ بن جاتے ہیں۔

پرمیشور کے پیارے کون بن سکتے ہیں۔ اِس کا جواب منتر کی شکھشا میں بہت صاف دیا

گیا ہے ۔ پاٹھک دھیان سے پڑھتے ہوئے اِن گنُوں کو حاصل کرنے کی سعی (کوشش) ہمیشہ کرتے رہیں ۔

منتر نمبر ۳۹ | رمو رمو بھگوان | چوتھا کھنڈ

अग्ने जरितर्विश्पतिस्तपानो देव रक्षसः ।
अप्रोषिवान् गृहपते महाँ असि
दिवस्पायुर्दुरोणायुः ॥५॥

(جرتہ اگنے) ہے ویدوں دوارہ اُپدیش دینے والے پرکاش روپ پرماتمن! آپ (وِش پتی دیو) پرجاؤں کے پالک رکھشاک سوامی دیووں کے دیو ہیں (رکھشا تپانہ) شریشٹھ منتنبوں، اپنے اُپاسکوں کے راکھشسی بھاؤ اور کرموں کو، شیطانی عناصر کو تپاکر جلا دیتے ہیں ۔ (گرِہ پتے) ہمارے ہردیہ روپی گھروں اور سارے سنسار روپی گھر کے مالکِ کل (اپروشی وان) ہمارے دِلوں سے آپ نہ جائیں ۔آپ (مہان اسی) مہان ہیں (دوِس پا یُو) دیو لوک آدی لوک لوکانتروں کے رکھشک ہیں (دُرو نیو) ہمارے گھروں میں سدا رمن کرتے رہیں ۔ ے

رمو رمو بھگوان ہمارے ہر دلوں میں

منتر نمبر ۴۰ | اپنے کو سپُرد کر دینے والے پر رحمت | چوتھا کھنڈ

अग्ने विवस्वदुपसश्चित्रं राधो अमर्त्य ।
आ दाशुषे जातवेदो वहा
त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः ॥६॥

(اگنے امرتیہ) پرکاش روپ امرتینا! میرے ادھیاتم جیون (اُشسا نی اُوشا

(پربھات) کا (چترم) ادبھت اور (وِوسوت) اگیان اندھکار کو دور کرنے والا (رادھہ) آرادھنا (عبادت) روپ جو دھن ہے (آوہ) اُسے میرے لئے لاؤ (جات وید) سبھی پیدا ہوؤں میں موجود اور وید گیان کے داتا (داشوشے) آتم سمرپن کرنے والے میرے لئے (نوّم) آپ (ادیہ) آج سے ہی (اُشربدھ) میرے جیون میں پربھات لاکر (دیوان آوہ) دِویہ گنوں اور دیو شکتیوں کو (آوہ) حاصل کراؤ۔

پربھات سمے جاگ کر امرت بھگوان کی امرت گودی میں بیٹھ کر اپنے اندر اُس کے دِویہ گنوں کو جگاؤ۔ یہ کہتے ہوئے کہ ؎

سپُردم بتو مایۂ خویش را ۔ تُو دانی حساب کم و بیش را

منتر نمبر ۱۴ — **بھگوان ہمارے رکھشی** — چوتھا کھنڈ

१ २ ३२ ३ २उ ३ १ २
त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय ।
३ २ ३१र २र ३ १२
अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि
३ २ ३ २ ३१र २र
विदा गाधं तुचे तु नः ॥७॥

ہے (وسو) گھٹ گھٹ باسی اگنے پرمیشور! (توّم) آپ (چترہ) حیران کُن طاقتوں اور عجائبات کے مالک ہیں (اُوتیا) اپنی رکھشا شکتی کے ساتھ (رادھانسی) دھنوں، بلوں اور وِدیاؤں کو (نہ چودیہ) ہمارے لئے پریرت کریں۔ حاصل کرائیں۔ آپ (اسیہ رایہ) اس (ادھیاتم دھن رُوحانی خزانے کو بھی (رتھی) رتھ بان کی طرح لاکر دینے والے ہیں (نہ توچے) ہماری سنتانوں کے لئے بھی (گادھم نُو وِدا) عزّت، توقیر اور ایشوریہ کو پراپت کرائیں۔

تشریح: ۔ ارجن کے رتھ بان مہاراج کرشن کی طرح بھگوان ہمارے رکھشی مہا رتھی ہیں۔ جو اُن پر بھروسہ رکھ کر چلتے ہیں اور اُن کی آگیا پالن میں رہتے ہیں وہ دیالو ایشور اُنہیں اور اُن کے بال بچوں، اہل و عیال کو سہارا دے کر زر و مال، علم اور بھگتی کی لافانی دولت

سے مالامال کر دیتا ہے ۔

منتر نمبر ۴۲ بُدھیمان گیانی یوگیوں کی بھگتی کا راز چوتھا کھنڈ

२उ ३१ २ ३ १२ ३२ ३२
त्वमित् सप्रथा अस्यग्ने त्रातर्ऋतः कविः ।
१र २र ३
त्वां विप्रासः समिधान दीदिव
१ २ ३१२
आ विवासन्ति वेधसः ॥८॥

(اگنے ترا تا) ست مارگ پر چلا کر رکھشا کرنے والے بھگوان! (توم اِت) آپ ہی (سپرتھا) اِس وشال سنسار کے ذرّے ذرّے میں پھیلے ہوئے (رِتہ) ستیہ سوُروپ ستیہ برتی (کوی) ویدوں کی کوِتا دینے والے انقلابی شاعرِ اوّل و اعظم (سمدھان دی دِوی) سب کو چمکانے والے خود چمک اور تیج سے منوّر! (ویدھسا) وِدھی ودھان اور نیموں میں چلنے والے میدھاوی گیانی (وِپراسہ) آپ کے پیارے ودوان اُپاسک (توام) آپ کا ہی (آ وِواسنتی) سدا بھجن کرتے رہتے ہیں ..

کیسے؟ پرمیشور کے اصلی نام اوم (اکھشر) کو دھنش آتما کو تیر اور پیارے پربرہم بھگوان کو نشانہ بنا کر بیندھنے سے اوم آنند رس کی پراپتی ہوتی ہے' یہ منڈک اُپنشد کا وچن ہے اور یہ ہے میدھاوی گیانی یوگیوں کی بھگتی کا راستہ یا راز ۔

منتر نمبر ۴۳ عزّت، توقیر، نیکنامی اور عمر بڑھانیوالا دھن چوتھا کھنڈ

१ २ ३१२ ३ १ २ ३ १ २
आ नो अग्ने वयोवृधं रयिं पावक शंस्यम् ।
१ २ ३ २३
रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं
१ २ ३ १२
सुनीती सुयशस्तरम् ॥९॥

ہے (پاوک اگنے) پوترکرنے والے اگنی سوروپ پرماتما! (نہ) ہمیں (شنسیم) قابلِ تعریف اُتم (دیو وردھم) آیو کو بڑھانے والا (رئیم) دھن دولت وغیرہ (راسوّ) دیجئے۔

ہے (اُت ماتے) سب طرح کی اُپماؤں (تمثیلات) اور سب پرکار کے گیان سے پورن سرشٹی کرتا! (سُونیتی) اُتم دھرم کے راستے، مریادا یا برتاؤ سے (پرُوسپرہم) جس دھن کی سب خواہش کرتے ہیں اور (سُو لیشس ترم) جس کے حاصل کرنے سے لیش، کیرتی یا نیک نامی بڑھتی جائے۔ ایسے زر و مال کی (نہ) ہمیں (راسو) بخشیش کریں۔

مال و دولت، ہمارے لئے ہے، ہم اُس کے لئے نہیں ہیں۔ ایسا سمجھ کر ہم پوتر، پاکیزہ اور نیک کمائی کا دھن حاصل کرنے کی کوشش کریں گے تو وہ ہی ہمارے سکھ، شانتی، آنند، عزّت و توقیر اور عمر کو بھی بڑھانے والا ہو گا۔ اِسی کے لئے ہی منتر میں پرارتھنا کی گئی ہے۔ برعکس اِس کے پاپ، بُرائی، گناہوں سے آلودہ دولت ہم کو مصائب میں گرفتار کرا کر نرڑ پانی رہے گی۔ وہ یہیں رہے گی اور ہم کوچ کر جائیں گے۔ پھر ایسی دُعائیں بھی نفع بخش کبھی نہیں ہوں گی۔

منتر نمبر ۴۴	سب کا داتا	چوتھا کھنڈ

यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् ।
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै
प्र स्तोमा यन्त्वग्नये ॥१०॥[१४]

(یے) جو (ہوتا وشوا وسُو دَیتے) سب کا داتا سب کی ضروریات زندگی کو ہمیشہ دیتا رہتا ہے اور (جنانام مندرا) سب جنوں کو آنند اور خوشیوں سے بھرتا رہتا ہے (اسمئی آگنیے) اُس سب کے اگوا مشعلِ ہدایت البشور کے لئے (ستوماہ پریَنتو) ہماری سُتتیاں، کیرتن، گان سدا بھینٹ ہوتی رہیں (نہ) جیسے کہ شریشٹھ اتھتی (قابلِ عزت مہمان) کیلئے (مدھو پرتھمانی پاترا)

میٹھے میٹھے اُتم پدارتھوں کے تھال بھر بھر رکھے جاتے ہیں۔

بھگوان جہاں ہمیں پیٹ بھرنے کے لئے انّ، سوادو پھل، بیماریوں سے بچنے کے لئے اوشدھیاں، پہننے اور رہنے کے لئے کپاس، بھومی، لوہا، سونا، چاندی، رتن، جواہر، پینے، نہانے، دھونے، کھیتی باڑی کے لئے امرت جل اور نالاب، روشنی کے لئے سوریہ، بجلی، اگنی وغیرہ ہمیشہ دیتا رہتا ہے۔ وہاں ہمارے آتماؤں میں اپنی بھگتی کا سمندر بہاکر شانتی اور آنند سے بھی سدا بھرتا رہتا ہے۔ اس لئے ہمارا بھی دھرم ہے کہ ایک زبردست بڑے سے بڑے مہمان کی طرح اُس کے حضور میں بھگتی، کیرتن اور گُن گان کی بھینٹ سدا کرتے رہیں۔

چوتھی دشتی، چوتھا کھنڈ ختم ہوا

منتر نمبر ۴۵ **بھگت (عابد) کو گرنے نہیں دیتا** پانچواں کھنڈ

एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे ।
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं
विश्वस्य दूतममृतम् ॥१॥

عابد لوگو۔ اُپاسکو! (وہ) تمہارے لئے میں (اینا نمسا) نمسکا کی پورن ودھی یا سچی عبادت سے (اگنم) جگت پتا پرمیشور کو (آ ہووے) پکارتا ہوں، جو کہ (اُورجہ نپاتم) اپنے بھگت، اُپاسک، عابد کے بل، شکتی اور حوصلے کو گرنے نہیں دیتا (پریم) سب کا پیارا (چے تشٹم) چیتنا شکتی کا دینے والا (ارتم) سب کاموں میں حرکت پذیر اور بُرے خیالات سے چھڑانے والا (سو دھورم) اہنسا کے کاموں (یگیوں) میں پرم سہایک (وشوسیہ) سب کاموں کو سدھ کرنے والا (امرتم) امرت ہے، امر ہے، سدا ہے اور ہمیشہ رہے گا۔

پرمیشور کی اُپاسنا، عبادت دلی عقیدت، شردھا اور ٹھیک طریقے سے کرنے اور

اُسے بلائے جانے یا دُعا گو ہونے پر خداوند کریم اپنے پیارے عابد کو مندرجہ نعمتوں سے مالا مال کر دیتا ہے ۔

۱ ۔ اگنی کی روشن زندگی ، دل و دماغ کا عطیہ ۔

۲ ۔ بل ، شکتی ، حوصلے اور ایمان کو گرنے نہیں دیتا ۔ برقرار رکھتا ہے ۔

۳ ۔ ہمیشہ چوکسی دیتا رہتا ہے ، جس سے وہ اپنے پاک ارادوں اور راستوں پر مستعدی سے گامزن رہے ۔

۴ ۔ اُس کا جلال برتری اندر آجانے سے بُرے خیالات سے برتری مل جاتی ہے ۔

۵ ۔ کسی کو ایذا نہ پہنچانے والے حفاظت عالمی کے کاموں میں ہر وقت مددگار ۔

۶ ۔ وہ سب دُنیا کا والی ، سب کاموں میں نُصرت ، کامیابی دینے والا اور ہمیشہ ہمارے ساتھ رہنے والا اجرام ہے ۔

منتر نمبر ۴۶ **بھگتوں کے ہردیوں میں کب چمکتے ہیں بھگوان** پانچواں کھنڈ

शेषे वनेषु मातृषु सं त्वा मर्तास इन्धते ।
अतन्द्रो हव्यं वहसि हविष्कृत
आदिद् देवेषु राजसि ॥२॥

ہے اگنے پرماتمن ! آپ سمپورن جگت میں (ششیشے) نظر نہ آتے ہوئے نواس کر رہے ہیں (ونیشُو) جیسے جنگلوں میں آگ چھپی رہتی ہے اور جیسے بالک (ماترِشُو) ماتاؤں کے گربھ میں چھپا رہتا ہے (مرتاسہ) اُپاسک لوگ (تُوا) آپ کو اپنے ہردیوں میں انتر آتماؤں میں (سم اِندھتے) روشن کرتے ہیں ۔ (اتندرہ) پیارے بھگوان آپ آلس سے رہت وِشو کے پربندھ میں سدا جُٹے ہوئے (ہوِش کِرتہ) شردھا بھگتی سچّی عقیدت سے جنہوں نے اپنے کو آپ کے سپُرد کر رکھا ہے ۔ اُن کی (ہویم) آہوتی یعنی ہردیہ کی بھینٹ کو (وہسی)

آپ سویکار کر لیتے ہو (آت اِت) تب پھر آپ (دیویشُو) دیوسمان اپنے پیارے عابدوں کی آتماؤں میں (راجسی) مُنوّر ہوتے ہو، چمکتے ہو۔

منتر نمبر ۴۷ **قبُول ہوں ہماری عاجزانہ دُعائیں نیکیوں کے محافظ کو!** پانچواں کھنڈ

१ २   ३ १ २ ३ १   २   ३ १   २ ३ २
अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्यादधुः ।
२ ३ २   ३ २र ३ १ २ ३ १
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं
२   ३ १ २
नक्षन्तु नो गिरः ॥३॥

(گاتووِتمہٗ) سچا راستہ دِکھلانے والے مارگ درشک (ادرشی) درشن میں نے کر لیا ہے (یسمِن) جس میں برتی (برتانی) اپنے اپنے سنیہ اہنسا برہم چریہ آدی برتوں کو (آدھدُو) آدھان کرتے آئے ہیں۔ مہان کٹھن گھور تپ جپ ریاضت وغیرہ رِشی مُنی آدی سدا۔ لوگ اُسی بھگوان کی پراپتی کے لئے ہی کرتے رہے ہیں اور آج بھی کرتے ہیں۔ وہ (اُپ اُو) ہمارے نزدیک ہے، یقیناً نزدیک تر ہے، (سُوجاتم) ذرّے ذرّے میں چمک رہا ہے۔ اُس کے درشن ہو رہے ہیں۔ اُس (آریسیہ وردھنم) آریوں کو بڑھانے والے نیکیوں کے محافظ (اگنِم) پرکاش سورُوپ پرماتما کو (نہ) ہماری (گِرہ) ستُتی کرنے والی حمد و ثنا بھری بانیاں (نکھشنتُو) پراپت ہوں، قبُول ہوں ہماری عاجزانہ دُعائیں۔

منتر نمبر ۴۸ **وید منتروں کے ذریعے جگت کے پروہت پرمیشور سے رکھشا کی یاچنا** پانچواں کھنڈ

३ २ ३   २ ३ १ २ ३   १ २   ३ १२ ३२
अग्निरुक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिरध्वरे ।
३ १ २   ३
ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पते
२ ३   २ ३   १२
देवा अवो वरेण्यम् ॥४॥

(ادھورے) اہنسائے اُپاسنا گیہ میں (اُکتھے) وید منتروں کے اُچارن کرنے پر

(اگنی پروہت) جگت کا والی اگنی پرماتما پروہت روپ میں سامنے بلیٹھا ہوا معلوم ہوتا ہے، کب جب عابد و معبود ایک دوسرے کے ساتھ ہمہ گیر بغل گیر ہو جاتے ہیں ؎

جب ذرا گردن جُھکائی دیکھ لی

لوہے اور اگنی کی طرح ایک رُوپ ہو جاتے ہیں۔ جب تک کہ لوہا ٹھنڈا ہو کر اگنی کی سنگتی کو چھوڑ کر اپنی اصلی شکل میں نہیں آجاتا۔ کیونکہ وہ اگنی پرمیشور تو دنیا کے یگیہ کا پروہت ہے اسی لئے اگرنی یعنی اگوا ہے۔ سب سے پہلے موجود تھا اور ہے۔ (گراوانہ) تالو، کنٹھ (گلا) ہونٹ وغیرہ یہ سبھی ستھان (برہی) آسن ہیں۔ (مُروت دلیوا) پران آدی وایو یہ سب اس اُپاسنا بھگتی یگیہ کے رِتوج یعنی یگیہ کرانے میں سہائیک (مددگار) ہیں۔ جیسے ہون میں وید سامگری وغیرہ کے ڈالنے والے ہوتے ہیں (برہمنسپتے) ہے وید کے آچاریہ پرکاشک پرمیشور! میں رِچاؤں یعنی ویدمنتروں کے پاٹھ اور سوادھیائے (مطالعہ) کے ذریعے (ورینیم ادھ یامی) آپ سے اُتم رکھشا کی یاچنا کرتا ہوں۔

منتر نمبر ۴۹ چھت والے گھر کی طرح سب کار کھشک بھگوان کھنڈ ۵

अग्निमीडिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम् ।
अग्निं राये पुरुमीढ श्रुतं
नरोऽग्निः सुदीतये छर्दिः ॥५॥

ہے اُپاسک! تو (اوسے) اپنی آتم رکھشا کے لئے (اگنم) پرکاش روپ ایشور کی (ایڈشو) سُتتی کیا کر (گاتھابھی) ویدمنتر گان کے دوارہ اور وگیان کتھاؤں سے اُس کی مہما کو پھیلا۔ جو کہ (شیرشوچیشم) پرسدھ جیوتی روپ سب میں سما رہا ہے (پُوروميڑھ) اپنی آتما کو بھگتی رس سے بھرنے والے ہے عابد جگیاسو! تو (رائے) ادھیاتمک دھن ایشوریہ کی پراپتی کے لئے (اگنم) اُس جیون جیوتی کی اور جو (شرتم) ویدوں سے ہی سُننے میں جس کا لیش ہلیتہ

سے چلا آرہا ہے (نر) ہے منش نر نار یو! اُسی کی اُپاسنا کرو۔ کیونکہ یہ جگت کا نیتا پرمیشور اگنی (سُو دیتئے) کشٹ نوارن کے لئے (چھروی) چھت والے گھر کے سمان ہے۔

منتر نمبر ۵۰ — سب کی سننے والے میری بھی سُنو — کھنڈ ۵

श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर्देवैरग्ने सयावभिः ।
आ सीदतु बर्हिषि मित्रो
अर्यमा प्रातर्यावभिरध्वरे ॥६॥

(شرُت کرن) ہے سب کی سننے والے (اگنی) پرماتمن! (شرُدھی) ہماری پرارتھناؤں کو سُنیئے۔ (پراتر یاوبھی) پراتہ کال ہونے والی اور (سیاوبھی) اور سب کو برابر حاصل ہو رہی (دہنی بھی) تتھا اگنی کے سمان چمکنے والی (دیوی) دِویہ کرنوں کے ساتھ ساتھ اُس برہم مہورت یا پراتہ میں کئے جانے والے (ادھورے) میرے پریم پوُرن اہنسک بھگتی یوگ دھیان روپی یگیہ میں ہے بھگوان! آپ (متر) سچے متر ہو کر اپنی پیار سے اور (اریما) نیائے کاری کے روپ میں بھی (برہشی) میرے دل کے مندر میں (آسیدتُو) آکر براجمان ہو ویں۔

منتر نمبر ۵۱ — جیو آتما کی منزل بھگوان کا آنند دھام — کھنڈ ۵

प्र दैवोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना ।
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते
तस्थौ नाकस्य शर्मणि ॥७॥

(دیوو داسہ) دیوؤں کا دیو۔ بُرے وچاروں کو ناش کرنے والا (اگنی دیو) سنسار کا اگرنی پیرکا شمان پرمیشور (مجنا) اپنے بل سے (اِندر) بجلی اور سُوریہ کے (نہ) سمان ہے وہ

1 आओ प्रभु आओ

अग्ने— ज्ञान प्रकाश परमेश्वर ! आईए सब ओर से मेरे हृदय में प्रगट हो जाइए। ज्ञान की प्राप्ति के लिए, जिस से मेरे पाप ताप संताप सब दूर हो जायें। हम आप की स्तुति करते हुए पुकार रहे हैं। आप दाता हैं, उत्तम भोग पदार्थों की प्राप्ति के लिए हमारे हृदय आसन पर सदा विराजमान रहें।

2 ज्ञान दाता

हे अग्ने परमेश्वर ! यज्ञों श्रेष्ठ कर्मों, उत्तम व्यवहारों के ज्ञानदाता और स्वीकार करने वाले हो। सब का सब काल में हित करने वाले हो तथा उत्पन्न होने वाले प्रत्येक मनुष्य में अपने दिव्य गुणों के साथ विराजमान होते हो और विद्वान उपासकों से समाज में धारण किए जाते हों।

3 पापियों का दण्डदाता

जगत के स्वामी परमात्मा का हम वरण करते हैं जो सर्वत्र व्यापक होकर अपने कर्मफल विधान और विश्व पर शासन करने की शक्ति का सन्देश पल-पल में दे रहा है और पापियों का दण्ड विधायक होने से हमारी बुराईयों को भस्मीभूत भी करता है। सब कुछ जानने हारा, सब सम्पदाओं का स्वामी, वेदों के द्वारा ज्ञान देकर इस सृष्टि के यज्ञ का उत्तम प्रकार से संचालन कर रहा है।

4 कब होते हैं उसके दर्शन

जगत का नेता परमेश्वर उपासकों की आत्मा पर छाए हुए अज्ञान अन्धकार काम आदि विषय वासनाओं का नाश कर देता है। सम्पूर्ण धनों का स्वामी भक्तों के आत्म बल और ज्ञान ऐश्वर्य को चाहने वाला भगवान, विशेष भक्ति पूर्ण स्तुति प्रार्थना उपासना योग तथा उत्तम व्यवहारों द्वारा उपासक की आत्मा में प्रकाशित हो जाता है और उसकी आत्म समर्पण आहुति को स्वीकार कर लेता है। वह परमात्मा शुद्ध स्वरूप अनन्त वीर्यवान एवं शीघ्रकारी है।

5 जीवन रथ

हे ज्ञान स्वरूप परमात्मन् ! आप मित्र के समान प्यारे, भूमि पर चलने वाले सुन्दर रथ के समान सब के सहारे, आत्मा में रमन करने वाले अत्यन्त प्रिय आदरणीय देव की मैं स्तुति करता

हूं। परमेश्वर देव हमारी जीवन यात्रा का रथ है। हमारी जिन्दगी के पड़ाव कभी सुखपूर्वक नहीं बन सकते जब तक प्रभु को अपनी सवारी या आश्रय नहीं बनायेंगे। मायारुपी अनेक शरीरों की सवारी करते-2 सौभाग्य से मिला मानव चोला, किन्तु दुर्भाग्य यह है कि इसे गुनाहों से दाग-2 कर दिया प्यारे किस तरह होगा यह मानवी जीवन सफल ? आओ भगवान की झोली में अपने आप को डाल दें और बाहर की दौड़ भाग को बन्द कर अन्तरात्मा में उस को खोजें।

6 अदान और द्वेष से बचाएं

हे अग्ने भक्ति मार्ग पर ले जाने वाले ईश्वर ! आप अपने अपने उग्र प्रकाशों, महा शक्तियों और गुणों द्वारा हमारी रक्षा कीजिए। सब प्रकार की अदान स्वार्थ भावनाओं से रक्षा कीजिए एवं मनुष्यों की द्वेष भावनाओं से भी हमारी रक्षा कीजिए।

7 सत्यवाणियों से ईश्वर की प्रसन्नता

ज्ञान दाता परमेश्वर ! हमें प्राप्त होवो। हमारे हृदयों में आके बैठ जाओ। आपके द्वारा ही मैं सत्य वेद वाणी और लोक वाणी बोलने में समर्थ हुआ हूं। आप इन स्तुति वाणियों से बढ़ते हो। प्रसन्न और प्रफुलित होते हो जैसे चंद्र किरणों से सागर उछलता है। निसंदेह इन उपासना गीतों और मंत्रों से आपकी महिमा फैलती है।

8 एक ही कामना

हे प्रभो ! आपका एक उपासक दूर-2 स्थानों में भटकने वाले मन को वहां से हटा कर तुझ में समेट लेता है, समा देता है। इस लिए मैं तेरा प्यारा भक्त हूं। प्रकाशमय प्रभु ! स्तुति तथा प्रार्थना वाणी द्वारा आपके दर्शनों की केवल कामना करता रहता हूं।

व्याख्या—मैं प्रभु आप का प्यारा बना रहना चाहता हूं। मुझे मोक्ष वा मुक्ति से भी अधिक अपने सच्चे प्यारे सदा साथ रहने वाले पिता परमेश्वर का ही प्यार चाहिए। यही कामना है और यही एक इच्छा चिरकाल से उसकी शरण में रहने की बनी रहती है।

9 भगवान के दर्शन

हे प्रकाशस्वरुप परमेश्वर ! स्थिर शान्त चित्त आपके भक्त उपासक ने जीवन प्राणाधार हृदय में मंथन करके आप को प्रगट

किया है और मस्तिष्क से भी मन्थन अर्थात् मनन करते हुए आप को प्रगट किया है। जैसे दो अरणियों को नीचे ऊपर रखकर निरंतर रगड़ने से अग्नि निकलता है वैसे आत्मा की निचली और ओम् नाम की ऊपर की अरणी बना कर दोनों को निरन्तर रगड़ अर्थात् ध्यान के अभ्यास से भगवान की ज्योति हृदय और मस्तिष्क दोनों में प्रगट हो जाती है।

10 प्रकाश के देवता

प्रकाशमय प्रभो ! सूर्य के समान अन्धकार को दूर कर अपने ज्योतिमय स्वरूप को हमारे लिए सब ओर से प्रकट कीजिए जिससे हमारी रक्षा हो सके। आप हमारे अन्त: करण में प्रकाश दाता हो। जिससे हमारी अर्न्तदृष्टि खुल जाती है।

अन्धकार दु:खों का कारण है और ज्योति सुखों का आधार। भगवान की कृपा से हमें रोशनी के तीन मीनार मिले हुए हैं। (1) धरती पर काष्ठ से जलाई गई अग्नि (2) आकाश में विद्युत और (3) ऊपर द्यौ लोक में सूर्य। यह तीनों भौतिक प्रकाश हैं। परन्तु वास्तविक प्रकाश तो आत्मा में होता है परमेश्वर का, जो अपनी कृपा से ही अपने प्यारे उपासक पर होता है जिससे अन्धेरा मिट जाता है और मिलन का सौभाग्य हो जाता है।

11 नमस्कार खंड 2

नमस्ते, ज्योति स्वरूप अग्ने नमस्कार हो आप के लिए ! देवों के भी परम देव, मानव मात्र में सदगुणों को भरने वाले प्रभो ! हम ज्ञान, शक्ति और ओज के लिए आप का स्तुति गान करते हैं। व्यर्थ का विरोध करने वाले हमारे बाह्य और अन्त: वैरियों को विनष्ट कर दीजिए, जो आपके ध्यान में बैठे हुए हमारे अन्दर विघ्न और बाधा डालते रहते हैं।

12 उपासना किसकी ?

जगत नियन्ता परमेश्वर ! दूत के समान आप सर्व कार्यों की सिद्धि कराने हारे दुख नाशक, सब कुछ जानने हारे सर्वज्ञ हैं और सब के लिए भोग तथा दान के लिए भी सब पदार्थों के दाता हैं। वेद वाणियों के द्वारा स्तुति करता हुआ मैं आपको प्रसन्न करता हूं। आप ही उपासना के योग्य हैं।

13 आहुति और स्तुति

प्यारे सखा परमेश्वर ! उपासक की दी हुई आहुति और

स्तुति प्रार्थना के स्तोत्र दोनों जुड़वां बहिनों की तरह आप के यथार्थ स्वरूप का संकेत करती हुई, वायु की भान्ति प्राण प्रिय परमेश्वर ! यह दोनों आप को पहुंच जाती हैं ।

14 शरण की ओट गहो

ज्योति स्वरूप प्रकाश पुंज परमेश्वर सायं प्रातः प्रतिदिन हम उपासक धारणा, ध्यान बुद्धि और कर्म द्वारा नमस्कार करते हुए आप की शरण में आते हैं । जिससे अपने कर्मों में तेरे गुणों को धारण करके व्यवहार और परमार्थ बना सकें ।

15 ज्ञान और जिज्ञासा जाग उठती है

आप स्तुति प्रार्थनादि से जानने योग्य और दुष्टों को रुलाने हारे परमेश्वर ! आप अपनी कृपा से हमारे हृदयों में प्रवेश कीजिए, जिस से हम आपकी प्रजा सब दिन आनंदित रहें । हमारे योग उपासना के ब्रह्म यज्ञ सफल हों । हृदय से निकली कामनाएं सिद्ध हों । हम आपके मनोहर स्तोत्र गाते रहें ।

16 योगाभ्यास द्वारा प्रभु मिलन

प्रकाश स्वरुप परमात्मन ! आप सदा सुन्दर आकर्षक हिंसा आदि दोष रहित उपासना यज्ञों में उपस्थित रहते हैं, जहां श्रद्धा भक्ति से आपका आह्वान होता है, जिससे हमारी इन्द्रिय मन आदि का व्यवहार सुखमय हो सके । आप प्राणायाम और योगाभ्यास द्वारा हृदयों में प्रगट होते हैं ।

17 अहिंसा आदि यज्ञों के सम्राट

जैसे उत्तम अश्व मक्खी मच्छर आदि के आक्रमण करने पर गर्दन और पूंछ के बालों से उन्हें हटा देता है वा जैसे अपनी प्रजा पर आक्रमण करने वालों को भरपूर शक्ति से निवारता कर राजा अपनी प्रिय प्रजा को सुखी करता है या जैसे सूर्य अंधकार को मिटा देता है वैसे आप हमारे अन्दर विराजमान होकर अपनी प्रेरणा से हमारे अन्तः पापों को मिटा देते हैं अतः हम उपासक नमस्कार और अन्न आदि की आहुति यज्ञों में देते हुए आपका स्तुति गान करते हैं क्योंकि आप हिंसा रहित सेवा परोपकार आदि यज्ञों के सम्राट हैं ।

18 कर्मयोग से प्रभु का आह्वान

मैं उपासक पृथिवी, आकाश और हृदय के सागरों में बसे हुए शुद्ध पवित्र तेजस्वी विश्व दर्शक परमेश्वर का श्रद्धा पूर्वक

हृदय से आह्वान करता हूं जो भूमि के अन्दर पदार्थों को सूर्य की ताप अग्नि से पकाता और औषधी वनस्पति आदि में भी रस भरता है। कर्म योगी के समान उसे पुकारता हूं।

19 मृत्यु से छूटने के उपाय

मृत्यु के भय से रहित होने वाला मानव ज्योति स्वरूप परमेश्वर को अपनी आत्मा में अत्यन्त श्रद्धा के साथ प्रकाशित कर। बुद्धि युक्त कर्म से ईश्वर की उपासना करें। ब्रह्म महूर्त में उषा की पहली किरण के साथ सत्संगति, वेदवाणी के अध्ययन तथा जाप से ईश्वर की जोत को मन में जगाएं।

20 वह सनातन ज्योति

ईश्वरोपासना के अभ्यास से मन की शुद्धि और तदनुकूल कर्म करने के पश्चात ही उपासक सनातन ज्योति भगवान के दर्शन कर सकते हैं जो ज्योति दिन के समान चहूं ओर फैली हुई सर्वोत्तम है और सूर्य चन्द्र तथा तारों में चमक रही है।

21 हर समय भगवान को सामने समझो खण्ड 3

हे मनुष्यो ! तुम्हारे हिंसा रहित यज्ञों, उपासना, सत्यव्रतों, वेदाध्ययन आदि श्रेष्ठ कर्मों को बढ़ाने वाले सर्वोत्तम, सर्वपालक सर्वव्यापक अग्नि परमेश्वर के अभिमुख सदा रहा करो (हर समय यह समझना कि मैं भगवान के सामने हूं) और पुत्र पौत्रों के अन्दर धार्मिक साहस जोश को बढ़ाने के लिए उन्हें प्रभु को वेद वाणी सत्य ज्ञान का उपदेश दिया करो।

22 अग्निरूप परमेश्वर राजा

अग्नि ही अग्रणीय राजा परमेश्वर है जो अपनी प्रचंड शक्ति से प्रजा के धन और प्राणों की हत्या करने वाले दुष्टों को नियम में रखकर अपने दण्ड विधान से उन पर शासन करता है। दूसरों को पीड़ित करने वालों को दण्ड देता है और धर्मात्माओं का प्यारा प्रभु हमें सांसारिक और पारलौकिक सम्पदाओं को प्रदान करता है।

23 हमारे हृदय आसन पर विराजमान हों

हे अग्ने ! आगे ले जाने वाले भगवान हमें सुखी कीजिए आप महान्तो महान हो। जो आप देव दाता प्रभु की कामना करता है उस भद्र जन को आप प्राप्त होते हो। आईए हमारे हृदय आसन पर विराजमान हो जाईए।

24 हमारे पापों को भस्म कर दीजिए

हे प्रकाश स्वरुप अग्ने परमेश्वर ! हिंसक पाप और पापी से हमारी रक्षा करो। काम क्रोध द्वेषादि चोरों की भांति अन्दर घुसे शत्रुओं से हमें बचाओ। आप तो जरा रोग ग्रादि से रहित हें। कृपया अपने तेज से हमारे पापों को भस्म कर दीजिए।

25 मानव जीवन रथ के घोड़े

अग्नि देव, विश्व पावक ज्योति परमेश्वर ! इस शरीर रथ की इन्द्रिय रूप अश्वों को आप ही जोड़ दीजिए। आप के ही यह शरीरों में लगाए हुए हैं अत: आप से ही जोते जाकर ज्ञान और कर्म इन्द्रिय यह अश्व उपासक को साधना के मार्ग पर द्रुतगामी होकर और आराम से भी अपने प्राप्ति स्थान (मंजिल) तक पहुंचा सकते है।

26 सदा आप का ध्यान करते रहें

शरण योग्य, जीवनाधार, प्राणी प्रजा के स्वामी राजाधिराज ! आप सब से आहुत यानि पुकारे जाते हो और स्मरण किए समर्पित आत्माओं के प्यारे सखा, अग्रणी और ज्योति के मीनार हो। अपनी शरणागत में आए धर्म वीरों को धर्म का तेज धारण करा प्रेरणा देते हो। हम सदा आप का ध्यान करते हैं और करते रहेंगे।

27 जन्म दाता

विश्व के अंधकार को मिटाने वाली यह प्रज्वलित अग्नि ईश्वर ही शिरोमणि है द्यौ लोक के उच्च ज्ञान शिखर और पृथ्वी का स्वामी है। सब के कर्मों को बीज रूप से जानकर फल प्रदान करता और जड़ चेतन संसार का जन्म दाता है।

28 ऋषियों के हृदयों में वेद वाणी का प्रकाश

अनन्त विद्यामय परमेश्वर जैसे सृष्टि के आरम्भ में पुण्यात्मा अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ऋषियों की आत्माओं में आप ने नया ज्ञान देने वाले गायत्री आदि छन्दों से युक्त सबके लिए सुखदायक चारों वेदों का उपदेश दिया था और आगे भी करते जाएंगे। वैसे हमारी आत्माओं में भी इस वेद विद्या का उपदेश अच्छी प्रकार से दीजिए।

29 कौन आपको प्रगट कर लेता है ?

ज्ञान सागर अंग-2 में रस और बल देने वाले सर्वव्यापक

अग्ने परमेश्वर ! सत्य ज्ञान और कर्म से इन्द्रियों को पवित्र कर लेने वाला उपासक आप को अपने हृदय में प्रगट कर लेता है। तेजोमय पवित्र ज्योति परमेश्वर ! आप शरणागत के अन्त: मल दोप और पापों को जलाने के लिए उसकी पुकार को सुनिए ।

30 आत्म समर्पण करने वालों पर ही वृष्टि

अन्न बल ज्ञान का स्वामी, वेद काव्य का कवि प्रकाश स्वरूप परमेश्वर उपासकों के द्वारा समर्पित पदार्थों व निष्काम सेवा को स्वागत पूर्वक स्वीकार करता है । अपने को जो उसके हवाले कर देते हैं, उनको रत्न, धन माल और आत्म सम्पदाओं को देकर प्रभु निहाल कर देते हैं ।

31 कैसे जाने कि जगत ब्रह्म का है ?

सब पदार्थों का जन्म दाता, उनमें व्यापक, जिससे वेद प्रगट हुए, जड़ चेतन जगत की आत्मा, सूर्यों के सूर्य, देवों के देव परमेश्वर को सब विद्याओं की प्राप्ति सब के ज्ञान के लिए झंडियों के समान सूर्य चांद तारे दिन रात पर्वत नदी सागर बदलती ऋतुएं आदि सब उच्च घोष कर रहे हैं।

32 भगवान के गुणों अनुसार हमारे कर्म

हमारे आत्मा ! प्रति दिन विश्व में हो रहे प्राणी मात्र के लिए हिंसा रहित सर्वपालक प्राणाधार ब्रह्म यज्ञ में तू भी अपना हाथ बटा । किसी को दुःख न देते हुए सब से प्यार और सब का उपकार कर । उस ब्रह्म अग्नि परमात्मा को प्रतिक्षण अपने निकट समझते हुए अत्यन्त श्रद्धा से उपासना कर। वह अनादि कवि वेद ऋचाओं का ज्ञान कराते और सब को जानते हुए सब को न्याय दे रहे हैं । सत्य धर्म का स्रोत जिसका अविनाशी विधान (कानून) सदा से आ रहा है और चलाते जाएंगे। सब का दाता और अविद्या आदि दोष और पापों का विनाश करने हारे परमेश्वर के इन गुणों को अपने कर्म में परोता हुआ उसकी पूजा ध्यान में बैठ ।

33 मनोकामना और पूर्ण आनन्द

सबका प्रकाशक और सबको आनन्द देने वाला सर्वव्यापक परमेश्वर मन चाहे सुख और पूर्ण आनन्द की प्राप्ति के लिए हमें कल्याणकारी हो और हमारे लिए चारों ओर से सुख शान्ति की वर्षा करें ।

34 पालक सत्पुरुष

सत्पुरुष पालक, सज्जन रक्षक परमेश्वर आप निश्चय ही किस की बुद्धियों, मानसिक विचारों और कर्मों को पवित्र और शान्त कर देते हो, जिस की अमृत भरी वेद वाणियां और इन्द्रियां शान्त और पवित्र हो गई हैं।

35 प्यारे सखा परमेश्वर के गुण गाएं खण्ड 4

प्रत्येक यज्ञ में हम लोग उत्साह प्राप्त करने के लिए उस अग्नि अमर सर्वज्ञ वेद ज्ञान के प्रकाशक प्यारे मित्र सखा परमेश्वर की वेदवाणियों से स्तोत्र गान करते हुए प्रशंसनीय गुण गान करते रहें।

36 वेद ज्ञान से रक्षा कीजिए

हे अग्ने ! हमारी रक्षा कीजिए ऋग्वेद के ज्ञान से। यर्जुवेद के यज्ञ कर्म से। तीसरी सामवेद की वाणी से अपनी उपासना भक्ति योग के दान से और चौथे अथर्व वेद को वाणी द्वारा सभी पदार्थों के विज्ञान से हमारी रक्षा कीजिए जिस से हम अर्थव यानि अच्युत ध्रुव होकर इन चारों ज्ञान कर्म उपासना और विज्ञान से अपने और सब के सुख को बढ़ा सकें।

37 अध्यात्म सम्पदा का ज्ञान

हे पावक (पवित्र करने वाले) अग्ने ! हम से की गई बार-बार आपकी स्तुति प्रार्थनाओं से अपने तेजोमय प्रकाश के साथ ज्ञान, बल, वीर्य युक्त पुरुषार्थी मनुष्य में प्रगट होवें। आप सदा युवा रहने वाले परमेश्वर ! अपने आज्ञा पालक सच्चे उपासकों को अध्यात्मिक सम्पदा एवं सरल विद्या ज्ञान दें।

38 प्रभु के प्यारे कौन

भक्ति पूर्ण हृदय से निकली हुई उत्तम आहुति को स्वीकार करने वाले अग्ने परमेश्वर, जो भक्त उपासक आप की कृपा से आत्म ऐश्वर्य को पालते हैं, वे अपनी इन्द्रियों को वश कर वेद वाणी का उपदेश और गौवों का पालन करते हुए इन को सुनियमित कर सुरक्षित कर लेते हैं। वे सूर्य समान तेजस्वी विद्वान आप के प्यारे हो जाते है और प्रजा लोगों का भी संचालन नियम पूर्वक कर प्रमुख बन जाते हैं।

39 रमो-रमो भगवान

वेद ज्ञान का प्रकाश करने हारे परमात्मन् ! आप प्रजाओं

के पालक देवों के देव हैं। अपने उपासक श्रेष्ठ मनुष्यों के आंतरिक पाप और पापियों को भस्मीभूत कर देते हैं। विश्व अधिपति प्रभु आप हमारे हृदय रूपी घरों से कभी न जाएं। आप महान हैं और द्योलोकादि के रक्षक हैं। अतः हमारे घरों में सदा रमण करते रहें।

40 जीवन की प्रभात को लाओ

प्रकाश स्वरुप नेता ! मेरे जीवन में अध्यात्म ज्योति को देने वाला जो अद्भुत ऐश्वर्य है उसे मेरे लिए लाओ। आप सब पदार्थों के स्वामी वेद ज्ञान के दाता हैं। आत्म समर्पण करने वाले मेरे जीवन की प्रभात को लाकर मुझे दिव्य गुणों से युक्त करें।

41 भगवान हमारे रथी

घट-घट वासी प्रभो ! आप अद्भुत शक्तियों के स्वामी हैं। कृपया अपनी रक्षा शक्ति से धन, बल विद्या आदि को हमारे लिए प्राप्त कराएं। आप तो आत्म धन के भी धनी हैं जो रथी के समान ला देते हैं। कृपा कर हमारी सन्तानों को भी यशस्वी ऐश्वर्य प्रदान करें।

42 सत्य मार्ग पर चलने वालों के रक्षक

सत्य मार्ग पर चला कर रक्षा करने वाले परमेश्वर ! आप ही इस विशाल ब्रह्माण्ड के कण-कण में विराजमान, सत्य स्वरुप सत्य व्रती, वेदों के महाकाव्य के दाता विश्व के सर्वप्रथम महाकवि स्वयं तेजस्वी और सब को तेज देने वाले हैं। ज्ञानी नियमित मेधावी आपके प्यारे उपासक विद्वान आपका ही भजन सदा करते रहते हैं।

43 हमारी कमाई को पवित्र कर

हे पावक अग्ने परमात्मन् ! हमें प्रशंसनीय तथा आयु वृद्धि करने वाला उत्तम ऐश्वर्य दीजिए आप सब विशेषताओं एवं सर्व ज्ञान सम्पन्न सृष्टि कर्ता हैं। सुनीति धर्म तथा सत्य मार्ग द्वारा ही धन सम्पदा हमें प्राप्त हो, जिससे हमारा यश बढ़े और आप का आशीर्वाद सदा प्राप्त रहे।

44 दाता की भेंट सभी स्तुतियां

जो भगवान सबका दाता (होता) होकर सबकी आवश्यकताओं को पूर्ण करता और सब को सुख आनन्द देने हारा है।

उस परम ज्योति परमेश्वर के लिए हमारे कीर्तन स्तुतियां और स्तोत्र गान सदा होते रहें जैसे कि महान अतिथि के लिए मधुर भोगों के भरे थाल परोसे जाते है।

45 ब्रह्म ज्ञानी की प्रेरणा

हे उपासको ! मैं आप के लिए नमस्कार की पूर्ण विधि तथा योगादि से जगत पिता परमेश्वर का आह्वान कर रहा हूं, जो अपने भक्तों के मनोबल को कभी गिरने नहीं देता। सब का प्रिय और चेतन शक्ति का देने वाला, सब को उत्तम गति विधि देकर पापों से छुड़ा कर यज्ञ अर्थात् अहिंसक कर्मों में सदा परम सहायक है। वही सबके कामों की सिद्धि करने वाला अमृत अविनाशी है। उसी की उपासना सच्चे हृदय से करनी चाहिए।

46 आत्मा में चमकता है उसका तेज

अग्ने परमात्मन् सम्पूर्ण विश्व में अदृश्य होकर जैसे जंगलों में छुपी आग और मातृ गर्भ में बालक छुपा रहता है वैसे ही आप निवास कर रहे हो। उपासक लोग अपने हृदयों में आप को प्रकाशित करते हैं। आप तो प्रतिक्षण विश्व के प्रबन्ध में आलस्य रहित हो जुटे रहते हैं। सच्ची श्रद्धा से जिन्होंने अपने को समर्पित कर रखा है, उन की आहुति को स्वीकार कर उन की अन्तरात्मा में ज्योतिर्मान होते हो।

47 स्वीकार हों हमारी प्रार्थनाएं

सन्मार्ग दर्शक भगवान के दर्शन हो गए। जिस में व्रती लोग अपने अपने सत्य व्रत ब्रह्मचर्य योगादि का आधान करते हैं और ऋषि मुनि आदि सभी घोर तप आदि जिसकी प्राप्ति अर्थ किया करते हैं। वह जहां कण-कण में चमक रहा है वहां हमारे अत्यन्त निकट होकर हृदय में भी बस रहा है। उस आर्यों के बढ़ाने वाले प्रकाश स्वरूप परमात्मा को हमारी स्तुति प्रार्थनाएं प्राप्त हों।

48 वेद वाणी द्वारा रक्षा याचना

अहिंसामय उपासना यज्ञ में वेद ऋचाओं के उच्चारण करने पर जगत का पुरोहित अग्नि सन्मुख विराजमान प्रतीत होता है। कब ? जब भक्त भगवान में तन्मय हो जाता है अग्नि में लोहे की भांति एक रूपता आ जाती है। वह परमात्मा तो

विश्व यज्ञ का पुरोहित है । मानव शरीर में कण्ठ, तालू, ओष्ठ आदि यह सभी उसके विशेष आसन हैं । प्राण अपान आदि वायु सभी प्रभु के यज्ञ के ऋत्विज हैं । वेद ज्ञान के प्रकाशक परमेश्वर वेद वाणी के स्तोत्रों द्वारा आप से रक्षा की याचना करता हूं ।

49 भगवान हमारा छत वाला घर

हे उपासक ! आत्म रक्षा के लिए तू अग्नि स्वरुप परमेश्वर की स्तुति किया कर । वेदमय गान और उसकी कथा के द्वारा उसकी महिमा को फैला, जो ज्योति स्वरुप सब में रम रहा है । आत्मा को भक्ति रस से भरने वाले जिज्ञासु नर नारियो ! अध्यात्मिक धन के लिए उस जीवन ज्योति की, जिस का यश श्रुति मंत्रों द्वारा अनादि काल से आ रहा है उपासना करो । वह जगत नियन्ता परमेश्वर सबके कष्ट निवारण कर सुख देने के लिए छत वाले घर के समान है ।

50 सबकी सुनने वाले मेरी भी सुनें

सबकी सुनने वाले भगवान हमारी भी सुनें, प्रातः ब्रह्म महूर्त में सब के अन्दर जागृत होने वाली ज्योति आप की पवित्र देन है । इस शुभ महूर्त में योग ध्यान पूर्ण मेरे हृदय में प्यारे सखा न्यायकारी भगवान ! पधारें और विराजमान हो जाएं । यही मेरी प्रार्थना है ।

(پرتھوی ماترم)، پرتھوی ماں کو جو سب پرانیوں کو جنم دینے اور پالن کرنے والی ماتا ہے (انوورا ورتے)، اُسے اپنی اچھا انوکول گول آکار کی طرح چلا رہا ہے۔ وہ اگنی دیو (ناکسیہ) آنند کے (شرمنی) دھام، ساگر یا گھر ہیں (تسختھو) سدا وراجمان رہتا ہے۔

جیو آتما کی یاترا :۔ پرماتما آنند کا گھر ہے، موکھش دھام ہے اور جیو بھی قدرتی طور پر اس آنند ساگر میں رہنا چاہتا ہے، لیکن اپنے کرم بھوگ کے کارن پرتھوی یا جگت کے سفر پر نکلا ہوا ہے، یہ یاترا بارم بار جنم اور موت ہے۔ دُکھ سکھ، خوشی غمی، فتح شکست، لابھ ہانی، تندرستی بیماری، جوانی کی رنگینیاں اور بڑھاپے کا عذاب ہے۔ یہ کشٹ پورن یاترا ختم ہوگی، تب اُس پیارے بھگوان کا گھر، آنند کا ساگر جو اپنی منزل ہے، دکھائی دے گی، جہاں جا کر اے پیارے جیو! تُو نے سدا آرام سے رہنا ہے۔ پر یہ کیسے ہو؟ منتر کی شکھشا ہے کہ :۔ (۱) بُرائی کے ناشک دیوؤں کے دیو ایشور کا سمرن کرتا رہ ۔ (۲) اگنی کی طرح آگے بڑھتا رہ۔ (۳) بجلی کی طرح چمک دار زندگی بنا۔ (۴) سُوریہ کی طرح اندھکار کو مٹا روشنی مجسم ہو۔ (۵) زمین کی طرح پرشارتھ اور محنت سے پیداوار بڑھا، روشنی کے پیچھے چل، جیسے پرتھوی سورج کے گرد گھومتی ہے۔

जीव की यात्रा आनन्द धाम

मंत्र ५१

देवों का देव कुवासनाओं का नाशक अग्निदेव परमेश्वर अपने बल से बिजली और सूर्य के सामान है। वह सब प्राणियों को जन्म देने और पालन करने वाली पृथिवी मां को अपनी इच्छानुकूल गोलाकार चला रहा है वह संसार का अग्रणी परमेश्वर आनंद के धाम में सदा विराजमान रहता है।

कैसे कटेगी यात्रा यह ?

परमात्मा आनंद का धाम मोक्ष स्वरूप है। जीव भी स्वाभाविक इसी धाम की इच्छा रखता है। लेकिन अपने कर्म भोग के कारण जगत की यात्रा पर निकला हुआ है। यह यात्रा क्या है बारम्बार जन्म और मृत्यु, दुख और सुख खुशी और गमी, जय और पराजय, लाभ हानि, रोगी निरोगी. जवानी की रंगीनियां और बुढ़ापे का अजाब।

कष्ट पूर्ण यह यात्रा कब समाप्त होगी, जब उस प्यारे भगवान का धाम दिखाई देगा। जहां जाकर प्यारे जीवात्मा ने सुख का सांस लेना है, आराम से रहना है। पर यह कैसे हो? मंत्र की शिक्षा है पाप का क्षय करने हारे दैवों के देव भगवान का स्मरण करता रह। अग्नि की तरह आगे बढ़, विद्युत की तरह चमक, सूर्य बन अंधकार का नाश कर प्रकाश फैला, पृथिवी की तरह परिश्रमी होकर उत्पादन बढ़ा और प्रकाश के पीछे चल जैसे भूमि सूर्य के पीछे चल रही है।

منتر نمبر ۵۲ | سب جیوؤں کا داتا | کھنڈ ۵

२ ३ १र २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र
अध ज्मो अध वा दिवो बृहतो रोचनादधि।
३ १ २ ३क२र ३२उ
अया वर्धस्व तन्वा गिरा
३ १ २
ममा जाता सुक्रतो पृण ॥८॥

(سُوکرتو) ہے پرسّدھ شبھ کرموں میں کیرتی مان ایشور (مم ایاتنوا) میری اس لگاتار کی گئی (گرا) سُتتی پرارتھنا کی بانی (ادھی وردھسو) زیادہ سے زیادہ مجھ میں منوّر ہو وو، بڑھو (ادھ) اور (جمہ) پرتھوی سے اتھوا (برہتہ روچنات دِوہ) وشال چمکیلے دیولوک سے سب پدارتھ لاکر (جاتا پرن) سب پرانیوں کو پالن کرنے سے ترپت کیجیئے۔
پرماتما کی یہ سب دولت ہے جو وہ زمین سے کھانے پینے پہننے کی تمام اشیاء کو دیتا رہتا ہے اور نظامِ شمسی سے پانی برساتا، ہوا دے کر سب کو زندگی بخشتا اور روشنی اور گرمی سے سارے جہان کا پالن پوشن کرتا رہتا ہے۔ خوب کہا ہے ؎

ہزاروں کھانے لذیذ و شیریں ہزاروں چیزیں تلخ و نمکیں
ہماری خاطر بنائے تم نے نمستے پہنچے تمہیں ہمارا

جگت کی جننی جگت کی ماتا نمستے پہنچے تمہیں ہمارا

मंत्र ५२ सब जीवों का दाता

शुभ कर्मों में कीर्तिमान प्रभो! मेरी इस निरन्तर की गई स्तुति प्रार्थना की वाणी द्वारा मेरे अंदर ज्योतिमय होवो। और पृथिवी से अथवा विशाल चमकीले द्युलोक से प्रकाश वायु गर्मी वर्षा आदि पदार्थ ले आकर सभी जन्म धारी प्राणियों को पालन पोषण से तृप्त कीजिये।

यह सब परमात्मा की देन है जो वह भूगोल से वा खगोल से देता है खाने पीने पहनने के सभी पदार्थ जिनसे हमारा जीवन चलता है। चाहे वह भूमि से मिला है वा आकाश से बरसा है, सब धन उसी का है।

हजारों खाने लजीज़ शीरीं,
हज़ारों चीजें तलख व नमकीं,
हमारी खातिर बनाए तुमने
नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा।
जगत की जननी जगत की माता।
नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा।

منتر نمبر ۵۳ — آپ کا وچھوڑا اسہا نہیں جاتا — کھنڈ ۵

१ २ ३२उ ३१र २र ३ २
कायमानो वना त्वं यन्मातृरजगन्नपः।
१र २र ३ १ २ ३ १ २ ३
न तत्ते अग्ने प्रमृषे निवर्तनं
२ ३२उ ३ १ २
यद् दूरे सन्निहाभुवः ॥६॥

ہے پربھو (توّم) آپ (ونا) اُمت اپنے بھگت کی (کایہ مانا) کامنا کرتے ہوئے (ىت) جو (ماتری) ماتا کے رُوپ میں ہماری زندگیوں کی تعمیر میں لگے ہوئے (اپہ) پران، کرم، بِش ناڑیوں میں (اجگن) رم رہے ہیں (تت تے) اب تو آپ کا (نِورتنم) وچھوڑا آتما میں (نہ پرمرشے) سہن نہیں ہو سکتا۔ کیونکہ پہلے تو آپ مجھ سے (دُورے سن) دُور تھے یعنی اگیان وش میں جانتا نہیں تھا۔ پرنتو اب تو میں جان گیا ہوں کہ (ایہہ) اسی دیہہ میں ہی آپ مجھ میں (آبھوہ) براج رہے ارتھات سمائے ہوئے ہیں۔

मंत्र ५३ विछोड़ा सहा नहीं जाता

हे प्रभो ! आप सम्यक् भक्ति की कामना करते हुए जो माता के रूप में हमारे जीवनों का निर्माण करने वाले प्राण कर्म तथा नस नाड़ियों में रम रहे हैं, उस आपका विछोड़ा सहा नहीं जाता। क्योंकि पहले तो आप मुझ से दूर थे अर्थात अज्ञानवश मैं जानता नहीं था। परन्तु अब तो मैं जान गया हूं कि इसी देह में ही आप मुझ में विराज रहे हैं।

منتر نمبر ۵۴ — سَتیہ نِشٹھ متش میں پرگٹ ہوتے ہو — کھنڈ ۵

१र २र३ १२ ३ २३१ २३ १२
नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते ।
३२३ १ २ ३१२ ३१र
दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो
२र३ १ २ ३१२
यं नमस्यन्ति कृष्टयः ॥१०॥[१५]

ہے (اگنے) پرماتما! (منو) منن شیل وچاروان اُپاسک (تُوام) آپ کو (وِددھے) اپنا دھن الشیوریہ یا سروسو مانتا ہے (شاشوتے) ہمیشہ سے چلے آرہے (جناس) پرجا جنوں کے لئے آپ جیوتی مجسّم روشنی ہیں۔ (رِت جاتہ) آپ ستیہ نِشٹھ سچے پکے عامل آدمی میں پرگٹ ہوتے ہیں (اُکھشِتہ) بھگتی رس میں سینچے گئے آپ (کنوے) ذرّے ذرّے میں آپ کا درشن کرنیوالے دانشور عابد لوگوں کی آتماؤں میں آپ چمکتے ہیں، بھگون! آپ وہ ہیں (یم کرشٹیہ نمسینتی) جسے کہ سب لوگ نمسکار کرتے ہیں۔ ساری دُنیا پُوجتی ہے۔ (پانچواں کھنڈ ختم ہوا)

मंत्र ५४ सत्य निष्ठ आत्मा में प्रकट होते हैं

हे अग्ने परमात्मन् ! मननशील उपासक आपको अपनी निधि वा स्वस्व मानता है। सदा से चले आ रहे आप प्रजा जनों के लिए स्तंभ हैं। आप सत्य निष्ठ आत्मा में प्रकट होते हैं। भक्ति रस द्वारा सींचे गये कण कण में आपका दर्शन करने वाले मेधावी उपासकों में आप चमकते हैं। आप वह हैं जिसको सब लोग नमस्कार करते हैं।

(पांचवीं दशती समाप्त)

منتر نمبر ۵۵ تب کھُلے گا موکھش کا دوار کھنڈ ۶

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्वासिचम् ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२
उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्
२र ३ १ २
वो देव ओहते ॥१॥

ہے منشیو! پیارے پربھو اُپاسکو (در وِنو دا) اپنے پیارے ادھیاتمک دھن اور بل کا داتا پرمیشور دیو (وہ) تمہاری بھگتی رس سے (پُورنام) بھری ہوئی (آسیچم) اتینت شردھا مئے ہردیہ کی آہوتی کو چاہتا ہے۔ اس برہم اگنی میں پورے بھرے ہوئے چمچے سے ہی بھگتی رس مئے گھی کی آہوتی ڈالنی ہوگی۔ (اُت سنچدھوَم) بھگوان پر اونچی بھگتی بھاؤ کی بوچھاڑیں چھوڑنی ہوں گی۔ (اُپ پرندھوَم) نزدیک سے نزدیک اُسے سمجھ کر اُپاسنا سے اُسے ترپت کرنا ہوگا۔

تب ہی

وہ پربھو من چاہے سُکھ آنند اور موکھش کے دوار کو آپ کے لئے کھول دے گا!

मंत्र ५५ कब खुलेगा द्वार मोक्ष का

हे मनुष्यों, प्यारे प्रभु उपासको ! अध्यात्मिक धन और बल का दाता परमात्म देव तुम्हारी भक्ति रस से परिपूर्ण अत्यन्त श्रद्धामुक्त हृदय की आहुति चाहता है । अतः इस ब्रह्म अग्नि में भरे चमचे से ही भक्ति रस रूप घी की आहुति डालनी होगी । उच्च भक्ति भाव की बोछाड़ें छोड़नी होंगी । उसे निकटतम मानकर उपासना द्वारा प्रसन्न करो । तब ही वह परमात्मा देव तुम्हारे लिये मनोवाच्छित सुख आनंद और मोक्ष के मार्ग को खोल देगा ।

منتر نمبر ۵۶ ایشور پراپتی ستیہ بانی اور یگیہ پُتر چاہیئے کھنڈ ۶

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३क२र ३ १ २
प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता ।
१ २ ३१र २र ३ १ २
अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं
३ २ ३ १ २
देवा यज्ञं नयन्तु नः ॥२॥

(برہمنسپتی) ویدوں کا پتی۔ جگت کا مہان ادھی پتی، گورو، آچاریہ، پرمیشور (پریتو) ہمیں پراپت ہو (دیوی سونرتا پرایتو) گیان کا پرکاش دینے والی پریہ اور ستیہ بانی ہمیں پراپت ہو (دیوا نہ اچھ نینتو) ہماری دِویہ بھاونائیں پراکرتک دیوی شکتیاں اور وِدوانوں کی آشیرواد ہمیں ایسا پُتر پردان کرے جو (ویرم نریم) ویر ہو، نرناریوں کا ہت کرنے والا ہو (نیکتی رادھسم) براہمن کھشتری ویش شودر اور اتی شودر یا نشاد، اِن پانچوں کی سیوا کرنے والا ہو اور بانی، آنکھ، کان، من اور آتما اِن پانچوں کو وشی بھوت کرنے والا (یگیم) یگیہ مئے جیون والا ہو۔

بانی سے ایشور کا گُن کیرتن، آنکھ سے سنسار کے ہر ایک پدارتھ میں بھگوان کے کلاکوشل کو دیکھنا، کانوں سے اُس پرمیشور کی مہما کو شروان کرنا، من سے بار بار اُس کا منن اور آتما میں ہر سمے اُس کے دھیان سے اُس کی انوبھوتی ہوتی رہے۔ ایسی سنتان ہو بھگوان اتب ہمارے جیون بھی یگیہ مئے ہی بنے رہیں گے۔

मंत्र ५६ ईश्वर प्राप्ति, सत्यवाणी तथा यज्ञपुत्र

वेदों का पति जगत गुरु हमें प्राप्त हो। ज्ञान प्रकाश दातृ प्रिय और सत्यवेद वाणी हमें प्राप्त हो। हमारी दिव्य भावनाएं प्राकृतिक दैवी शक्तियाँ एवं विद्वानों की आशीर्वादें हमें ऐसा पुत्र प्रदान करें, जो वीर हो, नर नारियों का हितकारी हो, ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र अति शूद्र इन पाँचों की सेवा करने वाला, वाणी, चक्षु कान मन और आत्मा इन पाँचों को वशीभूत करने हारा यज्ञ मय जीवन युक्त हो।

منتر نمبر ۵۷ کھنڈ ۲

اُونچا ہے بھگوان سب سے اُونچا

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ २
ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता।
३ १र २र ३ १ २ ३
ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता
२ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २
यदञ्जिभि र्वाघद्भिर्विह्वयामहे ॥३॥

ہے پربھو (نہ) ہماری (سُواُوتیئے) اُتم پرکار سے رکھشا کے لئے (اُو) نِشچے سے آپ ہی (واجسیہ سنی تا) ایشوریہ ان گیان آدی سمردھی کے داتا اور موکھش آنند کے دینے ولے (اُوردھو) سب سے اُوپر (تِشٹھ) براجمان ہیں (نا) جیسے کہ (دیوسونا) پرکاش مان سُوریہ ہماری حفاظت کے لئے سب سے اُوپر رہتا ہے۔ اس لئے (انجی بھی) آپ کے گنُوں کو پرگٹ کرنے والی جو آپ کے سورُوپ کو ٹھیک پرکار سے ورنن کرسکے۔ ایسی بانی اور (واگھدبھی) آپ کو پراپت کرانے والے وشیش ویدمنتروں دوارہ (دہویا مہے) آپ کا آواہن کرتے ہیں، خاص طور پر پکار کرتے ہوئے آپ کو بلا رہے ہیں۔

मंत्र ५७ ऊँचा है भगवान सब से ऊँचा

हे प्रभो हमारी उत्तम रक्षा के लिए निश्चय से आप ही ऐश्वर्य अन्न ज्ञान आदि समृद्धि और मोक्षानंद के देने वाले हैं और सर्वोपरि शक्ति में बिराजमान है जैसे कि प्रकाशमान सूर्य हमारी सुरक्षा हेतू हमारे सौर मण्डल में सब से ऊपर रहता है। इस लिए आप के स्वरूप को प्रकट करने वाली वाणी आपको प्राप्त कराने वाले विशेष वेद मंत्रों द्वारा आपको आह्‌वान करते हैं। पुकारते हैं।

वाणी से ईश गुणगान, आँख से संसार के प्रत्येक पदार्थ में भगवान की कला कौशल के दर्शन, कानों से उसकी महिमा का श्रवण, मन से बार बार मनन और आत्मा में हर समय उसकी अनुभूति। ऐसी सन्तान हो भगवान् ! तब हमारे जीवन भी यज्ञमय ही बने रहेंगे।

منتر نمبر ۵۸ کھنڈ ۶

ایشور ارپن کرنیوالا ویر سنتان پراپت کرتا ہے!

२उ ३ १र २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र यो राये निनीषति मर्तो यस्ते वसो दाशत् ।
२ ३१ २ ३ २ ?
स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं
१ २ ३ १ २
त्मना सहस्रपोषिणम् ॥४॥

ہے (وسو) سارے سنسار کو آشریہ دینے والا سمپدرُوپ پرمیشور! (یہ مرتہ) جو مرن دھرما منش (یعنی مرجانا ہی جس کے شریر کا وصف یا دھرم ہے) آپ کا اُپاسک (برائے دھن سمپتی اور رُوحانی خزانے کے لئے (ریرنی شتی) آپ سے سمبندھ جوڑ کر آپ کو پراپت کرنا چاہتا ہے، اور جو (تے داشت) آپ کے لئے اُس سمپداؤں کو دان سمرپن بھی کرتا رہتا ہے (سہ) وہ عابد آپ کا بھگت (اگنے) ہے پرماتمن (اُکتھ شنسی نم) وید کے ستوتروں کا گان کرنے والی اتھوا وید وکتا (سہسر پوشنم) ہزاروں کا پالن پوشن کرنے والی اور ہزاروں منشوں کو ادھیاتم سمپدا سے آنندت کرنے والی (ویرم دھتے) ویر سنتان کو پراپت کر جگت میں کیرتی مان ہو جاتا ہے۔

मंत्र ५८ ईश्वर अर्पण करने वाला वीर संतान प्राप्त करता है

हे सम्पदरूप परमेश्वर ! जो मरणधर्मा उपासक अध्यात्मिक सम्पत्तियों के लिए आपके साथ आत्मीयता जोड़ कर आपको प्राप्त करना चाहता है। और जो उपासक आपके लिए अर्थात आपकी आज्ञापालनार्थ या आपके नाम पर उस सम्पदा का दान भी करता रहता है। वह आपका भक्त हे अग्ने सर्वाग्रणी भगवान ! वेद के स्तोत्रों का गान करने वाली, वेदवाणी हजारों का पालन पोषण करने और उन्हें अध्यात्म सम्पदा से भी परितृप्त करने वाली वीर सन्तान को प्राप्त कर जगत में कीर्तिमान हो जाता है।

منتر نمبر ۵۹ **بھگوان کو ہردیہ میں روشن کریں** کھنڈ ۶

१ २ ३१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र वो यह्वं पुरूणां विशां देवयतीनाम् ।
३ २ ३ २ ३ २ २ ३
अग्निं सूक्तेभिर्वचोभिर्वृणीमहे
२उ ३ २ ३ १ २
यं समिदन्य इन्धते ॥५॥

ہے اُپاسک منشیو! (دیوینی نام) بھگوان کی ابھیلاشا کرنے والے (پورونام) انیک پرکار کے (وِشام) پرجاجنوں کے اُپاسیہ (معبود) (یہوّم) مہان (اگنم) سب کے اگوا پرمیشور کا (ورنی مہے) ہم ورن کرتے ہیں، ذکرِ خیر (سوکتو بھی ورچوبھی) وید کے اُتم وچنوں، ستتی منتروں دوارہ (یم) جس پربھو کو (انیے اِت) دوسرے بھی (سم اِندھتے) اپنے ہردیوں میں پردیپت کرتے ہیں۔

मंत्र ५६ भगवान को हृदय में प्रकाशित करें

हे उपासक मनुष्यो! भगवान की अभिलाषा करने वाले अनेक प्रकार के प्रजाजनों के उपास्य महान अग्नि परमेश्वर को हम वरणा करते हैं। वेद के उत्तम वचनों, स्तुति मन्त्रों द्वारा जिसको दूसरे भी सब लोग अपने हृदय में प्रकाशित करते हैं।

منتر نمبر ۶۰ **بُرائیوں کا ناشک سوبھاگیہ داتا** کھنڈ ۶

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १र २र
अयमग्निः सुवीर्यस्येशे हि सौभगस्य ।
३ १ २ ३ २ ३ १ २३
राय ईशे स्वपत्यस्य गोमत
१ २ ३ १ २
ईशे वृत्रहथानाम् ॥६॥

(ایم اگنی) یہ روشنیوں کی منوّر روشنی الیشور (سُوویریسیہ) اُتم ویریہ وان بل سامرتھیہ کی شکتی پرپرنا دینے والے (سوّ بھگسیہ) دھرم، لیش، دھن، الیشوریہ اور روحانی دولت کا (ایشے) سوامی یا الیشور ہے (رایہ ایشے) سب سمپداؤں کا الیشور ہے۔

(سوپتیسیہ) جن سے ہماری سنتانیں اُتم ہوتی ہیں اور (گومنۃ) ہماری اِندریاں شُبھ مارگ پرچل کر سریشٹھ ہوتی ہیں۔ ہمارا گئو آدی پشو دھن اُتم ہوتا ہے۔ اور وہ پربھو (ورتر ہنتھا نام) پاپوں کا ناش کرنے والے سادھنوں کا بھی ایشور ہے، یعنی اُس کی بھگتی، عبادت یا دھیان کرنے سے اُس کے اُتم گن کرم یا صفاتِ محوزہ اپنے آپ عابد میں داخل ہوتے جانے سے بھگت، اُپاسک پاپ کے مل (گند) سے چھوٹ کر سونے کی طرح کُندن بنتا چلا جاتا ہے اور ہو جاتا ہے، سوبھاگیہ شالی اور ایشوریہ وان۔

मंत्र ६० सौभाग्य दाता अधीश्वर

यह सब जगत के अगुवा प्रकाश स्वरूप उत्तमवीर्यबल सामर्थ्य का प्रेरणादाता, धर्म यश कीर्ति आदि अध्यात्म ऐश्वर्यों का अधीश्वर हैं। उन सम्पत्तियों का भी स्वामी है जिनसे हमारी सन्तानें उत्तम होती हैं। और हमारी इन्द्रियां प्रशस्त होती हैं। हमारे गौ आदि पशु भी उत्तम होते हैं। और प्रभु पापों के नाश करने वाले साधनों का भी ईश्वर है इस लिए उसकी भक्ति योग, ध्यान आदि करने से उसके उत्तम गुण कर्म स्वभाव स्वयमेव उपासक के अंदर प्रविष्ट होकर उसके पाप मल को जला कर उसे स्वर्ण समानकुंदन कर देते हैं जिससे भक्त ऐश्वर्यवान सौंभाग्यशाली हो जाता है।

منتر نمبر ۶۱ — **شریر، گھر اور برہمانڈ کے سوامی** — کھنڈ ۶

१२ ३१२३१र २र ३२
त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं होता नो अध्वरे।
१र २र ३१२३
त्वं पोता विश्ववार प्रचेता
२३ १२ ३१२
यक्षि यासि च वार्यम् ॥७॥

(اگنے) جگت کے نیتا پرماتمن! (توم گرہ پتی) آپ ہمارے شریروں، گھروں اور برہمانڈ کے سوامی ادھی پتی پالک اور رکھشک ہیں (نہ ادھورے) ہمارے ہنسا رہت اُپاسنا پروپکار وغیرہ یگیہ کرموں میں (ہوتا) شکتی بل اور وسائل دینے والے ہیں (وشو وار) سب کے

لئے ورن کرنے یوگیہ اور سب کا دُکھوں کا وارن کرنے والے ایشور! (توم پوتا) آپ پوتر کرنے والے تھا (پرچیتا) اُتم متی بُدھی پریرنا کے داتا اننت گیان وان ہیں، (واریم) ورن یعنی گرہن کرنے یوگیہ سدگنوں کو (کھشی) ہمیں دیجئے۔ (یا سی چہ) کیوں کہ آپ اُتم گنوں کے بھنڈار ہیں۔

اُس پربھو کی شرن میں جانے سے ہی ہم دُکھوں سے چھوٹ کر سکھوں کا گھوارہ بن سکتے ہیں۔

मंत्र ६१ शरीर घर और ब्रहमांड का स्वामी

हे जगन्नाथ परमेश्वर ! आप हमारे शरीर, घर और ब्रह्माण्ड के स्वामी अधिपति पालक तथा रक्षक हैं। हमारे हिन्सा रहित उपासना यज्ञ में (त्वम् होता) आपशक्ति प्रदाता हैं। हे सब कलेशों का वारण निवारण करने वाले सब के लिए वरण करने योग्य प्रभो ! आप पवित्र करने वाले सर्वोत्तम ज्ञानवान उत्तम मति बुद्धि एवं प्रेरणा देने वाले हैं। वरण करने योग्य सद गुणों को हमें दीजिये। क्योंकि आप सद्गुणों के भँडार हो।

منتر نمبر ۶۲ آپ کے سکھا بن کر نش پاپ ہو جائیں کھنڈ ۲

सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्त्तास ऊतये ।
अपां नपातं सुभगं सुदंससं
सुप्रतूर्तिमनेहसम् ॥८॥[१।६]

(مرتاسہ) ہم مرن دھرما اُپاسک (جن کے شریروں نے ایک دن مر جانا ہی ہے) (سکھایہ) آپ کے سکھا بن کر (ایسے متر دوست جن میں آپ کے سبھی گن آجائیں) (اُوتیے) اپنی رکھشا کے لئے (توا دیوم) دویہ گنوں والے آپ کا (ووری مہے) ورن کرتے ہیں، اپنے میں دھارن کرتے ہیں (اپام نہ پاتم) آپ ہمیں ست کرموں سے گرنے نہیں دیتے (سُوبھگم) اور اُتم

ایشوریوں کے سوامی ہیں (سُو دند سبسم) شبھ کرموں کے کرتا ہیں (سُو پرتُورِیم) بڑی اچھی طرح سے پاپوں کا ناش کر دینے والے ہیں اور (انے ہسم) نش پاپ ہیں۔ اُس آپ کا ہم ورن کر کے سدا کے لئے نش پاپ ہو جائیں اور سُکھی ہوں۔ یہی ایک کامنا ہے۔

(چھٹی دشتی یا کھنڈ سماپت)

मंत्र ६२ आप के सखा बन कर निष्पाप हो जायें

हम मरण धर्मा उपासक आपके सखा बन कर अपनी रक्षा के लिए दिव्य गुणों वाले आपका वरण करते हैं अपने में धारणा करते हैं। आप जो कि हमें सत्कर्मों से पतित नहीं होने देते। आप उत्तम ऐश्वर्यों के स्वामी हैं। शुभकर्मा है। पापों के सर्वोत्तम नाशक हैं। और स्वयं निष्पाप हैं। उस आपका हम वरण करके सदा के लिए निष्पाप हो जायें। यही एक कामना है। (छटी दशति समाप्त)

منتر نمبر ۶۳ اپنے کو اُس کے حوالے کر دو! کھنڈ ۷

१ २ ३ १ २ ३
आ जुह्वोता हविषा मर्जयध्वं
१र २र ३ १ २
नि होतारं गृहपतिं दधिध्वम् ।
३ २ ३ १र २र ३ १ २
इडस्पदे नमसा रातहव्यं
३ १ २ ३ २ ३क २र
सपर्यता यजतं पस्त्यानाम् ॥१॥

ہے اُپاسک منشیو (ہوِشا آ جُہوتی) بھگوان کے پرتی آتم سمرپن کی آہُوتیاں دو۔ اپنے آپ کو اُس کے حوالے کر دو (مرجیدھُوم) اپنے شریر اور آتما کو شُدھ پوتر رکھو (ہوتارم گرہ پتیم ندھدھوم) سب جیوؤں کا داتا ہمارے گھروں اور برہمانڈ رُوپی گھر کے سوامی مالکِ کُل کو اپنے آتما میں لگاتار دھارن کئے رکھو۔ (اِڈسپدے) شُتتی پرارتھنا اور شردھا کے مقام ہردیہ مندر کے آسن پر (نمسا) بیٹھا ہوئے اُسے مان کر نمسکاروں کے ذریعے (رات ہوّیم) سب بھوگ پدارتھوں کے دینے والے کی (سپرّیت) پُوجا کرو۔ جو داتا کہ (یجتم پستیانام) سب پرجاؤں کا پوجنیہ سنگتی

اور شرن لینے یوگیہ ہے ۔
وہی جگت کا ایک آدھار ہے ۔ اُسی کو ہمارا نمسکار ہے

मंत्र 63 अपने आपको उसके हवाले कर दो

हे उपासक मनुष्यों ! भगवान के प्रति आत्म समर्पण की आहुतियां दो । अपने आपको उसके हवाले कर दो । अपने शरीर और आत्मा को सदा शुद्ध रखो । सब के दाता, हमारे घरों और ब्रह्माण्ड रूपी घर के स्वामी को अपने आत्मा में निरंतर धारण किये रखो । स्तुति प्रार्थना एवं श्रद्धा के स्थान हृदय मंदिर के आसन पर उसे विराजमान मान नमस्कारों के द्वारा, अन्न भोग पदार्थों के दाता की पूजा करो जो सब का पूज्य और शरण लेने योग्य है । वह ही जगत का इक आधार है । उसी को हमारा नमस्कार है ॥

منتر نمبر ۶۴ **دھن دھن تیری کاریگری کرتار** کھنڈ ۷

३२उ ३ १ २ ३ २ ३
चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य वक्षथो
२उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
न यो मातरावन्वेति धातवे ।
३ १र २र ३ १ २ ३ २
अनूधा यदजीजनदधा चिदा
३ १ २ ३ १र २र ३ २ १ २
ववक्षत् सद्यो महि दूत्यां३ चरन् ॥२॥

(شِشو) بالک کے سمان راگ دویش رہت قابلِ تعریف (ترُونسیہ) ہمیشہ جوان رہنے والے پرماتما کا (وکشتھ) سارے جہان کے انتظام کے بھار کو سنبھالنے والے (چِتر اِت) جس کے کاریہ ایک دم حیران کر دینے والے اور ادبھُت ہیں۔ جو (دھاتوے) دودھ پینے یا کسی پرکار کے پالن پوشن کے لئے (ماترَو نہ ان ویتی) ماتا پتا کی گود میں منش رُوپ میں جنم نہیں لیتا۔ (انودھا) یہ پرکرتی اور اس کا کاریہ جگت (یت) جب (اجو جنت) پرماتما کو پرگٹ کرتا ہے '(کہ یہ ہے وہ پرماتما جس نے سُورج چاند زمین اور ستاروں بھرا آسمان بنانا وغیرہ) (ادھا) تب (چِت) یہ پرماتما (ہی دوُتیم چرن) مہان دُوت کرم کرتا ہوا (آووکشت)

سب طرف وِشال سنسار کا پربندھ چلاتا ہوا دکھائی دیتا ہے۔ معلوم ہوتا ہے۔ جیسے دُوت سب جگہ پہنچ کر سب کو پیغام پہنچاتا ہے، ایسے ہی پرمیشور اگنی، سُورج ہوا اور ورشا (بارش) وغیرہ کے دوارہ آتماؤں میں بیٹھے ہوئے بھی دُوت کرم یعنی پیغام رسانی کرتا رہتا ہے۔ ـــ دھن دھن تیری کاریگری کرتار

मंत्र 64 धन धन तेरी कारीगरी करतार

बालक के समान राग द्वेष से रहित, सदा युवा परमात्मा का, सम्पूर्ण विश्व पर नियन्त्रणा है, जिस के कार्य अत्यन्त आश्चर्यजनक है वह माता की गोद में जन्म नहीं लेता । प्रकृति और उसका कार्य जगत जब उसको प्रगट करता है कि यह है वह परमात्मा जिसने सूर्य चांद और नक्षत्रों से चमकता हुआ द्युलोक बनाया है तब वह महान दूत कर्म करता हुआ सब ओर विशाल जगत का प्रबन्ध चलाता हुआ प्रतीत होता है । जैसे दूत सब जगहै संदेश वहन करता जाता है, ऐसे ही परमेश्वर अग्नि सूर्य वायु और वर्षा आदि के द्वारा सब की आत्माओं में बैठे हुए इस दूत कर्म को करता रहता है । —धन धन तेरी कारीगरी करतार—

منتر نمبر ۶۵ **تین جیوتیوں کی پوترتا سے پرم آنند** کھنڈ ۷

इदं त एकं पर ऊ त एकं
तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व ।
संवेशनस्तन्वे३ चारुरेधि
प्रियो देवानां परमे जनित्रे ॥३॥

ہے جگیاسُو! (اِدم) گیان اِندریاں (تے ایکم) تیری ایک جیوتی ہے (پرا) اس سے آگے اور سریشٹھ (تے ایکم) تیری ایک اور من رُوپی جیوتی ہے، پھر سمادھی اوستھا (کیسُوئی) ہیں، تو (ترتین جیوتی شا) اپنی تیسری جیوتی آتما کے دوارہ (سم وِشسو) پرماتم جیوتی ایشور میں بھلی پرکار پرویش کر (پرمے جنترے) جگت کے پیدا کرنے والے ایشور میں (سم ویشنہ) اچھی

طرح سے ملا ہوا تو ہے۔ موکھش چاہنے والے پیارے جگیاسو! (تنو سے) سروویاپک پرماتما کی پراپتی کے لئے (چارو ردھی) اس کا پیارا بن اور (دیوانام پریہ) دیووں، گیانی مہاتما ودوانوں کا بھی پریہ ہو۔

ہے مانو! (۱) جب تیری گیان اندریاں پوتر ہوں، (۲) من ستیہ سے شدھ پوتر ہو، اور آتما بھگوان کے دھیان میں مگن ہو جائے گا۔ تب تجھے پرم آنند کی پراپتی ہوگی۔

मंत्र 65 तीन ज्योतियों की पवित्रता से परम आनंद

हे मोक्ष चाहने वाले जिज्ञासु ! यह ज्ञान इन्द्रियां तेरी इक ज्योति है। इससे आगे श्रेष्ठ मन रूपी तेरी दूसरी ज्योति है। फिर समाधि अवस्था में तू अपनी तीसरी ज्योति आत्मा के द्वारा परमात्म ज्योति परमेश्वर में भली प्रकार से प्रवेश कर। जगदीश्वर पिता में अच्छी प्रकार से जुड़ा हुआ तू प्यारे उपासक सर्वव्यापक परमात्मा की प्राप्ति के लिए उसका प्यारा बन और देव ज्ञानी महात्माओं का भी प्रिय हो।

کھنڈ ۷ — منتر نمبر ۶۶

بھگوان کا سکھا نشٹ نہیں ہوتا

३२उ ३ १ २ ३ १ २ ३
इमं स्तोममर्हते जातवेदसे
१ २ ३ १ २ ३ १ २
रथमिव सं महेमा मनीषया ।
३२उ ३ १ २ ३१र २र
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने
३ १र २र ३१र २र
सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥४॥

لفظی معنی:۔ (اِمم ستومم) ستتی کے سام منتروں کا گان اور حمد و ثنا کرنے کا اُپاسک لوگ (منی شیا) بدھی پُوروک پوترتا سے (سم میہم) مِل کر اُتم ریتی سے نرمان کرتے ہیں، (رتھم اِو) جیسے کہ رتھ کا نرمان کیا جاتا ہے اور اُسے (ارہتے جات ویدسے) وید پر کاشک پرمیشور کی بھینٹ کرتے ہیں (اسیہ) اس پرماتما کے (سمسدی) ست سنگ

سے (نہ) ہماری (پرمتی) متی اُتم (بھدرا) سکھدائی اور کلیان کارنی ہو جاتی ہے' (ہی) یہ نسچت ہے' (اگنے) ہے جیوتی سوروپ پربھو! (توَ) (तव) آپ کی (سکھیئے) مترتا میں (ویم) ہم (ما رِشام) نشٹ نہیں ہوں گے۔

मंत्र 66 भगवान का सखा नष्ट नहीं होता

स्तुति के साम मंत्रों का गान करने वाले हम उपासक लोग कीर्तिगान करते हैं। और उसे वेद-प्रकाशक परमेश्वर की भेंट करते है। परमात्मा के सत्संग से हमारी मति उत्तम भद्र और कल्याण-कारिणी हो जाती है। यह निश्चित है।

منتر نمبر ۶۷ **قابلِ احترام مہمان** کھنڈ ۷

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या
वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्।
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्नः
पात्रं जनयन्त देवाः ॥५॥

(مُوردھانم دِوہ) دیّولوک کے بھی اُوپر سر کے سمان (پرتھویا ارتم) پرتھوی کے اور نچلے حصے کے بھی سوامی (ویشوانرم) سب نر ناریوں کے ایک مارتنیتا (رتے آجاتم) ستیہ نشٹھ اُپاسک میں پرگٹ ہونے والے (کوِم कविम) وید مہا کاویہ کے کوی (سمراجم) جگت کے سمراٹ' شہنشاہوں کے شہنشاہ (جنانام اتتھِم) سب جنوں کے پُوجیہ اتتھی (نہ پاترم) ہمارے پُوجا کے ست پاتر پالک اور رکھشک (اگنم) اگنی پربھو کو (دیوا) دیوگن (آسن) سکھ مکت بانیوں سے (جنینت) سب لوگوں کے لئے پرگٹ کرتے ہیں۔ اُپدیش رُوپ میں اُس کا گیان دیتے ہیں۔

मंत्र 67 **पूजनीय अतिथि**

द्यु लोक के भी ऊपर शिरो समान पृथिवी के ऊंच से भी ऊंचे नीचे से भी नीचे के स्वामी सब नर नारियों के एक मात्र नेता, सत्य निष्ठ उपासक में प्रगट होने वाले वेद महा काव्य के रचयिता अनादि कवि, जगत के सम्राट सब जनों के पूजनीय अतिथि हमारी पूजा के सत्पात्र, पालक रक्षक अग्नि देव का कीर्तन करते हैं।

کھنڈ ۷ منتر نمبر ۶۸

آپ کی پریرنا سے ہی کام کرودھ وغیرہ پر فتح حاصل ہوتی ہے!

२उ ३ १र २र
वि त्वदापो न पर्वतस्य
३ २ ३ १ २ ३ २
पृष्ठादुक्थेभिरग्ने जनयन्त देवाः ।
२ ३ १२ ३ १ २ ३ १र
तं त्वा गिरः सुष्टुतयो वाजयन्त्याजिं
२र ३ १ २ ३ १ २
न गिर्ववाहो जिग्युरश्वाः ॥६॥

(   ) جیسے پراکرتک سُوریہ اگنی، وایُو آدی دیو (پروتسیہ پرشٹھات) میگھ بادل پہاڑوں کی پیٹھ سے (آپہ وِجنیت) جلوں کی دھاراؤں کو پرگٹ کر کے بہاتی ہیں ویسے اگنے ہے جیوتر مئے پربھو! اُپاسک دیو (توّت) آپ سے پرگٹ ہوئے یا گیان پراپت کئے ہوئے (اُکتھے بھی) ویدک سُوکتوں دوارہ آپ کو ہی پرگٹ کرتے ہیں (سشٹُوتیہ گرا) اُتم سُتتی روپ وید بانیاں (تم توا) اُس آپ کو (واجینتی) بل دیتی ہے (ناگِر وواہو) جیسے کہ اپنی آواز کے اشارے سے گھوڑ سوار گھوڑوں کو بل دائک پریرنا دیتے ہیں جس سے وہ (اشواہ آجم جگیو) گھوڑے یُدھ کو جیت لیتے ہیں (نا) اسی پرکار آپ کے اُپاسک (عابد) لوگ کام کرودھ وغیرہ پر فتح حاصل کر لیتے ہیں۔

मंत्र 68 **आपकी प्रेरणा से ही कामादि पर विजय**

जैसे प्राकृकि सूर्य अग्नि वायु आदि देव मेघ और पर्वतों की पीठ से जलों की धारा वर्षा के रूप में बहाते हैं, वैसे हे ज्योतिर्मय

अग्ने ईश्वर उपासक देव ! आप से ही ज्ञान प्राप्त किये हुए वैदिक सूक्तों द्वारा आप को ही प्रगट करते है। उत्तम स्तुति रूप वेद वाणियां आपको ही फैलाती है।

منتر نمبر ۶۹ کھنڈ ۷

مرتیوُ سے پہلے اپنی رکھشا کے لئے ایشور کو اپنا بنا لو!

२ ३ १ २ ३१ २ ३१र
आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं
२र ३ २ ३ १ २
होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।
३ २ ३ १ २ ३ २३ २ ३
अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ता-
१ २ ३ १ २
द्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम् ॥७॥

ہے اُپاسکو پربھوُ بھگتو! ہم سب کے (ادھورسیہ) ہنسا رہت ادھیاتمک یگیوں (رُوحانی ریاضتوں) کے رکھشک راجاؤں کے راجہ (رُدرم) پاپیوں کو رُلانے والے (ہوتارم) سب کو کرموں کا پھل دینے والے (رودسیو) پرتھوی اور دیولوک (زمین اور آسمان) پر (ستیہ یجم) ستیہ کا راج کرنے والے (ہرنیہ رُوپم) اتینت جیوترمئے رمنیک رُوپ والے سب کے ہت کاری (اگنی) پرکاش مان پرمیشور کو (رچی نات) پران ہر لینے والی (تن یتی نو) گھنگھور گرجنا کرنے والی بجلی کی طرح ایک دم آ پڑنے والی موت سے (پرُا) پہلے ہی (اوسے) اپنی رکھشا کے لئے (آکرنودھوم) اپنے ابھی مُکھ کر لو۔ اپنا بنا لو۔

मंत्र 69 मृत्यु से छूटने के लिये प्रभु की आत्मयिता

उपासक प्रभु भक्ता ! हम सब के हिंसा रहित अध्यात्मिक यज्ञों के रक्षक राजाओं के महाराज अधिराज, पापियों को रुलाने वाले, सब कर्मों का फल देने वाले पृथ्वी और द्यौलोक पर सत्य का राज करने वाले, अत्यन्त ज्योतिर्मय रमणीक एवं सर्वहितकारी प्रकाशमान परमेश्वर को, प्राण हर लेने वाली मृत्यु से पहले ही अपना बना लो।

منتر نمبر ۷ — کھنڈ ۷

ہَون کی آہُوتیاں پرماتما کے اَرپن ہیں!

३२उ ३ २३१र २र ३२ ३
इन्धे राजा समर्यो नमोभिर्यस्य
१ २ ३ १ २ ३:१२
प्रतीकमाहुतं घृतेन ।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३
नरो हव्येभिरीडते सबाध
१र २र३१ २
आग्निरग्रमुषसामशोचि ॥८॥

(راجہ) جگت کا راجہ سب کا سوامی (منو بھی) نمر بھاؤ، انکساری، عاجزی اور نمسکاروں دوارہ (سم اِندھے) اچھی پرکار سے پرکاشت ہوتا ہے۔ (لیسیہ) جیس راجاؤں کے راجہ کی (پرتیک) سورُوپ چینہہ (اگنی) پرتھوی کی پرسدّھ آگ (گھرتین آہُوتم) گھرت وغیرہ سگندھت پدارتھوں کی آہوتی کو پراپت کرتی ہے (سبادھ) دکھ، بادھاؤں، کشٹ، کلیشوں سے دُکھی ہوئے نرناری (ہویّبھی) ان بھوتک آہُوتیوں اور اپنے آتما کو اُس پربھُو کے سمرپن کرتے ہوئے (ایڈتے) اُس مہاراجہ بھگوان کی پُوجا، سنکار، آگیا پالن رُوپ بھکتی کرتے ہیں، (اگنی) وہ روشنی کا مینار پرکاش روپ پربھُو (اُشسام اگرم) اُوشا کال سے پہلے یعنی برہم مہورت میں (اشوچی) اپنے بھگتوں کے ہردیہ میں چمک اُٹھتا ہے

اگنی بھگوان کی پرتیک :- ہون کی اگنی میں ڈالی ہوئی آہُوتیاں بھگوان کی بھینٹ کرتے ہوئے، اندر کی آتما کی آہُوتیاں برہم اگنی میں ایشور ارپن کرنے سے ہی پرماتما دیوا نتر آتما میں چمک اُٹھتے ہیں۔ باہر کی اگنی اور آتما کے اندر پرماتم اگنی دونوں اس کی جیوتیاں ہیں، پرتیک ہیں۔ ایسا سمجھنا چاہیئے۔

मंत्र 70 हवन की आहुतियां ईश्वर अर्पण

जगत का राजा सब का स्वामी, जिस भाव और नमस्कारों द्वारा अच्छी प्रकार से प्रकाशित होता है। जिस का प्रतीक अग्नि है। यह प्रसिद्ध पार्थिव अग्नि घृत आदि सुगंधित पदार्थों की आहुति को प्राप्त करती है। विघ्न बाधाओं कष्ट कलेशों से दुखी हुए नर नारी इन आहुतियां और अपने आत्मा को प्रभ के समर्पण करते हुए पूजा करते हैं।

منتر نمبر ۷۰ ہردیہ میں بیٹھا ہوا بھگوان کھنڈ ۷

بار بار راہِ راست کی طرف چلنے کی آواز دیتا رہتا ہے!

२ ३१२ ३१ २ ३१र
प्र केतुना बृहता यात्यग्निरा
२र ३१२
रोदसी वृषभो रोरवीति।
३२ ३१ २ ३१र १र
दिवश्चिदन्तादुपमामुदान-
३२३१ २ ३१ २
डपामुपस्थे महिषो ववर्ध ॥६॥

(برہتا کیتونا) مہان پرکاش کے ساتھ (اگنی) جگت نیتا پرمیشور (پریاتی) سمادھی اوستھا میں اُپاسک کی طرف آجاتا ہے اور (رودسی) دیُو اور پرتھوی کے درمیان تمام لوک لوکانتروں کا پربندھ کرتا ہوا بھی اُپاسک کے سر سے پیر کے ناخن تک (ورشبھ) آنند رس بہاتا ہوا (آیاتی) بھگت کو حاصل ہو جاتا ہے (روروِیتی) اور بار بار اُپاسک کو ستیہ مارگ کا اُپدیش دیتا رہتا ہے (دوِہ چِیت انتات) دیُولوک کے انت تک پہنچا ہوا بھی (اُپ اُدانٹ) اتی نکٹ ہردیہ ولیش میں ہی پرکاشت ہوتا ہے، (مہیشہ) وہ مہادیو پربھو (اپام ووردھ) ہردیہ میں دھیان کرنے سے بڑھتا ہے۔ پرگٹ ہوتا ہے۔

मंत्र 71 आन्तर्यामी परमेश्वर की प्रेरणा

महान प्रकाश के साथ जगन्नाथ परमेश्वर समाधि अवस्था में उपासक की ओर आ जाता है। द्यौ और पृथ्वी के मध्य सम्पूर्ण लोक लोकान्तरों का प्रबन्ध करता हुआ भी उपासक के अन्दर सदा आनंद रस भरता और सन्माग देता रहता है।

منتر نمبر ۷۲ — کھنڈ ۷

اپنے آتما کو اوم نام کی
ارنی سے رگڑتے ہوئے اُسے پرگٹ کرو

अग्निं नरो दीधितिभिररण्यो-
र्हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम् ।
दूरेदृशं गृहपतिमथव्युम् ॥१०॥[१७]

(نرٖ) ہے اُپاسک شرومنی بدھیمان منشیو! (ہست چیتم) جو بِنا ہاتھوں کے نرآکار ہے (پرشستم) ویدآدی ست شاستروں میں جس کی اننت مہما کا ورنن ہے (دُورے درِشم) جو دُور سے دُور بھی دیکھ سکتا ہے (گرہ پتم) برہمانڈ روپی گھر کا مالک کُل (اتھ ویُم) سب جگہ گتی کرنے والے (اگنم) روشنی کے منبع پرمیشور کو (دِیدھتی بھی دھیان سمادھی دوارہ (ارنیو) شریر اور پرنو نام اوم کی نیچے اوپر کی دوارنیوں سے (جن یت) اُسے پرگٹ کرو۔

ارتھات :- اوم نام کی ارنی کو شریر رُوپی ارنی سے بار بار گھساتے ہوئے اِس دھیان کی مشق کی منتھنی سے دونوں کو ولوڑتے ہوئے پربھو آنند رُوپ ماکھن نکال کر اپنے آپ کو ترپت کرو۔

(ساتویں دشتی سماپت)

मंत्र 72 आत्मा को ओम् नाम की अरणी से रगड़ो

हे उपासक शिरोणी मनुष्यों ! जो बिना हाथों आदि के निराकार है। वेदादि सत्शास्त्रों में जिसकी अनन्त महिमा का वर्णन है जो दूर से भी दूर देख सकता है ब्रह्मण्ड रूपी धर का स्वामी, सब ओर जो गतिमान प्रकाश का स्रोत है। उस परमेश्वर को ध्यान योग द्वारा शरीर और प्रणव नाम ओम् की नीचे ऊपर की दो अरणियों से मथ कर प्रगट करो और आनंद को प्राप्त होवो

منتر نمبر ۷۳ **آتما کو پرماتم اگنی سے منوّر کریں** کھنڈ ۸

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३
अबोध्यग्निः समिधा जनानां
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
प्रति धेनुमिवायतीमुपासम् ।
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३
यह्वा इव प्र वयामुज्जिहानाः
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
प्र भानवः सस्रते नाकमच्छ ॥१॥

جیسے (دھینُوم) پراتہ کال اُتم گائے دُودھ کی دھاراؤں کے ساتھ کرتی ہے، ویسے روشنی کی کرنوں یا دھاراؤں کے ساتھ (آیہ تیتم اُشاسم) آئی ہوئی اُوشا کو دیکھ کر (جنا نام) اُپاسکوں کی (سمدھا) آتم سمرپن رُوپی سمدھاؤں کے ذریعے (اگنی ابودھی) پرماتم اگنی ہردیوں میں جاگ جاتی ہے، جب کہ (یہوّا اِو) بڑے بڑے وشال برکھش جیسے (ویام) اپنی شاکھاؤں کو (پراُجی ہانہ) آسمان کی طرف اوپر کو پھینکتے ہیں۔ ویسے اُوشا کی (بھان وہ) چمکتی ہوئی کرنیں (ناکم اچھ) دیو لوک کی طرف (پرسسرتے) اپنا پھیلاؤ کر رہی ہوتی ہیں۔
آتما کو سمدھا (ہون کی آگ میں جلانے والی پوِتر لکڑی) بنا کر اپنے آپ کو اس الیشوریہ اگنی (مقدّس آگ) میں جلا کر روشن کر لو۔ پھر سارا ہردیہ ویسے پرکاش سے پُورن ہو جائے گا۔ جیسے اُبھرتے ہوئے سُوریہ کی کرنوں سے سارا آسمان روشن ہو جاتا ہے۔

मंत्र ७३ आत्मा को परमात्म अग्नि से प्रकाशित करें

जैसे प्रातः काल दुधारू गौ दूध की धाराओं से ओत प्रोत आती है

वैसे प्रकाश धाराओं के साथ आती हुई उषा को देखकर उपासकों की आत्म समर्पण रूपी समिधाओं के द्वारा परमात्म अग्नि हृदय में जाग उठती है। जब कि बड़े बड़े विशाल बृक्ष जैसे अपनी शाखाओं को आकाश की ओर ऊपर फैंकते हैं, वैसे उषा की चमकती हुई किरणों द्यौ लोक की ओर अपना फैलाओ करती जाती हैं।

—आत्मा को समिधा (हवन की आग में जलाने वाली) बना कर अपने अन्तर्यामी ब्रह्म की अग्नि में जलाकर ज्योतिर्मान कर लो, जिससे हृदय प्रकाश से पूर्ण हो जाए जैसे उदयमान ऊषा की किरणों से आकाश परिपूर्ण हो जाता है।

منتر نمبر ۷۴ پربھو کو ہردیہ میں دھارن کرکے شکتی شالی بنو! کھنڈ ۸

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
प्र भूर्जयन्तं महां विपोधां
३१र २र ३ २ ३ १ २
मूरैरमूरं पुरां दर्माणम् ।
१ २ ३ २ ३ १र २र ३
नयन्तं गीर्भिर्वना धियं धा
१ २ ३ १र २र ३ २
हरिश्मश्रुं न वर्मणा धनर्चिम् ॥ २ ॥

(جینتم) سب پر وجے کرنے والے (مہام) سب سے مہان (وِپو دھام) میدھاوی بُدھیمانوں کے پالک (مُوری رموُرم) درڑھ اگیانی بھی جس کو پُوجتے ہیں (پُرام درمانم) شاریرک جنموں کا وناش کر آتما کو مکتی دِلانے والے (دھیّم نینتم) ہماری بُدھیوں کو ستیہ مارگ پر چلانے والے (گِربھی ونام) وید بانیوں دوارہ بھجن کرنے یوگیہ (ہری شمشرُومن) سُوریہ کے سمان پرکاش مان (ورمنا) ویدروپی کوچ سے رکھشا کرکے (دھنرچم) ادھیاتمک دھنوں کے داتا پربھو کو، ہے اُپاسک! تُو ہردیہ میں (دھا) دھارن کر اور شکتی شالی بن!

मंत्र ७४ प्रभु को हृदय में धारण कर शक्तिशाली बनें

सब पर विजय करने वाले, सब से महान, मेधावी बुद्धिमानों के के पालक, मूढ़ अज्ञानी भी जिसे पूजते हैं, शारीरक जन्मों से छुड़ा कर आत्मा को मुक्ति दिलाने वाले, हमारी बुद्धियों को सत्य मार्ग पर चलाने

वाले, वेद वाणियों द्वारा भजन करने योग्य सहस्त्रों सूर्यो के समान प्रकाशमान, वेदरूपी कवच से रक्षा करके अध्यात्मिक धनों के दाता परमेश्वर को हे उपासक ! तू हृदय में धारण कर और शक्तिशाली हो।

منتر نمبر ۷۵ آپ کا دِیا دان سب کیلئے سُکھدائیک ہو ! کھنڈ ۸

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र
शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्
२र ३ १ २ ३ १ २
विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि ।
२ ३ २ ३ १र २र
विश्वा हि माया अवसि स्वधावन्
३ १ २ ३ २ ३ १.२
भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु ॥३॥

ہے پربھُو ! (تے شُکرم انیئت) آپ کا شُدھ شُبھ تیج سورُوپ ایک ہے - اور (یجیتم تے انیت) سنسار کو چلانے والا یگیہ مئے رُوپ دوسرا ہے ۔ (وِشورُوپے) یہ دونوں آپس میں مختلف متضاد ہیں (اہنی) جیسے کہ دن رات مختلف شکلوں میں ہیں ۔ تو بھی آپ (دئیں او) سُوریہ کے سمان ہمیشہ منّور رہتے ہیں (سودھادان) ہے اپنی ستا والے! آپ ہی (وِشو مایا) سب ہی گیان وگیان اور سرشٹی کے (اَوَسی) رکھشک پالک ہیں ۔ (پُوشن) ہے پُشٹی دینے والے (ایہہ) اِس سنسار میں (تے) آپ کا (راتی) دیا ہوا دان، بھوگ سمپدائیں وغیرہ (بھدرا اَستو) سب کے لئے کلیان کاری ہوویں ۔

मंत्र ७५ आपका दिया दान सब के लिए कल्याण कारी हो ।

हे प्रभो ! आपका शुद्ध शुभ्र तेज स्वरूप एक है और सृष्टि को चलाने वाला यज्ञ रूप दूसरा है यह दोनो विशु रूप परस्पर विरोधी दिन और रात के समान विषम रूप वाले हैं तो भी आप सूर्य समान सदा ज्योतिर्मान रहते हैं। आप अपनी सत्ता से ही मायावी सृष्टि को ज्ञान विज्ञान से संचालित करते हुए रक्षा कर रहें हैं। हे पोषक परमेश्वर ! इस संसार में आपके दान भोग सम्पदाएँ सब के लिए कल्याणकारी हों।

منتر نمبر ۷۹   **ست کرموں کو پھیلانے والے پُتر پُتریاں**   کھنڈ ۸

१ २   ३ १ २   ३ १ र
इडामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः
२र   ३ १ र   २र
शश्वत्तमं हवमानाय साध ।
१ २   ३ १ र   २ र   ३ २ उ   ३
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने
१ २   ३ १ २ ३ २
सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे   ॥४॥

(اگنے) ہے پرکاشمان جگت کے نیتا (اِڈام) میری سُتتی پرارتھنا بانی کو (پُرُودمسم) اپنے انوروپ مہاکرم کرنے والی (سادھ) بنادو (گوسنم) ویدبانیوں کے اُپدیشوں کا داتا (سادھ) بناویں (ہوَمانائے) آپ کے لیے اپنے آتما کی آہُوتی دینے والے مجھ عابد کے لیے (شِشتوت تمم) شاشوت موکھش کو سِدھ کرو (نہ) ہمارے (سُونُو) پُتر پُتریاں (ستنیہ) ست کرموں کو پھیلانے والے (سیات) ہوں اور (وِجاوا) وِجے شیل ہوں۔ ویدوں کے ذریعے اُپدیش کی ہوئی (تے ساسُومتی) آپ کی سُومتی ہر سمے (ستمے) ہمیں سدا پراپت رہے۔

دھرم شیل سنتان ہو جس سے سب کو سُکھ خوشحالی ہو
دیو تمہاری پیاری بانی شُبھ متی دینے والی ہو

मंत्र ७६   सत्कर्मों को फैलाने वाले पुत्र पुत्रियां

हे जगत के नाथ ! मेरी स्तुति प्रार्थना की वाणी अपने अनुरूप महाकर्म करने वाली बना दीजिए । आपकी वेद वाणी के द्वारा चिरकाल तक विद्या का प्रसार करते रहें । अपनी आत्मा की आहूति आप के समर्पण करने वाले मुझ उपासक के लिए शाश्वत मोक्ष को सिद्ध कर दीजिये । हमारे पुत्र पुत्रियां सत्य विद्या का विस्तार करने वाले सदैव जयशील हों । वेदों द्वारा उपदिष्ट आपकी सुमति हमें सदा प्राप्त रहे ।

धर्मशील सन्तान हो   जिस से सब को सुख खुशहाली हो ।
देव तुम्हारी   प्यारी वाणी शुभ   मति देने वाली हो ।

منتر نمبر ۷۷ — شریروں کا رکھشک اور دھنوں کا ودھاتا — کھنڈ ۸

१२ २२ ३ २ ३ १ २ ३
प्र होता जातो महान्नभो-
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
विन्नृषद्मा सीददपां विवर्ते ।
२ ३ २ ३ २ ३१२ २२
दधद्यो धायी सुते वयांसि
३ १२ २२ ३ १ २ ३ २
यन्ता वसूनि विधते तनूपाः ॥५॥

(ہوتا) سب کا داتا پربھو (پرجاتہ) مجھ میں پرگٹ ہو گیا ہے وہ (مہان نبھووِت) آکاش کے سمان مہان اور سب جگہ موجود ہے (نرِشدما) سب نر ناریوں میں انتریامی ہو کر بیٹھا ہے (دپام وِورتے) شاریرک نس ناڑیوں کے بہتے ہوئے پرواہوں میں بھی (سیدت) چل رہا ہے (یہ دھائی) جو وِدھاتا (سُتے) ہماری سنتانوں کو (ویانسی دَدھت) دیرگھ جیون دیتا ہے وہ (ینتا) سب کو وَش میں رکھنے والا ہے اور (وسُونی وِدھتے) دھنوں کا وِدھان کر رہا ہے اور (تنُوپا) ہمارے شریروں کا رکھشک ہے۔

مہان اگنی ہوتا بن کر نبھ منڈل میں ہے ویاپ رہا
جَن جیون کے کَن کَن میں بیٹھا وہ سب کو بھانپ رہا
نَس ناڑی کے بہتے رکت میں ساتھ ساتھ وہ چلتا ہے
جیون دیتا آیُو دیتا سب کو دھن سے بھرتا ہے

मंत्र ७७ — शरीरों का रक्षक, धनों का विधाता

सब का दाता मुझ में प्रगट हो गया है। आकाश से भी महान वह सब जगह व्याप्त है। सब नर नारियों में अन्तर्यामी रूप से विराजमान हैं। शरीर की नस नाड़ियों में भी रक्त प्रवाह के साथ रम रहा है। यह विधाता हमारी सन्तानों को दीर्घ जीवन देता है। सब को वश में रखते हुए सब के लिए धनों का विधान कर रहा है और शरीरों

का रक्षक हैं।

महान अग्नि होता बन कर नभ मण्डल में है व्याप रहा।
जन जीवत के कण कण में बैठा वह सबको भांप रहा॥
नस नाड़ी के बहते रक्त में साथ साथ वह चलता है।
जीवन देता आयु देता सब को घन से भरता है।

منتر نمبر ۷۸ ہماری وَندنا کا پاتر کھنڈ ۸

प्र सम्राजमसुरस्य प्रशस्तं
पुंसः कृष्टीनामनुमाद्यस्य।
इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि
वन्दद्वारा वन्दमाना विवष्टु ॥६॥

(توَسَا) بل شالی (اندرسیہ کرتانی) کھشتری بہادر کے لئے پرجا پالن دھرم کی (اوِ) جیسے پربھو (پر وِوشٹو) چاہتا ہے، ویسے وہ پربھو (اُسراسیہ کرشٹی نام) بُدھی مان تتھا پرجاؤں دوارہ (انومادھسیہ) نرنتر کریا کئے گئے (پُنسیہ) پرجا پالک براہمن کے برہم دھرموں کو بھی چاہتا ہے۔ (پرشستم) سب سے تعریف کئے گئے اُس (سمراجم) جگت سمراٹ کی ہم (وندمانا) وندنا سدا کرتے رہیں۔ کرنی چاہیئے۔

منشیوں کے سُنتی کے یوگیہ ایک پرماتما ہے جو پران اور بُدھی کا داتا ہے۔ سرشٹی کی رچنا اور سب کو کرم پھل دینے میں سمرتھ وان ہے۔ سوریہ کی طرح اُس کے پرتاپ اور پرکاش کاریہ وِشوں میں دن رات ہو رہے ہیں۔ اس لئے اُس کی وندنا کرنی ہی چاہیئے۔

मंत्र ७८ हमारी वन्दन का पात्र

बलशाली क्षेत्रीय वीर के लिए प्रजा पालन रूप धर्मो को जैसे प्रभु चाहता है वैसे ही वह बुद्धिमान तथा प्रजाओं द्वारा निरन्तर

प्रसादित प्रजा पालक, ब्राह्मण के ब्रह्म धर्म के प्रसार को भी चाहता है। उस महान प्रशस्त कर्म जगत सम्राट की वंदना ही हम सदा करते रहें। वही एक सब के लिए वन्दन पात्र है। मनुष्यों के स्तुति योग्य एक एक परमात्मा है जो प्राण एवं प्रजा का दाता हैं। सृष्टि की रचना कर के सबको कर्म फल देने में समर्थवान हैं। सूर्य की तरह उसके प्रताप और प्रकाश के कार्य दिन रात विश्व में हो रहे है। इस लिए उसकी ही वन्दना करनी चाहिए!

منتر نمبر۷۹ بھگوان کی یاد میں سدا جاگتے رہو! کھنڈ ۸

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
अरण्योर्निहितो जातवेदा
१ २ ३ १ २ २ ३ १ २
गर्भ इवेत् सुभृतो गर्भिणीभिः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भि-
३ १ २ ३ क २ र ३ २
र्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ॥७॥

جیسے (گربھینی بھی) گربھ ونی ماتائیں (گربھ) گربھ میں رہنے والے بچے (سُوبھرِتہ) گپت روپ سے رکھتی ہیں ویسے (جات ویداہ) سروگیہ پرماتما اگنی (ارنیو) شریر رُوپی نیچے کی ارنی اور ادم رُوپی اوپر کی ارنی میں (نہِت) گپت روپ میں رہتا ہے، وہ (اگنی) پرماتما (جاگرودبھی) نتیہ کرم اُپاسنا کرم میں ہمیشہ جاگتے رہنے والے (ہوی شدبھی) اپنے آتما کو جنہوں نے بھگوان کے سپرد کر رکھا ہے (منشیبھی) اُن منشیوں کے دوارہ (دِوے دِوے اِیڈیہ) پرتی دن پوجا جاتا ہے، پوجا جانا چاہیئے۔ ؎

دو سمدھاؤں میں ہے جیسے اگنی اُسے جگاتے ہیں
ایش بھگتی میں نت لگے جن پرمیشور کو پاتے ہیں

मंत्र ७९ भगवान की याद में सदा जागते रहो

जैसे गर्भवती मातायें गर्भ में वास करने वाले बालक को गुप्त रूप से रखती हैं, वैसे सर्वज्ञ परमात्मा अग्नि शरीर रूपी नीचे की अरणी

और प्रणव (ओ३म) रूपी ऊपर की अरणी में गुप्त रूप से रहता है। वह अग्नि नित्य कर्मों उपासना योगाभ्यास आदि कर्मों में सदा जागते रहने वाले ईश्वर प्राणिधान समर्पित मनुष्यों द्वारा प्रति दिन पूजा जाता है।

दो समिधाओं में हैं जैसे अग्नि उसे जगाते हैं।
ईश भक्ति में नित्य लगे जन परमेश्वर को पाते हैं।

منتر نمبر ۸۰ ہمارے اندر کے پاپوں کو جلا کر بھسم کر دو! کھنڈ ۸

३ १ २ ३ २ ३
सनादग्ने मृणसि यातुधानान्
२ ३ १ २ ३ १ २
न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः ।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३
अनु दह सहमूरान् कयादो
१ २ ३ १ २ ३ १ २
मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः ॥८॥[१।८]

(اگنے) اگنی کے سمان پاپوں کو جلانے والے پرمیشور! آپ (سنات یاتودھانان) ہمیشہ جلاتے رہنے والے کام آدی دشمنوں کا (مرنسی) وناش کرتے ہیں۔ (پرتناسُو رکھشانسی) دیو اسر سنگراموں میں پاپ روپی راکھشس (تُوا جگیوُنہ) آپ پر وجے نہیں پا سکتے (مُوران کیادہ) اندر رہنے والی ان ناش وان چنتاؤں ایرشا دویش جلن حسد کی آگ جو اندر ہی اندر شریر کے کچے مانس کو کھا کر سُکھا دیتی ہیں، ان کو آپ (انودہ) نرنتر جلاتے رہیں (تے) آپ کے (دیویا یا ہیتیہ) دیو شکتیوں کے بجر پرہار سے (ما مکھسیت) یہ چھُوٹنے نہ پائیں۔

ایشور کے دویہ بجر پرہار سے کوئی پاپ اور پاپی بچ نہیں سکتا۔ اُس کے چنتن دھیان پریم بھگتی یوگا بھیاس کا یل پاپ کو بھگانے والا اور اُس کا آشریہ پاپیوں سے رکھشا کرنے والا ہے۔

मंत्र ८० हमारे पापों को जलाकर राख कर दो

(अग्ने) अग्नि के समान पापों को जलाने वाले परमेश्वर! हमें अंदर ही अंदर सदैव जलाते रहने वाले काम आदि शत्रुओं का आप

विनाश करते रहते हैं। देवासुर संग्रामी में पाप राक्षस आप पर विजयी नहीं हो सकते। शरीरों के अंदर रहने वाली चिन्ताओं ईर्ष्याद्वेष आदि की अग्नियां जो तन के कच्चे मांस को खाकर सुखा देती हैं, हे नाथ उन्हे आप निरन्तर जलाते रहें। वह अन्त: शत्रु आपके दिव्य बज् प्रहार से छूटने न पाएं।

परमेश्वर के दिव्य बज् प्रहार से कोई पाप और पापी नहीं बच सकता उसके चिन्तन ध्यान और प्रेमभक्ति योगाभ्यास का बल पाप को भगाने वाला और उसका आश्रय पापियों से रक्षा करने वाला है।

منتر نمبر ۸۱ آتمک دھن کے مارگ پر چلاؤ کھنڈ ۹

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अग्न ओजिष्ठमा भर द्युम्नमस्मभ्यमध्रिगो।
१ २ ३ १र २र ३ २ ३ १ २ ३ १
प्र नो राये पनीयसे रत्सि वाजाय पन्थाम् ॥१॥

ہے اگنے (اوجشٹھم) انیئت اوجسوی بل کاری (دیُومنم) آتمک ایشوریہ یش، سونا، رتن، گیان اور گیان دھن (اسمبھیم) ہمارے لئے (آبھر) پراپت کرائیے۔ (ادھری گو) اکھشے سمرتھ وان شکتی شالی پربھو آپ کی شکتی اباد دھ ہے۔ جس کو کوئی روک نہیں سکتا (یئی نیلسے) سُتتی کے یوگیہ (رائے) دھن کے لئے (واجائے) اور پھر اس کے لئے اَنّ، بل اور شکتی پراپتی کے لئے (پرینتھام) سریشٹھ مارگ (رتسی) تیار کیجئے۔ اس راستے پر ہمیں چلائیے

تعریفی کلمات دُعاؤں سے رِجھاتے تُم کو ۔ اپنے روحانی زرومال سے بھر دو ہم کو

मंत्र ८१ आत्मिक धन के मार्ग पर चलाओ

हे अग्ने परमात्मन ! अत्यन्त ओजस्वी बलकारी आत्मिक ऐश्वर्य, यश, स्वर्ण, रत्न और ज्ञान धन हमें प्राप्त कराओ। अक्षय शक्तिशाली प्रभो ! आप की गति अबाध है। जिसे कोई रोक नहीं सकता। स्तुति योग्य अध्यात्मिक सम्पदा और व्यवहार के योग्य धन के लिए एवं अन्न बल और ज्ञान की प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ मार्ग पर हमें चलाइये।

स्थिर ऐश्वर्य निमित तुम्हारी स्तुतियां हम सब नित्य करें।
अन्न बल ज्ञान का मार्ग सुझाओ जिसमे हम आनंद करें।

منتر نمبر ۸۲ — برہم جیوتی کو جلائے رکھنے والا وِیر — کھنڈ ۹

سُکھ شانتی سے بھرا رہتا ہے!

१ २ ३२ ३ २३ १ २ ३ १ २
यदि वीरो अनु ष्यादग्निमिन्धीत मर्त्यः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
आजुह्वद्धव्यमानुषक् शर्म भक्षीत दैव्यम् ॥२॥

(مرتیہ) منش (یدی اگنم) اگر پرماتم اگنی کو (انو) ہمیشہ اپنے جیون میں ( ) جلائے رکھتا ہے تو وہ (ویر سیات) وِیر بن جاتا ہے اور اگر وہ (آنُوشک) لگاتار (ہوییّ) آتم ارپن رُوپ سامگری کی (آ جہُووت) آہوتی دیتا رہتا ہے تو وہ (دیَویمّ) بھگوان کے دیئے ہُوئے (شرم بھکھیت) سُکھ شانتی کو بھوگتا رہتا ہے۔

اگنی دیو کو روشن کرکے وِیر چمکتا جاتا ہے
اُس کی آگیا میں چل کرکے سب سُکھ شانتی پاتا ہے

मंत्र ८२ बृहम ज्योति को जलाये रखो

मनुष्य अगर परमात्म अग्नि को सदा अपने जीवन में जलाये रखता है तो वीर बन जाता है और यदि वह निरंतर आत्म समर्पण रूपी सामग्री की आहुति देता रहता है तो वह प्रभु के दिए सुख शान्ति से सदा युक्त रहता है।

अग्नि देव को रौशन करके वीर चमकता जाता है।
उसकी आज्ञा में चल करके सब सुख शान्ति पाता है।

منتر نمبر ۸۳ — مجھ کو بھی پُر نُور کرو — کھنڈ ۹

३१ २ ३१ २ ३२उ ३१र २र
त्वेषस्ते धूम ऋण्वति दिवि सञ्छुक्र आततः।
२ ३२उ ३२उ ३ १ २ ३ १ २
सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे ॥३॥

(پاوک) ہے پوتر کرنے والے پربھو! جیسے ہون کی اگنی سے اُٹھا (دھوم) دھُوآں آکاش

کی اور پھیلتا ہے' ویسے (تے) آپ کا (شکر تویشہ) نرمل پرکاش (دوی) دیولوک ارتھات چمکتے بے شمار تاروں میں (سم آتت) اچھی پرکار پھیلا ہوا ہے' (نا) جیسے (سور) سورج (دیوتا) اپنی روشنی سے چمک رہا ہے (نا) ویسے (توم کرپا روچسے) آپ اپنی کرپا سے ہی مجھ اُپاسک کے ہردیہ میں چمک رہے ہو۔

چمک رہے ہو سورج سے سارے جگ میں جیسے بھگوان
مجھ کو بھی پرنور کرو دل میں بس کر روشن زمان

मंत्र ८३ मुझे भी ज्योतिर्मान कर दो

हे पवित्र करने वाले प्रभो ! जैसे हवन की अग्नि से उठा हुआ धुंआ आकाश की ओर फैलता हे वैसे आपका निर्मल प्रकाश द्युलोक के चमकते सितारों में अच्छी प्रकार फैल रहा है । जैसे सूर्य अपने प्रकाश से चमक रहा है वैसे आप अपनी कृपा से ही मुझ उपासक के हृदय में चमक रहे हो ।

चमक रहे हो सूरज से सारे जग में जैसे भगवान ।
मुझ को भी पुर नूर करो दिल में बस कर रौशन जमान ।

منتر نمبر ۸۴ پانا اُس کو سب چاہتے ہیں کھنڈ ۹

त्वं हि चैतवद् यशोऽग्ने मित्रो न पत्यसे ।
त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि ॥४॥

(اگنے) ہے پرکاش سوروپ پربھو! (توم ہی کھیت وت لیشہ) آپ ہی بھومی پر نواس کرنے والی سب پرجاؤں کے لیش کو (پیتسے) پراپت کر رہے ہیں' یعنی ساری دھرتی کے لوگ آپ کا ہی کیرتی گان کرتے رہتے ہیں۔ (نا) جیسے متر اپنے متر کے لیش کو حاصل کرتا رہتا ہے' ارتھات جیسے دو دوست ایک دوسرے کے لیش کو بڑھاتے رہتے ہیں۔ (وچرشنے) ہے وچتر جگت کے درشٹا عجیب وغریب دنیا کے جاننے والے مالک

(وسو) حاضر وناظر سب کو بسانے والے دُنیا کے باسی پرمیشور! (توم شروہ یش یسی نا پُشٹم) آپ اپنے یش، عزّت، توقیر و نیک نامی کو پُشٹ کرتے ہوئے بڑھاتے رہتے ہو۔ ے

چاروں اور اُس کی شہرت یش وگان جس کا گاتے
سب کو بسا رہا، بستا سب میں وہ پانا اُس کو سب چاہتے

मंत्र ८४ पाना सब उसको चाहते

हे प्रकाश स्वरूप प्रभो ! आप ही भूमि के निवासी सब प्रजाओं के यश को प्राप्त कर रहे हो। सम्पूर्ण धरती के लोग आपका ही कीर्तिगान नित्य करते रहते हैं। जैसे दो मित्र परस्पर अपने यश को बढ़ाते हैं। हे विचित्र जगत के द्रस्टा ! सब को बसाने वाले बसो ! आप अपने यश को नित्य पुष्ट करते रहते हो।

चारों ओर उसकी प्रसिद्धि है यशोगान जिसका गाते।
सबको बसा रहा, बसता सब में वह पाना सब उसको चाहते।

منتر نمبر ۸۵ پراتہ برہم مہورت میں بھگوان کی شرن کھنڈ ۹

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २:३ १ २
प्रातरग्निः पुरुप्रियो विश स्तवेतातिथिः ।
२ ३ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
विश्वे यस्मिन्नमर्त्ये हव्यं मर्तास इन्धते ॥ ५॥

(پُرو پریہ) بہت پیارا اور بہتوں کو پیارا اگنی پرمیشور (پراتہ) پراتہ کال کی اُپاسنا دھیان اور سمادھی یوگ میں (وِشہ) سب پرجاؤں کو وشیش کر بھگت جنوں کو (اتھتی) پوجیہ اتھتی مہمان کی طرح اُن کے ہردیوں میں (ستوتے) براجمان ہو کر ستیہ مارگ کا اُپدیش کرتا ہے (یسمِن امریتے) جس امرت اوناشی پرماتما میں (وشوے مرتاسہ) سب مرن دھرما شریر دھاری منش (ہویم اِندھتے) اپنے اپنے پدارتھوں کی آہوتیاں دیتے ہوئے اپنے آپ کو ارپن کر دیتے ہیں۔ ے

اتھتی سمان بہت ہی پیارے پربھو کو پراتہ یاد کرو
شُدھ پوتر ہردیہ میں اُس کی امرت بانی شرون کرو

मंत्र ८५ प्रातः भगवान का ध्यान करो

सब से प्यारा और सब का प्यारा परमेश्वर, प्रात:काल ब्रह्म महूर्त की उपासना ध्यान योग में सब प्रजा जनों के हृदय रूपी घर में पूज्य अतिथि के समान बिराजमान सत्मार्ग का उपदेश करता है। जिस अमृत अविनाशी परमात्मा में सब मरणधर्मा शरीर धारी मनुष्य अपने उत्तम 2 पदार्थों की आहुतितां देते हुए उसके अर्पण हो रहे हैं।

अतिथि समान बहुत ही प्यारे प्रभु को प्रात: याद करो।
शुद्ध पवित्र हृदय में उसकी अमृत वाणी श्रवण करो।

منتر نمبر ۸۶ بھگوان سے ملی سمپدائیں بھگوان کی بھینٹ کرو کھنڈ ۹

१र २र३ २३१२ ३१२
यद् वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो ।
१ २ ३ २ ३२उ ३ १ २
महिषीव त्वद् रयिस्त्वद् वाजा उदीरते ॥६॥

(وِبھاوسو) پرماتما کے پرکاش کو سب سے سریشٹھ دھن سمجھنے والے اُپاسک (واہشٹم) بھگوان کو اپنی طرف لانے یا اپنے آپ کو اُس تک پہنچانے میں (دیت برہت) جو سب سے اُتم سمرپن (سپُردگی) ہے (اَنت اگنئے) اُسے پرکاش سوروپ پربھو کے لئے (اَرچ) نمسکار بھاو سے دے بھینٹ یا ارپن کر۔ ہے عابد! (اِو) جیسے (مہِشی) رانی سامنے آتے راجہ کے لئے (اُدیرتے) اُس کی اُمنگیں اُبھر آتی ہیں، اپنے آپ کو اُس کے حوالے کرنے میں ویسے تجھ سے (ریئی) تیری سمپدائیں اَور تیری (واج) شکتیاں، اُمنگیں پرماتما کے لئے ہر وقت اُبھری رہنی چاہئیں۔ ؎

تجھ سے ہی پایا سب دھن تجھ سے ہی اَن بل پایا
تجھ کو دے تیرے ارپن کر بے حد آنند ہے پایا

मंत्र ८६ भगवान से मिली सम्पदा भगवान की भेंट कर

भगवान के प्रसाद को सर्व श्रेष्ठ धन समझने वाले उपासक! उस ईश्वर को अपने तक लाने वा अपने को उस तक पहुंचाने में जो सर्वोत्तम समर्पण हैं उसे प्रकाश स्वरूप प्रभु की नमस्कार पूर्वक भेंट कर। जैसे रानी, सामने आए राजा के उमंगों के भरे हृदय को खोल देती है,

वैसे अपने आपको प्रभु के हवाले करने में तेरी उमंगे हर समय उभरी हुई हों। तेरी सम्पदा और तेरा बल सब उसके लिए हर समय समर्पित रहे।

तुझ से ही पाया सब धन तुझ से ही अन्न बल है पाया।
तुझ को ही दे तेरे अर्पण कर बेहद आनन्द है पाया।

منتر نمبر ۸۷ ہمارا اعلےٰ ترین مہمان اور محافظ! کھنڈ ۹

विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम्।
अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः ॥७॥

ہے منشیو! (واجینتا) ادھیاتمک دھن اور بل گیان آدی کی اِچھا کرتے ہو (وہ وِشہ وِشہ) تم سب پرجاؤں کے (اتِتھم پرو پریم) معززترین مہمان سب کے پیارے اور (دُریم) تمہارے شریر اور گھریلو زندگی کے محافظ (اگنم) سنسار کے اگوا پرمیشور کے لیئے (وچ سُتشے) میں حمد و ثنا کر رہا ہوں اور (شوُشیہ منم بھی) سکھدائیک منتروں کے ذریعے اُس کا گُن گان کر رہا ہوں۔ ؎

جو دُنیا کی اگوائی میں اگنی نام سے رہتا ہے
سب کا پُوجیہ پیارا اتتھی وہی حفاظت کرتا ہے

मंत्र ८७ पूज्य अतिथि और रक्षक

हे मनुष्यो! तुम अध्यात्मिक धन बल ज्ञान की इच्छा करते हो। आप सब प्रजाओं के पूज्यतम अतिथि सर्वप्रिय और हमारे शरीरों और घरों के रक्षक संसार के अग्रणी परमेश्वर के लिए मैं स्तुति वचनों को उचारण कर रहा हूं। और सुखदायक मन्त्रों के द्वारा भी उसी का गुणगान करता हूं।

जो दुनियां की अगवानी में अग्नि नाम से रहता है।
सब का प्यारा पूज्य अतिथि रक्षा सब की करता है।

منتر نمبر ۸۸ **دولتِ جاوید باشد بندگی** کھنڈ ۹

३ २उ ३ २ ३१र २र ३ २ ३ १ २
बृहद् वयो हि भानवेऽर्चा देवायाग्नये ।
= ३१र २र ३ १ २ ३ २ ३ २
यं मित्रं न प्रशस्तये मर्तासो दधिरे पुरः ॥८॥

(نا) جیسے ایک دوست (مِترم) اپنے دوسرے دوست کی (پرشستئے) نیکیوں
خوبیوں یاسدگنوں کو (پرُہ) ہمیشہ اپنے سامنے رکھتا ہے، ویسے (مرتاسہ) مرن دھرما
منش (یم پرشستئے) جس اگنی دیو پرمیشور کو، اُس کی مہما کو (پرُہ) اپنے سامنے (ددھرے)
رکھتے ہیں۔ ویسے ہے عابد! تو بھی اُس پرمیشور کو سدا دھیان میں رکھتے ہوئے (بھانوے)
سُورج کی طرح منّور (اگنے دیوائے) پرمیشور دیو کے لئے (ہی برہد ویہ) نشچے پُورو ک
اپنی عمر عزیز کو، (ارچ) اُس کے لئے صَرف کر دے۔

دولتِ جاوید باشد بندگی بندگی کُن بندگی کُن بندگی

मंत्र ८८ दौलते ज़ावेद बाशद बंदगी

जैसे मित्र अपने मित्र के सदगुणों को सदा अपने सम्मुख रखता है। वैसे मरणधर्मा मनुष्य जिस अग्निदेव परमेश्वर की महती महिमा को अपने सामने सदा रखते हैं। वैसे हे उपासक! तू भी उस परमेश्वर को सदा ध्यान में रखते हुए सूर्य समान प्रकाशमान परमेश्वर देव के लिए निश्चय पूर्वक तू अपनी अधिक आयु को उसके अर्पण कर दे।

दौलते जावेद बाशद बंदगी
बंदगी कुन बंदगी कुन बंदगी।

अर्थात परमेश्वर की भक्ति अमर सम्पदा हैं इस लिए ऐ मानव तू उसकी भक्ति कर भक्ति कर और भक्ति कर।

منتر نمبر ۸۹ **پالیا ہم نے پاپوں کے وناشک کو** کھنڈ ۹

१ २ ३१ २ ३ १ २ ३१र २र
अगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम् ।
१ २ ३१२ ३ २ ३१२ ३ १२
यः स्म श्रुतर्वन्नार्क्षे बृहदनीक इध्यते ॥९॥

پراپت کریں (اگنم) اُس کو جو کہ (ورتر ہنتم) پاپ راکھشسوں کا وناشک (جیشٹھم)

سب سے بڑا (اگنیم آن وم) سب مخلوقات کا پالک، رکھشک ہے، اور (یہ) جو (اشرُوتروان) ویدوں کی بانی سے شروَن، منن اور عمل کرنے والے (بربدنیکے) یوگ پرانایام کے ابھیاس ہیں تھا (آرکھشنے) دیولوک کے جگمگاتے تاروں میں (ادھیت) چمکتا ہے اور (سما) ہمیشہ چمکتا آیا ہے۔

پراپت کر لیا جس پربھو ورکو جو کن کن میں ویاپک ہے

سب کا رکھشک سب کا پالک جو بھگتوں کا نائیک ہے

मंत्र ८९ पाप हन्ता परमेश्वर को पालिया

प्राप्त कर लिया उसको जो कि पाप राक्षस समूह का हनन करने वाला है। सबसे बड़ा प्राणी मात्र का पालक है। और जो वेदों की वाणी मे श्रवण मनन करने वाले प्राणयाम योगाभ्यासी और द्यौ लोक के जगमगाते तारों में सदा से चमकता आ रहा है।

प्राप्त कर लिया उस प्रभु बर को जो कण कण में व्यापक है।
सब का रक्षक सब का पालक जो भक्तों का नायक है।

منتر نمبر ۹۰ بھگوان کی نظرِ عنایت پڑتے ہی پردے ہٹ جاتے ہیں کھنڈ ۹

३ १र २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
जातः परेण धर्मणा यन् सवृद्भिः सहाभुवः।
३ २उ ३ १ २ ३ २
पिता यत्कश्यपस्याग्निः
३ २ ३ १र २र ३ २
श्रद्धा माता मनुः कविः ॥९०॥[९१८]

پاپوں کو جلانے والا اگنی پرماتما (پرین دھرمنا) پرم دھرم کو دھارن کرنے ارنغات سنئیہ برہم چریہ، تپ، اُپاسنا آدی پر برہم کی پراپتی کے لیے دلوکرم کرنے والے اُپاسک (سہ ور دبھی سہہ) اپنی دیوی شکتیوں کے ساتھ (آبھوہ جاتہ) کے اندر آکر پرگٹ ہوتا، ظاہر ظہور ہوتا ہے۔ تب وہ بھگت کشیپ نام والا ہو جاتا ہے۔ پار برہم کی کرپا سے اُس کو پربھو کی نظرِ عنایت، حقیقی نظر مل جاتی ہے۔ اور (یت اگنی) وہ اگنی پرماتما تب اُس

دِویہ درشٹی بھگت کا سچا پِتا بن جاتا ہے۔ (شردھا ماتا) شردھا اُس کی ماتا بنتی ہے
اَور (منوگوی) من اُس کا شکھشا دینے والا گورو ہو جاتا ہے۔

پرمیشور پِتا شردھا ماتا اَور من گورُو :۔ منش اپنے پاپوں کو بھسم کر کے جب بھگوان کو ساکھشات کرنے کے لئے آگے بڑھتا ہے تو وہ ستیہ برہمچریہ اور اُپاسنا یوگ کو لگاتار کرتا ہوا پربھو کی آشیرباد پاکر اُس کا پیارا پُتر ہو جاتا ہے۔ شردھا یعنی سچائی سے لبریز اُس کا جیون اُس کی ماتا بنتی ہے اَور شُدھ نِرمل من اُس کو راہِ راست پر چلانے والا اُس کا گورُو ہو جاتا ہے۔ جس سے وہ بھگوان کا پرکاش پاکر آنند آنند ہو جاتا ہے۔

آنند بھیا میری مائے ستگورو میں پایا

(نواں کھنڈ ختم ہوا)

मंत्र ६०   भगवान के साक्षात्कार से आनंद ही आनंद

पापों को दग्ध करने और शोध करने द्वारा अग्निपरमात्मा, पर धर्म सत्य, ब्रह्मचर्य तप उपासना आदि देव कर्म में रत उपासक के हृदय में अपनी दैवी सम्पदाओं के साथ आ कर प्रगट होता है। तब वह कश्यप संज्ञा वाला हो जाता है। पार ब्रह्म की कृपा से उसको यथार्थ दृष्टि मिल जाती है। तब वह अग्निदेव प्रभु उस उपासक का सच्चा पिता बन जाता है। श्रद्धा उसकी माता बनती है और शुद्ध निर्मल मन उसे शिक्षा देने वाला आचार्य बन जाता है। तब वह भगवान का प्रकाश पाकर आनंद आनंद हो उठता हैं।

आनंद भया मेरी माए, सत्गुर मैं पाया।

منتر نمبر ۹۱ **ایک پرماتما کے انیک نام انیک گن** کھنڈ ۱۰

सोमं राजानं वरुणमग्निमन्वारभामहे ।
आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ॥१॥

ہم (سومم) شانتی دائیک، سب جگت کے پریرک اور پیدا کرنے والے (راجانم) پرکاش روپ جگت کے راجہ (ورُونم) سب پاپوں کے نوارن کرنے والے (اگنی) گیان سورُوپ جگت کے والی کو (انو آربھامہے) پرتی دن سمرن کرتے ہیں۔ اور (آدتیہ) سب رسوں کو گرہن کرنے ہارے سُوریہ سمان سدا روشن اکھنڈ شکتی (وِشنُوم) سب جگہ حاضر ناظر (برہمانم) سب سے مہان گیان کے بھنڈار (برہسپتم) وید وانی کے سوامی کا آشریہ گرہن کرتے ہیں۔

یہ سب نام :۔ سوم، راجہ، وردن، آدتیہ، وِشنو، سُوریہ، برہم، برہسپتی اُس اگنی پرمیشور کے ہیں جو ایشور کے مختلف اوصاف کو بیان کرتے ہیں ؎

اگنی ہے پرمیش جگت اگوانی میں جس کی چلتا
انیک نام اور گُن ہیں اُس کے وِشو کا جو کرتا ہرتا

मंत्र ९१ परमात्मा के अनेक नाम अनेक गुण

हम शान्ति दायक सबके उत्पादक, प्रेरक, जगत के राजा, पापों के निवारण करने हारे, ज्ञान स्वरूप विश्व के नेता, सूर्य समान प्रकाश मान आखंड शक्ति, सर्वव्यापक, सब से महान ज्ञान भंडार और वेद वाणी के स्वामी का आश्रय ग्रहण करते हुए प्रतिदिन उसे समरण करते रहे।

मंत्र में सोम, राजा, वरुण, आदित्य, विष्णु, सूर्य, ब्रह्म, बृहस्पति उस एक अग्नि परमेश्वर के ही अनेक नाम हैं जो उसके अनेक गुणों का वर्णन करते हैं।

अग्नि है परमेश जगत अगवानी में जिसकी चलता।
अनेक नाम और गुण हैं उसके विश्व का जो करता हरता।

منتر نمبر ۹۲ **یوگ کے مرحلے** کھنڈ ۱۰

३२ ३२ ३ १२ ३२ ३१र २र
इत एत उदारुहन् दिवः पृष्ठान्या रुहन् ।
२ ३ २ ३ १ २ ३१र २र
प्र भूर्जयो यथा पथोद् द्यामङ्गिरसो ययुः ॥२॥

(یتھا اینے انگرسہ) جیسے یہ پرانایام ابھیاسی یوگی (اتہ) اِس مول آدھار چکر سے
(ایتھ اُدارُوہن) ہوتے ہوئے اُوپر کے راستوں پر بالترتیب چڑھتے جاتے ہیں، اور پھر
(دِو پرِشٹھانی) پنڈ اس شریر کا جو مستشک (پیشانی) ہے (آروہن) اُس پر پہنچ جاتے ہیں،
تب یہ (دیام یُیو) وہاں دِویہ جیوتی کو پراپت کر لیتے ہیں، ویسے ہے اُپاسک تُو بھی (پربھو)
اس طرح سامرتھ شکتی کو حاصل کرکے (جے) یوگ ابھیاس کی منزل پر وجے پراپت کر۔

آٹھ چکروں کا بیان

منتر کے بھاؤ میں سام وید بھاشیہ کا وِدّیا مارتنڈ پنڈت وِشوناتھ جی نے چکروں کے ورنن
میں لکھا ہے کہ سُشمنا ناڑی کے نچلے حصے میں مول آدھار چکر ہے، پھر بالترتیب سُوادھشٹان
چکر، منی پور چکر، اناہت چکر جو ہردیہ کے نزدیک ہے۔ وِشدھ چکر جو کنٹھ (گلے) میں ہے، آگیا
چکر جو دونوں بھوؤں کے درمیان میں ہے اور سہسرار چکر جو پیشانی میں ہے۔ یوگی کا چِت جب اِس
میں ٹھہر جاتا ہے، تب دِویہ پرکاش دکھائی دینے لگتا ہے مُکت آتما کے پران اِسی راستے سے
نکلتے ہیں ے پُرشارتھ سے یوگی جن اُوپر کو اُٹھتے جاتے ہیں
کرت کرت ابھیاس پربھو کے امرت پد کو پاتے ہیں

मंत्र ६२ योग की सीढ़ियां

जैसे यह प्राणयाम अभ्यासी योगी मूलाधार चक्र से चलते हुए आगे आरोहण करते पिण्ड के द्यौ अर्थात मस्तिष्क पर पहुंच जाते है। और वहां दिव्य ज्योति को प्राप्त कर लेते हैं। वैसे हे उपासक ! तू भी इस प्रकार सामर्थ्य शक्ति को प्राप्त करके योगाभ्यास की यात्रा को पूर्ण कर।

आठ चक्र

मंत्र के भावार्य में सामवेद भाष्यकार पं विश्वनाथ जी विद्या

मार्तण्ड ने अष्ट चक्रों का वर्णन करते हुए लिखा है कि सुष्मिणा नाड़ी के निचले भाग में मूलाधार चक्र है फिर क्रमश: स्वाधिष्ठान चक्र, मनिपुर चक्र अनाहत चक्र (हृदय में) विशुद्ध चक्र में (कण्ठ में) आज्ञा चक्र) भृकुटि में) और सहस्रार चक्र मस्तिष्क में जहां योगी का चित इस में ठहर जाता है तब दिव्य प्रकाश दिखाई देता है। मुक्तात्मा के प्राण इसी मार्ग से निकटते है

पुरुषार्थ से योगी जन ऊपर को उठते जाते हैं।
करत करत अभ्यास प्रभु के अमृत पद को पाते हैं।

منتر نمبر ۹۳ **مُکتی مارگ کا دان** کھنڈ ۱۰

३ ५ २ ३२ ३ १ २३ १ २
राये अग्ने महे त्वा दानाय समिधीमहि ।
१ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
ईडिष्वा हि महे वृषन् द्यावा होत्राय पृथिवी ॥३॥

(اگنے) نُورِ مُجسّم بھگوان (مہے رائے) اِس سنسار کی جو سب سے بڑی سمپتی موکھش ہے، اُس کا (دانائے) آپ سے دان لینے کے لئے ہم بھگت لوگ (تُوا سمدھی مہی) آپ کو اپنے انتر آتما میں اُپاسنا کی وِدھی سے روشن کرتے ہیں پرگٹ کرتے ہیں (وِرشن) ہے آنند رس کی ورشا کرنے والے! (مہے ہوترائے) اس مہا دان سمپدا (اپُور وبھگتی) کے حاصل کرنے کے لئے آپ (دیا وا پرتھوی) زمین اور آسمان پر سب جگہ رہنے والے سبھی منشیوں کو (ایڑشو) پریرنا (رغبت) دیجئے۔

ے
ایسی دیجئے سب کو رغبت موکھش دھام کے یاتری بنیں
سب دُکھوں سے چھُوٹ سدا آنند مکتی رس پان کریں

मंत्र ९३ मोक्ष मार्ग का दान

प्रकाश स्वरूप परमेश्वर ! इस संसार की सर्वश्रेष्ठ सम्पदा मोक्ष है उसको प्राप्त करने के लिए हम उपासक आपको अन्तरात्मा में उपासना की विद्धि से प्रगट करते हैं। हे आनंद रस की बर्षा करने वाले ! अपने इस महादान सम्पदा की प्राप्ति के लिए आप पृथिवी आकाश में सर्वत्र बसने वाले मनुष्यों को सदा प्रेरणा दीजिये।

ऐसी सब को दीजो प्रेरणा मुक्ति धाम के यात्री बनें।
सब दुखों से छूट सदा आनंद अमृत रस पान करें।

منتر نمبر ۹۴ سَب گرنتھ جس کو گا رہے ہیں کھنڈ ۱۰

३ २ ३ २ ३२३ २३ २उ ३ २ ३ २
दधन्वे वा यदीमनु वोचद् ब्रह्मेति वेरु तत्।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
परि विश्वानि काव्या नेमिश्चक्रमिवाभुवत् ॥४॥

(یت اپیم) جب اس اگنی کو اُپاسک (انو دھد نوے) لگاتار اپنے جیون میں دھارن کرتا ہے اور (برہم اِتی ووچت) کہتا ہے کہ یہ اگنی برہم ہے، تب اُس عابد نے (رُوتت) یقیناً اُس اگنی پرماتما کو حقیقتاً جان لیا ہے وہ برہم اگنی (وشوانی کاریہ) سبھی وید کا دیوں شاستروں، گرنتھوں اور اسنکھیہ کرموں کو (پری آبھووت) چاروں طرف سے گھیرے ہوئے ہے (اونیمی چکرم) جیسے کہ رتھ چکر کی نابھی سبھی اروں کو گھیرے رکھتی ہے، قائم رکھتی ہے یعنی تمام دُنیا کا ادب آداب عالمی ذخیرہ اُس ایشور کی مہما کو گا رہا ہے۔

جیسے شکٹ چکر کا گھیرا اُس کے چاروں اور رہے۔ ویسے ہی پربھو کاویہ رُوپ سب جگ کے چاروں اور رہے

मंत्र ६४ सब काव्य जिसको गा रहे हैं

जब इस अग्नि को उपासक निरंतर अपने जीवन में धारण करता है और कहता है कि यह अग्नि ही ब्रह्म है तब वह उपासक निश्चय ही उसको जान लेता है। वह ब्रह्म अग्नि ही सभी वेद काव्यों शास्त्रों ग्रन्थों और असंख्य कर्मों को सब ओर से घेरे हुए है। जैसे कि रथ चक्र की नाभि चारों ओर के अरों को घेरे रहती है। अर्थात सम्पूर्ण जगत का ज्ञान सहित्य उस ईश्वर की महिमा को गा रहा।

जैसे शकट चक्र का घेरा उसके चारों ओर रहे।
वैसे ही प्रभु काव्य रूप सब जग के चारों ओर रहे।

منتر نمبر ۹۵ ہماری راکھشسی ورتیوں کا سنگھار کرو کھنڈ ۱۰

१ २ ३ १२ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २
प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणाहि विश्वतस्परि।
३ १ २ ३ २ ३ २३क २र ३क२र
यातुधानस्य रक्षसो बलं न्युब्ज वीर्यम् ॥५॥

(اگنے) ہے برہم اگنی (وشوتہ پری) سب طرف سے سب طرح سے (یاتو دھانسیہ)

یاتنا دینے والے یا مصیبت برپا کرنے والے (رکھسا) راکھشسی بھاوؤں یا کرموں کی طرف (ہرہ) لے جانے والی طاقتوں کو (ہرسا) اپنی سنگھارک شکتی سے (پرتی شزناہی) نحس نحس کر دیجئے۔ اور اس کے بل ویریہ کو (نیوبج) کمزور کر ونشٹ کر دیویں۔ ے

کام کرودھ موہ لوبھ ہمیں دشمن بن کر جب تنگ کریں
آپ اُسی کھشن اپنے تیج سے اِن سب کا بل بھنگ کریں

मंत्र ६५ राक्षस वृतियों का संहार करो

हे ब्रह्म यग्ने ! आप सब ओर से यातना देने वाले राक्षसी भावों की ओर ले जाने वाली शक्तियों को अपनी संहारक शक्ति से नष्ट भ्रष्ट कर दीजिये । और इसके बल वीर्य को हीन क्षीण कर देंवे ।
काम क्रोध मोह लोभ हमें शत्रु बन कर जब तंग करें ।
आप उसी क्षण अपने तेज से इन सब का बल भंग करें ।

منتر نمبر ۹۶ برہم چریہ یگیہ کی رکھشا کیجئے ! کھنڈ ۱۰

त्वमग्ने वसूँरिह रुद्राँ आदित्याँ उत ।
यजा स्वध्वरं जनं
मनुजातं घृतप्रुषम् ॥६॥[१।१०]

ہے اگنے! (توم) آپ (اِیہہ) اِس سنسار میں (وسُون) ۲۴ ورشوں تک برہم چریہ کا برت دھارن کرنے والوں کو (رُدران) ۳۶ ورشوں تک کے برہم چاریوں کو (اُت) اور (آدتیان) ۴۸ ورش تک برہم چریہ کا برت پالن کرنے والوں کو اُن کے اس برہم چریہ یگیہ کو (یج) سپھل کرو، سدھ کرو اور (سُوَدھ ورم) ہنسا رہت شریشٹھ یگیوں کے کرنے والے (گھرت پرُوشم) اور ہون کی اگنی میں شردھا پُورن گھرت آہوتیاں دینے والے (منوجاتم جنم) منش ماتا پتا سے جنم پائے ہوئے ہر ایک سجن پُرش کی اُس کے رچائے یگیوں کی رکھشا کیجئے۔ ے

برہمچریہ کے مہایگیہ کی سدّھی کر دو ہے بھگوان
جس سے ویر تیجسوی بن کر سب جگ کا کر دیں کلیان

(دسواں کھنڈ ختم ہوا)

मंत्र ९६ ब्रह्मचर्य यज्ञ की रक्षा करें

हे अग्ने ! आप इस जगत में 24 वर्ष तक ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करने वालों के 36 वर्ष तक के ब्रह्मचारियों को और 48 वर्ष के ब्रह्मचर्य व्रतधारियों को इनके इस महा कठिन व्रत रूप यज्ञ को सिद्ध कीजिये । और हिंसारहित पवित्र यज्ञ कर्ताओं और हवन की अग्नि में श्रद्धापूर्ण आहुतियां देने वाले श्रेष्ठ माता पिता से जन्म पाए हुए प्रत्येक सज्जन मनुष्य के रचाए यज्ञों की रक्षा कीजिये ।

ब्रह्मचर्य के महा यज्ञ की सिद्ध कर दो हे भगवान ।
जिससे वीर तेजस्वी बन कर सब जग का कर दें कल्याण ।

इति प्रथमः प्रपाठकः समाप्तः ॥

منتر نمبر ۹۷ شرن تیری میں آیا کھنڈ ۱۱

पुरु त्वा दाशिवां वोचेऽरिरग्ने तव स्विदा ।
तोदस्येव शरण आ महस्य ॥१॥

(اگنے) سب سے آگے رہنے والے پربھو! (داشی وان) آپ سب کے داتا ہیں (توا پرو آو وچے) آپ کے لئے میں سیوک بہت پرکار کے پرارتھنا وچن عرض معروض کہہ رہا ہوں (اری) آپ سرو آدھیش ہیں (تو سود) میں آپ کا ہی ہوں (مہیسہ شرنے آ) آپ مہان کی شرن میں آیا ہوں (اونو دسیہ) جیسے سوامی کی شرن میں سیوک آتا ہے۔

جس طرح شاگرد اپنے گورو کی اور گھر کا سیوک اپنے مالک گرہستھ خانہ دار کی

آگیا میں رہتے ہیں ۔ اُسی طرح بھگوان کے حکم کو بسرو چشم ماننا چاہیے اور اُن کے گُن گان بھی کرنے چاہییں ۔ ؎

جیسے رہتا بڑے گھروں میں سیوک اور شِشیہ گورو چرنوں میں
سدا رہوں بھگوان کے گھر میں اُس کی آگیا میں وِچروں میں

मंत्र ९७ **शरण तेरी मैं आया**

सर्वतो अग्रणी परमेश्वर ! आप सब के दाता हैं । आप के लिए मैं उपासक बहुत प्रकार के स्तुति प्रार्थना बचन गा रहा हूं । आप सर्वाधीश्वर हैं तो मैं भी आपका ही हूं । आपकी शरण में आया हूं जैसे स्वामी की शरण में सेवक रहता है ।

जैसे रहता बड़े घरों में सेवक और शिष्य गुरु चरणों में ।
सदा रहूं भगवान के घर में उसकी आज्ञा में विचरूं मैं ।

منتر نمبر ۹۸ **وید بانی کے واکیہ بھگوان کی بھینٹ کریں** کھنڈ ۱۱

१र २र ३२उ ३ १२ ३२
प्र होत्रे पूर्व्यं वचोऽग्नये भरता बृहत् ।
३१र २र ३ १२३ २३१२
विपां ज्योतींषि बिभ्रते न वेधसे ॥२॥

ہے منشیو ! (ہوترے) سب کے داتا اور (ویدھسے) جگت کے قانون کو بنانے والے (اگنیے) پرمیشور کے لئے (پُوروِیَم) سدا سے انادی کال سے آ رہے (پربھرت) سدا بھینٹ کیا کرو، (نہ) جیسے کہ (وِپام جیوتینشی) وید بانی کی جیوتیوں کو (بھرتے وچہ) دھارن کرنے والے مہا وِدوان کے لئے تعظیمی کلمات کہے جاتے ہیں، پیش کئے جاتے ہیں ۔ ؎

خوب رِجھاؤ سریشٹھ پُراتن وید بانی سے ایشور کو
دُنیا کے قانُون کا والی دیتا ہے ہر در گھر کو

मंत्र ९८ **वेद वाणी से भगवान को रिझाएं**

हे मनुष्यों ! सब के दाता और जगत के विधाता परमेश्वर के लिए

पुरातन काल से आ रहे महान वेद वाक्यों का वचनों को सर्वदा भेंट किया करूं जैसे कि वेद वाणी की ज्योतियों को धारण करने वाले महा विद्वान के लिए प्रशंशात्मिक वचन भेंट करते हैं ।

खूब रिझाओ श्रेष्ठ पुरातन वेद वाणी से ईश्वर को।
जो विधाता है सर्व जगत का देता है हर घर दर को।

منتر نمبر ۹۹ — **مہان بَل پَردان کرو** — کھنڈ ۱۱

अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो ।
अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः ॥३॥

(اگنے سہسہ یہو) ہے گیان سورُوپ مہا بلوان پرمیشور! آپ (گومتہ واجسیہ) ویدوں میں اُپدیش کئے گئے سب شکتیوں کے (ایشانہ) بھنڈار ہیں سوامی ہیں۔ (جات وید) ہے وید گیان کے جنم داتا! (اسمے مہی شروہ دیہی) ہمیں وید گیان دوارہ بلوں کے حاصل کرنے کا مہالیش کیرتی عطا فرماویں۔

وید گیان سے بَل کو حاصل کرکے ہوں بلوان
اور سدا جیون بھر کرتے رہیں آپ کا کیرتی گان

मंत्र ९९

हे ज्ञान स्वरूप महा बलवान परमात्मन ! आप वेदों में उपदिष्ट सब बलों के स्वामी हैं। हे वेद ज्ञान के स्रोत हमें वेद ज्ञान द्वारा बलों की प्राप्ति का महा यश प्रदान करें।

वेद ज्ञान से बल को प्राप्त करके बनें विद्वान।
और सदा जीवन भर करते रहे आपका कीर्तिगान।

منتر نمبر ۱۰۰ — **دیوگنوں کو دت کیجئے** — کھنڈ ۱۱

अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवान् देवयते यज ।
होता मन्द्रो वि राजस्यति स्रिधः ॥४॥

(اگنے) راہِ راست پر چلانے والے پرماتمن! آپ (یجشٹھ) جگت رُوپ یجیہ

کے ودھاتا ہیں ۔ (ادھورے) ہنسارہت برہم یگیہ اُپاسنا ہیں (دیویتے) دیوتین کو چاہنے والے کے لئے (دیوان تبجے) دیوگنوں کی پردانی کیجئے ۔ (ہوتا) آپ داتا ہیں ہرش اور آنند کو دینے والے ہیں ۔ (سردھاتی وراجسی) کام وغیرہ برائیوں سے پاک ہوکر جگت میں وراجمان ہیں ۔

ے

خوشیوں کو دینے والے آنند سے جھولی بھرنے والے
بُرے کام سے ہمیں چھڑاؤ دیوتا پد ہیں چاہنے والے

मंत्र १००

सत्मार्ग पर चलाने वाले परमात्मन । ! आप जगत रूप यज्ञ के विधाता हैं । हिन्सा रहित ब्रह्म यज्ञ उपासना में देवत्व को चाहने वाले के लिए दैवी गुणों को प्रदान कीजिये । आप दाता हैं । हर्ष आनंद के प्रदाता हैं । और कामादि वासनाओं से पवित्र विश्व में बिराजमान हैं ।

खुशियों को देने वाले आनंद से झोली भरने वाले ।
पाप ताप से हमें छुड़ाओ देवता पद हैं चाहने वाले ।

منتر نمبر ۱۰۱ **میدھا بُدّھی (عقلِ پاک)** کھنڈ ۱۱

जज्ञानः सप्त मातृभिर्मेधामाशासत श्रिये ।
अयं ध्रुवा रयीणां चिकेतदा ॥५॥

ستیہ مارگ پر چلانے والا پربھو (ماتری بھی سپت جگیانہ) ماتا روپ سات چھندوں والی وید بانی دوارا پرگٹ ہوتا ہے اور بھگت کی (شریے) شوبھا لکشمی ادھیاتمک دھن ایشوریہ کو بڑھانے کے لئے (میدھام آشاست) اُس کی میدھا (عقلِ پاک) پر غلبہ کر لیتا ہے (ایمّ) یہ پربھو اُپاسک کے لئے (ریئی نام دھروُ) تمام ایشوریوں کی دھروُ سمپدا ہے جو ہمیشہ دائم و قائم رہتی ہے ۔ (آچکیت) کیونکہ وہ پربھو سروگیہ عالمِ کُل ہے، جو اپنے عابدوں کو سدا علمِ حقیقی سے مرصّع کرتا رہتا

میدھا بُدھی دے کر سیوک کو دے دیتا سب کچھ دان
دائم قائم رہے ہمیشہ یہ دھن ہے سب سے مہان

मंत्र १०१ **मेधा बुद्धि**

सुपथ पर चलाने वाला भगवान माता रूप छंदो (गायत्री उष्णिक अनुष्टुप बृहती पंक्ति त्रिष्टुप और जगती) वाली वेद वाणी द्वारा प्रगट होता है और उपासक की शोभा लक्ष्मी अध्यात्मिक ऐश्वर्य को बढ़ाने के लिए उसकी मेधा पर शासन कर प्रेरणा देता है। यह प्रभु भगतों के लिए सर्व सम्पदाओं की ध्रुव सम्पदा है। वह प्रभु सर्वज्ञ है जो अपने उपासकों को सदा ज्ञान से संयुक्त करता है।

मेधाबुद्धि देकर सेवक को दे देता सब कुछ दान।
दायम कायम रहे हमेशा यह धन है सब से महान।

منتر نمبر ۱۰۲ سب سُکھوں کا مُول میدھا بُدھی (شُدھ متی) کھنڈ ۱۱

उत स्या नो दिवा मतिरदितिरूत्या गमत् ।
सा शन्ताता मयस्करदप स्रिधः ॥६॥

(اُت سیا) اور وہ (ادِتی متی) اکھنڈ نہ کھنڈن ہیں اور دُوشت ہونے والی متی، میدھا عقلِ سلیم (دِوانہ اُوتیا آگمت) ہر روز ہمیں رکھشا کے لئے پراپت ہوتی رہے (شا شنتاتا) یہ ادھیاتمک بُدھی شانتی اور آنند کا وِستار کرنے والی ہو، اور (میہ کرت) ہمیں سُکھ پردان کرے (سِر دھا) کام کرودھ وغیرہ اندرونی دُشمنوں کو (اپ) ہم سے دُور کرے۔

شُدھ بُدھی سے یکت ہمارے دل دماغ ہوں سدا ہرے
وہ میدھا جو عقلِ پاک ہے سب سُکھ آنند شانتی دے

मंत्र १०२ सब सुखों का मूल

वह अदिति अखंड शुद्ध मति मेधा नित्य प्रति रक्षा के लिए हमें प्राप्त हो यह ही अध्यात्म मेधा बुद्धि शान्ति आनंद और सुख का विस्तार करने वाली है। हमें सुख प्रदान करे और काम क्रोधादि अन्त: शत्रुओं को हम से दूर करे।

शुद्ध बुद्धि से मुक्त हमारे मन मस्तिक हों सदा हरे।
वह मेधा जो शुद्ध मति है सब सुख आनंद शान्ति दे।

منتر نمبر ۱۰۳ اُسی کی عبادت میں سرشار رہ کھنڈ ۱۱

ईडिष्वा हि प्रतीव्यां३ यजस्व जातवेदसम्।
चरिष्णुधूममगृभीतशोचिषम् ॥७॥

ہے عابد! تو (پرتی ویم) سب چیزوں کے اندر موجود اور سب کی رکشا کرنے والے پرماتما کی ہی (ایڈشو) پوجا کر، ستتی، پرارتھنا اور اُسی کے انوکول آچرن کیا کر اور (جات ویدسم) اُسی سروگیہ عالم کُل کا ہی (یجسو) یگیہ کیا کرو۔ سنگتی کیا کرو اور اپنے آپ کو سمرپن کرتے ہوئے اُس کی آگیا میں سدا تت پر رہو (چرشنو دھومم) اُپاسنا یوگ میں بیٹھے ہوئے جو دھواں معلوم دیتا ہے وہ بھگوان کی پراپتی کی پہلی منزل ہے۔ (اگری بھیت شوچشم) اور پھر اُس کی روشنی چاروں طرف پھیلتی ہوئی دکھائی دے گی۔ اے اُپاسک! تو سدا اُسی کی عبادت میں سرشار رہ۔

ہر جگہ موجود ہے جو اُس کی پوجا کر بھجن کر
نیک پاکیزہ عمل سے یکسوئی سے بھجن کر

मंत्र १०३ उसी की इबादत में सरशार रह

हे उपासक! तू सब पदार्थों में व्यापत और सब के रक्षक परमात्मा को ही पूजा कर। स्तुति प्रार्थना के अनुकूल अपना

आचरण भी बना। उसी सर्वज्ञ भगवान का ही यज्ञ कर उसी की ही संगति कर। अपने को उसी की आज्ञा पालन में समर्पित करके रह। योग ध्यान आरम्भ करते हुए जो तुझे सर्व प्रथम धुआं मालूम देगा वह प्रभु के योग की पहली मंजिल है। आगे उस भगवान की दिव्य ज्योति चहों ओर फैलती दिखाई देगी। हे उपासक तू सदा उसकी समर्पित भक्ति का आनंद लेता रह। (सरशार हो)

हर जगह मौजूद है जो उसकी पूजा कर यजन कर।
नेक पाकीज़ा अमल से शान्त चित हो के भजन कर।

منتر نمبر ۱۰۴ بھگوان کی سپردگی میں رہنے والے کا کھنڈ ۱۱
دشمن بھی کچھ نہیں بگاڑ سکتا

१२ २२ ३१ २ ३ २ ३१२ ३ १ २
न तस्य मायया च न रिपुरीशीत मर्त्यः।
२ ३१२ ३ १ २ ३ १ २
यो अग्नये ददाश हव्यदातये ॥८॥

(ہویہ داتیئے) دان اور استعمال کے لئے زر و مال دینے والے (اگنئے) اُس اگنی پرمیشور کے لئے (یہ مرتیہ) جو اُپاسک عابد (دداش) اپنا سب کچھ ارپن کر دیتا ہے یہ کہہ کر کہ ع کہ تو دانی حساب کم و بیش را۔ (ستیہ) اُس کا (رپو) دشمن (ماییا چن نہ ایشت) چھل کپٹ دھوکا فریب سے بھی کچھ نہیں بگاڑ سکتا۔

ے داتا کے قدموں میں پڑ کر اپنے کو پامال کریں
ایسے بھگت پربھو جن کا دشمن نہ بینکا بال کریں

मंत्र १०४ आत्म समर्पण करने वाले का शत्रु कुछ नहीं बिगाड़ सकता

दान और भोग के लिए ऐश्वर्य देने वाले अग्नि परमेश्वर के लिए जो उपासक अपना सब कुछ उसके अर्पण कर देता है यह कहते हुए कि

मेरा मुझ में कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते क्या लागे मोर।

ऐसे भक्त आत्मा का रिपु दल भी अपने मायावी छल कपट के द्वारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

दाता के चरणों में पड़ अपने को जो पामाल करें।
ऐसे भक्त प्रभुजन का शत्रु न बींका बाल करें।

منتر نمبر ۱۰۵ چور کی طرح گھسے ہوئے ہمارے اندر کھنڈ ۱۱

پاپ رُوپی دُشمن کو دُور کرو

अप त्यं वृजिनं रिपु स्तेनमग्ने दुराध्यम् ।
दविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम् ॥९॥

(اگنے) ہے جگت کے والی! (اپ کِردھی) دُور کر دیجئے (تیّم ورجنم) اُس پاپ (بُرائی) جو ہمارے اندر (رِپُو) دشمن ہو کر (ستینم) چور کی طرح گھُسا ہوا ہے۔ (دُرادھیّم) جس کا خیال کرنا بھی بُرا ہے (ست پتے) ہے سچے مالک الشیور! (دوِشٹھم اسیہ) اُسے ہم سے پرے کر دیجئے (سُگم کِردھی) جس سے ہماری زندگی کا راستہ آسان اور سُکھ مئے ہو جائے، ایسا سُگم کر دو۔ ہ

دُور بھگاؤ بھگون ہم سے چور کُٹل پاپی جَن کو
اندر بیٹھے چِت چوروں کو جو ہرتے وِچار دھن کو

मंत्र १०५ अन्त: जीवन में चोरों की भांति घुसे पापों को दूर करें

अग्ने जगत नेता परमेश्वर ! दूर कर दीजिये उस पाप को जो हमारे अंदर रिपु हो कर घुसा हुआ है, जिसका ध्यान करना भी भयाबह है । हे सत्पते परमेश्वर इसको हम से परे कर दीजिये । जिससे हमारा जीवन मार्ग सुगम हो जाये और सुख शान्तिमय ।

दूर भगाओ भगवन हम से चोर कुटिल पापी जन को ।
अंदर बैठे चित चोरो को जो हरते विचार धन को ।

منتر نمبر ۱۰۶ چھل کپٹی دھوکے بازوں کو بھسم کر دیجئے! کھنڈ ۱۱

श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्पते ।
नि मायिनस्तपसा रक्षसो दह ॥१०॥[१।११]

(ویر وِش پتے اگنے) ہے مہابل شکتی کے بھنڈار پرجا پالک جگت پتا پرمیشور!

(مے نوسیہ ستوسیہ شرُشٹی) میرے دوارہ سام گان پُوروک سُتتی کے نئے نئے پرکار سے گائے گئے گان کو کرپا کر کے سُنیئے اور (مائیی نہ رکھشا) چھل، کپٹی، دھوکے باز راکھشسوں (جن کے من میں کچھ اور ہوتا ہے عمل میں کچھ اور ہوتا ہے۔ جس سے شریف آدمی دھوکے سے مارے جاتے ہیں وغیرہ) کو (تپسا نی دہہ) اپنے تپ، تیج یعنی ڈنڈ شکتی سے سخت سزا دے کر بھسم کر دیجئے یا سُدھار کر دیجئے، جس سے ہم آپ کے پیارے اور پرانی ماتر کا ہت چاہنے والے ہمیشہ سُکھ شانتی سے رہیں۔

مایاوی پاکھنڈی دل کو بھسمی بھُوت کر دو بھگوان
جس سے سُکھی شانت ہردیہ ہو کرتے رہیں تیرا یش گان

(گیارھواں کھنڈ ختم ہوا)

मंत्र १०६ मायावी पाखंडियों को भस्मी भूत करो

हे महाबल शक्ति के भंडार प्रजा पालक जगत पिता ! मेरे द्वारा सामगान पूर्वक स्तोम गान को कृपा करके श्रवण कीजिये । जिनके मन में कुछ और वाणी में और क्रिया में कुछ और होता है ऐसे छली कपटी अधर्मी जनों को अपने तप तेज एंव दण्ड शक्ति से भस्म कर दीजिये वा सुधार दीजिये । जिससे हम आपके प्यारे उपासक प्राणी मात्र के हितकारी सदा सुखी रहें ।

मायावी पाखंडी दल को भस्मी भूत कर दो भगवान ।
जिससे सुखी शान्त हृदय हो करते रहे तेरा यशगान ।

منتر نمبر ۱۰۷ **اُتم ریتی سے بھگوان کا کیرتن کرو** کھنڈ ۱۲

प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे ।
उपस्तुतासो अग्नये ॥१॥

(اُپستُوتاسہ) ہے ٹھیک ٹھیک اُپاسنا ودھی (طریق عبادت) سے ایشور کی سُتتی

کرنے والو! (منگ بِشٹھائے) مہادانی (دِرتا ونے) اعلےٰ ترین قاعدے، قواعد، وِدھی وِدھان سے سرشٹی یگیہ کو چلانے والے (برہتے، شکرشو چشے اگنے) مہان قائد اعظم شدھ، نرمل، پاک روشنی سے منّور اگنی پرمیشور کے لئے (پرگایت) اُتم ریتی سے گان کرو، کیرتن کرو۔

سَتیہ پتی دُنیا کے والی پاک شدھ پرمیشور کی
سام گان سے گاؤ مہما مہادانی اُس ایشور کی

मंत्र १०७ उतम रीति से भगवान का कीर्तन करो

श्रद्धा युक्त उपासना विधि से ईश्वर की स्तुति करने वालो ! महा दानी सम्पूर्ण विधियों का विधान करने वाले महान विधाता एवं निर्मल प्रकाश वाले जगत पिता के लिए उत्तम रीति से सामगान कीर्तन करो।

सत्य पति दुनिया के वाली पाक शुद्ध परमेश्वर की ।
सामगान से गाओ महिमा महादानी उस ईश्वर की ।

منتر نمبر ۱۰۸ **تیری مِترتا سے منش تر جاتا ہے!** کھنڈ ۱۲

प्र सो अग्ने तवोतिभिः
सुवीराभिस्तरति वाजकर्मभिः ।
यस्य त्वं सख्यमाविथ ॥२॥

(اگنے) ہے پرکاش رُوپ پربھو! (یسیہ سکھیم توم آوِدھ) جس اُپاسک (عابد) کے سکھا بھاو کو مِترتا کو آپ سویکار کر لیتے ہو (سہ) وہ آپ کا پیارا بھگت (سُوویرابھی) اُتم وِیروں اور دَل بَل سے (واج کرم بھی) گیان اَنّ ایشوریہ آدی بڑھانے کر کرموں سے اور (اُوتی بھی) آپ کی مہان رکھشاؤں (حفاظتی طاقتوں) سے (پرترتی) تر جاتا ہے، خُوب بڑھ جاتا ہے، سمردھ ہو جاتا ہے۔

جس نے تیری مترتا کر لی سدا سدا سُکھ پاتا ہے
سب دُکھوں کو تر کر کے وہ شرن تیری میں آتا ہے

मंत्र १०८ तेरी मैत्री सुखदायक

हे प्रकाश स्वरूप प्रभो ! जिस उपासक के सखा भाव को मैत्री को आप स्वीकार कर लेते हो वह उपासक उत्तम वीरों के दल बल से ओर ज्ञान अन्न ऐश्वर्य आदि के बुद्धि कर्म से तथा आपकी महान रक्षाओं से सब दुखों से तर जाता है, पार हो जाता है । खूब बढ़ता है ।

जिस ने तेरी मित्रता कर ली सदा सदा सुख पाता है ।
सब दुखों को तर करके वह शरण तेरी में आता है ।

منتر نمبر ۱۰۹ اَرپن اُس کو اپنا کر کھنڈ ۱۲

तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे ।
देवत्रा हव्यमूहिषे ॥३॥

(دیواسہ) امرت دیوگن، جس (سُورنم ارتم دیوم) سُورگ سُکھ دھام جگت سوامی پرماتم دیو کو (د دھنورے) اپنی آتما میں دھارن کئے ہوئے ہیں (تم) اُس کو ہے اُپاسک (عابد) تو (گورُ دھیئے) ارچنا کیا کر، پانے کے لئے کوشاں رہ، تب تو (دیوترام) دیوں کے دیو بھگوان کو (ہویم) اپنے سمرپن کی آہوتی (اوہشے) پہنچا سکے گا۔

سُورگ دھام کے راجہ پرمیشور کی پیارے پُوجا کر
دیوں کا جو دیو پربھو وَر ارپن اُس کو اپنا کر

मंत्र १०९ अर्पण उसको अपना कर

अमृत देव गण जिस स्वर्ग पति जगत स्वामी देव को अपनी आत्मा में धारण किये हुए हैं उसकी हे उपासक तू अर्चना किया कर । उसकी

प्राप्ति के लिए सदा यत्नशील रह। तब तू देवन देव भगवान को अपने समर्पण की हवि दे सकेगा।

स्वर्गधाम के राजा परमेश्वर की प्यारे पूजा कर।
देवों का जो देव प्रभु ऊर अर्पण उसको अपना कर

منتر نمبر ۱۱۰ **بھگوان کہیں رُوٹھ نہ جائے** کھنڈ ۱۲

मा नो हृणीथा अतिथिं
वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः ।
यः सुहोता स्वध्वरः ॥४॥

ہے منشیو! (نہ) ہمارے لئے جو اگنی پُوجا کے یوگیہ اتھتی قابلِ صد احترام مہمان ہے، اُس کو مت (ماہرنی تھا) اپنے سے دُور مت کرو، اپنے انادر بھاو سے اُسے رُوٹھنے نہ دو۔ اُس کی تعظیم و تکریم اپنے دلوں میں بنائے رکھو (ایشہ) یہ پُوجیہ پرمیشور (وسو) ہم سب کو بسانے والا اور (پُرو پرشستہ) بہتوں سے پُوجا گیا (سوہوتا) بڑا آتم داتا ہے، جو ہر گھڑی دیتا دیتا ہی رہتا ہے، پھر (سُودھورا) اُتم مارگوں کا دکھلانے والا ہم سب کا رہنما ہے۔

جو واس دیو ہے سب کا کہیں وہ نہ رُوٹھ جائے تم سے
جو دیتا دیتے نہیں تھکتا بھگتی بنائے رکھنا اُس سے

मंत्र ११० रूष्ट न हो जाएं कहीं भगवान

हे मनुष्यो ! जो अग्नि अग्रणी संसार का हमारा पूज्य अतिथि है, उसको अपने से दूर वा अनादर मत करो न उसे अपने से रुष्ठ होने दो। परमेश्वर का समादर हृदयों में सदा बनाए रखो। वह प्रभु हम सब को बसाने वाला, हम में भी बसा हुआ सबसे पूजित और सर्वोतम दाता है जो हर घड़ी देता रहता है और हम सबका सन्मार्ग दर्शक भी वही एक है।

जो वासदेव है सब का कहीं वह रूठ न जाए तुम से।
जो देता देते नहीं थकता भक्ति बनाए रखना उससे।

منتر نمبر ۱۱۱ کلیان کاری ایشور کے کلیان کاری دان کھنڈ ۱۲

३ १ २ ३१र २र ३ २
भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा
३ १ २ ३ १ २ ३२
रातिः सुभग भद्रो अध्वरः ।
३ २ ३१र २र
भद्रा उत प्रशस्तयः ॥५॥

(سُوبھگ) سوبھاگیہ شالی اُپاسک (خُوش نصیب عابد) (آہُوتا) یگیہ کی آہُوتیوں اور آتم سمرپن دوارہ پُوجا گیا اگنی پرمیشور (نہ) ہم سب کے لئے (بھدر) سُکھ داتا کلیان کاری ہوتا ہے (راتی) اُس کا دیا دان بھی سُکھ کاری ہوتا ہے۔ (اُت) اور (پرشستیہ) اُس کا سُتتی گان بھی ہمیں آنند دینے والا ہوتا ہے۔ ے

پرمیشور ہے بھدر سبھی سُکھوں کا دینے والا وہ
اُس کی کریں پرستش سب دن سب سے پُوجا جاتا جو

मंत्र १११ भद्र परमेश्वर के भद्र दान

सोभाग्यशाली उपासक ! यज्ञ की आहुतियों और आत्म समर्पण द्वारा पूजा गया अग्नि परमेश्वर हम सब के लिए भद्र अर्थात कल्याण कारी होता है । उस सुख दाता का दिया दान भी सुखकारी होता है । और उसका स्तुति गान भी आनंद का भरने वाला होता है ।

परमेश्वर है भद्र सभी सुखों को देने वाला वोह ।
उसकी करें उपासना सब दिन सब से पूजा ज़ाता जो ।

منتر نمبر ۱۱۲ آپ کو ہی ہم وَرن کرتے ہیں کھنڈ ۱۲

१ २ ३ १
यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं
२ ३ १र २र३ १ २
देवत्रा होतारममर्त्यम् ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥६॥

(یجشٹھم) اُپاسنا یگیوں کو سپھل کرنے والے (دیوترا دیوم) دیووں کے دیو

(ہوتارم) سب پدارتھوں کے داتا (امرتیم) اوناشی مرن شریر سے رہت امر (استیہ جیبہ) سب پرانیوں کے جیون یگیہ کو (سُوکرتم) شبھ کرموں میں لگانے والے (تُوا) ہے پرمیشور! آپ کو (ووریمہی) ہم ورن کرتے ہیں۔ پُوجا کے یوگیہ مان کر دھارن کرتے ہیں۔

ورن یوگیہ ہو سرو جگت میں سب کے ہو جیون آدھار
دیووں کے ہو دیو امر سب یگیوں کے ہو کرنا دھار

मंत्र ११२ **वरण योग्य हो सर्व जगत में**

उपासना यज्ञों को सफल करने वाले देवों के देव महादेव सब पदार्थों के दाता प्रत्यशरीर से रहित अमर अविनाशी सब के जीवन यज्ञ को शुभ कर्मों में लगाने वाले परमेश्वर ! आपको पूजा के योग्य मान कर हम वरण करते हैं ।

वरण योग्य हो सर्व जगत में सबके हो जीवन आधार ।
देवों के हो देव अमर सब यज्ञों के हो करणाधार ।

منتر نمبر ۱۱۳ — **کرودھ اور پاپ کو دبا سکوں** — کھنڈ ۱۲

तदग्ने द्युम्नमा भर यत् सासाह
सदने कं चिदत्रिणम् ।
मन्यु जनस्य दूढ्यम् ॥७॥

اگنے پرمیشور! آپ مجھ میں (تت) وہ (دیُومنم) اَنّ، دھن، گیان اور آتمک بل (آبھر) سب طرف سے بھر دیجئے کہ (یت) جو (سدنے) شریر رُوپی گھر اور اپنے پریوار گھر میں رہنے والے (کنچت انزی نم) کسی بھی پاپ کو (آساسہہ) پوری طرح دبا سکوں اور (منیُم) کرودھ کی عادت پر بھی غلبہ پا سکوں جو کہ (جنسیہ دُھوڈھیم) منش کو دُربدھی (بدعقل) بنا دیتا ہے۔

ایسا دھن دو گیان دان جو پاپ نکٹ نہ آنے دے
برُی عقل بھی دُور کرے غصہ گھر میں نہ بھرنے دے

मंत्र ११३ **क्रोध और पाप को दबा सकूं**

अग्ने परमेश्वर! आप मुझ में वह आत्मिक धन बल ज्ञान दीजिये कि जिस से मैं शरीर रूपी गृह एवं परिवार समाज में रहने वाले किसी भी पाप को दबा सकने में समर्थ हो जाऊं। और क्रोधी स्वभाव को भी वश में कर लूं जो मनुष्य को दुर्बद्धि बना देता है।

ऐसा बल दो, ज्ञान दानजो पाप निकट न आने दे।
दुर्बद्धि भी दूर करे और क्रोध न घर में भरने दे।

منتر نمبر ۱۴॥ **نظرِ مہر** کھنڈ ۱۲

यद्वा उ विश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशे ।
विश्वेदग्निः प्रति रक्षांसि सेधति ॥८॥[१।१२]

(وِش پتی) سب پرانی پرجا کا سوامی مالک کُل ایشور (اگنی) (یدو یَ اُو) جب نشچے ہی (منشہ وِشے) عابد انسان کی آتمایں (سُوپریتہ) اُتم پریتی یکت ہو جاتا ہے۔ اُس کی سٹر دھا بھگتی سے پرسن ہو جاتا ہے تب وہ (شِتنہ) تیزی سے اُپاسک بھگت سے (وشواات رکھشانسی) سبھی راکھشی بھاؤ اور دُش کرموں کو (پرتی سیدھتی) نوارن کر دیتا ہے، دُور ہٹا دیتا ہے۔ سے

نظرِ مہر جب اُس کی ہوتی دُور بلا سر ہو جاتی۔ آنند کی گنگا بہہ اُٹھتی جب پریت ایش سے ہو جاتی

(اگنیئہ کانڈ، پہلا ادھیائے اور بارہواں کھنڈ ختم ہوا)

मंत्र ११४ **कृपा दृष्टि**

सब प्राणी प्रज का स्वामी ईश्वर जब निश्चय ही उपासकों की आत्मा में प्रीति युक्त हो जाता है तब वह तीव्रता से प्यारे भक्तात्मा के सभी राक्षी दुष्ट स्वभाव और कर्मों को निवारण कर देता हैं।

कृपा दृष्टि जब होती उसकी दूर बला हो हर जाती।
आनंद की गंगा वह उठती जब प्रीत ईश से पड़ जाती।

आग्नेय काण्ड प्रथम अध्याय और द्वादश खंड समाप्त हुआ।

پُورو آرچِک اَیندر کانڈ (پَرو) اَدھیائے دُوسرا، کھنڈ پہلا

पूर्वाचिक ऐन्द्र काण्ड (पर्व)
द्वितीय अध्याय प्रथम खंड

منتر نمبر ۱۱۵ **بھگوان کو پانے کے بھگتی رس پیدا کرو** کھنڈ پہلا

तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने ।
शं यद्गवे न शाकिने ॥१॥

(سُتے) بھگتی رس کے پیدا ہو جانے پر (وہ سچا) تم سب متر سکھا مل کر (پُورو ہوتائے) بہتوں سے بلائے گئے اور بہت ناموں سے بُلائے گئے اور (ستونے) بل شالی اِندر پرمیشور کے لئے (تت گایہ) اُس ستتی گان کو کرو جو (گوئے) گانے والے کی طرح (شا کنے) مہا بلوان اِندر بھگوان کو بھی (شم) پرسّن کرنے والا ہو ے

بھگتی رس کو پیدا کر کے گاؤ اِندر پربھو کا گان
خُوش دل اپنا ہو جس سے آشیرباد دیویں بھگوان

मंत्र ११५ भगवद् प्राप्ति के लिए रस पैदा करो

भक्ति रस के उत्पन्न होने पर तुम सब सखा मित्र मिलकर बहुतों से और बहुत नामों से बुलाये गये बलशाली इन्द्र परमेश्वर के लिए वह स्तुतिगान करो जो गायक की भांति परमैश्र्यवान महा बलवान इन्द्र को प्रसन्न करने वाला हो ।

भक्ति रस को पैदा करके गावो इन्द्र प्रभु का गान ।
हर्षित मन अपना हो जिससे आशीर्वाद देवें भगवान ।

منتر نمبر ۱۱۶ ایشا یش ملے جو سدا آنند کا دینے والا ہو کھنڈ پہلا

यस्त नूनं शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः ।
तेन नूनं मदे मदेः ॥२॥

(شت کرتو) ہے انت بدھی اور بے شمار کرموں کے کرنے والے اندر پرمیشور!
(تے) آپ کا جو (نوُنم) نشچے سے (دیئومنت مومد) اتینت کیرتی مان رس ہے (تین)
اُس سے آپ (نوُنم) نشچے ہی سدا (مدے) آنندت رہتے ہو۔ اُس سے ہمیں بھی (مدے)
آنندت کیجئے۔

نیک کاموں سے جو نیک نامی یا کیرتی ہوتی ہے، اُس کی خوشی یا آنند دیر پا نہیں
ہوتا وہی لوگ ہی دوسرے وقت شکوہ شکایت کرنے لگ جاتے ہیں۔ جس سے ہم پھر
دُکھی ہو جاتے ہیں، پر ایشور کا یش یا نیک نامی ازلی اور ابدی ہے۔ جس سے وہ سدا
آنندت رہتے ہیں، لہٰذا ہم بھی پربھو جیسے پوتر کرموں کو کرتے ہوئے ایسا یش بنائیں،
کہ جس سے ہم سدا آنندت رہیں، وہ ہے بھگوان کی سچی بھگتی کا رس پان جو ہمارے اندر پیدا
ہو کر ہمارے بدکردار کو پاک وصاف کر دے۔ تب ہم سدا رہیں گے آنند پرم آنند ؎

ازل سے آپ کا یش چھا رہا آنند روپ ایشور
بنے شبھ کرموں سے ایسا ہی یش میرا جگت پرور

मंत्र ११६ शाश्वत आनंद दायक यश

हे अनंत बुद्धि और कर्मो के करने वाले इन्द्र परमेश्वर ! आपका जो निश्चय से अत्यन्त कीर्तिमान रस है, उस से आप निश्चय ही आनंदित रहते हो । हमें भी शुभ कर्मों की प्रेरणा देते हुए ऐसी सत्य कीर्ति प्राप्त कराओ जिससे हम भी सदा आनंद मग्न रहें ।

अनादिकाल से है आपका यश छा रहा ईश्वर ।
बने शुभ कर्मो में ही कीर्ति मेरी जगत परवर ।

منتر نمبر ۱۱۷ ایشور کا گن گان وید بانی سے سب کو سنا کر پرسن کرو! کھنڈ پہلا

गाव उप वदावट मही यज्ञस्य रप्सुदा ।
उभा कर्णा हिरण्यया ॥३॥

(گاوا) ہماری بانیاں (اوٹے) ہردیہ کی گپھا میں (اُپ) پرمیشور کے نکٹ ہو کر اُس کا (ود) گن گان کریں تاکہ (مہی) ساری دھرتی کے لوگ (یگیہ رپ سُودا) برہم یگیہ کے متعلق اُتم بانی سب کو سنا سکیں اور ہر ایک آدمی (اُبھاکرنو) دونوں کانوں سے پوتر وید بانی سب کو سن کر (ہرنیہ یا) بھگوان کے پرتی شردھا سے جھوم اُٹھے۔ ترپت ہو جائے۔

ایش کے گن گان کرتے وید بانی کو سناؤ
جس سے شردھا اُمڈ آئے ایسے سُندر منتر گاؤ

मंत्र ११७ भगवद् कीर्तन वेद वाणी में सब को सुनाओ
हमारी वाणियां हृदय की गुफा में परमेश्वर के निकट हो कर उस का गुणगान करें। और प्रत्येक मानव दोनों कानों से पवित्र वेद वाणी को सुन कर भगवान के प्रति श्रद्धा से झूम उठे। तृप्त हो जाए।
ईश के गुणगान करते वेद वाणी को सुनाओ।
जिससे श्रद्धा उमड आए ऐसे सुन्दर मंत्र गाओ।

جتنا گائے گاتا جا

منتر نمبر ۱۱۸ کھنڈ پہلا

अरमश्वाय गायत श्रुतकक्षारं गवे ।
अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥४॥

(شرت ککھش) شرتی ارتھات وید بانی کو ہر سے پڑھنے سننے والے اُپاسک اُتم اور سب لوگ (اشوائے) اندریوں کا بل حاصل کرنے کے لئے پرمیشور کا (ارم گائین) بہت بہت گان کیا کرو (گوے) وید بانی کے رازوں کو جاننے کے لئے بھگوان کا (ارم) گان بار بار کرو (اندرسیہ دھامنے ارم) اندر بھگوان کے دھام اور تیج کی پراپتی کے لئے بھی جتنا ہو سکے زیادہ سے

زیادہ گان کرتے جاؤ۔

وید شاستر پروین ہے تو جگت کو بھی دے سُنا
دھام حاصل کر پربھو کا جتنا گائے گاتا جا

मन्त्र ११८ जितना गाये गाता जा

श्रुति (वेद वाणी) को हर समय पढ़ने सुनने वाले उपासक ! तुम और सब लोग इन्द्रियों का बल प्राप्त करने के लिए परमेश्वर का अधिकाधिक गान किया करो। वेदवाणी के रहस्यों को जानने के लिए ईश्वर गायन बारम्बार किया करो। इन्द्र के तेज और धाम को पाने के लिए भी जितना हो सके गाओ और गाते जाओ।

वेद शास्त्र प्रवीण है जब विश्व को भी दे सुना।
धाम हासिल कर प्रभु का जितना गाये गाता जा।

منتر نمبر ۱۱۹ پاپوں کے وناش کے لئے اِندر کو پکارو! کھنڈ پہلا

त॒मिन्द्रं॑ वाजयामसि म॒हे वृ॒त्राय॒ हन्त॑वे।
स वृषा॑ वृष॒भो भु॑वत् ॥५॥

(ورترائے ہے) آتمک شکتیوں کو دبا دینے والے اندر کے روحانی دشمنوں کام، کرودھ وغیرہ مہا پاپوں کے (ہنتوئے) وناش کرنے کے لئے (تم اندرم واج یام اسی) اُس اِندر پرم ایشور یہ وان کی ہم سب ارچنا کرتے ہیں، (سہ ورشا بھووت) وہ پرمیشور شکتیوں کی ورشا کرنے والا ہے اور (ورشبھ) گیان تتھا سکھ کی بھی ورشا کرتا رہتا ہے۔

اِندر کی پوجا کریں سُکھ، گیان، شکتی کے لئے
وگھن، بادھا کرنے والے ناش ہونگے پاپ سب

मन्त्र ११९ पाप के बिध्वन्स के लिए इंद्र को पुकारो

आत्मिक शक्तियों को दबा देने वाले काम क्रोधादि अन्तः शत्रुओं महा पापों के विनाश के लिये उस इन्द्र भगवान की हम सब अर्चना करते हैं। वह परमेश्वर शक्तियों को वृष्टि करता है और ज्ञान तथा सुख

की भी वर्षा करता ही रहता है।

इन्द्र की पूजा करें सुख, ज्ञान, शक्ति के लिए।
विघ्न बाधा करने वाले नाश हूंगे पाप सब।

منتر نمبر ۱۲۰ سُکھ کی وَرشا کرتے رہیں! کھنڈ پہلا

त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः।
त्वं सन् वृषन् वृषेदसि ॥६॥

(اِندر) ہے بل شالی پرمیشور! (توّم) آپ (بلات۔سہسہ۔اوجسہ ادھی جاتہ) شاریرک بل سے سہن کرنے والے کھشاتر بل اور منوبل کے ساہس سے اور آتما کی یعنی تمام رُوحانی طاقتوں سے بھی اُوپر ہو کر ظاہر ظہور رہیں (تُوّم ورشن سن) آپ ان تینوں بلوں جسمانی طاقت، مانسک شکتی یعنی بلند حوصلہ، بُردباری، قوّت برداشت اور رُوحانی طاقتوں کو اپنے عابدوں میں برساتے ہوئے (ورشا اِت اسی) ہمیشہ سُکھ وَرشا کرتے رہیں۔

جو کچھ ہماری طاقتیں اُن سب سے اُوپر اندر ہو
اپنے مہان الیشوریہ خوشیوں کی سدا ورشا کرو

मंत्र १२० सुख की वर्षा करते रहें

हे बलशाली परमेश्वर ! आप शारीरक बल युक्त हो, सहन करने वाले क्षात्र एवं मनोबल के साहस युक्त और अध्यात्म बलों से भी ऊपर हो कर कण कण में प्रगट हो रहे हैं। आप इन तीनों बलों शरीरिक बल, मानसिक बलों अर्थात साहस सहनशीलता और आत्मिक शक्तियों को अपने भक्तों में बरसाते हुए सदा सुख शान्ति की वर्षा करते रहें।

जो कुछ हमारी शक्तियां उन सब से ऊपर इन्द्र हो।
अपने महान ऐश्वर्य हर्षों की सदा वर्षा करो।

منتر نمبر ۱۲۱ یگ سے بھگوان کی پرسنتا کھنڈ پہلا

यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद्भूमिं व्यवर्तयत् ।
चक्राण ओपशं दिवि ॥७॥

(یگیہ) پروپکار، سیوا، خدمتِ خلق جس کے لئے یگیہ کا نام پرجاپتی ہے اور پرمیشور کی بھگتی، اُپاسنا سے اُس کی قربت، یقیناً یہ سبھی کرم (اندرم اوردھیت) اُس اندر بھگوان کی پرسنتا اور کرپا کو بڑھاتے ہیں۔ (یت) جو پرمیشور کہ (بھومی ویورتییت) زمین کو سُورج کے چاروں طرف گھما رہا ہے اور (دِوی اوپشم چکران) دیَولوک میں جس نے سُورج، چاند، تارے وغیرہ جگت کے سر کے طور پر بنا کر چمکائے ہیں۔

ے یگیہ نام پرمیشور کا ہے جس سے ہو سب کا پالن
ہے ثواب کا کام اِس سے ہوتے ہیں اِیشور پرسن

मंत्र १२१ यज्ञ से भगवान की प्रसन्नता

यज्ञ-प्रजापति है जिससे सबका पालन उपकार सेवा रक्षा करते हुए उस यज्ञ स्वरूप भगवान की उपासना भक्ति इत्यादि यह सभी कर्म उस इन्द्र परमेश्वर की प्रसन्नता और कृपा को बढ़ाते हैं। जो परमेश्वर भूमि को सूर्य के चारों ओर घुमा रहा है और द्यौ लोक में जिसने सूर्य चन्द्र नक्षत्र ब्रह्माण्ड के शिरोधार्य कर जगमगाए हैं।

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान यज्ञ से।

منتر نمبر ۱۲۲ حواسِ خمسہ پر حاوی ہو کر میرا آتما بھی مہان ہو جائے! کھنڈ پہلا

यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्त्र एक इत् ।
स्तोता मे गोसखा स्यात् ॥८॥

ہے اِندر (یتھا توم ایک اِت) جیسے آپ اکیلے ہی (وَسوہ) دھن گیان سمپدا اور زندگی کے تمام وسائل پر (الیشیہ) حاوی ہو (یدا ہم)، اگر میں بھی اپنے حواسِ خمسہ کو

پرانوں کو اور گیان دھن کو اپنے تابع کرلوں تو (گوسکھامے ستوتا سیات) اندریوں پر قابو حاصل کرکے میرا آتما بھی تیری حمد و ثنا میں اپنے کو مہان بنالے ۔

ایک اکیلے جگ کے رکھوالے ہو اپنی شکتی سے
مجھ میں بھی طاقت دو ایسی پیارے اپنی بھگتی سے

मंत्र १२२ इन्द्रिय दमन से आत्मा महान हो जाए

हे इन्द्र ! जैसे आप अकेले ही धन, ज्ञान सम्पदा तथा जीवन के सभी साधनों के स्वामी हो, मैं भी यदि अपनी इन्द्रिय, प्राण एवं मनआदि पर वशीकरण कर लूं तो निसंदेह मेरा आत्मा भी महान हो जाये तेरी स्तुति प्रार्थना और उपासना के साथ।

एक अकेले जग के रखवारे हो अपनी शक्ति से ।
मुझ में भी सामर्थ्य दो ऐसा प्यारे ! अपनी भक्ति से ।

منتر نمبر ۱۲۳ **ذرا جلدی جلدی قدم اُٹھا** کھنڈ پہلا

पन्यंपन्यमित् सोतार आ धावत मद्याय ।
सोमं वीराय शूराय ॥६॥

(سوتارہ) بھگتی رس کو پیدا کرنے والے اُپاسکو ! (مدیائے ۔ ویرائے ۔ شُورائے) آنند مگن ۔ شکتی مان ویر ۔ سمرتھ وان ہم سب کو پریرنا دینے اور اپنی پریرنا سے جگت کو چلانے والے تتھا پراکرم شیل سب بلوں کے بھنڈار کے لئے (پنیم پنیم اِت) اُتی پرشنسا یوگیہ اُتم اُتم (سومم) بھگتی بھاؤ کو ارپن کرنے کے لئے (آدھاوت) شیگھرتا کرو ۔ جلدی چلو ۔ جلدی چلو ۔

تیری چاہ انتظار میں بیٹھے پرکھو دامن بچھا
ذرا جلدی جلدی قدم اُٹھا در باغ ہے وہ کھلا ہُوا

मंत्र १२३ जरा जल्दी २ कदम उठा

भक्ति रस पैदा किये ईश्वर भक्तो ! आनंद स्वरूप समर्थवान वीर

सबके प्रेरक पराक्रम शील सर्वशक्ति स्रोत इन्द्र भगवान के लिए अति प्रशंसनीय उत्तम भक्ति भाव को भेंट करने के लिए जरा जल्दी चलो शीघ्र अति शीघ्र ।

तेरी चाह इन्तजार में बैठे हैं वह दामन बिछा।
जरा जल्दी जल्दी कदम उठा दरेबाग है वह खुला हुआ।

منتر نمبر ۱۲۴ — بھگتی رس کی بھینٹ کر رہے ہیں — کھنڈ پہلا

इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम् ।
अनाभयिन् ररिमा ते ॥१०॥[२।१]

(وسو) سارے جگت میں اور میرے ہردیہ میں بسنے والے پرماتمن! (ادم) یہ بھگتی رس (اندھ) ادھیاتمک اَن (رُوحانی خوراک) ہے۔ جسے ہم نے (سُتم) تیار کیا ہے۔ آپ اِسے (پِب) گرہن کیجئے، پان کیجئے۔ جیسے کہ کوئی آدمی (سُوپُورنم اُدرم) خوب بھر پیٹ دُودھ وغیرہ پی جاتا ہے (انابھ یِن) ہے سب اور سے نِربھئے، بے خوف وخطر اِیشور! ہم اُپاسک آپ کے لئے بھگتی رس (رِرِما) بھینٹ کرتے ہیں۔

سب کے شرناگت اے بھگون! ہم تیری شرن میں آتے ہیں
بھگتی رس سوم کو ارپن کر ا بھئے پد آپ سے پاتے ہیں

मंत्र १२४ भक्ति रस की भेंट

विश्व भर में और मेरे हृदय में बस रहे भगवान। यह भक्ति रस अध्यात्मिक अन्न है जिसे हम ने तय्यार किया है। आप इसे पान कीजिए स्वीकार कीजिये जैसे मनुष्य भर पेट दूधादि पी जाता है। हे निर्भय निरंजन परमेश्वर। हम उपासक आप के लिए भक्ति रस भेंट करते हैं।

सब के शरणागत भगवान तेरी शरण में आते हैं।
भक्तिरस सोम को अर्पण कर निर्भय पद आप से पाते हैं।

منتر نمبر ۱۲۵ — کِن پر آپ کی رَحمت برستی ہے! — کھنڈ ۲

२उ ३ २ ३ १ २ ३१र २र
उद् घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम् ।
१ २
अस्तारमेषि सूर्य ॥१॥

(سُوریہ) آتما کے اندھکار کو دُور کرنے والے سُورج پرمیشور! آپ نشچے سے اور اوشیہ اپنے ایسے اُپاسک کے لئے (ابھی اُد لشی) ظاہر ظہور ہو جاتے ہو (شرتا مگھم) جس کا رُوحانی خزانہ عرفان کے لعل و گوہر سے چمک اُٹھا ہے، اظہر الشمس ہے، جو اُس آتمک دھن سے دوسرے پرجا جنوں پر (ورِشبھم) سُکھ کی ورشا کرتا ہے (نر یا پسم) جو سب کے اُپکار میں ہمیشہ تیار رہتا ہے اور جس نے اپنے پاپوں پر (استارم) فتح حاصل کر لی ہے۔

رحمت برستی ہے وہاں جس دل میں تیرا نُور ہو
خلق خدمت جذبہ سے جو آتما بھرپُور ہو

मंत्र १२५ किन पर आप की कृपा होती हैं ?

आत्मा के अंधकार को मिटाने वाले सूर्य परमेश्वर ! आप निश्चय पूर्वक अवश्य अपने ऐसे उपासक के लिए प्रत्यक्ष हो जाते हो जिसका आत्मा अध्यात्म रूपी तेज से चमक रहा है । जो उस आत्मिक सम्पदा से प्रजाजनों पर सुख की वर्षा करता रहता है । जो सब के उपकार में सदा तत्पर रहता है और जिसने अपने पापों पर विजय प्राप्त कर ली है ।

रहमत बरसती है वहां जिस दिल में तेरा नूर हो ।
प्राणियों की सेवा से जो आत्मा भरपूर हो ।

منتر نمبر ۱۲۶ — اپنے بھگتوں کو وَش میں کر لیتے ہو! — کھنڈ ۲

२ ३१र २र ३ १ २ ३ १ २
यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य ।
२३ १ २ ३ १ २
सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥२॥

(ورترِہن) اگیان اندھکار اور گناہوں کا قلع قمع کرنے والے (سُوریہ اِندر) سُورجوں کے بھی سُورج سب طرف منوّر ہو رہے اِندر پرمیشور! (یدا دیہ کت چہ) جب کبھی آپ اُپاسکوں عابدوں

کے لئے (ابھی اُدگا) پرتیکھش رُوپ سے پرکاشمان ہو جاتے ہو (تت سروم تے وشے) تب وہ سبھی بندۂ خدا آپ کے بس میں ہوکر سدا کے لئے آپ کے ہو جاتے ہیں۔

منتر شکتی کی خصوصیت

شونک رشی نے لکھا ہے کہ سُورج نکلنے پر اس منتر سے اندر پرمیشور کی سُتتی کرنے سے منش دشمنوں پر غلبہ حاصل کر کے جگت بھر کو اپنے بس میں کر سکتا ہے۔

سُورج کی طرح جہل کا اندھیرا مٹا کر
کرتے ہو اپنے بس میں اُجالے کو دکھا کر

मंत्र १२६ अपने भक्तों को वश में कर लेते हो

अज्ञान अंधकार और पापों का विध्वन्स करने हारे सूर्यो के भी सूर्य इन्द्र परमेश्वर! जब कभी आप अपने उपासकों के लिये प्रत्यक्ष रूप से प्रकाशमान हो जाते हो तब वे आप के प्यारे सदा के लिए आपके वश में आ जाते हैं।

मंत्र शक्ति

शौणिक ऋषि ने लिखा है कि सूर्य उदय होने पर इस मन्त्र से परमेश्वर की स्तुति करने से मनुष्य शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर विश्व भर को अपने वश में कर सकता है।

सूर्य वत अज्ञान का अंधेरा मिटा कर।
करते हो वश में अपने उजाले को दिखा कर।

منتر نمبر ۱۲۷ **سدا جوان ہمارا سچّا دوست** کھنڈ ۲

य आनयत् परावतः सुनोती तुर्वशं यदुम्।
इन्द्रः स नो युवा सखा ॥३॥

(یہ اندر) جو اندر پرمیشور (ترُوشم یدُم) ہنسک ورتیوں کو وَش میں کرنے والے اور اِس طرف کو اپنا رجحان بڑھانے والے عابد کو (سُونیتی) اُتم متی، عقل پاک دے کر (پراوتہ آنیت) دُور برائیوں کے راستے سے ہٹا کر اپنی طرف لے آتا ہے یا اپنے سامنے کر لیتا ہے (سہ نہ سکھا یوا) وہ پرمیشور ہی ہمارا سچا دوست ہے جو ہمیشہ جوان ہے۔

جو وِشو کو شُبھ نیتی سے ہے راستی پر ڈالتا
وہ اِیشور ہے یُووک سب کو مترین کر پالتا

मंत्र १२७ सदा युवा सखा

जो इन्द्र परमेश्वर हिन्सक वृत्तयों को वश में करने वाले और इस ओर अग्रसर होने वाले उपासक को सुमति देकर और कुमार्ग से हटाकर अपने सन्मुख कर लेता है वह परमेश्यर ही हमारा युवा सख है

जो विश्व को शुभ नीति से सन्मार्ग पर है डालता।
युवा सखा ईश्वर हमारा सबको है वह पालता।

منتر نمبر ۱۲۸ جہالت کی تاریکی میں تیری مدد چاہیئے کھنڈ ۲

मा न इन्द्राभ्या३दिशः सूरो अक्तुष्वा यमत्।
त्वा युजा वनेम तत् ॥४॥

(اِندر اکتوشُو) اگیان اندھکار کی راتوں میں آپ (مانہ ابھی آدِشا) نہ تو ہمیں آپ سیدھا راستہ سُجھاتے ہیں اور نہ (سُورہ) پریرنا دیتے ہیں اور نہ (آیمت) ہمارے اندر بیٹھے معلوم ہوتے ہیں۔ (اگیان وش ہم آپ کو انتر آتما میں جان بھی نہیں پاتے) (تُوا یُجا تت ونیم) ہم تو آپ کی مدد کے ذریعے ہی جہالت کی تاریکیوں کو مٹا سکیں گے۔ یہ ہے ہمارا یقینِ واثق۔

رات ہونے پر نہیں جب راہ کوئی سُوجھتی!
ہو پرجا ویاکل اندھیرے میں ہے تجھکو ڈھونڈتی

मन्त्र १२८ अज्ञान अंधकार में तेरा सहारा

अज्ञान अंधकार की रातों में न तो हमें सन्मार्ग सुझाते हैं और न प्रेरणा ही देते हैं और न हमें अपने अन्दर बैठने की प्रतीती होती है कि आप अन्तर्यामी रूप से हमारे अन्तरात्मा में बिराजमान है। पर हमारा तो यह निश्चय है कि आपके सहाय से ही हमारा अज्ञान नाश होगा अन्यथा नहीं।

रात होने पर नही जब राह कोई सूझती।
हो प्रजा व्याकुल अंधेरे में है तुझको ढूंढती।

منتر نمبر ۱۲۹ — سُکھ شانتی دینے والا دھن — کھنڈ ۲

१ २   ३ २ ३ २ ३ १ २   ३ १ २
एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम् ।
१ २ ३ १ २
वर्षिष्ठमूतये भर   ॥५॥

(اِندر) ہے ایشوریہ دانی پرماتمن! تُو (سان سِم سجتوانم) سکھ شانتی دینے والے شترووُں کے درمیان جے دلانے والے اور نفسانی خواہشات کو بھی ختم کرانے والے (سداسہم) دشمن طاقتوں کو دبانے والے (ورشِشٹھم) سروشریشٹھ سب سے اُتم (رِیم) ادھیاتمک بل شکتی رُوپ دھن کو (اُوتیے آبھر) ہماری سب طرف سے رکھشا کے لئے دیجئے۔

ہے اِندر وہ دھن دو ہمیں جو بھگتی سے بھرپُور ہو
دیکھ جس کو دُشمنوں کا حوصلہ سب چُور ہو

मन्त्र १२९ सुख शान्ति देने वाला धन

हे ऐश्वर्यवान ! सुख शान्ति देने वाले, शत्रुओं के मध्य जय दिलाने और विषय वासनाओं को वस करने वाले एवं विरोधि शक्तियों को पराभव करने वाले सर्वश्रेष्ठ अध्यात्म बल रूप धन को हमारी रक्षा के लिये प्रदान करें ।

हे इन्द्र वह धन दो हमें जो भक्ति से भरपूर हो ।
देख करके शत्रुओं का हौसला सब चूर हो ।

منتر نمبر ۱۳۰ — ہمارے پرم ساتھی اِندر ایشور — کھنڈ ۲

१ २ ३ १ २ ३२उ ३ १ २
इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
युजं वृत्रेषु वज्रिणम्   ॥६॥

(ویم) ہم (مہادھنے) مہادھن یعنی موکھش کی پراپتی میں شرارتی عناصر اور کام کرودھ وغیرہ بُرائیوں کے ساتھ بڑے یُدھوں میں اور (اربھے) چھوٹے دھن یعنی روحانی خزانے دُنیاوی سُکھ شانتی دھن کو بھی حاصل کرنے میں (یُجم اِندرم بجرِنم ہوامہے) ہر وقت ساتھ

رہنے والے پرم سہیوگی پاپ رُوپی دشمن کا سنگھار کرنے والے بجر دھارن کئے ہوئے اَیشور یہ وان اِندر کو پکارتے ہیں جب کہ (ورتر لیشو) چاروں طرف گناہوں سے گھر جاتے ہیں۔

سب بُرائیوں کے صفائے کیلئے ہو بجر دھاری اِیشور
موکھش سُکھ سنسار سُکھ کے دینے والے ایشور

मंत्र १३०　　परम साथी इंद्र परमेश्वर

हम महा धन मोक्ष की प्राप्ति में, दुष्ट मनुष्यों और काम क्रोधादि दुष्प्रवृत्तियों के साथ महा संग्रामों में तथा अल्प धन अध्यात्मिक सुख शांति धन को भी प्राप्त करने में अपने हर समय के साथी परम सहयोगी, पाप रूपी दुष्ट दल का संहार करने बजर हस्त ऐश्वर्यवान इन्द्र परमेश्वर का आहवान करते हैं जब कि चारों ओर पापों से घिर जाते हैं।

सब बुराईयों के सफाये के लिए हो बजर धारी ईशवर।
मोक्ष सुख संसार सुख के देने बाले ऐशवर।

منتر نمبر ۱۳۱ کمزور عابد کو بھی اِیشور زور آور بنا دیتا ہے! کھنڈ ۲

१ २　３ १ २　३१२　२२　३ १ २
आपिबत् कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्रबाह्वे ।
१ २　३ १ २
तत्रादादिष्ट पौंस्यम्　॥७॥

(کدرُوہ) دھیمی چال والے کمزور عابد کے بھی (سُتم) پُورن بھگتی رس کو (اِندر) پرمیشور (اپی وت) منظور کر لیتا ہے تاکہ اُپاسک (سہسر باہوے) ہزاروں بازوؤں والا بن کر کیرتی مان اور بلوان ہو سکے۔ (تتر) تب اُس میں پرمیشور (پَونسیم آددِشٹ) طاقت مردمی جواں مردی بھر دیتا ہے۔

سوم رس پی کے بھگت کا کرتا وہ کلیان ہے
کتنا ہو نربل اُسے کر دیتا وہ بلوان ہے

मंत्र १३१ भक्ति सम्पन्न अशक्त उपासक को भी भगवान शक्तिमान बना देता है

अल्प शक्ति उपासक के भी पूर्ण भक्ति रस को परमेश्वर पान कर लेता अर्थात स्वीकार कर लेता है। ताकि वह सहस्र बाहु होकर यशस्वी और बलवान हो जाए तब उस प्यारे उपासक में इन्द्र भगवान पौरुषय भी भर देता है।

सोमरस पीकर भगत का करता वह कल्याण है।
कितना हो निर्बल, उसे कर देता वह बलवान है।

منتر نمبر ۱۳۲ — اپنے چاہنے والوں کو پہچانیئے! — کھنڈ ۲

वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र नोनुमो वृषन् ।
विद्धी त्वा३स्य नो वसो ॥८॥

(ورشن اِندر) سُکھ کی وَرشاکرنے والے اِندر! (ویّم توٗا یوا) ہم اُپاسک کیول آپ کو ہی چاہتے ہیں، (ابھی پرنو نُما) آپ کو سب جگہ ظاہر ظہور مان کر بار بار ستتیاں گاتے تیری شرن لیتے ہیں، (وسو) ہے ہردے باسی بھگوان! (نہ اسیہ توُودہی) ہماری اِن پکاروں اور حمد و ثنا یا پرارتھناؤں کو آپ جانتے بھی ہیں، ہمیں جانئیے بھی سہی - ے

آپ کو ہیں چاہتے نہیں اور کوئی چاہنا
آئے ہیں تیری شرن میں بھگون ہمیں پہچاننا

मंत्र १३२ चाहने वालों को भगवान जाने

सुख की वर्षा करने वाले इन्द्र! हम उपासक केवल आपको ही चाहते हैं। सब जगह आपको प्रत्यक्ष मानकर बारम्बार स्तुतियां गाते हुए तेरी शरण लेते हैं। हे हृदय वासी भगवान! हमारी इन प्रार्थनाओं को सुनिये और कृपालु देव हमें जानिये और पहचानिये।

आपको हैं चाहते नहीं और कोई चाहना।
आए हैं तेरी शरण भगवन हमें पहचानना।

منتر نمبر ۱۳۳ اِیشور کو اپنا سکھا بنا لینے والے ہردے آسن پر بھگوان سدا براجمان ہیں! کھنڈ ۲

आ वा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्।
येषामिन्द्रो युवा सखा ॥६॥

(یے اگنم اِندھتے) جو اُپاسک (اگنم) برہم اگنی کو اپنے آتما میں (اندھتے) روشن کر لیتے ہیں، اَور (ییشام اِندر یُووا سکھا) جن کا وہ سدا جوان پرمیشور اِندر سچّا دوست بن جاتا ہے۔ اُن کے (آنُوشک) ہمیشہ (برہی آسترننتی) اپنے ہردے آسن پر بھگوان براجمان رہتے ہیں۔ (گھا) یہ بات پکّی جانو۔

برہم اگنی کو جلا کر دوست جو اُس کو بناتے
دِل کے مندر میں ہمیشہ اِندر اُنکے بیٹھ جاتے

मंत्र १३३ सदा बिराजमान हैं भगवान अपने सखा के हृदय आसन पर

जो उपासक ब्रह्म अग्नि को अपने आत्म में प्रदीप्त कर लेते हैं। और जिनका वह सदा युवा इन्द्र ईश्वर सखा बन जाता है। उनके हृदय आसन पर वह सदा बिराजमान रहते हैं यह निश्चय है।

ब्रह्म अग्नि को जला कर जो सखा उसको बनाते।
मन के मंदिर में सदा हैं इन्द्र उनके बैठ जाते।

منتر نمبر ۱۳۴ دویش اور دویشی کو بھسمی بھُوت کرو کھنڈ ۲

भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः।
वसु स्पार्हं तदा भर ॥१०॥[२।२]

ہے پرمیشور! (وِشوا دوِشہ بھِندھی) ہماری سب پرکار کی دویش بھاوناؤں کو اور

دولیش کرنے والے دُشٹ شتروؤں کو چھن بھن کر دیجئے' (بادھہ یری اپ)، بادھائیں، وگھن روکاوٹیں دُور کر دیجئے (مردھا جہی) دیواُسر سنگرام میں جو اندراور باہر کام کرودھ وغیرہ اور شرارتی عناصر ہیں، اُنہیں بھی بھسمی بھُوت کر دیویں اور (سپارہم وسُوتت آبھر) اور کرپاکر کے جو ہماری منوکامنائیں ہیں' وہ ادھیاتمک دھن، موکھش جو روحانی خزانے کا منبع ہے وہ ہمارے لئے کھول دیجئے!

دُشمنی کی بھاونا اور دُشمنوں کو دُور کر دو
وِگھن بادھائیں ہٹاکر موکھش کے امرت کو بھر دو
(دُوسرا کھنڈ (دشتی) ختم ہُوا)

मंत्र १३४ द्वेष और द्वेषी को भस्मी भूत कर दे

हे परमेश्वर हमारी सब द्वेषभावना और द्वेष करने हारे, दुष्ट शत्रुओं को छिन्न भिन्न कर दीजिये। बिघ्न बाधाओं को भी दूर कर देवें देवासुर संग्राम में जो अन्दर और बाहर के काम क्रोधादि एवं दुष्ट मनुष्य है उन्हें भी ध्वंस कर दीजिये और हमारी मनोकामनाएं जो अध्यात्म महा धन मोक्ष की हैं वह पूरी कीजिये।

शत्रुता की भावना और शत्रुओं को दूर कर दो।
विघ्न बाधायें हटाकर मोक्ष के अमृत को भर दो।

منتر نمبر ۱۳۵ — ڈَروُوہ بڑا زبردست ہے — کھنڈ ۳

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ २२
इहेव भृएव एषां कशा हस्तेषु यद्वदान्।
१२ २२ ३१२
नि यामञ्चित्रमृञ्जते ॥१॥

(الیشام) ان ہماری ایک دوسرے کے لئے دشمنانہ چالوں الیسی روکاوٹوں اور لڑائی فساد کی شیطانی حرکات کے (ہستیشُو) ہاتھوں میں (کشا) مانو کہ چابکیں (مِنتر) ہیں (یت وِدان) جن کی مار کی آوازیں (ایہہ اِو) اِس زندگی کے اوقات میں (شرنوے) مَیں سُن رہا ہوں - پرمیشور ان چابکوں کے ذریعے (نیامن) ہم سب کو ازلی قاعدے قانون کی حکومت میں اپنے (چِیترم رِنجتے) لتعجّانہ، حیران کُن ڈھنگ سے چلا رہا ہے، جس سے اُس کی گرفت سب پر

عیاں ہوتی ہے۔

تشریح:۔ بیماریاں، تکالیف، مانسک پریشانیاں، بنے بنائے کاموں میں ایک روکاوٹیں، وِگھنوں، یا دھاؤں کے پہاڑوں کا ٹوٹ پڑنا، طوفان یا دو باراں اور سیلابوں کی تباہی خیزیاں وغیرہ اِن چابکوں کی ماریں ہیں، جن کو جنتی بستی، یوگی اور پرمیشور کے پیارے سُن پاتے ہیں اور کہہ اُٹھتے ہیں کہ ؎

یہ ہے قانون قدرت کا کرو جیسا بھرو ویسا
نہ رشوت اور سفارش سے وہاں تو بچنے پائیگا

मंत्र १३५ डरो वह बड़ा जबरदस्त है

इन परस्पर के द्वेष भावनाओं, विघ्नबाधाओं के युद्ध प्रवृतियों के हाथ में मानो कि चाबुकें (कोड़े) हैं जिनकी मार के भयानक शब्द इस जीवन में मैं सुन रहा हूं। परमेश्वर इन दण्ड रूप चाबुकों द्वारा अपने शासन के नियन्त्रण में हम सब को अद्भुत प्रकार से रखता हुआ अपने स्वरूप को दिखा रहा हैं।

यह हैं कानून कुदरत का करो जैसा भरो वैसा।
न रिशवत और सिफारश से वहां तू बचने पायेगा।

منتر نمبر ۱۳۶ **تیری انتظار میں!** کھنڈ ۳

इम उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः ।
पुष्टावन्तो यथा पशुम् ॥२॥

(اندر) دُنیا کے زر و مال، دھن دولت کے سر چشمے ایشور! (امے سکھائے سومنا) یہ تیرے اُپاسک، بھگت جن تیرے سچے متر سکھا تیرے لئے شردھا بھگتی رس کو لئے ہوئے نشچے کرکے (تو اِو چکھشتے) منتظر ہوکر تیری راہ دیکھ رہے ہیں (یتھا پُشٹا وَنتا پشُوم) جیسے گھاس دانہ تیار رکھتے ہوئے پشو پال اپنے گئو وغیرہ پشوؤں کی وقت پر انتظار کرتے رہتے ہیں۔ ؎

جس طرح راہ تکتا پالی گئوؤں کی کرنے کو خدمت
منتظر بھگوان کے ہیں دان کرنے کو عقیدت

मंत्र १३६ **तेरी प्रतीक्षा है**

ऐश्वर्य के स्रोत इन्द्र परमेश्वर ! यह तेरे उपासक सखा भक्त जन तेरे लिए सोम (भक्ति रस) को लिए हुए निश्चय करके तेरी राह देख रहे हैं। जैसे घास दाना तय्यार रखते हुए पाली अपने गौ आदि पशुओं की प्रतीक्षा करता रहता है।

जिस तरह राह तकता पाली गौवों की करने को खिदमत।
मुन्तज़िर भगवान के हैं भेंट करने को अकीदत।

منتر نمبر ۱۳۷ تمہارے کرودھ کے آگے ہیں بدیاں سرنگوں رہتیں! کھنڈ ۳

ममस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः।
समुद्रायेव सिन्धवः ॥३॥

(اسیہ منیوے) اس پرمیشور کے منیو یعنی دُشٹوں پر کرودھ روپ تیج کی آنکھ سدا رکھنے پر (وِشوا وِشہ کرشٹیہ) سب جگہ بسنے والی منش پرجائیں (نمم نمنت) قدرتی طور پر سدا جُھکتی آئی ہیں یا اطاعت میں رہتی آئی ہیں، کیونکہ وہ پربھو بدی اور بدکرداروں پر کڑی نظر رکھتا ہے (سمدرائے سندھواو) جیسے ندیاں اپنے آپ سمندر کی طرف بہتی چلی جاتی ہیں۔

ے تمہارے کرودھ کے آگے ہیں بدیاں سرنگوں رہتیں
ہیں مجبوری سے جیسے بھاگتی ندیاں سمندر میں

मंत्र १३७ **नत मस्तक है पाप तेरे मन्यु के आगे**

इस परमेश्वर के मन्यु अर्थात दुष्टों पर क्रोध रूप के लिए प्रजाएं सदा झुकती रही हैं जैसे नदियां स्वभावत: समुन्द्र की ओर झुकती हुई भागी जा रही है क्योंकि वह प्रभु पाप कर्मा पर कड़ी दृष्टि रखता है।

तुम्हारे क्रोध के आगे हैं बदियाँ सर झुकी रहती।
है मजबूरी से जैसे भागती नदियां समुंदर में।

منتر نمبر ۱۳۸ — ## سَت سَنگتی اور ہَری شَرن — کھنڈ ۳

देवानामिदवो महत् तदा वृणीमहे वयम् ।
वृष्णामस्मभ्यमूतये ॥४॥

(ورِشنام دیوانام) سُکھ شانتی اور گیان کی وَرشا دھاراؤں کو بہانے والے دیوؤں کے دیو پرمیشور اور وِدوانوں کی (اِت) ہی (مہت نت اوہ) مہان رکھشاؤں اور شرن کو (ویَم اسمبھیم اُوتیئے) ہم سب بلاؤں سے بچنے کے لیے (آورنی مہے) ہمیشہ چاہتے رہتے ہیں، ورن کرتے ہیں۔

گیانیوں کی شَرن ہو پرماتما کی ہو مہر
ہر بلائے زندگی کا نُسخہ ہے یہ کارگر

मंत्र १३८ — ## सत्संगति और हरि शरण

सुख शान्ति और ज्ञान धाराओं को बहाने वाले देवों के देव परमेश्वर और विद्वानों की ही महान रक्षाओं और शरण को हम सब बलाओं से बचने के लिए सदा चाहते रहते हैं। वरण करते हैं।

ज्ञानियों की शरण हो परमात्मा की हो मिहर।
बचने से हर इक बला की है दवा यह कारगर।

منتر نمبر ۱۳۹ — ## مجھ کو بھی وید گیان سے منوّر کریں! — کھنڈ ۳

सामानां स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते ।
कक्षीवन्तं य औशिजः ॥५॥

(برہمنسپتے) ویدپتی سوامی پرمیشور! (یہ اُوشجہ) جو مَیں پرکاش وان آپ کا پُتر ہوں اور (ککھشی ونتم) وید وِدّیا کے حصول کے لئے کمر کسے ہوئے رہتا ہوں (سوما نم) اس کے لئے سوم بھگتی رس سے عقیدت بھرا دل جوڑے ہوئے ہوں، لہٰذا مجھ کو

آپ (سُوَرنَم کِرنوہی) وید گیان کی شمع سے روشن کیجئے! ے

وید وِدّیا کے نِدھی! مجھ کو بھی وید پڑھائیے
قبُول کر میری اطاعت کو مجھے چمکائیے

मंत्र १३६ वेद ज्ञान की ज्योति दीजिये

वेद ज्ञान के पति परमेश्वर ! मैं जो आपका तेजस्वी पुत्र हूँ। वेद विद्या की प्राप्ति के लिए सदा कमर कसे हुए रहता हूं और आपके लिए भक्ति रस को भी संजोए हुए हूँ। अत: आप मुझे वेद विद्या से प्रकाशित कीजिये।

वेद विद्या के निधि ! मुझको भी वेद पढ़ाईये।
सेवा मेरी स्वीकार कर मुझको भी कुछ चमकाईये।

منتر نمبر ۱۴۰ **ہماری پرارتھناؤں کو سُنیں!** کھنڈ ۳

बोधन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूर्यासुतिः ।
शृणोतु शक्र आशिषम् ॥६॥

(شکر) شکتی مان بھگوان (نہ بودھن منہ استُو) ہمارے منوں کو ادھیاتمک گیان رُوحانی علوم سے روشن کرے (اِت ورترہا) جس سے ہماری بُرائیاں نشٹ ہوں۔ (بھُوری آسُوتی) پربھُو تک رسائی کے لئے ہم بہت زیادہ شردھا بھکتی اور گیان کی بھاوناؤں سے بھر گئے ہیں، وہ (ہماری (آشِشم شِرنوتو) منگل کامناؤں اور پرارتھناؤں کو کرِپا کر کے سُنیئے! ے

ملتجی ہیں گیان بھگتی کے بھرے ہر دلوں سے ہم
چھُوٹ جائیں بدیوں سے فریاد سُن لیں اگر ہم

मंत्र १४० हमारी प्रार्थनाओं को सुनें

शक्तिमान परमेश्वर हमारे मनों को अध्यात्मिक ज्ञान से प्रकाशित करे। जिससे हमारी बुराईयाँ नष्ट हों। भगवान की प्राप्ति के लिए

हमारे हृदय अत्यन्त श्रद्धा भक्ति से युक्त हैं वह हमारी मंगल कामनाओं को कृपा कर श्रवण करे।

प्रार्थी हैं ज्ञान भक्ति के भरे हृदयों से हम।
सब बुराईयाँ छूट जायें सुन ले जो फर्याद ब्रह्म।

منتر نمبر ۱۴۱ — اُتم پرجا اور سُوبھاگیہ کی پراپتی — کھنڈ ۳

३ १ २ ३ १२ ३ १ २
अद्या नो देव सवितः प्रजावत् सावीः सौभगम्।
१ २ ३ १ २
परा दुःष्वप्न्यं सुव ॥७॥

(سوِتا دیو) سب جگت کو پیدا کرنے والے پرمیشور (ادیہ نہ پرجا وت سُوبھگم ساوی) آج ہی ہم کو اُتم پرجا پُتر آدی کے ساتھ اُتم اِیشوریہ، دھن، دولت، مال، خزانہ، دھرم، یش، لکھشمی اور گیان کو دیجئے اور (دُش وپنیم پراسُو) ہمارے بُرے خیالات، بُرے کام اور دُکھوں کو دُور کر دیجئے!

۵

سب بُرائیاں دُور ہوں اور دُور پاپ وچار ہوں
ایسا ہمیں سُوبھاگیہ دو سنتان بھی اُتم بنے

मंत्र १४१ उतम प्रजा और सौभाग्य की प्राप्ति

सब जगत को उत्पन्न करने वाले परम पिता! आज ही हमको उत्तम प्रजा के साथ उत्तम ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री कीर्ति लक्ष्मी तथा ज्ञान को दीजिये।

सब बुराईयां दूर हूं और दूर पाप विचार हों।
ऐसा हो सौभाग्य और सन्तान भी उत्तम बने।

منتر نمبر ۱۴۲ اِیشور کہاں ہے اور اُسکی عِبادت کا مُستحق کون؟ کھنڈ ۳

क्वा३स्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः ।
ब्रह्मा कस्तं सपर्यति ॥८॥

جو پرمیشور کہ (تُووی گرِیوا) سب پاپوں کو نِگلنے والا ہے (یُوا اناتن) ایسا ہمیشہ جوان جو کبھی جُھکتا اور دبتا نہیں ہے، جیسے برہما یعنی سب سے مہان مانا جاتا ہے (اسیہ وِرشبھ) وہ سُکھ شانتی کی ورشا کرنے والا (کوا) کہاں حاصل کیا جاتا ہے؟ نیز (کہہ) کن اوصاف والا کون (تم) اُس پرمیشور کی (سپریتی) پوجا یا عبادت کرسکتا ہے؟

ے سَدا جوان پاپ ہاری بَرہم کو کہاں ملیں؟
اور کِن صفات سے بھرے ہوئے پُوجا کریں؟

(اِس کا جواب اگلے منتر میں)

मंत्र १४२ प्रभु मिलन का स्थान कहाँ और किनको मिलता है?

जो परमेश्वर सब पापों को निगलने वाला, सदा युवा न दबता है न झुकता है जिसे ब्रह्म कहते हैं। वह सुख शान्ति की वर्षा करने वाला कहाँ प्राप्त होता है? और कौन उसकी उपासना के योग्य हैं?

युवा सखा जो पाप हारी, ब्रह्म को कहां मिलें?
और किन गुणों से युक्त होके हम पुजा करें?
(प्रश्नों का उत्त र अगले मन्त्र में)

منتر نمبر ۱۴۳ پہاڑوں کی گُفاؤں اور ندیوں کے سنگم پر کھنڈ ۳

उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च नदीनाम् ।
धिया विप्रो अजायत ॥६॥

(گِری نام) پربتوں کی (اُپ ہَوَرے) گُفاؤں اور گھاٹیوں میں (چہ) تتھا (ندی نام سنگمے)

دریاؤں کے کناروں یا سنگم پر پیارا اُپاسک عابد (دھیا) پرمیشور کے لئے دھارنا دھیان یکسوئی ساتوک بُدھی اور نیک کاموں سے (وپر) میدھاوی یعنی راست راہی عقل پاک (اجایت) بن جاتا ہے، کون مستحق ہے بھگوان کو پانے کے لئے اور کہاں وہ ملتا ہے، اُس کے حصول کی خصوصی جگہ کون سی ہے؟ اِس کا جواب با ثواب اس منتر نے دے دیا ہے۔

ے

پہاڑوں کی گُفاؤں میں اور ندیوں کے ملاپ پر
پاتے ہیں خرِدمند ریاضت کے زور پر

मंत्र १४३ पर्वतों की गुफाओं में सात्विक बुद्धि होकर

पर्वतों की गुफाओं और नदियों के संगम में प्यारा उपासक परमेश्वर के. लिए धारणा ध्यान समाधि सात्विक बुद्धि और शुभ कृत्यों से मेधावी होकर योग्य बन जाता हैं।

पर्वतों की कंदरों में नदियों के मिलाप पर।
पाते मेधावी उसे सद्विद्या के आधार पर।

منتر نمبر ۱۴۴ — **مہادانی سمراٹ کی سُتتی گاؤ** — کھنڈ ۳

प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः।
नरं नृषाहं मंहिष्ठम्   ॥१०॥[२।३]

پیارے بھگوان کے بھگتو! (گیر بھی اِندرم پرستوت) پرستش کی زبان سے پرمیشور کی خوب سُتتی کرو، گُن گان اور سراہنا کرو، کیونکہ وہ (چرشنی نام سمراجم) منشیوں کا سمراٹ، راجہ مہاراجہ شاہوں کا شہنشاہ ہے اور (نویم نرم) قابلِ صد احترام نیتا ہے (نرشاہم منگ ہشٹم) نیتاؤں کا بھی سربراہ اور مہا دانی ہے!

ے

آؤ بھگت جن عابدو گُن گائیں دانی ایش کا
راجاؤں کا راجہ ہے جو اور نیتا سارے جگت کا

मंत्र १४४ महादानी सम्राट की स्तुति करो

प्यारे भगवान के भगतो ! प्रशंसनीय स्तुति की वाणियों से भगवान का प्रभूत गुणगान करो। वह मनुष्यों का सम्राट राजाओं का राजा और नेताओं का भी सवर्तो महान नेता तथा महादानी है।

आओ भक्त उपासको ! गुण गायें दाते ईश का।
राजाओं का सम्राट और नेता है सारे विश्व का।

منتر نمبر ۱۴۵ یگیہ شِل آتما کے بھگتی رس کو ہی اِندر پان کرتا ہے کھنڈ ۴

अपादु शिप्रयन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः ।
इन्दोरिन्द्रो यवाशिरः ॥१॥

لفظی معنی :۔ (شِپری) کرم شیل ویر بہادر جیسے (سُودکھسیہ) طاقت بخش (اندھسیہ) اَنّ وغیرہ پدارتھوں سے تیار کی گئی (یواشِرہ) جَو کی پکی ہوئی کھیر کو خوشی خوشی (اپات) کھا پی جاتا ہے۔ ایسے ہی اِندر پرمیشور بھگتی مارگ میں (سُودکھسیہ) قابلیت حاصل کئے ہوئے اور (پرہوشنہ) سبھی یگیہ دان آدی پروپکاری کاموں میں اپنا سب کچھ ارپن کر دینے والے اُپاسک کے اندر (اپات) بھگتی بھاؤ کا امرت رس پان کرتا ہے۔

یگیہ شیل دانی بن پیارے ہو جائے تیرا کلیان
تیرے دیئے بھگتی کے رس کو پئے گا پیارا بھگوان

मंत्र १४५ यज्ञशील के भक्ति रस को इन्द्र पान करता है

कर्म कुशल वीर योधा, जैसे बल दायक अन्न आदि पदार्थों से बनाई गई जौ की पकी खीर को प्रसन्नतापूर्वक खा पी जाता है। ऐसे ही इन्द्र परमेश्वर भी भक्ति मार्ग दक्षता प्राप्त और सम्पूर्ण यज्ञ दान आदि परोपकारी कार्यों में अपना सर्वस्व अर्पण कर देने वाले उपासक के भक्ति भाव पूर्ण अमृत रस का पान करता है।

यज्ञशील दानी बन प्यारे हो जाए तेरा कल्याण।
भेंट किया तेरा भक्ति रस पीयेगा प्यारा भगवान।

منتر نمبر ۱۴۶ ہماری بانیاں ہی تیری سُتتی کرتی ہیں! کھنڈ ۴

३ १ २   ३ १र   २र ३ १२
इमा उ त्वा पुरूवसोऽभि प्र नोनुवुर्गिरः ।
१ २ ३ २उ   ३ १ २
गावो वत्सं न धेनवः ॥२॥

لفظی معنی :- (پُرُووسو) بے شمار دھن دے کر سب کو بسانے والے ایشور! (اِماگرا) یہ ہماری بانیاں (توا) آپ کی ہی (ابھی پرنونُووو) سُتتی، سراہنا اور یش گان کرتی رہتی ہیں (نہ دھینوا گاوا) جیسے کہ دودھ دینے والی گئوئیں (وتسم) اپنے اپنے بچھڑوں کی طرف جاتی رہتی ہیں۔

دوڑتی گئوئیں ہیں جیسے اپنے بچھڑوں کے لئے
بانیاں گاتی ہماری گیت سب تیرے لئے

मंत्र १४६   हमारी वाणियाँ तेरी स्तुति करती हैं

असंख्य धन ऐश्वर्य देकर सब को बसाने वाले ईश्वर यह हमारी वाणियां तेरी ही स्तुति यशोगान करती रहती हैं जैसे दूध पिलाने वाली गौएं रंभाती हुई अपने अपने बछड़े की ओर जाती हैं।

भागती गौएं हैं जैसे अपने बछड़ों के लिए।
वाणियाँ गाती हमारी गीत सब तेरे लिए।

منتر نمبر ۱۴۷ اُپاسک کے من میں پربھو کا پرکاش! کھنڈ ۴

२उ ३ १२   ३ २३   १२ ३क २र
अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् ।
३ २ ३ १२   ३२
इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥३॥

لفظی معنی :- (توسشٹ) سُوریہ کی (گو) کرنوں کا سُوریہ سے (اپی چیم) الگ

ہوکر (اترہ) اِس (چندرما گرہے) چندرماں کے گھر بیں (نام) پہنچا (امن وت) ودوان لوگ مانتے ہیں (ایتھا) اِسی طرح اُپاسک مانتے ہیں کہ بھگوان رُوپی سُوریہ کا پرکاش اُپاسک کے من رُوپی چندرماں میں پہنچتا ہے۔

تشریح :۔ نظامِ شمسی کا ایسا وِگیان یا اصول ہے کہ چندرمنڈل (سرکل یا گھیرے) میں سُوریہ کی کرنیں داخل ہوتی ہیں۔ زمانہ قدیم کے مہرشی وِگیانکوں (سائینسدانوں) نے یہ مانا ہوا ہے۔ کہ سُوریہ کی ایک کِرن چندرماں کو روشن کرتی ہے۔ یاد رہے کہ چندرماں میں اپنی روشنی نہیں ہے، وہ سیّارہ ہے ستارہ نہیں۔ ایسے ہی منش کا من جو خود روشن نہیں ہے۔ ایشور کے دیئے ہوئے نُور سے ہی وہ روشن ہوتا ہے۔ تب ساری کلفتیں مِٹ جاتی ہیں۔ ؎

چندرماں کی چاندنی ہے جیسے سُورج کی مہر
اُجڑے من میں آبسو بھگوان کرکے اپنا گھر

मंत्र १४७ उपासक के मन में ईश प्रकाश

सूर्य की किरणों का सूर्य से अलग होकर चन्द्रमा के घर में पहुंचना विद्वान लोग मानते हैं। इसी प्रकार उपासक मानते हैं कि भगवान रूपी सूर्य का प्रकाश उपासक के मन रूपी चन्द्रमा में पहुंचता है। खगोल के विज्ञान का यह प्रसिद्ध सिद्धान्त है कि चन्द्र मंडल में सूर्य की किरणें प्रवेश करती हैं। प्राचीन काल के महर्षि वैज्ञानिकों ने यह माना हुआ है कि सूर्य की एक किरण चन्द्रमा को प्रकाश पहुंचा देती हैं। स्मरण रहे कि चन्द्रमा सूर्य से ही प्रकाश लेता वह स्वयं प्रकाश रहित है। ऐसे ही मानव का मन भगवान की ज्योति से ज्योतिर्मान होता है तब सब कलेश मनुष्य के मिट जाते हैं।

चन्द्रमा की चांदनी है जैसे सूरज की मिहर।
उजड़े मन में आ बसो भगवान करके अपना घर।

منتر نمبر ۱۴۸ **کب جُڑ جاتے ہیں بھگوان اور بھگت؟** کھنڈ ۴

२उ ३ १२३१२ ३२ ३१र २र
यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः ।
१२ ३ १२३ १ २
तत्र पूषाभुवत् सचा ॥४॥

لفظی معنی:۔ (ورشن متہ) پُورن آنند کی وَرشا کرنے والا (اندر) پرمیشور (یت) جب (اپہ) آنند رسوں کو (مہی) بہت مقدار میں اپنے عابد کے لئے (ان یت) پہنچاتا ہے۔ جس سے اُپاسک میں (رِتہ) وشیش پریرنا بھگوان کی اور ہو جاتی ہے، (تتر) تب اُس آنند امرت رس سے (پُوشا) آنندت ہوا وہ پرمیشور کا (سچا) سچا سکھا بھگت بن کے اُس کے ساتھ جُڑ جاتا ہے۔

اُمرت وَرشا کرتے جب بھگوان بھگت کے ہردیہ میں
آنند مگن ہو بھگت بھی تب رہتا شرمان کے ہردیہ میں

मंत्र १४८ कब जुड़ जाते हैं भक्त और भगवान ?

पूर्ण आनंद की वृष्टि करने वाला इन्द्र जब आनंद रस को अधिकाधिक अपने उपासक के लिए पहुंचाता है, जिससे उपासक की विशेष रुचि परमेश्वर की ओर हो जाती है तब उस अमृत रस में सना हुआ आनंदित हो वह भगवान का सखा बन कर उसके साथ जुड़ जाता है।

अमृत वर्षा करते जब भगवान भक्त के हृदय में।
आनंद मग्न हो भक्त भी तब रहता श्रीमान के हृदय में।

منتر نمبر ۱۴۹ **شریر رتھ کو چلانے والی ماتا** کھنڈ ۴

१२ ३१२ ३ २ ३२ ३१२
गौर्धयति मरुतां श्रवस्युर्माता मघोनाम् ।
३ २उ ३ १ २
युक्ता वह्नी रथानाम् ॥५॥

لفظی معنی:۔ گئو جیسے اپنے سیوک کو (دھیتی) دُودھ پلاتی ہے، ویسے ہی پرمیشور

اپنے بھگت کو آنند امرت پلاتا ہے۔ یہ پرمیشور (مگھونام) آتمک ایشوریوں والا (مرُونام) پرانیوں کی ماتا ہے۔ یہ سدا اُن کا (شروسُیو) یش کیرتی چاہتا ہے۔ جب پرمیشور رُوپی ماتا یوگ کے ذریعے (مُیکتا) آتماؤں میں جُڑ جاتی ہے، تب وہ (رتھا نام وہنی) ہمارے سریر کے رتھوں کو بھی اپنے آپ چلاتی ہے۔

جیسے گئو ماتا ہے دوُدھ اُمرت سے پالن کرتی سب کا
وَیسے جگت کی جننی ماں ہے دھارن پوشن کرتی سب کا

मंत्र १४९

गौ जैसे अपने सेवक को दुग्ध पिलाकर आनंद कर देती है वैसे ही जगदीश्वर अपने भक्त को अमृत रस पिलाकर आनंदित कर देता है। परमेश्वर आत्मिक ऐश्वर्यो से युक्त प्राणी मात्र की माता हैं जो सदा सब का हित यश कीर्ति चाहती है। जब यह माता योग के द्वारा हमारी आत्माओं में जुड़ जाती है तब वह हमारे जीवन रथों को अपने आप चलाती रहती है।

जैसे गौ माता है अमृत दूध से पालन करती सब का।
वैसे जगत की जननी माँ है धारण पोषण करती सब का।

منتر نمبر ۱۵۰ آئیے اور آئیے میرے پاس! کھنڈ ۴

उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते।
उप नो हरिभिः सुतम् ॥६॥

لفظی معنی :۔ (مدانام پتے) ہے آنندوں کے پتی پرمیشور! (نہ) ہماری (ہری بھی) اِندریوں (حواس خمسہ) کے ذریعے (سُتم) جوڑے ہوئے بھگتی رس کے (آپ یاہی) نزدیک آئیے۔ (نہ) ہماری (ہری بھی) اِندریوں کے ذریعے (سُتم) اکٹھے کئے گئے بھگتی رس کے (اُپ) پاس اوسیتہ ہی آئیے!

بھگت کے ہردیہ میں بڑی تڑپ ہے، بڑی چاہ ہے بھگوان کو اپنے پاس

بلانے کی جس کے لئے اُس نے دوبار ایک ہی بات کو دوہراتے ہوئے اپنی بیحد خوشی کا اظہار کیا ہے۔

بھگتی رس کو جوڑ رکھا ہے پربھو تیرے لئے
جوہتا ہوں باٹ کہ آئیں پربھو میرے لئے

मंत्र १५०   आइये भगवान मेरे पास आईये

आनंदों के पति परमेश्वर हमारी इन्द्रियों के द्वारा सम्पादन किये हुए भक्ति रस के निकट आईये। हमारी इन्द्रियों से संग्रहीत किये हुए भक्ति रस के पास अवश्य आईये। मंत्र द्वारा दो बार इस प्रार्थना को दोहराना जहां भक्त के हृदय की तड़प को जाहिर कर रहा है वहां अपना भक्ति रस जोड़ने पर उपासक की आत्मा अत्यन्त हर्षित हो रही है भगवान को बुलाने के लिए।

भक्ति रस को जोड़ रखा है प्रभु तेरे लिए।
जोहता हूं बाट कि आयें प्रभु मेरे लिए।

منتر نمبر ۱۵۱   وید بانی بھگوان کے راستے پر چلاتی ہے   کھنڈ ۴
برہم یگیہ کا مول منتر

३१२ ३२ ३१२३१ २ ३२
इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं वृधन्तो अध्वरे।
१ २ ३१२ ३२
अच्छावभृथमोजसा ॥७॥

لفظی معنی :۔ (ہوترا) وید بانیوں کا جب (اشٹا) ست سنگ کیا جاتا ہے۔ جب سوادھیائے سے گیان یگیہ کیا جاتا ہے تب یہ وید بانیاں (اَدھوَرے) ہنسا رہت اِس ادھیاتمک یگیہ میں (اسرکھشت) بھگتی رس کو پیدا کرتی ہیں اور (اِندرم وردھنت) بھگوان کو اور ان کی صفاتِ حمیدہ کو اپنے اندر بڑھاتی ہیں۔ اِس طرح (اودھبرتھم) بھرن پوشن کرنے والے محافظ عالم پرمیشور کی (اچھا اوجسا) طرف اُس کے

راستے پر اُلساہ اور تیزی سے یہ وید بانیاں ہمیں چلاتی ہیں ۔
برہم یگیہ :- " ہوترا" کی ویاکھیا کرتے ہوئے پنڈت جے دیو جی نے لکھا ہے کہ یہ سات ہوتا (ہون کرنے والے) سات رشی ہیں، ۲ دو آنکھیں، ۲ دو کان، ۲ دو ناک کے سوراخ اور ایک مُکھ یہ سبھی آتما کی اگنی میں اپنے اپنے وشیوں کو جلا کر ان کی آہوتی دے کر آتما کو شُدھ پوتّر اور نرمل بنا اُسے بھگوان کے ساکھشات کار کے یوگیہ بناتے ہیں ۔ بس ہمارا دھرم ہے ۔ کہ ہم اِن رشیوں، سات اِندریوں کو بُرے وِشیوں کی طرف جانے سے سدا روکتے رہیں، تب یہ ہمارا برہم یگیہ چلتا رہے گا اور ہمارے اندر ایشور بڑھتا رہے گا ۔ (مزید دیکھو چھاندوگیہ اُپنشد ادھیائے ۳ کھنڈ ۱۶ ۔ ۱۷) ۔

وید بانیوں کے ست سنگ سے ملتی ہے راہ ایشور کی
اُس کے گُن بڑھ جانے پر جیوتی جگتی جگدیشور کی

मंत्र १५१ ब्रहम यज्ञ का मूल मन्त्र—वेद वाणी सत्संग

वेदवाणी का जब सत्संग किया जाता है या स्वाध्याय से ज्ञान यज्ञ किया जाता है तब यह वेद वाणियां हिन्सा रहित इस उपासना यज्ञ में भक्ति रस को उत्पन्न करके परमेश्वर को और उनके गुणों को हमारे अंदर बढ़ाती है । इस प्रकार पूषा और सर्व रक्षक भगवान के मार्ग पर यह वेदवाणियां तेज़ी से हमें चलाती हैं ।

होत्रा की व्याख्या करते हुए पं. जयदेव जी लिखते हैं कि यह सात होता हवन करने वाले सात ऋषि हैं । 2 आंखे 2 कान 2 नासिका के छेद और 1 मुख यह सभी आत्म अग्नि में अपने अपने विषयों की आहुति देकर आत्मा को शुद्ध पवित्र निर्मल बना उसे भगवान के साक्षातकार के योग्य बनाते हैं अत: हम इन सातों इन्द्रिय रूप ऋषियों को अशुभ मार्ग से सदा दूर रखने में प्रयास रत रहें तब हमारा ब्रह्म यज्ञ चलता रहेगा और अध्यात्म ऐश्वर्य बढ़ता जायेगा । (छांदोग्य उपनिषद अध्याय 3 खंड 16, 17)

वेद वाणियों के सत्संग से मिलतीं है राह ईश्वर की ।
उसके गुण बढ़ जाने पर ज्योति जगती जगदीश्वर की ।

کھنڈ ۴   منتر نمبر ۱۵۲

پالیا بھگوان کے نور کو

३ २उ   ३ १२ २२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह ।
३ १२ २२
अहं सूर्य इवाजनि ॥८॥

لفظی معنی :- (اہم) مجھ اُپاسک عابد نے (اِت ہی) نشچے سے (پِتُو رِرتسیہ میدھام) پرمیشور جگت پتا کے ستیہ گیان کی میدھا کو رِتمبھرا بُدھی کو (پری جگرہ) سب طرف سے حاصل کر لیا ہے اور (اہم سُوریہ اِو اجنی) اب مَیں سُوریہ کے سمان پر کاشمان ہو گیا ہوُں۔ ارتھات جیسے سُوریہ جگت کے اندھیرے کو مٹا کر روشنی پھیلا دیتا ہے، ویسے مَیں بھگوان کی اس جیوتی سے دھرتی کے باسیوں کے اگیان اندھکار کو مٹا کر پُرنور بنا دُوں گا۔ (یہ ہے ایشور کے بھگت کی گھوشنا جب وہ اُس کی نعمتِ عظمےٰ میدھا بُدھی کو پراپت کر لیتا ہے۔

بھگوان کو پا لینے یا اُس کی عبادت کا یہ نُسخہ تفصیل سے دیکھو چھاندوگیہ اُپنشد میں (ادھیائے ۳ کھنڈ ۱۵ اور ۱۸)۔

جگت پتا ایشور سے پا کر ستیہ گیان کی میدھا کو
ہوئی روشنی سُورج جیسی درشن سے پرماتما کو

मंत्र १५२   पा लिया भगवान की ज्योति को

मुझ उपासक ने निश्चय से जगत पिता परमेश्वर की ऋतंभरा बुद्धि को सब ओर से प्राप्त कर लिया है। अब मैं सूर्य समान प्रकाशमान हो गया हूं अब मैं भगवान की ज्योति से धरती के वासियों का अज्ञान अंधकार मिटा कर ज्ञान के प्रकाश से युक्त कर दूंगा। (यह है भक्त की घोषणा जब वह भगवान से ऋतंभरा रूप मेधा को प्राप्त कर लेता है)

जगत पिता ईश्वर से पाकर सत्य ज्ञान की मेधा को।
हुई रोशनी सूरज जैसी दर्शन से परमात्मा को।

(छांदोग्य उपनिषद् अध्याय 3 खंड 15 - 18)

منتر نمبر ۱۵۳ سب کاموں کی سِدّھی اِیشور مِلاپ سے کھنڈ ۴

३ १ २ . ३ २ ३ १ २ ३ १ २
रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः ।
३ २ ३ २ ३ १ २
क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥६॥

لفظی معنی :- (اندرے) جب پرمیشور اِندر (سدھمادے) ہمارے ساتھ مل جاتا ہے۔ تب ہم دونوں آتما اور پرماتما پرسن اور آنند مئے ہو جاتے ہیں اور تب (ریوتی) ادھیاتمک بل بڑھانے والی وید بانیاں (نہ تُووِواجا) ہمیں شکتی شالی کر دیتی ہیں اور ریوتی۔ یہ ہماری اِندریاں اور اِن کی واسنائیں بھی پوتر ہو جاتی ہیں۔ (یابھی) جن وید بانیوں، اِندریوں اور گئوؤں کے ذریعے ہم (کھشُومنتہ مدیم) اُتم اَنّ بھوگ اور وید منتروں سے پربھو کی حمد و ثنا گاتے ہوئے آنند کو پراپت کرتے ہیں۔

مِل جاتی جب رُوح اِیش سے اِندریاں بھی ہو جاتیں ساتھ
اَنّ بھوگ اَیشوریہ بل آنند آ جاتا پھر ہاتھوں ہاتھ

मंत्र १५३ ईश्वर मिलाप से ही सब सिद्धियां

जब पपमेश्वर इन्द्र हमारे साथ मिल जाता है तब हम दोनों आत्मा, परमात्मा प्रसन्न और आनंदमय हो जाते हैं और तब अध्यात्म बल बढ़ाने वाली वाणियां हमें शक्तिशाली कर देती हैं तथा रेवती इन हमारी इन्द्रियों की वासनाएं भी पवित्र हो जाती हैं जिन वेद वाणियों इन्द्रियों और गौवों से ही हम उत्तम अन्न भोग तथा मंत्रगान से आनंद को प्राप्त कर लेते हैं ।

आत्मा जब मिल जाती ईश से इन्द्रियां भी हो जाती साथ ।
अन्न भोग ऐश्वर्य बल आनंद आ जाता फिर हाथों हाथ ।

منتر نمبر ۱۵۴ **سوم اور پُوشا جیون گاڑی کے رکھشک** کھنڈ ۴

सोमः पूषा च चेततुर्विश्वासां सुक्षितीनाम् ।
देवत्रा रथ्योर्हिता ॥१०॥[२१४]

(سوم) سب کا پریرک پیدا کردہ (چہ) اور (پُوشا) سب کا پالک رکھشک پرماتما (دیوترا) سبھی دیوؤں پانچ بھوت اگنی جل وایو پرتھوی آکاش اور اندریہ دیوؤں میں موجود ہے (وشواسام سوکھشتی نام) وہی سبھی لوک لوکانتروں اور پرانیوں کے (رتھیو) دونوں طرح کے کرم اور بھوگ کا پربندھ اور جیون رتھ کے چلانے والے من اور بُدھی کے (ہِتا) کلیان کے لیے (چیتتو) چیتاونی یا جاگرتی کراتا رہتا ہے۔

گیان پراپتی کے دو راستے :- ایک اُپدیش سے، دوسرے ضرورت پڑنے پر اپنی کوششوں کے تجربات سے، وہ سوم ہے۔ آغازِ دُنیا میں وید گیان کا اُپدیش دینے سے سب کا اُستاد اوّل، آدی گورو۔ دوسرا یہ کہ سب پرانی اپنے جیون کو چلانے کے لیے بھوک پیاس سردی گرمی کے بچاؤ وغیرہ سے اِدھر اُدھر کھوجتے ہیں اور اپنے سُکھ دُکھ لابھ ہانی کا تجربہ بھی کرتے رہتے ہیں۔ ایشور دونوں طرح سے اُن کی رہنمائی کرتا ہے۔ جس سے سبھی پرانی کرم پھل کرتے بھوگتے سُکھی دُکھی ہوتے ہوتے پھر گیان مارگ (سیدھے راستے) پر آجاتے ہیں۔ پرماتما ایک ہے لیکن اُس کی دو شکتیوں کا ذکرِ خاص ہونے سے منتر میں سوم اور پُوشا دو ناموں سے بیان کیا گیا ہے۔

اوم اُمّت ہو سوم پُوشا جنم داتا اور پالک
گیان کے پریرک بھی اور سب پرانیوں کے سرو رکھشک

मंत्र १५४ सोम और पूषा जीवन रथ के संचालक

सब का प्रेरक उत्पत्ति कर्ता और पालक रक्षक परमात्मा सभी पंचभूतों अग्नि जलवायु पृथिवी आकाश तथा इन्द्रिय देवों में व्याप्त है।

वहां सभी लोक लोकांतरों एवं प्राणियों के कर्म और भोग का प्रबन्ध तथा जीवन रथ के चालक मन, बुद्धि के कल्याणार्थ चेतावनी देता रहता है।

ज्ञान प्राप्ति के दो मार्ग

एक उपदेश से, दूसरे आवश्यकता पड़ने पर अपने प्रयत्नों के अनुभव से। वह सोम है आदि सृष्टि में वेद ज्ञान देने से आदि गुरू है। दूसरा यह कि सब प्राणी अपने जीवन को चलाने के लिए भूख प्यास शीत ग्रीष्म के बचाव हेतु इधर उधर खोजते हुए सुख दुख हानि लाभ यश अपयश का अनुभव भी करते रहते हैं। परमेश्वर इन दोनों में मार्ग प्रदर्शन करता है जिससे सभी प्राणी कर्म करते फल भोगते सुखी दुखी होते 2 पुनः ज्ञान मार्ग पर आ जाते हैं। परमात्मा एक है किन्तु उस की दो शक्तियों का वर्णन विशेष होने से सोम और पूषा दो नामों से मन्त्र में कहा गया है।

ओम ! तुम हो सोम पूषा जन्म दाता और पालक।
ज्ञान के प्रेरक भी और सब प्राणियों के सर्व रक्षक।

منتر نمبر ۱۵۵ — اِندر پرمیشور کو گاؤ! — کھنڈ ۵

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र
पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम् ॥१॥

ہے منشیو! (وہ) تمہارے دیئے (اندھسہ) بھگتی رس بڑھانے والے اَنّ رس اور اُپاسنا کو (ابھی پانتم اِندرم) سب پرکار سے سویکار کرنے اور تمہاری بھلینٹ بھگتی رس کو پان کرنے والے اِندر پرمیشور کو (آپر گایت) پُورن رُوپ سچے دِل سے گایا کرو۔ کیونکہ وہ پرمیشور (وشوساہم) سب پر وجئی ہے (شت کرتوم) سینکڑوں یا بے شمار کاموں کا کرنے والا اور انت بُدھیوں والا تھا (چرشنی نام) تمام انسانوں کو (منک ہشٹم) سمپداؤں اور اَیشوریوں کے دینے والا پرم پُوجنیہ ہے۔

ے بے شمار کرموں اور بُدھی بل سے جیت رہا سنسار
پرم پُوجیہ ایشوریوں والا گاؤ ایشور بارم بار

मंत्र १५५ इन्द्र परमेश्वर को गाओ

हे मनुष्यो ! तुम्हारे दिये भक्ति रस बढ़ाने वाले अन्न रस एवं उपासना को सब प्रकार से स्वीकार करने और तुम्हारी प्रेम भक्ति रस को पान करने वाले इन्द्र परमेश्वर को पूर्ण रूपेण श्रद्धा स्नेह भरे हृदय से गाया करो। क्योंकि वह परमेश्वर सब पर विजयी है । असंख्य कर्मों का कर्ता और असीम बुद्धि युक्त सम्पूर्ण मानवों को ऐश्वर्यों के देने वाला परम पूज्यनीय है।

बेशुमार कर्मों और बुद्धि बल से जीत रहा संसार।
परम पूज्य ऐश्वर्यों वाला गाओ ईश्वर बारम्बार।

منتر نمبر ۱۵۶ پیارے دوستو! اُس کو گاؤ کھنڈ ۵

प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत ।
सखायः सोमपाव्ने ॥२॥

(سکھایہ) پیارے سکھاؤ! جس پرمیشور نے شریر رتھ کو (ہری اشوائے) چلانے کے لئے دو قسم کے اِندری رُوپی گھوڑے (پانچ گیان اِندریاں اور پانچ کرم اِندریاں) دیئے ہیں اور جو (وہ) تمہارے (سوم پاونے) اُپاسنا بھگتی رس کی بھینٹ کو پی لیتا ہے، سویکار کر لیتا ہے، اُس کے لئے (مادنم پر گایت) آنند دینے والے گیت گایا کرو۔

ے
منتر لوگو ہرش دائیک گیت گاؤ اِندر کے
اِندریوں کے رتھ پہ چڑھ کے موج پاؤ اِندر کے

मंत्र १५६ प्यारे सखाओ ! उसको गाओ

प्यारे सखाओ ! जिस परमेश्वर ने शरीर रथ को चलाने के लिए दो प्रकार के इन्द्रिय रूपी घोड़े (ज्ञान और कर्म इन्द्रियां) दिये हैं, और जा तुम्हारे भक्ति रस की भेंट को स्वीकार कर पान करता है, उसके लिए आनंद दायक गीत गाया करो।

मित्र लोगों हर्ष दायक गीत गाओ इन्द्र के।
इन्द्रियों के रथ में चढ़के मौज पाओ इन्द्र के।

منتر نمبر ۱۵۷ آپ کے مِتر بننا چاہتے ہیں ! کھنڈ ۵

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः।
१ २ ३ १ २
कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥३॥

ہے اِندر پرمیشور! آپ کے دیئے ہوئے وید گیان کے خزانے سے کچُھ (کنوہ) گیان کے ذرّات حاصل کرنے کے خواہشمند لوگ (اُکتھے بھی) وید منتروں دوارہ (جرنتے) آپ کی اُستتیاں کرتے ہیں (ویمُ توُا) ہم آپ کے اُپاسک بھی آپ کا ہی گان کرتے ہیں اور (توُ ا بنتا) آپ کو ہی پراپت کرنا چاہتے ہیں (مت رات ارتھاہ) بس یہی ایک ہماری چاہنا (خواہش) اَور یہی ہے ہماری زندگی کا مقصدِ اعلےٰ۔ ہم ہیں آپ کے (سکھایہ) سکھا پیارے مِتر۔ ے

ہے اِندر! ہم سب مِتر بن ملنا تمہیں ہیں چاہتے
کیول تمہارے گیت گا نِج بھاگیہ اُچیہ سراہتے

मंत्र १५७ हम हैं आपके सखा

हे इन्द्र परमेश्वर ! आप के दिये वेद ज्ञान के कोष से कुछ कण विद्या के लेकर वेद मंत्रों द्वारा आपकी स्तुतियां करते हैं। उपासक होकर हम आपका ही गान करते हैं और आपको ही प्राप्त होना चाहते हैं।

यही एक हमारी चाहना और मानव जीवन का परम उदेश्य है आप को पाना। क्योंकि हम आपके सखा हैं, प्यारे मित्र हैं।

हे इन्द्र प्यारे मित्र बन मिलना तुम्हे हैं चाहते।
केवल तुम्हारे गीत गा निज भाग्य उच्च सराहते।

منتر نمبر ۱۵۸ ہماری بانیاں بھگوان کے گنوں کا پرکاش کریں کھنڈ ۵

१ २ ३ १२ ३१२ ३ १२
इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः ।
३ १२ ३१२
अर्कमर्चन्तु कारवः ॥४॥

لفظی معنی :۔ (نی گرا) ہماری بانیاں (مدونے اندرائے) آنند دینے والے پرماتما کے لئے (سُتم پرشٹو بھنتو) اُپاسنا کے رس کو بہاتی رہیں۔ خوب حمد وثنا میں لگی رہیں۔ بھگوان کے گن گیان کا ورنن کریں (کاروہ ارکم ارچینتو) ستوتا بھگت عابد لوگ جیسے اپنی زبانِ پاک سے اُس پُوجنیہ پرمیشور کی پُوجا کرتے ہیں۔ ؎

بھگت جن گاتے رہے جیسے پربھو کی بانیاں
کیوں نہ گائیں ہر سمے اُس کو ہماری بانیاں

मंत्र १५८ हमारी वाणियाँ तेरे गुणों का प्रकाश करें

हमारी वाणियां आनंद दाता भगवान के लिए उपासना के रस को बहाती रहें। उपासना भक्ति गुण ज्ञान करती रहें। जैसे स्तोता सच्चे उपासक अपनी पवित्र वाणी से उस पूजनीय परमेश्वर की पूजा करते हैं।

भक्त जन गाते रहे जैसे प्रभु की वाणियां।
क्यों न गायें हर समय उसको हमारी वाणियां।

منتر نمبر ۱۵۹ ہمارے پوتّر پرساد کو سویکار کرو کھنڈ ۵

३१ २ ३ २३ १२३ १ २ ३१२
अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि ।
१२३२उ ३ १२
एहीमस्य द्रवा पिब ॥५॥

لفظی معنی :- ہے اندر پرمیشور! (تے برہشی ادھی) تیرے لئے اپنے ہردیہ آکاش مندر میں (ایّم سومہ نیوتہ) بھگتی رس یوگ دھیان سے چھان چھان پوتّر بنایا ہے (ایہم ایہی اسیہ) آئیے یہاں اِس کے پاس اور (درَوپب) کرپا پُوروک اِسے پان کیجئے۔

یہ پوتّر پرساد بھگتی رس کا جوڑا ہردیہ میں
آپ کی منظوری کے ہیں منتظر اس ہردیہ میں

मंत्र १५९ हमारे पवित्र प्रसाद को स्वीकार करो

हे इन्द्र भगवान ! तेरे लिए अपने हृदय मन्दिर अवकाश में योग ध्यान से छान पवित्र कर भक्ति रस बनाया है। आईये यहां इसके पास और कृपा पूर्वक इसे पान कीजिये।

यह पवित्र प्रसाद भक्ति रस का जोड़ा हृदय में।
आपको स्वीकार हो हैं मुन्तज़िर इस हृदय में।

منتر نمبر ۱۶۰ رکھشا کیلئے بھگوان کی شرن کھنڈ ۵

३ २३१२ ३१२ ३१२
सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे ।
३ २ ३ १२
जुहूमसि द्यविद्यवि ॥६॥

لفظی معنی :- (اِو گو دُہے) جیسے دودھ کا خواہش مند گئو دوہنے کے لئے

(سُودُدھام) سُولبھ دوہنے والی سُرلی گئو کو دوہ کر اپنی رکھشا کر لیتا ہے اور اچھا پُورن،
ویسے ہم لوگ بھی (دیئوی دیئوی) روزانہ دِن دِن (اُو تیئے) اپنی رکھشا اور ضروریات
کی پُورتی کے لیئے (جوہُومسی) پرمیشور کی شرن کو شردھا کے ساتھ پراپت کریں، جو
پرمیشور کہ (سروُپ کِرت نم) مختلف خوبصورت شکلوں کو بنا تا رہتا ہے اور اپنے اُپاسک
کی بھی رکھشا میں تت پر رہتا ہے ۔ ۵

سُرلی گئو کو دوہ جیسے دوُدھ پی ہوتا بھرن
بھگت کی رکھشا میں ایشور رہتے تت پر رات دن

मंत्र १६०　　रक्षा के लिए भगवान की शरण

जैसे दुग्ध पान का इच्छुक सुरली गौ को दोह कर अपनी रक्षा कर लेता है, वैसे हम लोग भी प्रतिदिन अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं स्व रक्षा के लिए परमेश्वर की शरण गहे, जो परमेश्वर प्रकृति से उत्तम रूपों तथा आकृतियों की रचना करता रहता है (एकं रूपं पहुधा यः करोति-कठोपनिषद्) और अपने उपासक की सुरक्षा में भी तत्पर रहता है।

सुरली गौ को दोह जैसे दूध पी होता भरण।
भक्त की रक्षा में ईश्वर रहते तत्पर रात दिन।

منتر نمبر ۱۶۱　　**سوم رَس کی بھینٹ**　　کھنڈ ۵

अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये ।
तृम्पा व्यश्नुही मदम्　　॥७॥

لفظی معنی :- (ورِشبھ) آتما میں امرت کی اور شریر میں بل اور شکتی کی ورشا کرنے
والے پرمیشور! (سُتے) بھگتی رس کے تیار ہو جانے اور گیان پُوروک کرم کی سادھنا سِدھ
ہو جانے پر میں (پیتئے) آپ کی سویکرِتی کے لیئے (سُتم توا ابھی سرجامی) اس بھگتی رس

کو آپ کے ارپن سمرپن کرتا ہوں۔ آپ اس سے (ترمپ) ترپت ہوجئے اور مجھ پر پرسن ہوکر (مدم آو تیشٹو ہی) اچھے پورن آنند کی پراپتی کرائیے۔ ۵

سوم رس کو بھینٹ کرنے کے لئے تیار ہوں
کیجئے سویکار بھگون آپ کا آبھار ہوں

मंत्र १६१ सोम रस की भेंट

आत्मा में अमृत और शरीर में शक्ति एवं बल की वर्षा करने वाले परमेश्वर ! भक्ति रस के तय्यार हो जाने और ज्ञान पूर्वक कर्म साधना सिद्ध हो जाने पर मैं आपकी स्वीकृति के लिए इस भक्ति रस को आपके समर्पण करता हूं आप इस से तृप्त होजिये और मुझपर प्रसन्न होकर पूर्णआनंद की प्राप्ति करायें ।

सोम रस को भेंट करने के लिए तय्यार हूं ।
कीजिये स्वीकार भगवन आपका आभार हूं ।

منتر نمبر ۱۶۲ بھگتی رس کے سوامی آپ ہیں! کھنڈ ۵

१ २ ३ १र २र ३ १ २ ३ २
य इन्द्र चमसेष्वा सोमश्चमूषु ते सुतः ।
१र २र ३ १ २
पिबेदस्य त्वमीशिषे ॥८॥

لفظی معنی :- (اندر) پرمیشور! (یہ سُتہ سومہ) یہ جو بھگتی رس اپاسنا کے اتینت شردھامئے بھاو پیدا ہوئے ہیں، (چمیشو) اپنے اندر کے من بدھی چت آدی انتہ کرن کے چمچوں میں (تے) تیرے لئے مَیں نے بھر رکھے ہیں۔ جس سے میرے اندر منن (غور وخوض) وویچن (گیان کی کھوج یا پاک پوتر خیالات) سمرن اور سم بھاو (اہلِ عالم کو اپنے برابر سمجھنا) پیدا ہوگئے ہیں۔ جن سے (چموشو) بھوگ ولاس والی اِن اندریوں میں یعنی بانی، آنکھ، کان میں بتدریج اُتم درشن شروَن کرکے بھرتا ہوں، لہٰذا (اسیہ پب) اِس کا آپ آپ پان کیجئے، کیونکہ (توم اِت) آپ ہی (اسیہ ایششے) اِس کے سوامی ہیں، ارتھات یہ

بھگتی رس آپ کی مہان کرپا سے عابد کے اندر پیدا ہوتا ہے ۔

بھگت لوگوں نے کیا جو بھگتی رس تیرے لئے
تُو ہی مالک اِس کا داتا اور یہ تیرے لئے

मंत्र १६२ भक्ति रस के स्वामी आप

परमेश्वर ! यह जो भक्ति रस का गहन उपासना के श्रद्धामय भाव अन्त: करण में उत्पन्न हुए हैं । अपने मन बुद्धि चित के चमसों (चमचों) में तेरे लिए मैंने संजोकर रखे हैं जिससे मेरे अन्दर मनन विवेचन स्मरण और समभाव आ गये हैं । भोगवादी इन इन्द्रियों यथावाणी चक्षु कानो के द्वारा उत्तम श्रवण दर्शन के भाव भर रहा हूं अत: इन भक्ति रस को आप पान कीजिये । क्योंकि आप ही इस के स्वामी हैं । आप की कृपा से ही यह भक्ति रस भक्त के अन्दर उत्पन्न होता है अन्यथा नहीं ।

भक्त लोगों ने संजोया भक्ति रस तेरे लिये ।
तू ही मालिक इसका दाता और यह तेरे लिये ।

منتر نمبر ۱۶۳ یوگ کے ذریعے بھگوان کو بلاؤ کھنڈ ۵

योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे ।
सखाय इन्द्रमूतये ॥९॥

لفظی معنی :۔ (یوگے یوگے) یوگ ابھیاس کی اوستھاؤں میں (واجے واجے) بَل، گیان، ہمّت اور اُتساہ پراپت کرنے کے لیئے (توستَرم) زندگی میں بڑائی اور ترقیات دینے والے (اِندرم ہواہمے) پرمیشور کو بُلاتے ہیں (آواہن) کرتے ہیں ۔ (سکھایہ اُوتیئے) کیونکہ وہ ہمارا سکھا ہے، سچّا دوست ہے ۔ اِس لئے اپنی رکھشا حفاظت کے لئے ہم اُسے بُلاتے ہیں ۔

یوگ کے ابھیاس میں اور گیان شکتی اُورجا
اپنے سکھا پرمیش کی رکھشا کو چاہتے ہیں سدا

मंत्र १६३ योग द्वारा भगवान का आह्वान

योगाभ्यास की स्थिति में तथा बल ज्ञान साहस और उत्साह प्राप्ति के लिए गति वृद्धि और उन्नित के देने वाले परमेश्वप को बुलाते हैं अपनी रक्षा के लिए उस अपने सखा भगवान का आह्वान करते हैं।

योग के अभ्यास में और ज्ञान शक्ति उर्जा।
अपने सखा परमेश की रक्षा को चाहते हैं सदा।

کھنڈ ٥ منتر نمبر ۱٦٤

گاؤ اور خوب گاؤ ایشور کو

२उ ३ १ २ ३३ २ ३१र २र
आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत ।
१ २ ३ १ २
सखायः स्तोमवाहसः ॥१०॥[२१५]

لفظی معنی :۔ (ستوم واہسہ سکھایہ) حمد و ثنا کے رازوں کو جاننے والے پیارے سکھاؤ مِتر دوستو! آؤ اور (تو آ نشیدت) آکر سب طرف سے بیٹھ جاؤ۔ اور (اِندرم ابھی پر گایت) پرمیشور کو لکھش کر کے آمنے سامنے بیٹھا جان کر اُس کے گُن گان کر و شُتتی کے گیت شردھا اور پریم میں سرشار ہو کر خوب گاؤ۔

ے پیارے سکھاؤ دوستو آکر کے بیٹھ پریم سے
پُورا نشان باندھ کر گاؤ پربھُو کو پریم سے

मंत्र १६४ स्तुति के स्तोत्रों को जानने वाले प्यारे सखाओ

स्तुति के स्तोत्रों को जानने वाले प्यारे सखाओं ! आओ और आकर सब ओर बैठ जाओ तथा उस के गुणों का कीर्तन करते हुए श्रद्धा और प्रेम से उसके गीत गाओ।

प्यारे सखाओ मित्रगण आ करके बैठो प्रेम से।
लक्ष पूरा बाँध कर गाओ प्रभु को नेम से।

منتر نمبر ۱۶۵ کھنڈ ۲

برگِ سبز است تحفۂ درویش

इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते ।
पिबा त्वा३स्य गिर्वणः ॥१॥

لفظی معنی :- (رادھانام پتے) دُعاؤں کے سُننے اور منظور کر لینے والے مالکِ مال و زر پرمیشور! (اوجسا) آپ کے اوج یعنی حوصلہ افزائی سے (اِدم سُتم) یہ بھگتی رس ہمارے اندر پیدا ہوا ہے (گِروَنہ) وید بانیوں کے ذریعے بھجن کیرتن کرنے کے یوگیہ بھگوان! ایسی بھگتی امرت رس کا تو (ہی الونپِب) اوشیہ پان کیجئے۔

برگِ سبز است تحفۂ درویش

ے بھگوان ہماری بانیوں کو پریم سے شرون کرو
پیو مدھر یہ سوم رس آنند رگ رگ میں بھرو

मंत्र १६५ **आपके समर्पित हैं**

हमारी बिनय याचनाओं को श्रवण करने एंव स्वीकार कर लेने वाले सब सम्पदाओं के अधिपति परमेश्वर ! आपके ओज वा प्रोत्साहन से भक्ति उपासना रस हमारे अन्दर उत्पन्न हुआ है । वेद वाणी द्वारा भजन कीर्तन करने के योग्य भगवान ! इस अमृत रस का तो अवश्य पान कीजिये जो आप के समर्पित है ।

ईश्वर हमारी वाणियों को प्रेम से शर्वण करो ।
पीओ मधु यह सोम रस आनंद रग रग में भरो ।

منتر نمبر ۱۶۶ کھنڈ ۲

بھگوان کی مہما کو نہ بھولو!

महाँ इन्द्रः पुरश्च नो महित्वमस्तु वज्रिणे ।
द्यौर्न प्रथिना शवः ॥२॥

لفظی معنی :- (اندر مہان) اِندر پرمیشور مہان ہے۔ دھن، بل، گیان جس طرف

سے دیکھو وہ مہان ہی مہان ہے، بڑوں کا بڑا ہے، (نہ پُرا) یہ ہمارے سامنے سدا رہتا ہے (مہتوم بجرے اشو) یہ سب مہا بڑائی سب اُس کی پاپوں پر بجر پرہار کر اُنہیں نیست و نابود کرنے کی ہے، (دیرھتی ناشو ہ دئیونہ) دئیولوک کی طرح اُس کا بل اور غلبہ سب طرف پھیلا ہوا ہے۔

برہمانڈ میں سب سے بڑے گُن شکتی سمپد گیان میں
بدکاروں کی بربادی کی شکتی رکھی بھگوان میں

मंत्र १६६ भगवान की महिमा को न भूलो

इन्द्र परमेश्वर महान जिस ओर से भी देखो। धन, बल, ज्ञान आदि सब में महान्तो महान। यह हमारे सदा सामने है। यह महिमा इस लिए भी उसकी है कि वह पापों पर बज्र प्रहार करके विध्वंस कर देता है। द्यौ लोक के समान उसका बल तथा यश चारों ओर फैला हुआ है।

ब्रह्माण्ड में सब से बड़े गुण शक्ति सम्पत ज्ञान में।
बदकारों के विध्वंस की शक्ति रखी भगवान में।

منتر نمبر ۱۶۷ کھنڈ ۲

بُرائیوں کے اژدھا کو کچل ڈالئے بھگوان!

आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय।
महाहस्ती दक्षिणेन ॥३॥

لفظی معنی:۔ ہے پرمیشور اندر! آپ (نہ کھبومنتم) ہمارے پھنکارتے ہوئے (چترم گرابھم) عجیب و غریب بھیانک شکل کے پاپ رُوپ گراہ یا اژدھا کو (سم گربھائے) اچھی طرح سے پکڑ لیجئے۔ جیسے کہ (مہاہستی دکھشنین) بڑا ہاتھی اپنی طاقت ور سُونڈ سے بڑے بڑے درختوں کو ٹہنوں کو مضبوطی سے پکڑ کر کھینچ لیتا ہے۔

اُکھاڑتا ہے ٹہنیوں کو ہاتھی جیسے درخت سے۔ بُرائیوں کی پھانس کو اُکھاڑو اپنے ہمت سے

मंत्र १६७ कुचल डालो बुराईयों के अजदहा को

हे परमेश्वर इन्द्र ! आप हमारे फुंकारते हुए अत्यन्त भयानक रूप पाप ग्रह वा विषैले सर्प को अच्छी तरह निग्रह कर लीजिये । जैसे महा काय हाथी अपनी शक्तिशाली सूण्ड से बड़े बड़े वृक्षों के तन्नों को एक झटके में खैंच कर मसल देता है ।

उखाड़ लेता टहनियों को हाथी जैसे द्रख्त से ।
बुराईयों की फांस को उखाड़ो अपने हस्त से ।

منتر نمبر ۱۶۸ کھنڈ ۶

سَچائی کے مُحافظ کی پُوجا کرو !

अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे ।
सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥४॥

لفظی معنی :- پیارے مانو ! (یتھا وِدے) ستیہ گیان ودیا کی پراپتی کے لئے (اِندرم) پرمیشور کی (ابھی اَرچ) بار بار سب جگہ اَرچنا، پرارتھنا کیا کر، ہر وقت کیا کر، جو پرمیشور (گوپتم) ویدبانی اور پرتھوی گئو آدی پشوؤں کا بھی پتی ہے اور (ستیہ سونُو) ستیہ کو پیدا کرنے اور سچائی کی رغبت دینے والا ہے اور (ست پتی) ستیہ کا پالک سچائی کا محافظ ہے ۔

سچّے گیان کی پراپتی ہے تیرا انسانی حصُول
ستیہ کے پالک محافظ کی عبادت کو نہ بھُول

मंत्र १६८ सत्यानाम् अधिपति

प्यारे मानव ! सत्य ज्ञान व विद्या की प्राप्ति के लिए इन्द्र की हर समय सब जगह अर्चना किया कर, जो परमेश्वर कि वेद वाणी पृथवी और गो आदि पशुओं का भी स्वामी है और सत्य का जन्म दाता, सत्य का प्रेरक पालक रक्षक वा पति है ।

सत्य ज्ञान की प्राप्ति है तेरा इन्सानी हसूल ।
सत्य के पालक पति परमेश की भक्ति न भूल ।

منتر نمبر ۱۶۹ — کھنڈ ۶

جیون ناؤ کا ناخُدا

१ २ ३ १२ २२ ३ २ ३ १२३ १ २
कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा ।
२ ३ १ २ ३ २
कया शचिष्ठया वृता ॥५॥

لفظی معنی :۔ (چِترا) ادبھت آشچریہ رُوپ پرمیشور جو (نہ سداوِردھی) ہمیں سدا بڑھانے والا اور (سکھا) ہمارا پیارا سکھا سچّا مِتّر ہے۔ وہ (کیا اُوتی) کس پرکار سے ہماری رکھشا کرتا ہے، (نہ آبھُووت) اور اپنے گھیرے میں رکھتا ہے (کیا شچِشٹھیا وِرتا) اپنی شکھدائیک وِدھی (طریقہ کار) اپنی مہان شکتی اور (وِرتا) اپنے سروُتم برتاؤ کے ساتھ (آبھُووت) ہماری رکھشا میں سدا تت پر رہتا ہے۔

آشچریہ رُوپ پربھُو ہمارے اَزلی اَبدی ہیں سکھا
رکھشا میں جن کے جی رہے جو ہے ہمارا ناخُدا

मंत्र १६९ जीवन नाव का खवैया

अद्भुत आश्चर्य रूप परमेश्वर जो हमें सदा बढ़ाने वाला प्यारा सखा है। वह किस प्रकार से हमारी रक्षा करता है और अपने घेरे में रखता है? अपने सुखदायक विधि विधान, महान शक्ति एवं अपने सर्वोत्तम व्यवहार के साथ हमारी रक्षा में सर्वदा तत्पर रहता है।

आश्चर्य रूप प्रभु हमारे हैं अनादि के सखा।
रक्षा में जिसके जी रहे जो है हमारा नाखुदा।

منتر نمبر ۱۷۰ — کھنڈ ۶

اپنی رکھشا کیلئے بھگوان کو ساکھشات کریں

१२ ३ २३ १ २ ३ १२
त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम् ।
१ २ ३ १ २
आ च्यावयस्यूतये ॥६॥

لفظی معنی :۔ ستتی کرنے والے اُپاسک عابد! (ستراساہے) ایک ساتھ سب پر

وِ جے کرنے ہارے سنسار کے اَدھی پتی مالک کُل اور (وہ وِشو اُسو گیرشو) تمہاری سب بانیوں میں (آیم) ہر وقت موجود (پیتم) اُس مہا پرمیشور کو (اُوتیئے) اپنی رکھشا کے لئے (آچیا وُیسی) ساکھشات کر۔ ے

اکیں وہ پرماتما جو سب پہ حاوی ہے سدا
اپنی سُو رکھشا کیلئے اُس کو کریں ہم ساکھشات

मंत्र १७० अपनी रक्षा के लिए उसका साक्षात करें

स्तुति करने वाले उपासक ! एक साथ विश्व विजयी, जगत के अधिपति तथा हमारी सब वाणियों में रमण करने वाले उस पिता परमेश्वर को अपनी सुरक्षा के लिए साक्षात करें।

एक वह परमात्मा जो सब पे हावी है सदा।
अपनी रक्षा के लिए उसका करें हम साक्षात।

منتر نمبر ۱۷۱ **ستیہ دَھرم کو دَھارن کرنیوالی بُدّھی دیجئے!** کھنڈ ۹

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
सनिं मेधामयासिषम् ॥७॥

لفظی معنی :۔ (سدسہ پیتم) دُنیا رُوپ گھر کے پتی، مالک سوامی (ادبھُتم) عجیب وغریب حیران کُن طاقتوں والے (اِندرسیہ) اِندریوں کے سوامی جیو آتما کے (پریم کامیم) پیارے کامنا کرنے کے یوگیہ پرمیشور کو (سنم) دَھرم اَدھرم نیائے انیائے میں تمیز کر سکنے والی (میدھام) ستیہ دھرم آدی دھارنا والی بُدھی کو ہے بھگوان! میں یاچتا (مانگتا) ہوں۔ ے

مانگتا ہوں اِندر پیارے! اِندر کی کمنیہ بُدھی۔ راستے ہوں شُدھ جس سے اور جیون کی ہو شُدھی

मंत्र १७१ सत्य धर्म को धारण करने वाली बुद्धि

विश्व रूप घर के अधिपति स्वामी आश्चर्य रूप शक्तिमान इन्द्रियों के स्वामी जीवात्मा के प्यारे कामना करने योग्य परमेश्वर को धर्म अधर्म, न्याय अन्याय में विवेक कर सकने वाली सत्यधर्मादि धारणावती बुद्धि को हे भगवान आपसे याचता हूं।

मांगता हूं इन्द्र प्यारे ! इन्द्र की कमनीय बुद्धि।
रास्ते हूं शुद्ध जिससे और जीवन की हो शुद्धि।

لے پرمیشور سے جیو آتما سے کامنا کرنے یوگیہ

منتر نمبر ۱۷۲   کھنڈ ۶

نظامِ شمسی کی طرح ہمیں بھی اپنے قواعد میں چلائیں!

ये ते पन्था अधो दिवो येभिर्व्यश्वमैरयः ।
उत श्रोषन्तु नो भुवः ॥८॥

لفظی معنی :- ہے پرمیشور! (دِوہ ادھ) دیو لوک (نظامِ شمسی) کے نیچے (تے یے پنتھا) آپ کے بنائے ہوئے جو انیک پرکار کے راستے ہیں (یے بھی) جن کے ذریعے (اشوم) سورج وغیرہ کو (وی ایرریہ) آپ ترغیب دے رہے ہیں، چلا رہے ہیں، وہ سب آپ کے قاعدے میں دن رات گردش کرنے والے (اتشروونتو) آپ کے احکام کو سُنتے رہتے ہیں اور کبھی اُلنگھن (خلاف ورزی) نہیں کرتے، لہٰذا ہم پر بھی آپ ایسی کرپا کریں کہ (نہ بھُوہ) ہم زمین پر بسنے والے دھرتی باسی (اُت) بھی آپ کی آگیاؤں (احکام) کو سُنتے ہوئے کبھی اُن کا اُلنگھن یا نظر انداز نہ کریں۔

ے پریرنا میں آپ کی جیسے چلیں شمس و قمر
ویسے چلیں ترغیب میں ہم آپ کی دن رات بھر

मंत्र १७२ लोक लोकान्तरों की भांति हमें भी चलायें

परमेश्वर ! द्यौ लोक के नीचे आप के बनाए जो अनेक प्रकार के मार्ग हैं, जिन पर चलने की प्रेरणा सूर्यादि लोकों को देते रहते हैं और यह सभी द्यौ लोकादि भी आपके दिये नियमों का अनुकरण कर कभी उल्लंघन नहीं करते। जैसे कि वह आप के आदेशों को श्रवण कर रहे हों। अतः हम पर भी ऐसी कृपा करें कि हम धरती के वासी भी आप के आदेशों को सुनते हुए उनका उलंघन कदापि न करें।

प्रेरणा में आपकी जैसे चलें शमसो कमर।
आपकी तरग़ीब में वैसे चलें दिन रात भर।

منتر نمبر ۱۷۳ — کھنڈ ۲

اپنے سوبھاؤ سے آپ ہمیں سدا سُکھی رکھنا چاہتے ہیں!

३१ २ ३ २ ३२३१२
भद्रंभद्रं न आ भरेषमूर्जं शतक्रतो ।
३ १ २
यदिन्द्र मृडयासि नः ॥६॥

لفظی معنی :- (شت کرتو) بے شمار کرموں والے پرمیشور! (نہ بھدرم بھدرم) ہمیں کلیان کاری سُکھ دائیک مارگ کا (آبھر) اُپدیش دیجیئے (اشم اورجم) ان بل شکتی وگیان اور موکھش دیجئے۔ (یت اندر نہ مرڈیاسی) کیونکہ ہے اندر پرمیشور! ہم کو تو آپ ہمیشہ سے ہی سُکھی کرنے کا سوبھاؤ رکھتے ہیں۔

کلیان کاری اَن بل شکتی وُمکتی دیجیئے
ازل سے ہی آپ ہم کو سُکھی دیکھنا چاہتے

मंत्र १७३ अपने स्वभाव से हमें आप सदा सुखी रखना चाहते है

असंख्य कर्मों वाले परमेश्वर! हमें कल्याणकारी सुखदायक मार्ग का उपदेश दीजिये तथा अन्न बल शक्ति विज्ञान और ओज प्रदान कीजिये। क्योंकि हे इन्द्र परमेश्वर! हमें तो आप सदा से ही सुख देने का स्वभाव रखते हैं।

कल्याणकारी अन्न बल शक्ति व मुक्ति दीजिये।
अज़ल से ही आप हमको सुखी देखना चाहते।

منتر نمبر ۱۷۴ — کھنڈ ۲

تیری کرپا سے جو آنند پایا

२ ३ १ २ ३२ ३१२ २२ ३१२
अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः ।
१२ ३१ २ ३ १ २
उत स्वराजो अश्विना ॥१०॥[२।६]

لفظی معنی :- پرمیشور! (ایم سومہ ستہ استی) یہ سوم رس بھگتی اُپاسنا کا آنند آپ کی کرپا سے میرے اندر تیار ہو گیا ہے (مروتہ اسیہ پبنتی) جیسے میرے

اندر کے اعضاء سبھی شکتیاں اور حصے اِس امرت رس کو پان کرنے لگ گئے ہیں (سوراجیہ اُت اشونا) اِس رس کو پی کر اب میرے اندر اپنا راجیہ محسوس ہو رہا ہے اور ساتھ ہی پران اور اپان یہ دونوں پرمکھ زندگی بخش طاقتیں بھی اِس امرت پان سے سرشار ہو رہی ہیں۔

ے

تیری کِرپا سے جو آنند پایا ۔ بانی سے جائے وہ کیونکر بتایا

मंत्र ?७४ तेरी कृपा से जो आनंद पाया

प्यारे परमेश्वर ! वह सोम रस. भक्ति उपासना अमृत आनंद आपकी कृपा से ही मेरे अंदर भर गया है, जिसे मेरा रोम २ पान करने लग गया है। बस इस अमृत रस को पान करके मुझे अपने अंदर अपना राज्य ही प्रतीत होने लगा है जिससे आनंद आनद की लहरे सब ओर उठ रही है और साथ ही प्राण अपान यह दोनों प्रमुख जीवन शक्तियां भी इस अमृत पान से झूम उठी है। बस अब यहीं कहते हुए मैं मुदित हो जाता हूं कि :

तेरी कृपा से जो आनंद पाया ।
वाणी से जाए वह कैसे बताया ?

منتر نمبر ۱۷۵ — کھنڈ ۷

مَن اِندریوں کیساتھ بھگوان کی بھگتی کریں

३ १ २   ३ २ ३ १ २   ३ १ २ २ २
ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते ।
३   १ २   ३ १ २
वन्वानासः सुवीर्यम् ॥१॥

(اینگت کھینتی) گتی شیل، گیان شیل (اپ سیُوہ) کرم کرنے کی اِچھا والی اندریاں، پران شکتیاں (جاتم سُوِیریم اِندرم) پرگٹ ہوئے اُتم بلوان اِندر آتما کا (ونوانسہ) بھجن کرتی ہُوئیں اُس کے پراپت کرنے کے لئے (اُپاستے) اُس اِندر کی اُپاسنا کرتی ہیں۔

ے

شکتیاں یہ اِندریاں جن سے ہیں ہوتے کام سارے
دی ہُوئیں بھگوان کی بھگوان پانے کے لئے

१७५ मन तथा इन्द्रियों सहित ईश भक्ति

गतिशील ज्ञान शील कर्म इच्छा वाली इन्द्रियाँ प्राण शक्तियां प्रगट हुए उत्तम बलवान इन्द्र आत्मा का भजन करती हुई उसे प्राप्त करने के लिए उस इन्द्र की उपासना करती हैं ।

शक्तियां यह इन्द्रियाँ जिनसे हैं होते काम सारे ।
दी हुई भगवान की भगवान पाने के लिए ;

منتر نمبر ۱۷۶ — کھنڈ ۲

ویدمنتروں کو پڑھ سُن کر وَلیسا عَمل کریں!

न कि देवा इनीमसि न क्या योपयामसि ।
मन्त्रश्रुत्यं चरामसि ॥२॥

ہے اِندر (دیواہ) ہم اِندریوں والے منش دیو آدی (نہ کی انی مسی) کچھ بھی ہنسا کرم یا غلط کام نہیں کرتے اور (نہ کی آیو پیا مسی) نہ ہم اب کوئی برت بھنگ اور بھول ہی کرتے ہیں بلکہ (منتر شرتیم) منتروں میں جو کچھ اُپدیش سُنتے ہیں اُن پر وچار کرتے ہوئے (چرامسی) اُس کے مطابق عمل کا برتاؤ کرتے ہیں۔

ہنسا کسی کی نہ کریں نہ پاپ کرموں میں بہیں
تیرے منتروں کو سُنیں اُس کے سدا عامل بنیں

१७६ वेद मंत्रों को पढ़ सुन वैसा आचरण करें

हे इन्द्र ! हम इन्द्रियों वाले मनुष्य देव आदि कुछ भी हिन्सिक कर्म वा दोष नहीं करते और हम अब कोई भूल वा व्रत भंग भी ही नहीं करते हैं । अपितु मंत्रों में जो उपदेश सुनते हैं उन पर आचरण का व्यवहार करते हैं ।

हिन्सा किसी की न करें न पाप कर्मोमें बहें ।
तेरे मंत्रों को सुने उनके सदा आमिल रहें ।

منتر نمبر ۱۷۷ کھنڈ ۷

سَندھیا آگئی سَندھیا کرو!

दापो आगाद् वृहद्राय द्युमद्रामन्नाथर्वण ।
स्तुहि देवं सवितारम् ॥३॥

ہے اُپاسک (دوشا اُوا گات) شام کا وقت ہو گیا ہے، (بریہد گایہ) پرمیشور کی پُوجا کے بڑے سام گان کو گا۔ سام وید کے سنگیت کو گاتے ہوئے خدا کی عبادت میں بیٹھ، (گامن) گانے کی کلا کو جاننے والے (آتھروَن) اتھروید کی وِدّیا کو جان کر یکسوئی سے بیٹھ کر دھیان کرنے والے! تُو ایسا سام گان گا، جو (دیُومت) دیولوک کی طرح سب طرف روشنی پھیلا دے، (دیوم سِونا تارم ستُوہی) دیوؤں کے دیو جگت پِتا پرماتما کی اس طرح سے سُتتی کرتا ہوا دھیان میں مگن ہو۔

شام آئی اُٹھ کے پیارے ایش کی کر بندگی
منتر وِدّیا گان سے حاصل ہو تجھ کو زندگی

१७७ संध्या आ गई संध्या करो

हे उपासक सायं समय हो गया अब परमेश्वर उपासना के बड़े सामगान को गाओ साम वेद गाते हुए ध्यान योग में बैठो। संगीत कला के गायक अथर्व वेद की विद्या को जानकर एकान्त स्थान में बैठकर प्यारे आत्मा! ऐसा सामगान कर, जो द्योलोक की भान्ति सब और प्रकाश भर दे। देवाधिदेव जगत पिता परमात्मा की इस प्रकार स्तुति गान करता हुआ ध्यान मग्न हो।

आई सायं उठके प्यारे ईश की कर बंदगी।
मंत्र विद्या गान से हासिल हो तुझको जिंदगी।

منتر نمبر ۱۷۸   کھنڈ ۷

پرانہ کال کی اُپاسنا

एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः ।
स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥४॥

(ایشا) یہ پرانہ کال کی اُوشا جو کہ (اپوُروپا) اپُورو روشنی سے منّور (پریارُوپا) بڑی پیاری پیاری رُوپ والی (دِوہ وُیوچھتی) دیُولوک سے چھٹک چمک کر آرہی ہے اِس اُوشا (پرانہ کال) سحر کی رنگینی میں بیٹھ کر بھگوان کی (سُتشے) سُتتی، حمد و ثنا کرتے ہوئے ہے (اشوی نا) اِستری پُرشو، راجہ اور منتری، شاگرد اور معلّم وغیرہ دُنیا کے نظام کو خوش گوار بنانے والے! (وام) آپ دونوں کے لئے میں پرمیشور کا (برہد) مہان ستُتی گان پاتا ہوں۔ ے دھیان میں امرت کے ویلے بیٹھ مانگو ایش سے

سب طرف خُوشحالیاں ہوں سکھ سے سب بھرپُور ہوں

१७८   **प्रातः उपासना**

यह प्रातः काल की उषा बड़ी प्यारी रूपावली द्युलोक से छटक चमक कर आ रही है । इस उषा की रंगीन सुहावनी प्रातः में बैठकर भगवान का स्तवन करते हुए हे स्त्री पुरुषों, राजामंत्री, अध्यापक शिष्य, इत्यादि मानव समाज को आप प्रत्येक दोनों के लिए मैं भगवान की स्तुति गान करता हूं ।

ध्यान में अमृत के वेले बैठ, मांगो ईश से ।
सब तरफ खुशहालियां हूं सुख से सब भरभूर हों ।

منتر نمبر ۱۷۹   کھنڈ ۷

پاپوں کا وِناشک پرماتما

इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः ।
जघान नवतीनव ॥५॥

اِندر پرماتما جو کہ (اپری تش کُتہ) کسی سے بھی ہرایا نہیں جاسکتا (اسھنی بھی) اپنی گیان

پرکاش شکتیوں سے (ودھیچہ) پرمیشور کا دھیان کرنے والے بھگت آتما کی (نوتی) "نہ" کرنے والی یعنی ناستک ایشور کو نہ ماننے والی (نو ورتزانی) ۹ پاپ ورتیوں یعنی ۵ گیان اِندری ناک، کان، آنکھ، جِلد اور زبان تتھا ۴ انتہ کرن ارتھات من، بُدھی، چِت اُور اہنکار، یہ ۹ وِرتیاں جب پرکرتی کے دوگنوں رَج اور تَم کے حملے سے بُرائیوں میں پھنس جاتی ہیں تو ان کو (جگھان) وہ اِندر پرمیشور نشٹ کر دیتا ہے۔

اِس منتر کے انیک بھاشیہ کاروں (مترجموں) نے نو اور نوتی (۹۰) کو ضرب دے کر ۹ × ۹۰ = ۸۱۰ پاپ ورتیاں (خیالات بد یا وِشے واسنائیں) مان کر تفسیر کی ہے اُور اِندر (کسی منش) نے ودھیچی نام کے کسی رِشی کی ہڈیوں سے اُسروں اور راکھشسوں کو مارا۔ یہ پورانک کتھا بھی اِس وید منتر کے ارتھ کا انرتھ کر کے بنا لی گئی ہے، جو وید شاستر وِردھ ہے۔

یوگیوں کو دھیان کرتے جب اُکھاڑتی ورتیاں
نشٹ کر کے اِندر اُن کو دیتے سب سُومتیاں

१७६ पाप विनाशक भगवान

इन्द्र परमेश्वर जो अपराजित है । अपनी ज्ञान प्रकाश शक्तियों से ध्यानी भक्त आत्मा की नकारात्मिक अर्थात ईश्वर को न मानने वाला व नव (9) पाप वृत्तियों को 5 ज्ञानेन्द्रिय नासिका, कान, आंख त्वचा, और जीभ तथा 4 अन्त:करण चतुष्टय मन बुद्धि चित अहंकार यह नव चित्त वृत्तियाँ प्रकृति के दो गुणों रज और तम के आक्रमण से जब कुमार्ग में पड़ जाती है तो इनको वह इन्द्र नष्ट कर देता है ।

इस मंत्र के कुछ भाष्यकारों ने नव और नवति को गुणा करके 9x90=810 पाप वृत्तियां वा पाप वासनाएं मानकर व्याख्या की है और इन्द्र (किसी व्यक्ति) ने दधीची नाम के किसी ऋषि की हडियों से असुरों राक्षस रूप वृत्तियों को मारा जब वे योगियों के ध्यान में विघ्न बाधा डाल रही थी । यह वेद शास्त्र विरुद्ध कथा इस मंत्र के अर्थ का अनर्थ करके घड़ी गई है जो कि अमान्य है ।

योगियों को ध्यान करते जब उखाड़ती वृत्तियां ।
नष्ट करके इन्द्र उस को देते सब सुमतियां ।

منتر نمبر ۱۸۰ کھنڈ ے

خُوشیوں کو برساؤ

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः ।
महाँ अभिष्टिरोजसा ॥६॥

ہے اِندر پرمیشور آپ (ایہی) آیئے میرے انتر آتما میں ساکھشات ہو یئے۔ (اندھسا متتی) ہماری بھگتی رس کی بھینٹ سے پرسن ہوویں (وشوسے بھی سوم پر وبھی) دھیان اُپاسنا کے انوشٹھانوں سوم یاگ وغیرہ پوِتر یگیوں کی بھینٹ سے بھی مجھ پر خوشی برسائیں۔ آپ اپنی (اوجسا مہان ابھشٹیہ) مہان شکتی بل سے سب کی منو اِچھاؤں کو سِدھ کرتے ہیں۔ ~

ہے اِندر آؤ سوم امرت پان کرنے کے لئے
بھگتی رس سویکار کر خُوشیوں کی وَرشا کے لئے

१८० **खुशियों की वर्षा करो**

हे इन्द्र परमेश्वर! आईये मेरे हृदय में साक्षात होईये हमारी भक्ति रस की भेंट से प्रसन्न होजिये। ध्यान योग अनुष्ठानों सोम याग आदि पवित्र यज्ञो से मुझ पर हर्ष की वर्षा बरसायें। आप अपनी महान शक्ति से सब की इच्छाओं को सिद्ध करते हैं।

हे इन्द्र! आओ सोम अमृत पान करने के लिए।
भक्ति रस स्वीकार कर खुशियों की वर्षा के लिए।

منتر نمبر ۱۸۱ کھنڈ ے

پاپ کے شیطان سے بچاؤ

आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि ।
महान्महीभिरूतिभिः ॥७॥

(ورترہن) پاپ رُوپی راکھشسوں خیالاتِ پریشاں اور دُکھن یا دھاؤں کے ناش

کرنے والے پربھو اِندر (اسماکم اردھم آ) ہماری خوشحالیوں کے ساتھ (نہ تُو آگہی) آپ ہمیں جلدی پراپت ہوویں۔ اپنا وِصال بخشیں (مہان) آپ مہان ہیں۔ (ہی بھی رُوتی بھی) اپنی مہان رکھشاؤں کے ساتھ ہمیشہ ہمارے ساتھ رہیں۔ ے

پاپ کے شیطان سے مُکتی ہمیں دلوائیے
اپنی رکھشک شکتیوں کے ساتھ درس دِکھائیے

पाप से बचाईये

१८१

पाप वासनाओं तथा विघ्नबाधाओं के विनाशक प्रभो ! आप हमें शीघ्र प्राप्त होवें । हमारे सुख साधक पदार्थों के साथ ही हमें प्राप्त होवें । आप का साक्षात कर हम कृत 2 हो जायें । अपनी महान रक्षाओं के साथ सदा हमारे साथ रहें ।

पाप के शैतान से मुक्ति हमें दिलवाईये ।
अपनी रक्षक शक्तियों के साथ दरस दिखाईये ।

منتر نمبر ۱۸۲ — کھنڈ ۷

خُودمُختارِ پیدا اور فنا

आजस्तदस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत् ।
इन्द्रश्चर्मेव रोदसी ॥८॥

(اسیہ) اس پرمیشور کا (تت اوجہ) وہ پرسدھ اوج چمتکار (تتوشے) پرکاش سب طرف پھیل رہا ہے، وہ اِندر (رودسی) زمین اور آسمان (اُبھئے) دونوں کو پرلے کال (قیامت) میں (چرم اِوسم ورتیت) چمڑے کی کھال کی طرح لپیٹ لیتا ہے۔ ے

سب طرف پھیلے ہوئے نُورِتجلّی آپ ہو۔ ٹھہراؤ پیدا، فنا کرنے میں خُودمختار ہو

प्रलय के विधाता

१८२

इस परमेश्वर का प्रसिद्ध ओज प्रकाश के रूप सब ओर फैल रहा रहा है । वह पृथिवी और द्यौ दोनों लोकों को प्रलयकाल में चर्म की मृग छाल की मान्ति लपेट लेता है ।

सब तरफ फैला हुआ प्रकाश भगवन आपका ।
प्रलय के पीछे भी रहता आसरा है आपका ।

منتر نمبر ۱۸۳ — کھنڈ ۷

دِل کو دِل سے رَاہ ہے

अयमु ते समतसि कपोतइव गर्भधिम् ।
वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥६॥

ہے پرمیشور! (ایَم اُوتے) یہ عابد اُپاسک تیرا ہی نشچے کرکے بھگت ہے، اور آپ (سم آتسی) سدا اِس کے پاس آجاتے ہو، پکار پر جیسے (کپوت راو) کبُوتر (گربھ دِھم) گربھ دھارن چاہنے والی کبُوتری کے پاس آجایا کرتا ہے۔ اُسی طرح (تہ تت چِت اُووچہ) آپ ہماری دِلی پرارتھنا یا پکار کو (او ہسے) سُن کر سویکار کر لیتے ہیں۔
کبُوتر کا آنا اُس وقت ہوتا ہے، جب کبُوتری کی پریل اِچھا ہوتی ہے۔ اسی طرح پرمیشور کا مِلن بھی اُسی سمے بھگت کو ہوتا ہے، جب اُس کا شوقِ وصل از بس ہو جاتا ہے، یہ اُداہرن منتر میں دیا ہے۔

گربھستھ نج سنتان کو جیسے کبُوتر سیوتا
اُس طرح بانی ہماری تم سنو ہے دیوتا

१८३ **हमारी हार्दिक प्रार्थना को स्वीकार कर लेते हैं**

हे परमेश्वर ! यह उपासक तेरा ही निश्चय करके भक्त है। आप सदा इसके पास आ जाते हो। जिस प्रकार जैसे गर्भधारणा चाहने वाली, कबूतरी के पास कबूतर आ जाता है। उसी प्रकार हमारी हार्दिक प्रार्थना या पुकार को सुन कर स्वीकार कर लेते हो। कबूतरी की प्रबल इच्छा पर ही कबूतर आता है। इसी तरह भगवान का मिलन भी उस समय होता है जब भक्त शौके विसाल में दीवाना हो जाता है।

गर्भस्थनिज सन्तान को जैसे कबूतर सेवता ।
उस तरह वाणी हमारी तुम सुनो हे देवता ।

منتر نمبر ۱۸۴ کھنڈ ۷

دِلوں میں ہمارے خُوشی ہو اور عُمر لمبی ہو !

२ ३ १ २ ३२ ३ १२ ३१ २ ३२
वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे ।
२ ३ १२
प्र न आयूंषि तारिषत् ॥१०॥[२१७]

پرمیشور آپ کی کرپا سے (وا توُ بھیشجم روا توُ) ہوا ہمارے لئے اوشدھی کو بہالائے جوکہ (نہ ہردیہ شمبھو) ہمارے دِلوں کو خوش کرنے والی، شانتی دینے والی اَور (میوبھی) سُکھ پیدا کرنے والی ہو۔ اَور (نہ آیوُنشی پرتارِشت) ہماری عمروں کو بڑھائے۔ ہوا کی طرح سب میں سمایا ہوا پربھو پیتا دُکھوں کا ناشک، مہاوئید کے رُوپ میں ہمارے دُکھ سنتاپ وغیرہ روگوں کو دُور کر ہمیں سُکھ شانتی دے کر ہمارے دِلوں میں خوشیوں کو بھرے اور ہمیں لمبی آیو پردان کرے۔ ع

والیُو ہو یہ روگ ناشک شانتی سُکھ داتا رہو
آیو لمبی ہو پرنتُو خوشیوں کی آگار ہو

१८४ **हर्षित हृदय और दीर्घ आयु**

परमेश्वर ! आपकी कृपा से वायु हमारे लिए औषध को बहा लाए जो हमारे हृदयों को हर्षित करने वाली हो। वायु समान सब में समाया हुआ दुखों का नाशक महावैद्य परमेश्वर हमारे दुख संतपादि रोगों को दूर कर हमें हर्ष प्रदान करे और आयु को बढ़ाये।

वायु हो यह रोग नाशक शक्ति सुख दातार हो।
आयु लम्बी हो परन्तु खुशियों का आगार हो।

منتر نمبر ۱۸۵ کھنڈ ۸

تین ایشوری شکتیاں

१२ २र ३ १२ ३ १२ ३१ २र २
यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
२ ३ १ २ ३ १२
न किः स दभ्यते जनः ॥१॥

پرمیشور کی (ورُون) پاپ نوارن کی شکتی (مِتر) اُس کی مترتا اور (اریما)

طرف داری سے الگ منصفانہ شکتی نیائے کی (یم پرچیتسہ) جس عابد عارف کی یہ تینوں طاقتیں (رکھشنتی) حفاظت کرتی ہیں (سہ جنہ نہ کی دمییتے) وہ اُپاسک منش کسی بھی بدی کے خیال سے دبایا نہیں جا سکتا۔ یعنی جو بدی سے دُور بھگوان کا پیارا اور ہمیشہ انصاف پسند بنا رہتا ہے، اُس کو کوئی نشٹ نہیں کر سکتا۔ ؎

ایشور کا دوست بن عادل ہو اور بدیوں سے دُور
کیا مجال ہے کون تیرا بال بینکا کر سکے

मंत्र १८५ तीन ईश्वरी शक्तियाँ खंड ८

परमेश्वर की पाप निवारिणी शक्ति मित्रता और पक्षपात रहित न्यायकारि शक्ति, यह तीनों जिस उपासक की रक्षा करती हैं वह प्रभु का उपासक किसी भी पाप वासना से दबाया नहीं जा सकता अर्थात जो अधर्माचण से रहित और प्रभु का मित्र तथा न्याय शील मानव को कोई नष्ट नहीं कर सकता।

ईश्वर का मित्र बन न्यायी हो और बदियों से दूर।
क्या मजाल है कौन तेरा बाल बांका कर सके॥

منتر نمبر ۱۸۶ **عابدوں کی طرح ہمیں بھی سرفراز کریں!** کھنڈ ۸

३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ १र २र ३ २
गव्यो षु णो यथा पुराश्वयोत रथया ।
३ २ ३ १ २
वरिवस्या महोनाम् ॥२॥

ہے پرمیشور! (مہونام) مہما والے اُپاسک، عارفوں کو آپ (یتھا) جیسے (پُرا) ازل سے (گویّا) گئو دھن اور وید بانی یعنی صحیفۂ الٰہی دینے سے اور (اشویا رتھیا) اندریوں من وغیرہ کی تیز جانے والی طاقتوں کے ذریعے (اُت) اور (وری وسیّا) تن من دھن (مال و زر) وغیرہ سے سُکھی کرتے آ رہے ہیں۔ ویسے ہمیں بھی ان دولتوں سے سرفراز کیجئے۔ ؎

اپنے بھگتوں کی طرح بل شکتی دھن بھگوان دو۔ ازلی ابدی گیان اپنے کا ہمیں وردان دو

मंत्र १८६ उपासकों की भांति सदा कृपालू रहिए

हे परमेश्वर ! जैसे आप अपने उपासकों को अनादि काल से गोधन आदि वेदवाणी के ज्ञान से तथा इन्द्रिय मन आदि वेग वान शक्तियों एव तन मन धन आदि सम्पदाओं से सुखी करते आ रहे हैं वैसे हमें भी इन पदार्थों के दान से कृतयज्ञ कीजिए ।

अपने भक्तों की तरह बल शक्ति घन भगवान दो ।
अज़ली अबदी ज्ञान अपने का हमें वरदान दो ॥

منتر نمبر ۱۸۷ کھنڈ ۸

تیری آگیا پالن میں پرجا ستیہ دھرم کو بڑھاتی ہے!

इमास्त इन्द्र पृश्नयो वृतं दुहत आशिरम् ।
एनामृतस्य पिप्युषीः ॥३॥

ہے اندر پرمیشور! (اِما پرشنیہ) یہ پرجائیں (عوام)، (تے گھرتم) آپ کے لئے گھی سے بھرے (انیام آشرم) اِس دودھ کو (دوہتے) دوہتی ہیں (تاکہ ہون کے ذریعے آپ کو بھینٹ کر سکیں)۔ اس طرح آپ کی آگیا پالن کے لئے پرجا کے لوگ (رتسیہ پپیوشی) ستیہ دھرم کو بڑھاتے ہیں۔

تیری آگیا کے پالن میں دودھ دوہ کر گھی بنائیں۔ اور اسے کر بھینٹ ہون میں جگت جنوں کو سکھ پہنچائیں

मंत्र १८७ :—

तेरी आज्ञा पालन में प्रजा सत्य धर्म को बढ़ाती है

हे इन्द्र परमेश्वर ! प्रजाएं आपके लिए घी से भरे दूध को दोह उस से घी को निकाल कर हवन के द्वारा आप की भेंट कर आप के निमित्त सत्य धर्म को जगत में फैलाती हैं ।

तेरी आज्ञा के पालन में दुग्ध दोह कर घी बनाएँ ।
और उसे कर भेंट हवन में जगत जनों को सुख पहुंचाए ॥

منتر نمبر ۱۸۸ کھنڈ ۸

اپنے پیارے بھگتوں پر ظاہر ظہور!

अया धिया च गव्यया पुरुणामन् पुरुष्टुत ।
यत् सोमेसोम आभुवः ॥४॥

(پرونامن) بے شمار ناموں سے پکارے جانے والے اور (پُروشٹت) بہت پرکار کے لیش اکیرتی، شہرت سے پرسدّھ پرمیشور (یت سومے سومے ابھُووہ) جب آپ اپنے ہر ایک بھگت کے بھگتی رس میں ساکھشات ہو جاتے ہیں۔ تب (ایا دھیا) اس لئے ظاہر ظہور ہوتے ہیں۔ کہ آپ اُسے (گوّیا) گئو یعنی وید بانی کا گیان امرت دُودھ پلا سکیں۔ ؎

بھگتی رس میں آپ کے عابد پکاریں لین ہو کر
آپ تب ہوتے منوّر اُن کے دل میں کر کے گھر

मंत्र १८८ साक्षातकार

असंख्य नामों से पुकारें जाने वाले विपुल कीर्तिमान परमेश्वर ! जब आप अपने प्रत्येक सोम भक्त उपासक के भक्ति रस में सने रम जाते हैं तब आपको साक्षातकार होता है इस लिए कि आप उसे वेद वाणी गऊ का अमृत दूध पिला सके ।

भक्ति रस में जब पुकारे भक्त आपके लीन होकर ।
आप तब होते मुनव्वर उन के दिल में करके घर ॥

منتر نمبر ۱۸۹ کھنڈ ۸

وید بانی کے گیان سے کرم یوگ میں لگے رہیں!

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ।
यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥५॥

(سرسوتی) گیان وگیان کی سرچشمہ وید بانی (نہ پاوکا) ہمیں پوتر کرنے والی ہے (واجے بھی واجنی وتی) یہ وید بانی گیان بل اور ان وغیرہ کا اُپدیش دینے والی ہے، وہ (دھیاوسو) گیان

کے ساتھ کرم کا راستہ تبلاتی ہے (یگیم وشتُو) لہٰذا اِس وید بانی سرسوتی کے ذریعے ہم سدا یگیہ کرموں میں لگے رہیں۔ ؎

وید بانی مال و زربل گیان وِدیا دے سدا
جس سے پاکیزہ عمل ہوں یگیہ کرموں میں سدا

मंत्र १८६ सरस्वती वेद वाणी से कर्म योग

ज्ञान विज्ञान की स्रोत वेद वाणी सरस्वती हमें पवित्र करने वाली है। ज्ञान बल और अन्न आदि का उपदेश देनी वाली है। ज्ञान के साथ कर्म योग का मार्ग दर्शाती है। अतः इस सरस्वती वाणी के द्वारा हम सदा यज्ञ कर्मों का सम्पादन करते रहें।

वेद वाणी सरस्वती धन ज्ञान अन्न को दे सदा।
जिस से हो जीवन यज्ञ मय आचरण शुद्ध हो सदा॥

منتر نمبر ۱۹۰ کھنڈ ۸

بھگتی کی بھینٹ سے پرسن ہو بھگوان جھولی بھر دیتے ہیں!

क इमं नाहुषीष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात्।
स नो वसून्या भरात् ॥६॥

(ناہُشی شُو) کرم کے بندھنوں میں جکڑی ہوئی پرجاؤں میں (کاہ) کون سا ایسا بھگت اُپاسک ہے جو کہ (اِمم اِندرم) اس پرمیشور کو (سُومسیہ) بھگتی رس بھینٹوں کے ذریعہ (تر پیات) ترِپت کر دیتا ہے، اپنے پر خوش کر دیتا ہے۔ جس سے پرسن ہو کر (سہ نہ وسونی آبھرت) وہ بھگوان ہمیں کثرتِ زر و مال سے بھر دیتا ہے۔ ؎

کون ہے وہ خوش نصیب بھینٹ بھگتی کرتا جو؟
اور اِس سے خُوش پربھو عابد کی جھولی بھرتا ہو؟

मंत्र १९० भक्ति भेंट से भगवान की प्रसन्नता

कर्म बंधनों में जकड़ी प्रजाओं में कौन सा ऐसा उपासक भक्त है जो कि इस परमेश्वर को भक्ति रस भेंट द्वारा तृप्त कर

देता है। जिससे वह प्रभु प्रसन्न होकर बहुत सम्परावों से भर देता है।

कौन है वह भाग्यशाली भेंट भ क्त करता जो ?
होके खुश भगवान फिर झोली भगत की भरता हो ?

منتر نمبر ۱۹۱ کھنڈ ۸

درشن دیجئے!

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्।
एदं बर्हिः सदो मम ॥७॥

ہے اِندر پرمیشور! (آیاہی) آئیے درشن دیجئے (تے ہی سوم سُوشُم) آپ کے لئے ہی اِس سوم (بھگتی) رَس کو ہم نے تیار کیا ہے (آاِمم پب آ) آئیے اور اسے پوری طرح سے پان کیجئے (مم اِدم برہی آسدہ) تھا میرے اِس ہردیہ مندر میں براجمان ہوویں -

سوم رس کے پینے کو درشن ہمیں دیو و پربھُو
اور میرا ہردیہ آسن نُور سے بھر دو پربھُو

मंत्र १९१ दर्शन दो भगवान

हे इन्द्र परमेश्वर ! आइए दर्शन दीजिए। आप के लिए ही इस सोमरस को हमने तैयार किया है। आइए और इसे पूर्णपान कीजिए तथा मेरे इस हृदय आसन पर विराजमान हो जाइए।

सोम रस के पान को दर्शन हमें दीजो प्रभु।
और मेरा हृदय आसन ज्योति से भर दो प्रभु॥

منتر نمبر ۱۹۲ کھنڈ ۸

تینوں رُوپوں سے رکھشا

महि त्रीणामवरस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः।
दुराधर्षं वरुणस्य ॥८॥

ہے پرمیشور! آپ کے (تری نام) تین رُوپوں کی (مہی اوہ) مہان رکھشا ہمیں (استُو)

پراپت ہو۔ آپ کا (مترسیہ) جو متر رُوپ ہے۔ اُس سے ہم کو (وئیو) گیان پرکاش ملے، جس سے ہم بھی سب کو متر سمجھ کر سب جگہ سُکھی ہوں۔ آپ کے (اریمن) نیائے کاری بصُورت عادل ہونے کے ہمیں (کھیم) سُکھ پُوروک نواس رہن سہن ملے اور آپ کے (ورُونسیہ) پاپ نوارک رُوپ سے (دُرادھرشم) اَدھرم یا پاپ سے نہ دبنے کی طاقت حاصل ہو۔

تین رُوپوں سے جگت کی رکھشا ہیں جو کر رہے

ہم بھی اِن رکھشاؤں سے رکھشت رہیں سُکھ شانتی سے

मंत्र १९२ तीनो रुपों से रक्षा

हे परमेश्वर ! आप के तीनों रुपों की महान रक्षा हमें प्राप्त हो। आप का जो मित्र रूप है उस से हम को ज्ञान प्रकाश मिले जिससे हम भी सब को मित्र समझ कर सब देश काल में सुखी हों आप के न्यायधीश रुप से सब के साथ न्याय पूर्वक वर्तते हुए सदा सुखी हों और आपके वरुण पाप निबारक रुप से पाप से न दबने का सामथर्य प्राप्त हो।

तीन रुपों से जगत की रक्षा हैं जो कर रहे।
हम भी इन रक्षाओं से रक्षित रहें सुख शान्ति से।

منتر نمبر ۱۹۳ کھنڈ ۸

त्वावतः पुरूवसो वयमिन्द्र प्रणेतः ।
स्मसि स्थातर्हरीणाम् ॥६॥

(پرُوُوسو) بے بہت دھنوں کے سوامی (پرنیتا) اُتم نیتا رہبر پیارے دوست اور (ہری نام) ہمارے اِندری رُوپی گھوڑوں کے (ستھانہ) ادھشٹاتا اِندر پرمیشور! (ویم اوتہ سمسی) ہم تو آپ جیسے سوامی ایشور کے ہی سیوک ہیں۔

بے شمار دھنوں کے مالک پیار کرنیوالے سب کے۔ آپ ہیں سوامی ہمارے ہم ہیں سیوک آپ کے

मंत्र १९३

महाधनों के स्वामी, उत्तम नेता, प्रणेता प्यारे सखा एवम हमारे इन्द्रिय रूपी घोड़ों के अधिष्ठाता सचालक इन्द्र परमेश्वर ! हम तो आप जैसे ईश्वर के सदा सेवक हैं।

बेशुमार धनों के मालिक प्यार करने वाले सबस।
आप हैं स्वामी हमारे हम हैं सवक आप के ॥

منتر نمبر ۱۹۴ کھنڈ ۹

ویدگیان کے دُشمن نشٹ ہوں!

उत्त्वा मन्दन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः ।
अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥१॥

ہے پرمیشور! ہمارے (سوما) بھگتی اُپاسنا کے امرت رس (تُو اُت مندنتُو) آپ کو پرسن کرنے والے ہوں (ادِروہ) تمام شکتیوں کے سوامی آنند برسانے والے (رادھا کرِنشو) ہم کو بدھی دینے والا ودّیا بھگتی اور گیان دھن دیجئے اور ہماری (برہم دِوشہ) برہم دویشی ویدگیان کی شترُو بھاوناؤں کو (اوجہی) نشٹ کیجئے۔

سدھ ہوں کارج ہمارے گیان دھن وہ دیجئے
ویدگیان کے دُشمنوں کو دُور ہم سے کیجئے

मंत्र १९४ ब्रह्मद्वेषी विनष्ट हों खंड ९

हे परमेश्वर ! हमारे भक्ति उपासना अमृत रस आप को प्रसन्न करने वाले हों। सर्व शक्तिमान आनन्द दाता। हम को सिद्धि देने ज्ञान धन तथा भक्ति दीजिए और हमारी ब्रह्मद्वेषी भावनाओं को अज्ञान के शत्रुओं को नष्ट कीजिए।

सिद्ध हो कारिज हमारे ज्ञान धन वह दीजिए।
ब्रह्मद्वेषी भावना को दूर हम से कीजिए ॥

منتر نمبر ۱۹۵ کھنڈ ۹

سچّا یش وہی ہے جو پربھو دیتا ہے!

गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे ।
इन्द्र त्वादातमिद्यशः ॥२॥

(گِروَنہ) وید بانیوں کے ذریعے بھجن کرنے یوگیہ ایشور! (نہ سُتم پاہی) ہمارے اکٹھے کئے ہوئے بھگتی آپاسنا رسوں کی رکھشا کیجئے (مدھو دھارابھی اجیسے) مدھر بھگتی رس کی دھاراؤں دوارا آپ سینچے جاتے ہیں (اِندر توادام یش اِت) ہے اندر پرمیشور! آپ کا دیا ہُوا یش ہی سچّا یش ہے۔ ہے

وید بانی سے سدا گائے گئے پرمیشور۔ بھگتی رس کو پیجئے یش دیجئے جگدیشور

मंत्र १९५ सच्चा यश वही जो प्रभु देता है

वेद वाणियों द्वारा उत्तम प्रकार से भजनीय परमेश्वर! हमारे संजोए भक्ति रसों की रक्षा कीजिए। मधुर भक्ति रस की धाराओं से ही आप सींचे जाते हैं। हे इन्द्र आप का दिया हुआ यश ही सच्चा यश है।

वेद वाणी से सदा गाऐ गए परमेश्वर।
भक्ति रस को पीजिए यश दीजिए जगदीश्वर॥

منتر نمبر ۱۹۶ کھنڈ ۹

بھگت ہی بھگوان کو وَرن کرتے ہیں!

सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा उपो नु स सपर्यन् ।
न देवो वृतः शूर इन्द्रः ॥३॥

عابد و بھگت آتماؤ! (اِند وہ سدا چرکرِشت) اِندر پرمیشور تمہیں ہمیشہ اپنی طرف کھینچتا رہتا ہے (سہ نُو اُپ سپریَن) یقیناً وہ تمہارے قریب ہو کر تم سے پیار آدر

اور سیوا کر رہا ہے۔ (نہ شتُوڑ اندر ویوہ ورنتہ) جیسے بہادر راجہ سمراٹ رعایا کے ذریعے منتخب کیا جاتا ہے۔ ویسے ہی وہ پرمیشور اُپاسکوں کے دوارہ ورن کیا جاتا ہے۔ ٥

کھینچتا بھگتوں کو ہے وہ پیار سے توقیر سے
منتخب کرتے ہیں جو اُس کو سدا تقدیر سے

मंत्र १६६ उपासक ही ईश्वर को वरण करता है

हे उपासको ! इन्द्र परमेश्वर तुम्हें सदा आकृष्ट करतारहता है। निश्चय से वह तुम्हारे अत्यन्त निकट होकर तुम से प्यार आदर और तुम्हारी सेवा में रह रहा है। जैसे वीर सम्राट, प्रजा के द्वारा वरण किया जाता है वैसे ही परमेश्वर उपासकों के द्वारा वरण किया जाता है।

भक्तों का आकृष्ट वह करता है अपने प्यार से।
करते हैं उसका वरण जो सच्चे प्यार दुलार से ॥

منتر نمبر ۱۹۷ کھنڈ ۹

اِیشور سے زیادہ پیار دینے والی اور کوئی شکتی نہیں ہے!

आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः।
न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥४॥

پرمیشور! (اِندوہ) چندرماں کی کرنوں کی طرح آنند دینے والے بھگتی رس (تُوا آوِشنتو) آپ میں داخل ہو جائیں سما جائیں (اِو سندھوہ سُمدرم) جیسے کہ ندی نالے سمندر میں مل جاتے ہیں۔ اِندر پرمیشور (توام نہ اتی رِچیتے) آپ سے بڑھ کر پیار دینے والی اور کوئی شکتی نہیں ہے۔ ٥

آپ کے اندر سما جائیں میرے یہ بھگتی رس
وشو میں تم سے بڑا جو اور کوئی ہے نہیں

१६७ ईश्वर से अधिक प्यार देने वाली कोई शक्ति नहीं

हे ईश्वर चन्द्रमा की किरणों के समान आह्लादित करने

करने वाले भक्ति के अमृत रस आप में प्रविष्ट हो जायें जैसे नदी नाले समुन्द्र में मिल कर लीन हो जाते हैं। इन्द्र परमेश्वर आप से बढ़ कर प्यार देने वाली कोई शक्ति नहीं हैं।

आप के अन्दर समा जायें मेरे यह भक्ति रस।
विश्व में तुम से बड़ा जो और कोई है नहीं॥

منتر نمبر ۱۹۸ کھنڈ ۹

چاروں ویدتیرا ہی گان کرتے ہیں!

२ ३ २ ३ १ २ ३ १२ २२ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः।
२ ३ १ २
इन्द्रं वाणीरनूषत ॥५॥

(گاتھنی نہ) سام گان کرنے والے سام ویدی اُپاسک (اندرم ات) پرمیشور کا ہی (برہت) مہا گان کرتے ہیں (ارکینا) رگ وید کے منتروں دوارہ پرارتھنا کرنے والے (ارکے بھی اندرم) رگ وید سے پرمیشور کی سُتتی، حمد وثنا گاتے ہیں (بانی اندرم انُوشت) یجُروید اور اتھروید کی بانیاں بھی پرمیشور کی عظمت کے گیت گاتی ہیں۔ ؎

رِگ سے رِگ ویدی یجُر سے یجُرویدی گاتے ہیں
سام گان کو سام ویدی اور اتھرو سُناتے ہیں

१९८ **चारों वेद तेरा ही गान करते हैं**

साम गान करने वाले साम उपासक परमेश्वर का ही बृहद गान करते हैं। ऋगवेद मंत्रों से स्तुति करने वाले ऋग की ऋचाओं को गाते हैं। यजुर्वेद और अथर्ववेद की वाणियां भी परमेश्वर की महिमा गाती हैं।

ऋग से ऋगवेदी यजुः से यजुर्वेदी गाते हैं।
साम गान को सामवेदी और अथर्व सुहाते हैं।

منتر نمبر ۱۹۹ کھنڈ ۹

دُنیا اور عُقبےٰ کی راحتیں!

इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम् ।
वाजी ददातु वाजिनम् ॥६॥

(اِشے) ہمارے لوک اور پرلوک دُنیاوی خوشحالی اور موکھش آنند کے لئے (اِندر) پرمیشور (نہ ریم دداتُو) ہمیں وہ زر و مال بخشیں جو کہ (رِبھُوم) رِت یعنی سچائی کے پُر جلال راستے پر چلانے والا ہو۔ جس سے ہماری زندگیاں چمک دار ہوں اور (رِبھوکھشنم) سچائی کا مُجسّمہ عابدوں کے اندر جس کا نواس ہے (واجی واجنم دداتُو) وہ شکتی مان پرمیشور ہمیں رُوحانی شکتی سے فراز کرے۔

راہِ راست پُر جلال دو ہمیں بخشش سے
دُنیوی سُکھ، موکھش، آنند دو ہمیں آشیش سے

१९९ अभि उदय तथा निश्रेयस

हमारे लोक परलोक में अभि-उदय एवं निश्रेयस (सांसारिक सुख तथा मोक्ष आनन्द) के लिये परमेश्वर वह अन्न धन आदि सम्पदायें दें जो कि सत्य के ओजस्वी मार्ग पर चलाने वाली हों। जिस से हमारे जीवन चमकदार हों। सत्यवान उपासकों के अन्तःकरण में जो भगवान सदा स्थिर रहता है वह बल दाता ईश्वर हमें साधना के लिये आत्मिक बल प्रदान करे।

सत्य का चमकीला मार्ग दो हमें बख्शीश से।
अभि उदय और मोक्ष आनन्द आप के आशीष से।

منتر نمبر ۲۰۰ کھنڈ ۹

ڈر اور خوف سے چُھڑانے والا!

इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत् ।
स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥७॥

(انگ) پیارے مانو (اِندرابھی شت) پرمیشور سب جگہ موجود ہے (مہد بھییم) بڑے سے بڑے ڈر یا خطرے اور جنم مرن کے ڈر کو (اپ چُوچیوَت) دُور کر دیتا ہے ہٹا دیتا ہے (سہ ہی) وہ ہی (سِتھرو چرشنی) ہمیشہ رہتا ہے۔ اور سب کو دیکھتا ہے۔

ھ سب ڈروں کو دُور کر دیتا ہے سب کے ساتھ وہ
مرن اور جیون کے دُکھ کو مات کر دیتا ہے وہ

२०० जन्म मृत्यु के भय से छुड़ाने वाला

प्यारे मानव परमेश्वर सर्वत्र व्यापक है। वह महान भयों और जन्म मृत्यु के भय से भी छुड़ा देता है। वह ही सदा स्थिर है और सब को दृष्टि गोचर करता है।

सब भयों को दूर कर रहता है सब के साथ वह।
मरण और जीवन के दुःख को मात कर देता है वह।

منتر نمبر ۲۰۱ ہماری فریاد آپ کو ایسے پہنچتی ہے کھنڈ ۹

جیسے گائے اپنے بچھڑے کو!

इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः।
गावो वत्सं न धेनवः ॥८॥

(گروِنہ) بانی کے ذریعے بھجن کرنے یوگیہ! (سُتے سُتے) بار بار بھگتی رس کے پیدا ہونے پر (اِماہ گرا) یہ ہماری حمد و ثنا کرتی ہوئی بانیاں (تُوا اُونکھشنتے) آپ کو ہی پہنچتی ہیں (نہ دھینوا گاوا وتسم) جیسے کہ دُودھ والی گائیں اپنے بچھڑوں کے پاس پہنچ جاتی ہیں۔

ھ بھگتی رس جب پیدا ہوتا گیت گاتیں بانیاں
جیسے اپنے بچھڑوں کو ملتی ہیں پیاری گائیاں

२०१ वाणियां आप को ऐसे प्राप्त होती हैं
"जैसे बछड़ों को गांय"

वाणी द्वारा भजन करने योग्य बारम्बार भक्ति रस के उत्पन्न होने पर स्तुति गाती हुई हमारी वाणियां आपको ही पहुंचती हैं। जैसे कि दूध वाली धेनु गायें अपने बछड़ों के पास पहुंच जाती हैं।

भक्ति रस है जब उछलता गीत गाती वाणियां।
जैसे अपने बछड़ों को मिलती हैं प्यारी गाईयां॥

کھنڈ ۹

منتر نمبر ۲۰۲ ہم پرمیشور کو کیوں بلاتے ہیں؟

इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये ।
हुवेम वाजसातये ॥६॥

(اندرا پوشنا) پرم ایشوریہ والے اور سب کو بل شکتی دینے والے ایشور کو (وئم ہُوئم) ہم بلاتے ہیں۔ (سکھائے سوستیئے) دوست بننے کے لئے اور سکھی کرنے کے لئے یعنی وہ ہمارا متر بن کر ہم کو راحتیں دے، ساتھ ہی (واج ساتیئے) گیان، بل، ان، دھن وغیرہ اور آتمک بل کی پراپتی کے لئے بلاتے ہیں، دوستی گانٹھتے ہیں۔ ؎

دوستی سے اندر کی سب دھن ملے روحانیت
اس لئے آہوان کرتے ہیں سدا ہم ایش کا

२०२ परमेश्वर का आह्वान क्यों ?

परम शक्ति दाता सब के पूषा परमेश्वर को हम आह्वान करते हैं, बुलाते हैं मित्र बनने और सुखी होने के लिए। यानी वह हमारा मित्र बन कर हम को सुख दे और हम उसे ज्ञान बल अन्न धन आदि तथा अध्यात्मिक ऐश्वर्य के लिए बुलाते हैं। उससे मित्रता जोड़ते हैं।

मिलती है आत्म सम्पदा सब धन भी उसकी मोत से ।
इसलिये आहवान करते हैं सदा हम ईश का ॥

منتر نمبر ۲۰۳ کھنڈ ۹

ایشور کے برابر کوئی نہیں تو بڑا کون ؟

न कि इन्द्र त्वदुत्तरं न ज्यायो अस्ति वृत्रहन् ।
न क्येवं यथा त्वम् ॥१०॥[२१६]

(اندر توّت اُترم نہ کی) ہے پرمیشور اندر ! آپ سے شریشٹھ کوئی نہیں ہے، اور (ورتر ہن) پاپوں کو بھسم کرنے والے ! آپ سے (جیایا) بڑا بھی کوئی نہیں اور (نہ کہ ایوم) نہ کوئی ایسا کہ (یتھا توّم) جیسے تم ہو ۔

شریشٹھوں سے ہو شریشٹھ بڑوں سے اور بڑے بھی آپ
ایسے ہو یم راج ڈریں ہیں جن سے سارے پاپ

२०३ उस के बराबर कोई नहीं तो बड़ा कौन

हे परमेश्वर इन्द्र ! आपसे श्रेष्ठ कोई नहीं है और हे पाप विनाशक प्रभो ! आप से बड़ा भी कोई नहीं और न कोई आप के तुल्य है कि जैसे आप हैं ।

श्रेष्ठों से हो श्रेष्ठ, बड़ों से और बड़े भी आप ।
ऐसे हो यमराज डरे हैं जिन से सारे पाप ॥

منتر نمبر ۲۰۴ کھنڈ ۱۰

بھوساگر سے ترانے والے !

तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः ।
समानमु प्र शंसिषम् ॥१॥

(وہ جنا نام) آپ پرجا جنوں یعنی تمام انسانوں کو (ترنم) بھوساگر سے ترانے والے (گومتہ واجسیہ) گئو آدی پشوؤں اندریوں کی شکتی، اَن دھن گیان، بل اور روحانی طاقت کے (تردم) بخشش کرنے والے محافظ اور (سمانم اُو) تم ہم سب کے ایک ہی پرمیشور کی ہیں حمد و ثنا کرتا ہوں۔

سب پرجاؤں کے محافظ سب دھنوں کے دینے والے
پاپوں دُکھوں کے سمندر سے ہو آپ ترانے والے

२०४ भवसागर से ताराने वाले खण्ड १०

आप प्रजा जनों को भवसागर से तराने वाले, गऊ आदि पशुओं, इन्द्रियों की शक्ति, अन्न धन्न, ज्ञान बल और आत्मिक ऐश्वर्य के प्रदाता तथा हम सब मनुष्य मात्र के एक ही परमेश्वर की मैं उपासना करता हूं।

सब प्रजाओं के सुरक्षक सब धन्नों के देने वाले,
पापों दुखों के अथाह सागर से आप तराने वाले।

منتر نمبر ٢٠٥ کھنڈ ١٠

ویدبانیاں پرمیشور کو اوشیہ پہنچتی ہیں!

असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत ।
सजोषा वृषभं पतिम् ॥२॥

ہے اِندر پرمیشور! میں نے ستتی پرارتھنا کے طور پر (ستے گرا آسرگرم) آپ کی وید بانیوں کو اُچارن کیا ہے۔ یہ بانیاں (توام پرتی اُدار ہاست) آپ کو اُلتساہ یا شوق سے پراپت ہو رہی ہیں۔ جیسے کہ (سجوشاہ ورشبھم پتم) پتی کے ساتھ پریم کرنے والی پتنی سمرتھ وان پتی کو بڑے شوق سے جا کر حاصل کرتی ہے۔

شوق سے گائی ہیں ہم نے وید کی یہ بانیاں
ہردیہ کی تاروں سے نکلی ہیں منوہر بانیاں

२०५ **वेद वाणियाँ परमेश्वर को पहुँचती हैं**

हे इन्द्र परमेश्वर ! मैंने स्तुति प्रार्थना के स्त्रोतों को वेद वाणी से उच्चारण किया है। यह वाणियां उत्साह से आप को प्राप्त हो रही है जैसे कि पति के साथ प्रेम करने वाली पत्नी समर्थ पति को उत्साह से मिलती है।

शौक से गाई हैं हम ने वेद की यह वाणियां।
हृदय की तारों से निकली है मनोहर वाणियां।

منتر نمبر ۲۰۶ کھنڈ ۱۰

جس کو راکھے سائیاں!

सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा ।
मित्रास्पान्त्यद्रुहः ॥३॥

(سہ مرتیہ) وہ مرن دھرما عابد، ایشور بھگت (گھ سُنیتھ) یقیناً زندگی کے صحیح راستے پر چلنے لگ جاتا ہے (یم پانتی ادروہہ مرونہ) جس کی رکھشا کرتے ہیں، چھل کپٹ دھوکہ دھڑی سے مبّرا عالم باعمل لوگ اور جس کی رکھشا کرتا ہے (اریما منترہ) نیائے کاری بھگوان سب کا پیارا متر۔

ایش کی بھگتی میں جو رہتا سدا سرشار ہے
رکھشا کرتے دھرمی اُس کی اور پربھو رکھوار ہے

२०६ **जिस को राखे साईयां**

मर्त्य अर्थात मरण धर्मा ईश्वर उपासक निश्चय ही जीवन के सत्य पथ पर चलने लग जाता है जिस की रक्षा करते हैं। छल कपट से रहित विद्वान लोग और जिसकी रक्षा करता है, न्याय-कारी दयालु सबकामित्र भगवान :

ईश की भक्ति में जो रहता सदा सरशार है।
रक्षा करते धर्मी उस की और प्रभु रखवार है।

منتر نمبر ۲۰۷   سپاہی کی طاقت، یوگی کی یکسوئی اور   کھنڈ ۱۰

بادِل کا جذبۂ خدمت مجھے دیجئے!

यद्वीडाविन्द्र यत् स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम् ।
वसु स्पार्ह तदा भर ॥४॥

ہے اندر پرمیشور! (یت سپارہم وسو ویڈو پرابھرتم) قابلِ رشک جو شکتی ویر سپاہی میں آپ نے بھر دی ہے اور (یت ستھرے) جو مانسک شانتی اور یکسوئی یوگی میں بھر دی ہے، تھا جو اُپکاری دولت (پرشانے یت) ابرِ باراں یا دھرم میگھ میں دی ہے۔ (تت آبھر) وہ مجھ اُپاسک میں بھی از راہِ نوازش عطا فرماؤ۔ ؎

ویر یوگی میگھ کی صفات کو بھر دو پر بھو
جس سے اِن برکات سے عابد ہو تیرا سُرخرو

२०७ योधा की दृढ़ता, योग समाधी और मेघ का धर्म दीजिये

इन्द्र परमेश्वर ! चाहने के योग्य जो शक्ति वीर योधा में मैं आप ने भर दी है और जो मांसिक शान्ति योगी की समाधी में भरी है तथा जो धर्म मेघ में परोपकार का दिया है, यह सभी गुण धर्म मुझ उपासक में भी दीजिये ।

वीर योधा, योगी, वर्षक मेघ के गुण दीजिये ।
जिस से तेरा भक्त ईश्वर सम्पदा से युक्त हो ।

کھنڈ ۱۰ منتر نمبر ۲۰۸

تیرے مِلنے کی ہُوس!

श्रतं वो वृत्रहन्तमं प्र शर्धं चर्षणीनाम् ।
आशिषे राधसे महे ॥५॥

ہے عابدِ عرفان اِنسانو! جو اِیشور وید شاستر اور ادب و اخلاق کے عالمی ذخیرے کے ذریعے مشہورِ عالم ہے اور جو جہالت کے پردوں کو پھاڑ دیتا ہے، تھا منش ماتر (انسانوں) میں جو سب سے بالاتر طاقتِ عظیم ہے، اُس کو حاصل کرنے کے لئے میں کوشاں ہوں۔ جس سے آپ سب کو اور مجھے اُس کا وِصال نصیب ہو۔

جہل اور کفر کے پردوں کو ہٹانے والے
تیرے مِلنے کی فقط ایک ہوس ہے باقی

२०८ मिलन की बेकरारी

प्यारे उपासको ! जो परमेश्वर वेद में और लोक में प्रसिद्ध है। जो अज्ञान के परदों को फाड़ देता है। जो मनुष्य मात्र में सर्व उत्कृष्ट शक्ति है। उस भगवान की प्राप्ति की इच्छा करता हूं ताकि आप सब को और मुझे आराधना का महा धन प्राप्त हो जाये।

मोह ज्ञान के परदों को हराने वाले।
तेरे मिलने की फकत एक हवस रखता हूं।

کھنڈ ۱۰ منتر نمبر ۲۰۹

مخزنِ طاقت

अरं त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः ।
अरं शक्र परेमणि ॥६॥

شکتیوں کے بھنڈار پرمیشور! بَل اَور طاقت میں آپ کا ثانی خود آپ ہیں لامثال۔ جس کی معرفت کو گانے یا حمدوثنا کے لئے ہم سب اکٹھے ہوکر آپ کی پرستش کرتے ہیں آپ کو حاصل کرنے کے لئے۔ ے

ہے اِندر تیری کیرتی گانے میں ہم سب لگ رہیں
اور اِسی شاہراہ سے تجھ کو پربھو حاصل کریں

२०९ शक्ति पुंज

पराक्रम एवं बल के भंडार परमेश्वर ! आप के समान केवल आप ही हैं। आप के यशोगान के लिये हम शीघ्र इकट्ठे होते हैं, जिस से आप की प्राप्ति हो और जीवन का लक्ष पूर्ण हो।

हे इन्द्र तेरी कीर्ति गाने में हम सब लग रहें।
और इस सन्मार्ग से तुझ को प्रभु हासिल करें।

منتر نمبر ۲۱۰ کھنڈ ۱۰

پراتہ پرارتھنا میں ہمیں پراپت ہوں!

धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम ।
इन्द्र प्रातर्जुपस्व नः ॥७॥

جس کے پاس مال وزر، غلّہ وغیرہ دہی، جَو کے ستّو اَور جس کے پاس مال پوڑے وغیرہ کھانے کھلانے کے لئے عمدہ عمدہ بھوجن بکثرت موجود ہیں۔ مانگنے والے ضرورت مند اُسی کو ہی چاہتے ہیں۔ اور جیسے وید منتروں کے وِدوان عالمِ عرفان کو ہی طالبِ علم بصد شوق حاصل کرنا چاہتے ہیں۔ ایسے ہی ہے اِندر پرمیشور! آپ بھگتی رس کو چاہتے ہوئے ہمیں عبادتِ سحری میں پریم سے حاصل ہوں۔ ے

مال و دولت ہزاروں کھانے لذیذ شیریں بھرے جہاں ہیں
وہیں طلب گار پہنچ جاتے، صبح کی سندھیا میں ملئے وَیسے

२१०　　प्रात: प्रार्थना में आप का मिलन

जिस के पास धन धान्य प्रभूत है और दही, सत्तू आदि खान पान के पदार्थों का भी भण्डार है और जिस के पास मालपूड़े आदि उत्तमोत्तम भोजन व्यंजना है, ऐसे व्यक्ति को जैसे लोग चाहना से प्राप्त होते हैं और जैसे वैदिक मंत्रों के विद्वान आचार्य को ब्रह्मचारी चाहना से प्राप्त होते हैं। ऐसे ही हे इन्द्र परमेश्वर! आप भक्ति रस की चाहना से हमें प्रात:काल की उपासना में प्रेम पूर्वक प्राप्त होवे।

मालो दौलत हजारों खाने लज़ीज शीरी भरे जहां पर।
वहीं तलबगार पहुंच जाते मिलन हो प्रात: की संध्यां में यूं।

منتر نمبر ۲۱۱　　　　کھنڈ ۱.

مَوت اَور زِندگی کا جَال!

३१२ २र३ १२३ १२३ १२
अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः।
२ ३ १र २र३ १२
विश्वा यदजय स्पृधः　　　　॥८॥

ہے پرمیشور! آپ کی نوازش سے ہی عابد کے گناہوں کا خاردار راستہ بُغض اور حسد سے بھری ہوئی زندگی فتح ہوگئی۔ اب تو آپ کی بخشش سے ہی علمِ معرفت اَور اُتم کرموں سے فطرتِ ادنےٰ (تموگن پرکرتی) اَور موت اور زندگی کا جال بھی کٹ جائے۔

ے　زندگی آلودہ عِصیاں سے ہوئی تھی پامال
آپ کی ذرّہ نوازی سے ہوئی ہے باکمال

२११　　जन्म मरण का जाल

हे परमेश्वर! आप की कृपा से ही उपासक के पाप मय जीवन पर जीत हुई। द्वेष का मार्ग छूट गया। अब तो ज्ञान और कर्म की वृद्धि से अध्यात्मिकता के द्वारा पाप और जन्म मरण के बंधनों को काट दीजिए।

जिन्दगी पापों में फंस के हो रही थी पायेमाल।
आप की अत्यन्त बख़्शिश से हुई है बा कमाल।

منتر نمبر ۲۱۲ کھنڈ ۱۰

آپ کی بھگتی کا رس آپ کی ہی نیاز!

इमे त इन्द्र सोमाः सुतासो ये च सोत्वाः।
तेषां मत्स्व प्रभूवसो ॥६॥

دُنیا کی دولتوں کے سرچشمہ پربھو! آپ کی بھگتی سے اکٹھے کئے گئے یہ امرت رس آپ کی نیاز کے لئے ہی بنائے ہیں اور آگے بھی یہ بھگتی رس بناتا رہوں گا۔ بس آپ سدا مہربان اور مجھ پر شاد کام رہیں۔

آپ کی بھگتی سے بھگتی رس ملا اور آگے بھی
آپ کے قدموں پر نیوچھاور کروں ہوگی خوشی

२१२ आप की भक्ति आपके हो समर्पित

जगत की सम्पदाओं के भण्डार प्रभो! यह भक्ति रस आप के लिए ही सम्पादित किये हैं और भविष्य में भी निष्कासित करेंगे। जिस से आप हम पर सदा प्रसन्न रहें।

आप की भक्ति से भक्ति रस मिला और आगे भी।
आप के चरणों में न्योच्छावर करूं होगी खुशी।

منتر نمبر ۲۱۳ کھنڈ ۱۰

دل کے مندر میں براجیں!

तुभ्यं सुतासः सोमाः स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो।
स्तोतृभ्य इन्द्र मृडय ॥१०॥[२११०]

نورِ تجلّی خداوند کریم! عِلم معرفت کا یہ لامثال بھگتی دھن کا آنند آپ کی سپُردگی کے لئے ہی ہے۔ جس کے لئے دِل کا مندر آپ کے لئے کھُل گیا ہے۔ آئیے! اِس میں براجئے اور عابد کو خوشیوں سے سرفراز کیجئے! ؎

علمِ عِرفاں کے خزانے بندہ پرور آئیے
میرے من مندر کو اپنے نُور سے چمکائیے

२१३ हृदय मन्दिर में विराजिये

प्रकाश धर्मा परमेश्वर ! ग्राप के लिए हम ने भक्ति रस इकठ्ठा किया है ग्रोर ग्राप के लिये ही हृदय ग्रासन बिछाया है। इस में विराजमान हूजिसे, ग्रौर उपासक को सुखी कीजिए।

ज्ञान ग्रमृत के सरोवर बंदा परवर ग्राईये।
मेरे मन मन्दिर को ग्रपने नुर से चमकाईये।

منتر ۲۱۴ **بھگتی رَس ہی بھگوان کی بھینٹ** کھنڈ ۱۱

ग्रा व इन्द्रं क्रिविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम्।
मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः ॥१॥

(واج ینتہ) اناج کا خواہشمند کاشتکار (یتھا کروِم) جیسے کنواں کھود کر کھیت کی آبیاری کر دیتا ہے، ویسے ہی مَیں (شت کرتوم منگ ہشٹھم اِندرم) سینکڑوں کرموں کی طاقت والے، گیان والے مہان داتا پرمیشور کو (وہ) تم سب کے لئے (اِندو بھی آسنچے) بھگتی کی بھاونا سے سینچتا ہوں۔ بھینٹ کرتا ہوں۔ ؎

غلّہ کی خواہش سے بھُومی سینچتا کسان جیسے
بھگتی کے جذبات سے حاصل کروں بھگوان ویسے

मंत्र 214 —भक्ति रस से भगवान को सींचूं—

अन्न का इच्छुक खेती हार कूप खोद कर जल से खेत को सींच देता है। इसी तरह मैं शत कर्म शत शक्ति तथा ज्ञान वाले महान दाता परमेश्वर को आप सब के लिये भक्ति उपासना के सोम रस से सींचता हूं।

अन्न की इच्छा से भूमि सींचता करसान जैसे।
सोम रस से सींच कर हासिल करूं भगवान वैसे।

منتر نمبر ۲۱۵ کھنڈ ۱۱

اپنی ترغیب دیجئے!

१ २ ३ १२ २ ३ १ २
अतश्चिदिन्द्र न उपा याहि शतवाजया।
३ २ ३ १ २
इषा सहस्रवाजया ॥२॥

ہے اندر پرمیشور (اتہ چیت) اِس بھگتی رس کی بھینٹ سے ہوئیے آپ (نہ اُپ ایاہی) ہمارے نزدیک آئیے اور (اِشا شت واجیا سہسر واجیا) یہ اچھا کرتے ہوئے تشریف لائیے کہ آپ نے ہمیں سینکڑوں ہزاروں قسم کے اناج گیان اور طاقتوں کی ترغیب دینی ہے۔

ے آؤ بھگون من ہمارے آپ سے پُر نُور ہوں
پریرنا سے آپ کی اور دانوں سے بھرپُور ہوں

मंत्र 215 —आईये भगवान अपनी प्रेरणा दीजिये—

इन्द्र परमेश्वर ! इस भक्ति रस से सींचे हुए आप हमारे निकट होकर दर्शन दीजिये। और इस इच्छा से आप पधारें हमार मन मन्दिर में कि आपने हमें शतशः यानी सैंकड़ों हज़ारों प्रकार से अन्न बल ज्ञान और प्रेरणायें भी देनी हैं।

आओ भगवान मन हमारे आप से पूर नूर हूं।
प्रेरणा से आप की और दोनों से भर पूर हूं।

منتر نمبر ۲۱۶ — کھنڈ ۱۱

اندرونی برائیوں کے سنگھارک

आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छाद् वि मातरम् ।
क उग्राः के ह शृण्विरे ॥३॥

(ورترہا) برائیوں کو ناش کرنے والا پرمیشور (بُندم آددے) بجر کو دھارن کرتا ہے اور (جاتہ ماترم وی پرچھاد) برائیوں کو پیدا کرنے والی ماں کی طرح جو من ہے، اُس سے پوچھتا ہے کہ (کے اُگراہ کے ہا شِن ورے) کون پاپ رُوپی شیطان تمہارے اندر گھس گئے ہیں، جو تمہیں گرانے کے لئے مشہور عالم ہیں؟ تاکہ میں اُن کو ختم کروں۔

کون پیارے آتما جو دُشٹ بن تم کو ستاتے
دُشمنانِ آدمیت کو ہم اندر سے مٹاتے

मन्त्र 216 —पाप नाशक परमेश्वर—

पाप नाशक भगवान वज्र को धारण कर भक्त के हृदय में प्रगट होकर पापों के पैदा करने वाले मन से पूछता है कि कौन उग्रवादी तेरे अन्दर बैठे हुए इस भक्त आत्मा को सता रहे हैं और कौन हैं हिंसा करने और कुमार्ग पर चलाने वाले ? जिससे मैं उन को समूल नष्ट कर दूं । (यही धर्म राजा का है दुष्ट दलन)

कौन प्यारे आत्मा जो दुष्ट बन तुझ को सताते ।
मानवी इन शत्रुओं को बैठ अन्दर हम मिटाते ।

منتر نمبر ۲۱۷ — کھنڈ ۱۱

محافظ کو پکار رہے ہیں!

बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये ।
साधः कृण्वन्तमवसे ॥४॥

ویدوں کے منتر (برہد اُکتھم) جس کی حمد و ثنا گا رہے ہیں جو ہماری (اُوتئے سُو پر کرسنم)

حفاظت کے لئے اپنے ہاتھ بڑھا رہا ہے اور جو عابدوں کی (سادھکرنونم) عبادت کو کامیاب کر دیتا ہے، ہم (اوسے ہوامہے) اپنی حفاظت کے لئے اُس کو بلاتے ہیں۔

ے جس نے اُٹھائے ہاتھ ہیں رکھشا ہماری کیلئے
وید بانی کی تلاوت سے بلاتے ہم اُسے

मन्त्र 217 — रक्षा के लिये ईश्वर हाथ उठाए हुए है

वेदों के वृहद सूक्त जिनकी महिमा गा रहे हैं। जो हमारे रक्षा के लिये अपने हाथ बढ़ाए हुए है। और जो उपासकों की साधना को सिद्ध करता है। हम अपनी रक्षा के लिये उस ईश्वर का ही आह्वान करते हैं।

जिसने उठाए हाथ हैं रक्षा हमारी के लिये।
वेद वाणी के उचारण से बुलाते हम उसे।

منتر نمبر ۲۱۸ چکرورتی راجاؤں کی راج نیتی دو! کھنڈ ۱۱

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयति विद्वान्।
अर्यमा देवैः सजोषाः ॥५॥

(ورون) پاپوں کو دور کرنے والا (متر ودوان اریما) سب کا متر عالم کل عادل اور (دیوئی سجوشا) نیک سیرت آدمیوں کے ساتھ پریم کرنے والا ایشور (رجونیتی نیتی) ہمیں دھرماتما راجاؤں کے سیدھی سچی راج نیتی کے راستے پر چلائے۔ ے

نیائے کاری دوست سچے اور پاپوں کے نوارک
سیدھے سچے راستے سے لے چلو ہے سرو رکھشک

मन्त्र 218 —चक्रवर्ती राजाओं की सत्यनीति दो—

पापों का वारण करने हारा वरुण, सच्चा मित्र, सर्वज्ञ विद्वान पक्षपात रहित न्याय कारी और दैवी गुण वालों से प्रेम करने वाला परमेश्वर हमें सत्य के सरल मार्ग से चलाये। हे महाराज अधिराज परमेश्वर!

आप हम को सरल शुद्ध कोमल गुण चक्रवर्ती राजाओं की नीति को अपनी कृपा से प्राप्त कराओ (महर्षि दयानंद)

न्याय कारी मित्र सच्चे और पापों के निवारक।
सरल सच्चे रासते से ले चलो हे सर्व रक्षक।

منتر نمبر ۲۱۹ **عابد کی رُوح کو رَوشن کرو** کھنڈ ۱۱

दूरादिहेव यत्सतोऽरुणप्सुरशिश्वितत् ।
वि भानुं विश्वथातनत् ॥६॥

(اِو دُورات سنۂ ارُونپسُو) جیسے دُور سے آتی ہوئی اُوشا کی لالی (اِبہِہ آششِوِتت) روئے زمین کو چمکا دیتی ہے۔ ویسے ہی پرمشیور! اُوشا کی کرنوں کی طرح جب آپ کی روشنی دل میں بھر جاتی ہے، تب آپ اُپاسک کو پاکیزہ عقل کو دے (بھانوم) گیان رُوپی سورج کی روشنی کو (وِشویا وی آتنت) سب طرف پھیلا دیتے ہیں۔

سُندر سُنہری کرنوں والی چمکتی جیسے اُشا
بھگت کے ہِردے میں اپنی جوت دو ایسی جگا

मन्त्र 219 — जब आप की अन्तः ज्योति चमक उठती है—

जैसे दूर से आकर रक्त रंजित तेज फैलाती हुई उषा पृथवी पर चमक उठती है वैसे ही हे परमेश्वर उषा के समान आपका प्रकाश जब इस हृदय में चमक उठता है तब आप उपासक में ऋतंभरा प्रज्ञा वा ज्ञान रूपी सूर्य प्रकाश को सब ओर विशेष रूप से फैला देते हैं।

सुन्दर सुनैहली रूप वाली चमकती जैसे उषा।
भक्त के हृदय में अपनी ज्योत दो ऐसे जगा।

منتر نمبر ۲۲۰ **ورُون بھگوان بُرائیوں سے ہٹا کر نُورِ علم دے!** کھنڈ ۱۱

आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।
मध्वा रजांसि सुक्रतू ॥७॥

(متر وروں نہ گویُوتم) سب کا دوست پاپ ناشک ہماری اِندریوں من وغیرہ حواس خمسہ کو (دھرتئی اُکھشتم) گیان کی روشنی سے بھر دے اور (مدھوار جانسی) اِسی طرح سب لوگوں کو اپنا میٹھا پیار بخشے نورِ علم کا۔ بلاشک وہ پرمیشور (سُوکرتُو) اپنے عابدوں کو نیک کام بنا دیتا ہے۔

ہے متر ہے بھگوَن ورُون سب پاپ دُور بھگائیے
گیان اپنے کی چمک بھگتوں کے من میں لائیے

मन्त्र 220 —वरुण भगवान मन इन्द्रियों कोज्ञान युक्त करें –

सबका मित्र वरुण पाप निवारक हमारी इन्द्रियों तथा मन की गति विधि को ज्ञान के घृत अथवा प्रकाश से सींच दे। और इसी प्रकार अपने मधुर प्रकाश से सब लोकों को युक्त कर दे। वह भगवान अपने उपासकों के बिचारों और कर्मों को उत्तम बना दे।

हे मित्र हे भगवन वरुण सब पाप दूर भगाइये।
ज्ञान अपने की चमक भक्तों के मन में लाईये।

منتر نمبر ۲۲۱ — کھنڈ ۱۱

ہمارے پُتر بھی ویدک مشنری ہوں

उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा यज्ञेष्वत्नत ।
वाश्रा अभिज्ञु यातवे ॥८॥

(تئی سُونوہ کاشٹھاہ گرہ یگئے شواتنت) ہمارے پُتر جل کی طرح شانتی شکتی اور سُورج کی طرح گیان روشنی پھیلانے والی وید بانی کو پھیلاتے رہیں۔ تاکہ وہ (ابھی گیُو یاتوے واشراہ) زندگی میں راہِ راست کو جان اُن پر ایسے چلتے جائیں جیسے رہنمائی ہوئی

گئوئیں اپنے اپنے گھروں کی طرف سیدھی چلی جاتی ہیں ۔ ؎

پیارے پتّرو وید کے پڑھنے پڑھانے میں سدا کوشاں رہو
ایشں کے ملنے کی ہے راہ گامزن اِس پر رہو

मन्त्र 221 —हमारे पुत्र भी वेदज्ञ हों—

व हमारे पुत्र जल के समान शक्ति देने वाली और सूर्य समान ज्ञान ज्योति फैलानी वाली वेद वाणियों को अपने स्वाध्याय यज्ञों में फैलायें। जिससे हमारे पुत्र :पने जीवन के सत्य मार्ग को जान उन पर चल सकें। जैसे रंभाती हुई गौवें अपने-2 घरों को चली जाती हैं।

प्यारे पुत्रो ! वेद के स्वाध्याय में तत्पर रहो।
ईश के मिलने की है राह गामज़न इस पर रहो।

منتر نمبر ۲۲۲ **بھگوان کے پاؤں تینوں لوکوں میں** کھنڈ ۱۱

इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम।
समूढमस्य पांमुले ॥६॥[२।११]

(وشنوادم وچکرمے) وشنو بھگوان سارے جگ میں موجود ہے (ترے دھا پدم ندھے) زمین، آسمان اورعرشِ بریں تینوں پر اُس کا راج ہے (رسیہ پانسلے سموڈھم) مگر اُس نے اپنی صورت کو چھپایا ہوا ہے، جیسے خاک میں ملی ہوئی کوئی چیز۔ ؎

اگیانیوں سے رہتا ہے کیول وہ دُور دُور
کھل جائے گیان آنکھ تو وہ ہے ملا ہوا

मन्त्र 222 —तीनों लोकों में उस का पद—

विष्णु परमेश्वर इस जगत में व्याप्त है। उस ने पृथ्वी अन्तरिक्ष और द्यौ लोक में अपनी स्थिति संभाल रखी है। परन्तु इसका स्वरूप प्रकृति के इस जगत में ऐसा छुपा हुआ है जैसे धूली में मिली कोई वस्तु।

अज्ञानियों से रहता है केवल वह दूर दूर।
खुल जायें ज्ञान चक्षु तो वह है मिला हुआ।

منتر نمبر ۲۲۳ کھنڈ ۱۲

کرودھی کا تیاگ !

अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपेरय ।
अस्य रातौ सुतं पिब ॥१॥

ہے پرمیشور! (منیو شاوِنم) کرودھی بھگت کو (اتی ہی) آپ چھوڑ دیتے ہیں (سُوشو والسم اُپے ریہ) شانتی پرریہ امن پسند کو آپ لے لیتے اور اپنی پریرنا بھی دیتے رہتے ہیں (راتو) اور اُس کے بھگتی بھاونا پر (اسیہ سُتم پب) اُس کی شردھا بھگتی بھینٹ کو آپ منظور نظر بھی کرتے ہیں۔

غصّے سے پیدا کیے بھگتی کے رَس کو چھوڑتے
شانتی اور پیار کرنے والوں کو ہو جوڑتے

मन्त्र 223 —क्रोधी की भक्ति अस्वीकार—

हे परमेश्वर । क्रोधी उपासक को आप परित्याग कर देते हो । शान्ति उत्पन्न करने वाला उपासक आप को प्राप्त कर लेता है । उसे आप की प्रेरणाएं भी मिलती हैं और शान्ति दायक भक्त के भक्ति रस को भी आप स्वीकार कर लेते हैं । क्रोधी की इन्द्रियां कुमार्ग पर चली जाती हैं जिस से उस को प्रभु दर्शन नहीं होते

क्रोध में पैदा किये भक्ति के रस को छोड़ते ।
शान्ति और प्यार करने वालों को हो जोड़ते ।

منتر نمبر ۲۲۴ کھنڈ ۱۲

حمد وثنا کرنے والے ترّقی کی طرف

कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते ।
तदिद्ध्यस्य वर्धनम् ॥२॥

(پرچیتسے مہے دیوائے کت اُدوچہ شستے) ہمیں گیان دینے والے مہا وِدوان پرمیشور کے لیے جو کچھ بھی اُس کی مہماکے ویاکھیان کئے جاتے ہیں یا تعریفی کلمات (تت اِت ہی

اسیہ وردھنم) وہ سب اُپاسنا کرنے والے کو راہِ ترقیات حاصل کراتے ہیں ۔

ے زندگی کے لطف کو جو دے رہا دن رات ہے
مہما اُس کی گاتے رہنا یہ بھی اک سوغات ہے

मन्त्र 224 —ईश्वर महिमा गाने वाले की वृद्धि—

हम जीवों को चेतना देने वाले महा विद्वान परमेश्वर के लिये जो कुछ भी स्तुति बचन बोले जाते हैं। वे वाक्य ही उपासक की वृद्धि करने वाले होते हैं।

जीने के वरदान को जो दे रहा दिन रात है।
स्तोत्र उस के गाते रहना यह भी इक सौगात है।

منتر نمبر ۲۲۵ عقیدت سے خالی تعریف کو وہ نہیں سُنتا کھنڈ ۱۲

उक्थं च न शस्यमानं नागो रयिरा चिकेत।
न गायत्रं गीयमानम् ॥३॥

(اگوہ شسیہ مانم اُکتھم) عقیدت یا شردھا سے رہت محض تعریفی کلمات یا بناوٹی حمد وثنا یا وید سُوکتوں کے پڑھنے پر بھی (چن آئی نہ چکیت) وہ سب کچھ جاننے والا ایشور دھیان نہیں دیتا اور (نہ گی یہ مانم گائیتم) نہ شردھا پریم سے میّرا سام گان پر بھی ۔ ے

شردھا و بھگتی پریم سے گائے ہیں ایشور کو جو
ایسی لفّاظی محض گفتار کو سُنتا نہ وہ

मन्त्र 225 —श्रद्धा रहित स्तुति को वह नहीं सुनता—

श्रद्धा प्रेम भक्ति रहित जो स्तुति करती है उस के वचनों पर भी सर्वज्ञ परमेश्वर ध्यान नहीं देते, और न उस के गाये गये साम गान पर।

श्रद्धा व भक्ति प्रेम से गाए नहीं ईश्वर को जो।
ऐसी मिथ्या व्यर्थ की वाणी नहीं सुनता है वो।

منتر نمبر ۲۲۶ کھنڈ ۱۲

وید شاستر پڑھنے پڑھانے والوں پر نظرِ عنایت

इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो वाजानां च वाजपतिः ।
हरिवान्त्सुतानां सखा ॥४॥

(اِندر اُکتھے بھی سندِشٹھ) اِندر پرمیشور ویدک سُوکتوں (باب) کا مطالعہ کرنے والوں پر مہربان ہوتا ہے، (واج پتی واجا نام) دُنیا کی طاقتوں کا مالک پرمیشور اُن کو شکتیاں عطا کرتا ہے۔ (ہری وان سُتا نام سکھا) اور سب منشیوں کا سوامی اپنے عابد بیٹوں کا سچّا دوست بن جاتا ہے۔ ے

اَنّ بل گیان کے داتا سچّے سکھا ہو پیارے اِندر مہان
وید پاٹھ کرنے والوں پر برساتے ہو اپنے دان

मन्त्र 226 —स्वाध्याय शीलों पर अमृत वर्षा—

इन्द्र परमेश्वर वेदोक्त स्त्रोतों का स्वाध्याय करने वालों पर प्रसन्न होता है। उन्हें तृप्त कर देता है। अन्न बल ज्ञान का स्वामी परमेश्वर इन सब सम्पदाओं को उन्हें दे देता है सभी मनुष्यों का स्वामी अपने उपासक पुत्रों का सच्चा सखा हो जाता है।

अन्न बल ज्ञान के दाता सच्चे सखा हो प्यारे इन्द्र महान ।
वेद पाठ करने वालों पर बरसाते हो अपने दान ।

منتر نمبر ۲۲۷ کھنڈ ۱۲

اپنے تحائف سے خوشیوں کو دیجئے!

आ याह्युप नः सुतं वाजेभिर्मा हृणीयथाः ।
महाँ इव युवजानिः ॥५॥

ہے پرمیشور! (نہ سُتم اُپ آیاہی) ہمارے جوڑے بھگتی رس کے پاس آجائیے۔ (واجے بھی ماہرنی یتھا) اَنّ بل گیان وغیرہ کے تحائف کو اپنے ساتھ لائیے اور انہیں نہ دے کر مجھے شرمندہ نہ کیجئے۔ (اِو یُو واجانی مہان) آپ ایسے آئیں جیسے نوجوان بیوی کا شوقین خاوند اُس کے لئے تحفے تحائف لا کر اُسے خوش کر دیتا ہے۔ ے

بھگتی رس تیار ہے پربھو! درشنوں کو آئیے
اپنی پیاری سمپدا کو ساتھ اپنے لائیے

मन्त्र 227 —अपने उपहारों को दीजिये—

हे परमेश्वर। अपनी सभी सम्पदाओं के साथ हमारे संजोए भक्ति रस के लिये आईये। अपनी सम्पदाओं को न देकर मुझे लज्जित न कीजिये। युवा पत्नी का प्यारा पती अपनी नव वधु के लिये जैसे अनेकों उपहार ले आता है फिर उसे न देकर उसे लज्जित नहीं करता।

भक्ति रस तय्यार है, प्रभु दर्शनों को आईये।
अपनी प्यारी सम्पदा को साथ अपने लाईये।

منتر نمبر ۲۲۸ **اپنے پیاروں کو کب تک محروم رکھوگے؟** کھنڈ ۱۲

३ १ २ ३ १ २ २ २ ३ १ २ २ २ ३ १ २ ३ २
कदा वसो स्तोत्रं हर्यत आ अव श्मशा रुधद्वाः।
३ २ ३ २ ३ १ २
दीर्घं सुतं वाताप्याय ॥६॥

(وسو) سب دل میں بسنے والے ایشور! (ہریتے ستوترم کدا او آ رُدھت) اپنے چاہنے والوں کے آنند رس کو آپ کب تک روکے رکھوگے؟ کبھی تو بہاؤگے ہی (شمشا واہ) ہے پرمیشور! (واتاپیائے دیرگھم سُتم) لمبے عرصے سے بھگتی رس آپ کی بھینٹ کر رہے ہیں۔ کبھی تو انتظار کی گھڑیاں ختم ہوں گی۔ آپ کے بخشے آنند کی دھارا ہردے میں بہے گی۔

ے مُنتظر ہوں دیکھتا راہ۔ کس طرف سے آرہے
اپنے چاہنے والوں سے کیوں اتنی دیر لگا رہے

मन्त्र 228 --अपने उपासकों को कब तक वंचित रखोगे-

सबमें बसने वाले हृदय वासी भगवान रस ! अपने चाहने वाले उपासकों के आनन्द रस को आप कब तक रोके रहोगे कभी तो यह आनन्द धारा चालू होगी ही। दीर्घ काल से निष्पन्न यह उपासना रस आपके प्रति समर्पण किया जा रहा है। कभी तो प्रतीक्षा की घड़ियां समाप्त होंगी और आपका आनन्द रस हृदय में प्रवाहित होगा।

मुन्तजिर हूं देखता राह किस तरफ से आ रहे
अपने चाहने वालों से क्यों इतनी देर लगा रहे

منتر نمبر ۲۲۹ کھنڈ ۱۲

آپ کا رِشتہ نہ ٹوٹے!

ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूँरनु ।
तवेदं सख्यमस्तृतम् ॥७॥

ہے اِندر (براہمنات رادھسا سومم پبا) سِدّھی حاصل کرنے والے برہم گیانیوں کے ذریعے بنائے گئے سوم رس کو منظور کیجئے (رتون انو) جو موسموں کے مطابق بنے تاکہ (تو) آپ کا اپنے پیارے اُپاسکوں کے ساتھ (اِدم سکھیم استرِتمّ) مترتا کا رشتہ اٹوٹ بنا رہے۔

ے

اِندر دیو پربھو ہمارے سوم رس کو پیجئے
مترتا کی بھینٹ ہے مضبوط اِس کو کیجئے

मन्त्र 229 -उपासक के साथ आप का सम्बन्ध अखण्ड रहे-

हे इन्द्र देव ! आप सिद्धि प्राप्त करने वाले वेद ज्ञान युक्त ब्रह्म वेत्ता से ऋतुओं के अनुसार सम्पादित ज्ञान एवं भक्ति के रस को स्वीकार कीजिये । उपासक के साथ आपकी मित्रता अखण्ड बनी रहे ।

इन्द्र देव प्रभु हमारे सोम रस को लीजिये
मित्रता की भेंट है मजबूत इसको कीजिये

منتر نمبر ۲۳۰ کھنڈ ۱۲

ہم آپ کے ہی ہیں!

वयं घा ते अपि स्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः ।
त्वं नो जिन्व सोमपाः ॥८॥

(گرونہ اِندر) وید بانی سے گائے گئے اِندر پرمیشور! (ویم گھ تے سمسی) یقیناً ہم

آپ کے ہی ہیں (اپی ستوتارہ) آپ کے ہی ستوتر گاتے رہتے ہیں (سوم پا توّم جنو)
سوم امرت آنند کا پان کئے ہوئے جیسے آپ ہیں، ہمیں بھی اپنے اس آنند سے آنندت کیجئے۔

گروۃ ہیں آپ میری بانیوں کو بھی سنو
آپ کے ہی بنے رہیں ایسی مہربانی کرو

मन्त्र 230

—हम आपके हो हैं—

वेद वाणी से गाये गये इन्द्र परमेश्वर ! निश्चय से हम आपके ही हैं आप की महिमा के स्तोत ही गाते रहते हैं आ। हमारी श्रद्धा भक्ति को स्वीकार करके हमें प्रसन्न कीजिये परितृप्त कीजिये !

गिर्वण : हैं आप मेरी वाणियों को भी सुनो।
आप के ही बने रहें ऐसी अनुग्रह की कीजिये।

کھنڈ ۱۲

منتر نمبر ۲۳۱

پانچ جسم یا کوش طاقت ور ہوں

एन्द्र पृक्षु कासु चिन्नृम्णं तनूषु धेहि नः ।
सत्राजिदुग्र पौंस्यम् ॥६॥

ہے پرمیشور! یہ (تنو شو پرکھشو) پانچ شریر جیسے کوش خزانے انّ مئے، پران مئے، منو مئے، وگیان مئے اور آنند مئے جو آپس میں ملے ہوئے ہیں (نہ) ہمارے ان شریروں میں (کاسو چت نرمنم آدھیہی) بل شکتی دیجئے۔ (ستراجت) ہے سچائی کے ذریعے سب کو فتح کرنے والے اور سب کے ساتھ انصاف کرنے میں (اُگر) تیجسوی اور تیزی کرنے والے ایشور! ان ہمارے شریروں میں طاقت مردمی اور عقلِ سلیم کی طاقت بخشئے۔

ایشور ہمارے دیہہ بل طاقت سدا بھرپور رہوں
پشٹ ہوں اور دیر ور وستیہ سے پُر نور رہوں

मन्त्र 231 —पांच शरीर वा कोष शक्तिशाली हो—

सत्य स्वरूप से सब जगह विजय शील तथा उग्र परमेश्वर आप हमारे देहों वा अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञान मय और आनन्द मय शरीर के अन्दर परस्पर जुड़े हुये इन पांच कोशों में बल शक्ति दीजिये जिस से हम पुरूषार्थ करते हुये योग बल को धारण कर सकें।

भगवन ! हमारे देह बल शक्ति सदा भरपूर हों ।
पुष्ट हों और वीर वर व सत्य से पुर नूर हों ।

منتر نمبر ۲۳۲ کھنڈ ۱۲

بھگتی میں شُور بیر بنیں !

एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः ।
एवा ते राध्यं मनः ॥१०॥[२।१२]

(ایواہی ویریُواسی) پرمیشور! آپ نشچے ہی اُپاسنا بھگتی میں شُور بیروں کو چاہتے ہیں، (ایواشُور پراکرمی) یقیناً آپ بھی شُور بیر ہو کر چھائے ہوئے ہیں (اُت سِتھر) اور اوناشی ہیں (تے منہ رادھیم) آپ کے مُصمّم ارادوں کو دھارن کر کے ہم بھی آپ کی طرح ہو جائیں ۔

جیسے ہیں شُور ویر آپ ویسی شکتی دیجئے ~
اپنے سنکلپوں کی طاقت سے ہمیں بھر دیجئے

मन्त्र 232 —आप के महान संकल्प हम धारण करें—

परमेश्वर आप निश्चय ही उपासना में वीरों को चाहते हैं शूर बीर पराक्रमी और अटल संकल्प हैं। यही आप का मन या संकल्प सिद्ध करने योग्य है। इन्हीं को हम भी आप की कृपा से धारणा करें।

जैसे हैं शूरवीर आप वैसी शक्ति दीजिये
अपने संकल्पों की ताकत से हमें भर दीजिये

ओ३म्

تیسرا ادھیائے

منتر نمبر ۲۳۳ گئوئیں جیسے بچھڑوں کیلئے رنبھاتی ہیں، ویسے ہم آپ کو پکارتے ہیں! کھنڈ ۱

अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः ।
ईशानमस्य जगतः
स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥१॥

ہے شُور وِیر پاپوں کو جڑ سے اُکھاڑنے والے! (ابھی توا نونمہ) ہم ہر وقت آپ کو پکارتے رہتے ہیں (ادُگدھا اِو دھینوہ) جیسے نہ دوہی گئی دودھ سے بھرے ہوئے تھنوں والی گائیں اپنے بچھڑوں کے لئے رنبھاتی ہیں۔ اِندر پرمیشور! (اسیہ جگتہ اِیشانم سُور درِشم) جو آپ اِس جگت کے مالکِ کُل آدھی پتی ایشور اور سُورج کی طرح چاروں طرف منوّر ہو کر دکھائی دے رہے ہیں، اُس آپ کی حمد و ثنا یا ستُتیاں ہم گاتے ہیں۔

بچھڑوں کے آگے ہیں جھکتی بِن دوہی جیسے وہ گائیں
ویسے ہم حمد و ثنا کرتے ہیں پیارے اِندر آئیں

तीसरा अध्याय—खड 1

मन्त्र 233—गायें जैसे बछड़ों के लिये रंभाती हैं ।

हे शूर वीर पाप ताप को नष्ट करने वाले ! हम हर समय आपको पुकारते हैं जैसे अनदुही दूध से भरे थनों वाली गौवें अपने बछड़ों के लिये रंभाती हैं । इन्द्र परमेश्वर जो आप इस सम्पूर्ण जगत के अधिपति सूर्य के समान सब ओर प्रकाशित हो रहे हैं उस आपकी स्तुतियां हम गाते रहें ।

बछड़ों के आगे हैं झुकती अनदुही जैसे वे गायें ।
स्तोत्र गाते हम प्रभु के वैसे, प्यारे इन्द्र आयें ।

منتر نمبر ۲۳۴ کھنڈ ۱
بے حد مُصائبوں میں گھرے ہُوئے آپ سے ہی فریاد کرتے ہیں!

त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः ।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं
नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥२॥

(کاروہ) کرم میں لگے ہوئے (واجسیہ توا) گیان بل شکتی کے حصول کے لئے آپ مددگار کا ہی (ہوامہے اِت ہی) ایک سہارا مان کر فریاد کرتے ہیں۔ بلاتے ہیں۔ ہے اِندر پرمیشور! جب (ورِتّرے شو) بُرائیوں سے پیدا ہوئی تکالیف میں گھر جاتے ہیں۔ تب آپ (ست پتم) سچے مالک کو ہی فریاد کرتے ہیں (نراہ اروتہ کاشٹھاسو توام) ازل سے ہی انسان دُکھوں سے گھرے ہوئے ایسا ہی کرتے آرہے ہیں۔

کاموں کی بھاگ دوڑ میں لگے ہوئے انسان ہم
دُکھوں میں پھنس کے آپ کو بُلاتے صبح و شام ہم

मन्त्र 234 —असीम कष्टों से घिरे हुए बुलाते हैं ।

कर्म में लगे हुए अन्न बल ज्ञान की प्राप्ति के लिये आपका ही आश्रय मानकर आह्वान करते हैं । हे इन्द्र परमेश्वर जब अशुभ कर्मों के फलस्वरूप दुखों में घिर जाते हैं तब आप सच्चे पालक पिता को ही पुकारते हैं । अनादि काल से ही मनुष्य ऐसा करता आ रहा है ।

कामों की दौड़भाग मे लगे हुए इन्सान हम ।
कष्टों में फंस के आप को बुलाते प्रातः शाम हम ।

منتر نمبر ۲۳۵ کھنڈ ۱
اُس کی پُوجا کرو جو ہزاروں منتروں سے شکھشا دے رہا ہے!

अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे ।
यो जरितृभ्यो मघवा
पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ॥३॥

ہے منشیو! (وہ) تم لوگ (ابھاودے) ستیہ گیان پراپتی کے لئے (سُرادھسم اِندرم)
اُتم پرکار سے سِدّھ کرنے یوگیہ اِندر کی (ابھی پراوچ) اچھی پرکار سے اُپاسنا کرو (یہ مگھوا پُرووسُو)
جو دھن سمپن دانی پرمیشور سب میں بسا ہوا تم (جرترُی بھیہ) اُپاسکوں، عابدوں کو (سہسرین شِکھشنیہ)
ہزاروں اقسام کی سمپدائیں ہزاروں وید منتروں کے ذریعے دے رہا ہے۔

جس کے ہزاروں دان گیان برس رہے ہم پر سدا
پُوجا ہماری کے لئے ہے ازلی ابدی وہ خدا

मंत्र 235—हजारों मंत्रों के शिक्षक की पूजा करो

हे मनुष्यों !तुम लोग उत्तम प्रकार से सिद्ध करने योग्य इन्द्र की उपासना करो । जो ऐश्वर्य दानी ईश्वर सब में रम रहा है अपने उपासकों को सहस्त्रों सम्पदाएं और सहस्त्रों शिक्षाएं वेद मंत्रों से दे रहा है । उसकी भक्ति किया करो ।

जिसके हजारों दान ज्ञान मिल रहे हम को सदा ।
पूजा हमारी के लिये अनादि वह सच्चा पिता ।

کھنڈ ۱ — منتر نمبر ۲۳۶

زر و مال کے داتا ایشور کو گائیں!

तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः ।
अभि वत्सं न स्वसरेषु
धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥४॥

ہے اُپاسک منشو! (وہ) تمہارے (دسمم) دُکھوں کا ناش کرنے والے (رتیش ہم) ظلمات کو

مِٹانے والے (وسواندھسہ) زرو مال غلّہ وغیرہ سے (مندامٗ اِندرم) خوشیوں کے ذریعے دینے والے پرمیشور کی (گِیر بھی سوسرلبشو نو امہے) وید بانیوں کے ذریعے روزانہ ہم مہما گاتے ہیں دُعائیں کرتے ہیں جیسے (دھینوہ) دودھ بھری گئوئیں اپنے اپنے بچھڑوں کے لئے رنبھاتی ہیں۔

ے شیطانوں کے ظلموں سے بچا اَن دھن کے داتا پرمیشور
روزانہ وید کی بانی سے ہم جپتے رہیں تجھ کو ایشور

मंत्र 236—ऐश्वर्य दाता भगवान को गाओ

हे उपासकजनो ! आपके दुखों का विनाश करने, अत्याचारों को मिटाने वाले अन्न धन आदि के सुखदाता परमेश्वर की वेद वाणियों के द्वारा हम स्तुति करते हैं जैसे दूध भरी गायें अपने बछड़ों के लिये रंभाती हैं।

शैतानों के ज़ुल्मों से बचा अन्न धन के दाता परमेश्वर।
प्रतिदिन वेदों की वाणी से हम जपते रहें तुझ को ईश्वर।

منتر نمبر ۲۳۷ **عبادت گاہوں میں اُس کو بُلاؤ!** کھنڈ ۱

तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये ।
बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे
हुवे भरं न कारिणम् ॥५॥

ہے منتشیو اِمٗ (سبادھ) وگھن بادھاؤں وغیرہ سے ستائے جانے پر (اُوتیے) اپنی رکھشا کے لئے (اَدھورے سُت سومے) ہنسا رہت اُپاسنا یگیوں عبادت گاہوں میں بھگتی رس پیدا ہو جانے پر (ترو بھی) اپنی شردھا اور شکتی سے (ودِ وسُم اِندرم) زرومال کے داتا اِندر پرمیشور کو (بریہد گاینتہ) پریم پُوروک مہا گان کرتے ہوئے بُلاتے رہو۔ (نہ بھرم کارنم) جیسے کہ بچے پالن پوشن کرنے والے پتا کو پیار اور عزّت سے بُلاتے ہیں۔

ے یگیہ کی ویدی عبادت گاہوں میں اُسکو بُلا۔ اپنی رکھشا کے لئے گُن گاؤ اُس کے برملا

मंत्र 237 —हे मनुष्यों ! तुम रोग विघ्न बाधाओं के सताये जाने पर अपनी रक्षा के लिये हिन्सा रहित उपासना यज्ञों में भक्ति रस के उत्पन्न हो जाने पर अपनी पूरी शक्ति से धन सम्पदाओं के दाता इन्द्र को अति प्रेम से महिमा गान करते हुए बुलाते रहो। जैसे सन्तानें पालक पिता को प्यार और आदर से बुलाती हैं।

यज्ञ और संध्या की शालाओं में ईश्वर को बुला।
अपनी रक्षा के लिये गुण गाओ प्यारो सर्वदा।

منتر نمبر ۲۳۸ کھنڈا

ویدبانی سے بلایا بھگوان دُکھوں سے ترا دیتا ہے!

तरणिरित् सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा।
आ व इन्द्रं पुरुहूतं
नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम् ॥६॥

(ترنی) تارنے والا ایشور (اِت) ہی (یجا پُرندھیا) یوگ یکت بُدھی کے ذریعے (واجم سِشاستی) بل شکتی کو دینا چاہتا ہے (پُرُو ہُوتم اِندرم) جس کے بہت نام ہیں اُس پرمیشور کو (گرا وہ آننئے) میں وید بانی کے ذریعے تمہارے لئے جُھکاتا ہُوں اور اُنہیں (سُودرُوم) تمہاری سہایتا کے لئے جلدی تیار کرتا ہوں (تشٹا اِونیمِم) جیسے بڑھئی رتھ کے چکر پر ہال کو چڑھا کر رتھ کو جلدی چلا دیتا ہے۔

اِیش کے سیوک کے ناطے وید بانی سے بُلائیں
پار کرنے اور ترانے دُکھوں سے بھگوان آئیں

मंत्र 238-वेद वाणी से आहुत भगवान दुखों से तरा देता है

दुख दुर्गुणों से तराने वाला ईश्वर ही अपनी योग युक्त बुद्धि के द्वारा बल शक्ति को देना चाहता है। जिसके असंख्य नाम हैं उस परमेश्वर को वेद वाणी के द्वारा मैं तुम्हारे लिये झुकाता हूं। और तुम्हारी सहायता के लिये उन्हें तैयार करता हूं। जैसे राज बढ़ई रथ के

चक्र पर हल को चढ़ा कर रथ को शीघ्र चला देता है।

ईश के सेवक के नाते वेद बाणी से बुलायें।

पार करने और तराने दुखों से भगवान आएं।

منتر نمبر ۲۳۹ — ہمارے سچّے بندھو — کھنڈا

पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः।
आपिर्नो बोधि सधमाद्ये
वृधे३ऽस्माँ अवन्तु ते धियः ॥७॥

اِندر پرمیشور! (نہ گومتہ) ہم عابدوں کے (رسی نا سُتسیہ پب) بھگتی رس کو منظور فرمائیں اور (متسوا) ہم پر مہربان ہوویں۔ آپ (نہ آپی) ہمارے سچّے بندھو ہیں۔ ہماری بھاوناؤں (جذبات) کو (بودھی) جانئیے۔ اپنا گیان کرائیے (سدھ مادیئے وِردھے) ہماری آتمِک خوشیوں میں اضافہ بخشئے۔ (تے دِھیا اسمان اَونتو) آپ کا دھیان ہماری رکھشا میں لگا رہے۔

سچّے بندھو آپ ہیں جذبات ہمارے جانئیے
بھگتی رس منظور کر آنند کو برسائیے

मंत्र 239 — हमारे सच्चे बंधु

इन्द्र परमेश्वर ! हम उपासकों के भक्ति रस को स्वीकार कर हमें हर्षित कीजिये। आप हमारे सच्चे बंधु हैं। हमारी भावनाओं को जानकर हमें बोधयुक्त कीजिये। हमारी आत्म की खुशियों को आप कृपा कर बढ़ाते रहें। आपका ध्यान हमारी रक्षा में लगा रहे।

सच्चे बंधु हैं हमारी भावना को जानिये।
भक्ति रस स्वीकार कर आनंद को बरसाईये।

منتر نمبر ۲۴۰ دھن دو اور دوسروں کو بانٹنے کا من دو! کھنڈ ا

त्वं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये ।
उद्वावृषस्व मघवन्
गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये ॥८॥

ہے اندر پرماتن! (چیروے توم ہی ایہی) میرے ہردیہ اور جیون میں وچرنے کے لئے آپ اوشیہ آئیے (وِدا بھگم) آپ ہمیں الیشوریہ شری لکھشمی لیش کیرتی وغیرہ سمپدائیں عطا کریں۔ تاکہ ہم (وسوتیتئے) ان کو آگے بانٹ سکیں (مگھون اُد اُو آورشسو) پیارے دھنوان پرمیشور! اپنے زرومال اور دولتِ عرفان کو خوب ہم پر برساؤ (گوشٹیئے) جن سے ہم ساری دھرتی پر آپ کے دیئے دھن کو بانٹ سکیں۔ (اُت) اور (اشوم) بلوان من دیجئے (اِشٹے) تاکہ ہم دان یگیہ وغیرہ رفاۂ عام کے کام کر سکیں۔

جگت میں دھنوان بھگون ہم کو بھی دھن دیجئے
اور اس کے بانٹنے کو ایسا من بھی دیجئے

मंत्र 240—धन दो और बांटने का मन दो

हे इन्द्र परमात्मन! मेरे हृदय और जीवन में विचरने के लिये आप अवश्य आइये और हमें लक्ष्मी यश आदि ऐश्वर्य प्रदान कीजिये। जिससे हम इन को आगे बांट सकें। ऐश्वर्यवान परमेश्वर। सम्पदाओं के साथ अध्यात्मिक धनों की भी वृष्टि कीजिये ताकि हम सारी धरती पर बांटते जाएं और ऐसा मन दीजिये कि हम यज्ञ कर्म करते रहें।

जगत में धनवान भगवन हम को भी धन दीजिये।
और इसके बांटने को ऐसा मन भी दीजिये।

منتر نمبر ۲۴۱ اپنے کسی بھگت کا وہ تیاگ نہیں کرتا کھنڈ ا

१२ २२ ३२ ३ ३२ २२ ३१२
न हि वश्चरमं च न वसिष्ठः परिमंसते ।
३ १२३२ ३१२
अस्माकमद्य मरुतः
३२उ ३ १२ ३१२
सुते सचा विश्वे पिबन्तु कामिनः ॥९॥

ہے اُپاسکو! (وہ چرسم دمم) تم میں سے چھوٹے درجے کے بھی بھگت کو وہ (وسِشٹھ نہ پری سنتے) سب میں واس کرنے والا پرمیشور تیاگ نہیں کردیتا (مروُتہ) ہے عابد لوگو! (وشوے ادیہ اسماکم ستے سچا) تم سب آج ہمارے اس بھگتی یگیہ میں شامل ہو وؤ۔ اور (کامنا پبنتوُ) چاہتے ہوئے اِس بھگتی رس کا پان کرو۔ ے

تیاگ نہیں کرتا وہ ایشور اپنے ادنےٰ عابد کو بھی
بھگتی رس کو پی کرکے ہو جاؤ نزدتر اُس کے ہی

मंत्र 241—किसी भक्त का परित्याग नहीं करता

हे उपासको ! सब में वास करने वाला ईश्वर अपने किसी निचली कोटी के भक्त का भी परित्याग नहीं करता। हे उपासको ! तुम सब आज हमारे इस भक्ति यज्ञ में सम्मिलित होकर भगवान के भक्ति रस का पान करो।

नहीं करता परित्याग वह ईश्वर अपने किसी भक्त का भी।
भक्ति रस को पी के और हो जाओ निकटतम उसके ही।

منتر نمبر ۲۴۲ کھنڈ ا

ایشور کے سوا کسی کی مت پوجا کرو!

१ २३१२ २२ ३ १ २ ३ १ २
मा चिदन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत ।
२ ३१ २ ३ १२३
इन्द्रमित् स्तोता वृषणं
१ २ ३१२ २२३ १ २
सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत ॥१०॥[३११]

(سکھایہ) پیارے دوستو! تم ایشور کے علاوہ کسی کی بھی (وِشنست) پوجا نہ کرو۔ پرمیشور کی ستتی پرارتھنا کرتے ہوئے (مارِشنیت) تمہارا ناش نہیں ہو گا۔

(سُتے سچا) سُرورِ عبادت پیدا ہو جانے پر تم سب اکٹھے ہو کر (ورِشنم اِندرم اِت) آنند کو برسانے والے ایشور کی ہی (ستوت اُکتھا مُوہیہ شنست) حمد و ثنا کرتے ہوئے وید بانی کا لگاتار اُچارن (تلاوت) کیا کرو۔

دوستو سنسار کی اب اور باتیں چھوڑ دو
ایک پرمیشور کی پُوجا میں دِل اپنے جوڑ دو

मंत्र 242—ईश्वर के बिना किसी की उपासना नहीं

प्यारे मित्रो ! तुम ईश्वर से अन्य किसी की उपासना मत किया करो। ईश्वर की स्तुति आराधना करते हुए तुम्हारा विनाश नहीं होगा। भगवान की भक्ति का रस पैदा होने पर तुम सब इकट्ठे हो कर आनंद के वर्धक ईश्वर की प्रार्थना के लिये वैदिक सूक्तों का निरंतर उच्चारण किया करो।

मित्रगण संसार की अब और बातें छोड़ दो।
एक परमेश्वर की पूजा में मनों को जोड़ दो।

منتر نمبر ۲۴۳ جس تک کسی کے بَل اَور گیان کی پہنچ نہیں! کھنڈ ۲

न किष्टं कर्मणा नशद् यश्चकार सदावृधम् ।
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्त-
मृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा ॥१॥

(یہ سدا ورِدھم چکار) جو پرمیشور سدا سب کو بڑھاتا رہتا ہے (وِشوگورتم) جس کے پُرشارتھ کا کارنامہ یہ عظیم الشان دُنیا ہے، (رِبھوسم اَدھرشٹم) بڑی سے بڑی طاقتوں پر بھی جس نے فتح پا رکھی ہے، اور نہ وہ کسی سے مغلوب ہوا ہے (اوجسا دِھرشنم) بلکہ اپنی ہی طاقتوں سے جو سب پر قابو پائے ہوئے ہے (تم اِندرم) اُس پرمیشور کی پہنچ کو (نہ کی یگیہ نشت کرمنہ) نہ کوئی بڑے بھاری یگیہ کرموں یا بڑی جد و جہد کرتے ہوئے بھی پا سکا ہے۔

ے جس کو نہ کوئی کرم سے اور گیان سے پایا یہاں

پھر بھی وہ پھیلا سب جگہ ہے اِدھر بھی اور ہے وہاں

मंत्र 243—किसी के बल और ज्ञान की पहुंच नहीं खंड 2

जो परमेश्वर सदा सब की वृद्धि करता है और जिसका उद्यम यह विशाल जगत है। महतोमहान शक्तियों पर भी जो विजयी है। कभी किसी से पराजित नहीं हुआ अपितु सब पर शासन कर रखा है। उस परमेश्वर की पहुंच को न कोई महान यज्ञों और न महान संघर्षों से पा सका।

जिसको न कोई कर्म से और ज्ञान से पाया यहां।
फिर भी वह फैला सब जगह है यहां भी वह और है वहां।

منتر نمبر ۲۴۴ — کھنڈ ۲

اجسام کو بنانے والا

य ऋते चिदभिश्रिषः पुरा जत्रुभ्य आतृदः।
सन्धाता सन्धिं मघवा
पुरूवसुर्निष्कर्ता विह्रुतं पुनः ॥२॥

(یہ ابھی شرشہ رِتے چِت) جس پرمیشور نے جوڑنے کے کسی ہتھیار کے بغیر ہی (جتروبھیہ) ہڈی پسلی وغیرہ سے اِس جسم کو (پُرا آترِی دہ) آغازِ دُنیا میں گھڑا تھا اور گھڑتا رہتا ہے، اُس نے ہی جسم کے ہر ایک (سندھم سندھاتا) کونے کو آپس میں جوڑ رکھا ہے، وہ (مگھوا پُورووسُو) ایشور یہ وان پُورن ہو کر سب جگہ بس رہا ہے، (وِہرُتم پُنہ نِش کرتا) مہلک ہتھیاروں سے کٹے پھٹے شریروں اور نباتات وغیرہ سبھی پدارتھوں کو وہ پھر سے بار بار ٹھیک کر دیتا ہے۔

ے

شریر کے نظام کو بناتا اور جوڑتا

نہیں کہیں مرہم لگی کٹا پھٹا یُوں جوڑتا

मंत्र 244—शरीरों का निर्माता

जिस परमेश्वर ने बिना किसी मन्त्र के हड्डी पसली आदि से इस शरीर को घड़ा और घड़ता रहता है वह ही शरीर की प्रत्येक संधी को जोड़ता है। ऐश्वर्य पूर्ण होकर सब जगह बस रहा है। घोर शस्त्र अस्त्रों से कटे फटे शरीरों तथा बनस्पति आदि को फिर से ठीक करता रहता है।

शरीर के निज़ाम को बनाता और जोड़ता।
नहीं कहीं मरहम लगी कटा फटा यूं जोड़ता।

منتر نمبر ۲۴۵ کھنڈ ۲

سُورج کے رتھ کو چلانے والی سُنہری کرنیں

आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये।
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र
केशिनो वहन्तु सोमपीतये ॥३॥

(سہسرم شتم ہرنیہ یے رتھے) جیسے ہزاروں لاکھوں سُوریہ کرنیں سونے کے سے سُوریہ رتھ میں (آیکتا ہ) جُتی ہو کر اس رتھ کو (اوہنتو) چلاتی ہیں۔ ویسے ہی (برہم یجُہ) بھگوان کے ساتھ یوگ سادھنا سے جُڑے ہوئے عابد لوگ جو کہ (ہریہ) یوگ سمادھی وغیرہ علمِ عرفان سے واقف ہیں اور جو اُپاسنا یوگ ہیں (کے شِنیہ) سُوریہ چند رو غیرہ کی طرح روشن ہو گئے ہیں' وہ ہے اِندر پرمیشور! (تُو اا وہنتو سوم پیتئے) آپ کو بُلاتے ہیں تاکہ آپ اُن کی بھگتی نیاز کو قبول فرمائیں۔ ۵

سُورج کی نوری کرنوں سے چلتا سورج کا رتھ جیسے
یوگ سادھنا یُکت بھگتوں کے ہردیوں میں آؤ ایسے

मंत्र 245—सूर्य के रथ की संचालक किरणों

हज़ारों लाखों सूर्य किरणों स्वर्ण समान सूर्य रथ में जुतकर इस रथ को चलाती है वैसे ही भगवान के साथ जुड़ कर योग साधना में भक्त लोग

जो योग समाधि युक्त है और सूर्य चंद्रमा के समान चमक भी उठे हैं, व ही हे इन्द्र ! तेरा आहवान करते हैं ताकि आप उनकी भक्ति को स्वीकार कर सकें।

सूरिज की नूरी किरणों से चलता है सूरिज रथ जैसे।
योग साधना रत भक्तों के हृदयों में आओ वैसे।

منتر نمبر ۲۴۶ سَب رُوکاوٹوں کو دُور کرتے ہُوئے بھگوان آوٗ کھنڈ ۲

आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः ।
मा त्वा के चिन्नि यमुरिन्न
पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि ॥४॥

جیسے کوئی راجہ (مندرئ اِندری مُیورروم بھی ہری بھی آیا ہی) آسانی سے رتھ کو لے جانے والے گھوڑوں کے ذریعے جن پر موروں کے پنکھ شوبھا دے رہے ہیں، آتا ہے، ویسے ہی ہے پرمیشور! آنند دائیک یوگ کے اسباق رسیدہ عابد اُپاسکوں کے ہردیوں میں (کے چِت نوامانی یے موں) آنے سے کوئی بھی طاقتیں آپ کو روک نہیں سکتیں، جیسے جال باندھے ہوئے (پاشنہ) شکاری اُڑتے پکھشی کو نہیں روک سکتا یا جیسے کوئی (اِو دھنواتی) ہمت ور آدمی ریگستان کو عبور کر کے آجاتا ہے ویسے آپ (تان پرتی اِہی) اُن سبھی روکاوٹوں کو لانگھ کر آجائیے ۔ ۵

جیسے راجہ کو کوئی روکے کسی کی کیا مجال
ویسے ہی بھگتوں کے گھر میں آؤ حضرت با کمال

मंत्र 246—विघ्न बाधाओं को लांघ कर आओ

जैसे सम्राट सरलता से रथ को ले जाने वाले जिन मोर पंख सुशोभित घोड़ों द्वारा आता है वैसे ही परमेश्वर आनंद योग में दीक्षित् उपासकों के हृदयों में आने से कोई भी बल आपको रोक नहीं सकते।

जैसे जाल बांधे हुए शिकारी उड़ते पक्षी को रोक नहीं सकता या जैसे कोई साहसी वीर मरु भूमि को लांघ जाता है वैसे आप सभी बाधाओं को लांघ कर आजाईये।

जैसे राजा को कोई रोके किसी की क्या मजाल।
वैसे ही भगतों के घर में आओ होकर के निहाल।

منتر نمبر ۲۴۷ کھنڈ ۲

آپ کے سوائے اور کوئی سُکھ آنند داتا نہیں!

त्वमङ्ग प्र शंसिपो देवः शविष्ठ मर्त्यम् ।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति
मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥५॥

(انگ) ہے اندر آتمن (شوشٹھ) مہا بلوان اور مہا گیانی پرمیشور! (تُوم دیو) آپ اپنے آپ روشن بالذّات ہیں۔ آپ طاقت اور روشنی عطا کر کے اپنے (مرتیم) عابد انسان کو پیار کرتے ہوئے اُسے (پرسنشیہ) قابلِ تعریف مستحق بنائیے، ہے (مگھون) زرومال کے مالکِ اعلیٰ پربھو (نوّت انیہ مرڈیتہ) آپ کے بغیر کوئی دوسرا سُکھ آنند دینے والا (نہ استی) نہیں ہے۔ اِس لئے ہے اندر میں (تے وچہ برومی) آپ کے لئے اُتم بانی بولتا ہوں۔

ــــ

گیان اور شکتی کے ساگر روشنی مینار ہو
اور سُکھ شانتی کا داتا تم سا کوئی ہے نہیں

मंत्र 247—बिना तेरे है कौन आनंद दाता

हे इन्द्र आत्मन महाबलवान ज्ञानी परमेश्वर! आप स्वयं प्रकाशमान होकर मनुष्यों को भी प्रशंसनीय बनाते हैं। आप के सिवा और कोई आनंद सुख देने वाला नहीं है। अतः आप के स्तुति वचन गान करता हूं।

ज्ञान और शक्ति का सागर तुम सा रोशन है नहीं।
और सुख शान्ति का दाता भी तो तुम सा है नहीं।

منتر نمبر ۲۴۸ کھنڈ ۲

اَندر پیدا ہونیوالے دُکھوں اور بُرائیوں کے ناشک

त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः ।
त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक
इत् पुर्वनुत्तश्चर्षणीधृतिः ॥६॥

ہے اِندر! (توَم یشہ اسی) آپ کیرتی سورُوپ ہیں (رجی شی) اپنے پیاروں کو سرل مارگ سے چلاتے ہیں اور آپ (شوسسپتی ایک اِت) بل کے بھنڈار سوامی ایسے ہو کر اپنے اُپاسک کے اندر سے راگ دویش وغیرہ (ورترانی) راکھششوں کا (ہنسی) ناش کرتے ہو (اپرتینی) یہ چھپے بغض و حسد رُوپی شیطان آپ کا مقابلہ نہیں کر سکتے، چاہے یہ (پرو) کثیر التعداد ہیں۔ (انوتہ چرشنی دھرتی) بِنا کسی کی رغبت کے آپ سب پرانیوں کا پالن کر رہے ہیں۔

کیرتی اور نیک نامی بل کے ہو بھنڈار سوامی
اپنے پیاروں کی بُرائی اور دُکھوں کا ناش کرتے

मंत्र 248—अन्तः दुखों तथा पापों के नाशक

हे इन्द्र आप यशस्वी हैं ! अपने प्रिय उपासकों को सरल मार्ग देते हैं। और बल के भण्डार आप अकेले होकर ही उपासकों के अन्तः राग द्वेष आदि शत्रुओं का विनाश करते हैं यह छिपे अंदर के शत्रु आप से लोहा नहीं ले सकते चाहे ये बहुत भी है। आप तो बिना किसी की प्रेरणा के हो प्राणी मात्र का पालन करते हो।

कीर्ति और यश के रूपक बल के हो भण्डार स्वामी।
अपने प्यारों के दुखों को नाश करते अन्तः यामी।

منتر نمبر ۲۴۹ کھنڈ ۲

سب کاموں کی شروعات ایشور کی پرارتھنا سے!

इन्द्रमिद्देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।
इन्द्रं समीके वनिनो
हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ॥७॥

(دیوتاتئے) دیووِدوانوں اِندریوں کی پوترتّا اور دیو پرمیشور کی پراپتی کے لئے (اِندرم اِت ہوا ہے) اُسی پرمیشور کو ہی تو پکارتے ہیں۔ (اَدھوَرے پریہ تی اِندرم) ہنسا رہت یگیوں کا شروعات بھی اِندر کی پرارتھنا سے کرتے ہیں۔ (ونی ناسمی کے اِندرم) اکٹھے ہو کر بھگتی کرنے والے ہم دیو اُسر سنگراموں میں بھی (نیکی بدی کا محاصرہ) پرمیشور کو ہی بُلاتے ہیں (دھنیہ ساتئے) دھن کے حصول، اور اُسے بانٹنے کے لئے بھی اِندر کا آواہن کرتے ہیں۔

ے نیکی بدی کی جنگ ہو یا کام ہو دھن پراپتی کا
یگیہ میں بھی ہیں بُلاتے اور بُلائیں گے سدا

मंत्र 249—प्रत्येक संग्राम में ईश्वर प्रार्थना

देव विद्वानों, इन्द्रियों की पवित्रता और परमेश्वर देव की प्राप्ति के लिये भी उसी ईश्वर को ही पुकारते हैं। हिन्सा रहित यज्ञ का आरंभ भी सब इकट्ठे होकर और देवासुर संग्रामों में भी परमेश्वर को ही बुलाते है। धन प्राप्ति और उस के बांटने के लिये भी प्यारे इन्द्र का ही आह्वान करते हैं।

देवासुर संग्राम हो या कर्म हो धन प्राप्ति का।
यज्ञ में भी हैं बुलाते और बुलायेंगे सदा।

منتر نمبر ۲۵۰ **پاکیزہ رُوح عابد آپ کی حمد و ثنا کرتے ہیں!** کھنڈ ۲

इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।
पावकवर्णाः शुचयो
विपश्चितोऽभिस्तोमैरनूपत ॥८॥

(پُرُو وسُو) پری پُورن سب میں بسنے والے دھن کے سوامی پرمیشور! (یہ مم گرا) یہ جو میری سُننے بانی ہے (اِما اُو توا وردھنتُو) یہ بانیاں آپ کو ہی بڑھاتی یعنی آپ کا ہی ذکر کرتی ہیں۔ (شُچیہ وپشچتی تہ) شریر، من، بانی اور شُدھ پوتر آتما بیدھادی اُپاسک (ستومیّ ابھی انُوشت) اپنی بانیوں سے آپ کی حمد و ثنا ہی گاتے ہیں۔

سب کو بسانے والے جگ میں پری پُورن دھنوان ہو تم
ہو پوتر ہر طرح سے ہم تیری بانی گاتے ہر دم

मंत्र 250—शुद्ध पवित्र विद्वानों का स्तुति गान

हे परमेश्वर! जो आप के लिए मेरी स्तुति वाणियां हैं वे वृद्धि को प्राप्त हों और जो शुद्ध पवित्र विद्वान आपकी मंत्रों से स्तुति करते हैं वे भी सदा बढ़ते रहें।

सब को बसाने वाले जग में परिपूर्ण धनवान हो तुम।
हो पवित्र सब ओर से हम तेरी वाणी गाते हर दम।

منتر نمبر ۲۵۱ — کھنڈ ۲

دُکھوں سے چُھڑانے والی منتر وِدّیا

उदु त्ये मधुमत्तमा गिर स्तोमास ईरते।
सत्राजितो धनसा
अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव ॥९॥

(وہ مدھو منتّماہ) برہم وِدّیا سے پُورن (گرہ ستوماس) وید منتر اور سُتتی گان (سترا جِتہ) سب کشٹوں کو پراجت کرتے ہوئے (اکھشی تونتیہ) اکھنڈ بل شالی (واجینتہ) گیان بھرے (رتھا اِو) تیز رتھوں کی طرح (دھن ساہ) دھنوں کو پراپت کرانے ہوئے (اُت ایرتے) آگے بڑھتے ہیں۔

ـــہ

ویدمنتروں کے مُدھر گان رتھ کے سمان بڑھے جاتے ہیں
دُکھوں کو دُور ہٹا کر کے دھن بل کو بڑھاتے جاتے ہیں

मंत्र 251—दुखों से छुड़ाने वाली मंत्र् विद्या

ब्रह्म विद्या से युक्त वेद मंत्र, स्तुति गान सब कष्टों को पराजित करते हुए अक्षय बल शाली, ज्ञान युक्त वेगवान रथों के समान धनों को प्राप्त कराते हुए आगे बढ़ते हैं।

वेद मंत्रों के मधुर गान रथ के समान बढ़े जाते हैं।
दुखों को पराजित करते हुए धन बल को बढ़ाते जाते हैं।

منتر نمبر ۲۵۲ ‏ ‏ ‏ کھنڈ ۲

ہو گئے بندھو ہی جب تو.......

यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम् ।
आपित्वे नः प्रपित्व तूयमा गहि
कण्वेषु सु सचा पिब ॥१०॥[३।२]

جیسے (گوُرا) جنگلی ہرن (ترِشن) پیاسا (اِری نم اپاکرِتم) گھاس وغیرہ سے نہ ڈھکے یعنی کھُلے ہوئے تالاب کو دُور سے دیکھ کر بھاگتا ہوا پہنچ جاتا ہے۔ (اَواِہتی) جل پی کر پیاس بجھاتا ہے۔ ویسے ہی پرمیشور (نہ) ہم اُپاسکوں کا آپ (سچا) کے ساتھ (آپتوے پرتوے) بندھوپن، بھائی چارہ ہو جانے پر اب تو آپ (تُویم آگہی) جلدی آئیے اور (کنویشو سُو پِب) ہمارے اُپاسنا بھگتی کے رس کو پان کیجئے۔ ۵

ہو گئے بندھو ہی جب تو اور پردہ کیا رہا
اب تو جلدی آئیے ہیں دیکھتے دیر سے راہ

मंत्र 252—जैसे जंगली हिरन प्यासा घासादि तृणों से न ढके तालाब को दूर से देखता और भागता हुआ आकर अपनी प्यास को बुझाता है। वैसे ही परमेश्वर हम उपासकों का आप के साथ बंध नाता जब हो गया

तो आप शीघ्रता से आकर हमारे भक्ति रस को स्वीकार कीजिये।

हो गये बंधु ही जब तो और परदा क्या रहा।

अब तो जल्दी आईये हैं देखते देरी से राह।

منتر نمبر ۲۵۳ کھنڈ ۳

آپ کی رہنمائی میں چلتے رہیں!

शग्ध्यू३षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः।
भगं न हि त्वा यशसं
वसुविदमनु शूर चरामसि ॥१॥

(شچی پتے اِندر) اِشکتیوں کے سوامی! (وشوابھی رُوتی بھی شگدھی) سب طرح کی محافظ طاقتوں کے ساتھ آپ ہمیں اعلیٰ طاقت بخشیں (بھگم نہ یشسم) آپ کیرتی رُوپ ایشور یہ ہیں۔ (وسُو وِدم) زرومال کی آماجگاہ اور داتا ہیں۔ ہے شُورویر! آپ اندرونی آسری خوفناک بُرائیوں کو نحس نحس کرنے والے ہیں۔ (تُوا انوچرامسی) ہم آپ کے عابد آپ کی رہنمائی میں چلتے رہیں۔

شکتیوں کے سوامی آپ شکتی ہم کو دیجئے
رہنمائی اپنی کی ذرّہ نوازی کیجئے

मंत्र 253—आप के मार्ग दर्शन में चलें खंड 3

हे शक्तियों के स्वामी इन्द्र! सब प्रकार की सुरक्षाओं के साथ आप हमें उत्कृष्ट शक्ति प्रदान करें। आप यश रूप ही हैं और ऐश्वर्य के भण्डार और दाता भी आप ही हैं। देवासुर संग्राम में असुरों के नाश करने वाले हैं। हम आप के सेवक आपके दर्शाये मार्ग पर चलते रहें।

शक्तियों के स्वामी आप शक्ति हम को दीजिये।
मार्ग दर्शन अपने में अपनी कृपा से लीजिये।

منتر نمبر ۲۵۴ **پاپیوں کا دھن بھگتوں میں بانٹیے!** کھنڈ ۳

या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वाँ असुरेभ्यः ।
स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय
ये च त्वे वृक्तबर्हिषः ॥२॥

ہے اِندر پرمیشور! (یا بھج اسُرے بھیہ) جن بھوگ پدارتھوں کو اسُروں سے (آبھر) پراپت کرتے ہو اُن سے ہے (سروان مگھون) سب سکھوں، نوری پدارتھوں کے سوامی ایشور! (اسیہ ستوتارم) اِس اپنے اُپاسک کو (اِت ورد ھیئے) بالضرور بڑھائیے، (چہ توے یے ورکت برہشیہ) جو فقط تیرے لئے ہی اپنا دامن بچھائے ہوئے ہیں، باہر کے سبھی جھنجھٹوں کو چھوڑ کر۔

باہر کی دُنیا سے جو مُکھ موڑ آئے ہیں شرن تیری
ہردے آسن پر آؤ تیری راہ میں اُن کی نظر اڑی

मंत्र 254—असुरों का धन धर्मियों में बांटियें

हे इन्द्र ! जिन भोग पदार्थों को असुरों से छीनते हो उनको अपने उपासकों में बांटकर हे मघवन ऐश्वर्य शाली इन्द्र ! उन्हें अवश्य बढ़ाईये । जो केवल तेरी शरणागत हो बाहर के झंझटों को छोड़ तेरी आस लगाये हुए हैं ।

बाहर की दुनिया से जो मुख मोड़ आए हैं शरण तेरी ।
हृदय आसन पर आओ तेरी राह में उन की दृष्टि अड़ी ।

منتر نمبر ۲۵۵ **عابد کی دَولت سچائی ہے!** کھنڈ ۳

प्र मित्राय प्रार्यम्णे सचथ्यमृतावसो ।
वरूथ्ये३ वरुणे छन्द्यं
वचः स्तोत्रं राजसु गायत ॥३॥

(رِتا وسو) سچائی کو ہی دھن سمجھنے والے ہے عابد لوگو! (مِترائے) سب کے دوست
ایشور کے لئے (سچیتھم چھندیم ستوترم وچہ پرگائے) اُس کی سیوا کرنے یوگیہ وید وکت ستتی
منتروں کا شردھا سے گان کیا کرو۔ (اربینے پر) اُس سارے جہاں کے عادل پرمیشور کی
بندگی پوری عقیدت سے کیا کرو۔ (ورُوتھئے راجسو گاینت) سہاروں کے سہارے
راجاؤں میں مہاراج کی مل کر سجدے میں بھگتی کیا کرو۔ گُن گان کیا کرو۔ ۵

دوست سب کے نیائے کاری راج ہو ادھیراج سب کے
راستی پر گامزن مل گائیں گُن ہم آپ کے

मंत्र 255—उपासक का धन सत्य है

हे सत्य ज्ञान में वास करने वाले उपासको ! सर्व मित्र ईश्वर के लिये उस के सेवन योग्य वेदोक्त स्तुति मंत्रों का श्रद्धा से गान किया करो। जगत न्यायाधीश भगवान को भक्ति से गाया करो। राजाओं के महाराज सब के श्रेष्ठ आश्रय परमेश्वर के गुण गाया करो।

मित्र सबके न्यायाकारी राज हो अधिराज सब के।
सत्य को धारण किये गुण गायें भगवन आपके।

منتر نمبر ۲۵۶ — **سب آپ کو گاتے ہیں!** — کھنڈ ۳

अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः ।
समीचीनास ऋभवः
समस्वरन् रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम् ॥४॥

ہے اِندر پرمیشور (آیوہ) درازیٔ عمر کے خواہش مند اُپاسک لوگ (پُورو پیتئے) پوری
زندگی کے سُکھ آرام کے لئے (تُوا سومے بھی ابھی) آپ کا سام گان سے سب طرف سے
(گرِنت) حمد وثنا گاتے ہیں۔ (سمیچی نام رِبھوہ سم وسنم مرسورن) شیلی، کارگیر، بدھیمان آپ انادی
بھگوان کا اکٹھے مل کر سُر سہت گان کرتے ہیں اور پران وِدّیا کو جاننے والے رُدر برہمچاری

بھی۔

ے

عمر لمبی چاہنے والے پرانوں کی وِدّیا کے ماہر
گاتے ہیں سب آپ کو وِدوان بھی بلوان بھی

मंत्र 256—सभी आपको गाते हैं

हे इन्द्र परमेश्वर ! दीर्घायु के ऐच्छुक उपासक लोग सम्पूर्ण जीवन के सुख आनंद के लिये आपकी स्तुति गान करते हैं। शिल्पी कारीगर बुद्धिमान भी आप अनादि भगवान का इकट्ठे मिलकर स्वर सहित गान करते हैं और प्राण विद्या के ज्ञाता भी प्राणायाम द्वारा।

लम्बी आयु चाहने वाले प्राणों की विद्या में माहर।
गाते हैं सब आपको विद्वान भी बलवान भी।

منتر نمبر ۲۵۷ — اگیان کے ناشک بھگوان! — کھنڈ ۳

२ ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत ।
३ १ २ ३ २
वृत्रं हनति वृत्रहा
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा ॥५॥

ہے (مروتہ) پرانایام سے پرانوں کو وش میں کرنے والے جگیاسُو دوالو! (وہ برہتے اِندرائے برہم ارچت) آپ مہان پرمیشور کے لئے اِسی برہم کی سُتتی کے منتر گاؤ۔ وہ (ورِترہا ورِترم ہنتی) وگھن بادھاؤں اور پاپوں کا ناشک اگیان رُوپ شتروکو (شت پرونا وجرین ہنتی) سینکڑوں دھاراؤں والے بجر سے ناش کر دیتا ہے۔ (شت کرتُو) ایسا ہے وہ سینکڑوں طرح کی بُدھی کرموں اور شکتیوں والا ایشور۔

ے

وہ ہے پربھُو سب سے بڑا اگیان کا ناشک ہے جو
ہیں کرم جس کے اَن گِنت تم گاتے جاؤ اُس کے ہو

मंत्र 257—अज्ञान के नाशक

प्राणायाम से प्राणों को वश में करने वाले जिज्ञासु विद्वानो ! आप महान ब्रह्म के स्तोत्र गाओ। वह विघ्न बाधाओं का नाशक पाप ताप का संघारक इन्द्र परमेश्वर ! अज्ञान रूपी शत्रुओं को अपने शतधारा बज्र से नाश कर देता है। जो शतशः शक्तियों, कर्मों और बुद्धियों का स्वामीहै।

जो है प्रभु सबसे बड़ा अज्ञान का नाशक है जो।
हैं कर्म जिस के अन गिनत तुम गीत गाओ उसके हो।

منتر نمبر ٢٥٨ — **گناہوں سے نجات دہندہ** — کھنڈ ٣

बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम् ।
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो
देवं देवाय जागृवि ॥६॥

(مروتہ) کم گو عابد لوگو! (اندرائے برہت گایت) مہان پرمیشور کے لئے مہاسام گان کرو۔ (ورتر ہنتم) جو گناہوں کو نحس نحس کر دیتا ہے (ئین رتا وردھ) جس بھگتی کے مہا گان کے ذریعے سچائی کو اختیار کر۔ عابد لوگ بڑھتے ہوئے (جاگروں جیوتی دیوم رجنین) اپنے اندر اُس نورِ عالم پرمیشور کو ہمیشہ ظاہر ظہور پاتے ہیں۔ ؎

پاپ ناشک اِلش کی بڑھ بڑھ کے گاؤ کیرتی
جس سے بڑھتے جاؤ اندر بڑھتی جائے جیوتی بھی

मंत्र 258—पाप ताप सन्तापक

मितभाषी जनो ! महान प्रभु के लिये महा साम गान करो। जो पाप ताप का सन्तापक है। जिस की भक्ति के महा गान द्वारा सत्य को धारण कर उस का प्रनुष्ठान कर अभ्यासी उपासक सदा ज्योतिमान परमेश्वर को अपने अंदर प्रगट कर पाते हैं।

पाप नाशक ईश की बढ़ चढ़ के गाओ कीर्ति ।
जिससे बढ़ते जाओ और अंदर बढ़े वह ज्योति भी ।

منتر نمبر ۲۵۹ اِسی جنم میں ہی آپ کو مِل سکیں کھنڈ ۴

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत
यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥७॥

ہے اِندر پرمیشور (نہ کرتُوم آبھر) ہمیں کام کرنے کی طاقت، ہمّت، قوتِ ارادی اور عقلِ سلیم عطا فرما، جیسے (پِتا پُترے بھیہ) باپ بیٹے کو یہ سب عطا کرتا ہے (پرُوہوت) ہے بہت ناموں اور گنُوں اور شکتیوں اور دھنوں والے (اسمِن یا منی) اس زندگی کے لمحوں میں آپ (نہ شِکھش) ہمیں شِکھشا دیجئے تاکہ (جیواہ جیوتی رِشی مہی) اس جنم میں ہی ہم جیو جیوتی سروپ (مینارِ روشنی) آپ کو پراپت کر سکیں۔

باپ بیٹوں کو ہے جیسے دیتا چابی اپنے دھن کی
شبھ کمائی میں لگاؤ۔ بُدھی دو اپنے مِلن کی

मंत्र 259—इसी जन्म में ही प्राप्त करें

हे इन्द्र ! हमें कर्म करने की शक्ति साहस और बुद्धि प्रदान करो, जैसे पिता अपने पुत्र को ज्ञान आदि सभी सम्पदाएं देता है। हे बहुत नामों गुणों शक्ति और ऐश्वर्यों वाले ! इस जीवन में ही आप हमें शिक्षा दीजिये, ताकि इसी जन्म में आप ज्योति स्वरूप को पाकर कृत्य कृत्य हों ।

बाप बेटों को है देता जैसे चाबी अपने धन की ।
शुभ कमाई में लगाओ बुद्धि दो अपने मिलन की ।

منتر نمبر ۲۶۰ آپ ہمیں نہ چھوڑیں! کھنڈ ۴

मा न इन्द्र परा वृणग्भवा नः सधमाद्ये ।
त्वं न ऊती त्वमिन्न
आप्यं मा न इन्द्र परावृणक् ॥८॥

ہے اِندر پرمیشور! آپ (پراورِنک نا) ہمارا پری تیاگ نہ کیجئے، (نہ سدھ مادییے) ہماری اور آپ کی آپسی وصال کی خوشیاں سدا بنی رہیں (توم نہ اُوتی) آپ ہماری حفاظت مجسّم رکھشا رُوپ (تُوّم اِت نہ آپیّم) آپ ہی ہمارے لئے حصولِ زندگی ہیں۔ اِس لئے ہے اِندر! آپ (نہ ما پراورِنک) ہمیں نہ چھوڑیں۔ تیاگ نہ کریں۔

ــــه

رکھشک ہو اور پریہ بندھو جب آپ تو عرضی سُنو
ہم کو نہ چھوڑو ہے پربھُو، چھوڑو نہ ہم کو ہے پربھُو

मंत्र 260—आप हमें न छोड़िये

हे इन्द्र परमेश्वर ! आप हमारा परित्याग न कीजिये। आपके साथ मिलन का आनंद हमारा सदा बना रहे। आप ही हमारे परम रक्षक और प्राप्ति का जीवन लक्ष्य हैं। अतः आप हमें न छोड़िये।

रक्षक हो और प्रिय बंधु हैं जब आप तो, विनती सुनो।
हम को न छोड़ो हे प्रभु छोड़ो न हम को हे, प्रभो।

کھنڈ ۴ — منتر نمبر ۲۶۱

آسن بچھائے چاروں طرف بیٹھے ہیں!

वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन्
परि स्तोतार आसते ॥९॥

پرمیشور! (ویم تو اُستاونتہ) ہم نے آپ کے لئے بھگتی رس کو جوڑ لیا ہے۔ (آپہ نہ) جیسے پانی سمندر کی طرف جاتا ہے۔ ویسے ہم بھگتی کی بھاوناؤں میں بہتے ہوئے آپ کی طرف بہہ رہے ہیں۔ (ورکت برہشہ) یگیوں میں بچھائے آسنوں کی طرح ہم نے آپ کے لئے دل میں آسن بچھا رکھے ہیں، (ورترہن) ہے پاپ ناشک! (پوترسیہ پرسرونیشوٗ) پوتر کر دینے والے بھگتی رس کے بہاؤ میں سرشار ہوتے ہوئے آپ کے (ستو تاراہ پری آست) بھگت چاروں طرف بھگتی میں لین بیٹھے ہیں۔

جیسے جل جاتا ہے ساگر کی طرف بہتا ہوا
بھگتی میں بہتے ہوئے آسن بچھائے بیٹھے ہم

मंत्र 261--आसन बिछाए बैठे हैं

परमेश्वर हम ने आपके लिये भक्ति रस का संग्रह कर लिया है। जैसे जल सागर की ओर ही बहता है वैसे ही हम भक्ति भावना में बहते हुए आपकी ओर ही जा रहे हैं। यज्ञों में बिछाए आसनों की भांति आपके लिये हृदय में आसन बिछा रखे हैं। हे पाप विनाशक! पवित्र भक्ति रस के आनंद में लीन हुऐ चारों ओर आपके भक्त प्रतीक्षा कर रहे हैं।

जैसे जल जाता है सागर की तरफ बहता हुआ।
भक्ति में बहते हुए आसन बिछाए बैठे हम।

منتر نمبر ۲۶۲ کھنڈ ۴

یہ سب زر و مال اور رُوحانی دَولتیں

यदिन्द्र नाहुषीष्वा ओजो नृम्णं च कृष्टिषु।
यद्वा पञ्चक्षितीनां द्युम्नमा
भर सत्रा विश्वानि पौंस्या ॥१०॥[३।३]

اندر پرماتمن! (ناہوشی شوٗ) لوکا چار بندھنوں میں بندھی ہوئی منظم رعیت میں (یت اوجہ)

جوبل اور ہمت ہوتی ہے (چہ کرشٹِشن نرِمنم) اور کھیتی ہاروں میں جو زر و مال ہوتا ہے (بیدوا پنج کھشتی نام) یا وِشال راجیوں میں۔ آتما کی پانچ بھوتیوں اور پانچ گیان اِندریوں کے پوِتر وِیشوں میں (دیُومنم) جو نیج ، یش اور بل ہے۔ وہ ہم سب اُپاسکوں کے لئے (آبھر) دیجئے اور (ستراوِشوانی پوُنسیا) ساتھ ہی مردمی طاقتیں اور عقل پاک عطا کریں۔

۵

اوج بل دھن آپ کا دُنیا میں جو پھیلا ہوا
گیان کی اِن اِندریوں کے ذریعے ہم کو دو سدا

मंत्र 262—आपकी ये सम्पदाएं

इन्द्र परमात्मन ! लोक सहिता के बंधनों में बंधी प्रजा में जो बल और शक्ति होती है और जो खेती वा भूमि हारों में जो धन सम्पदा होती है विशाल राज्यों, आत्मा की पांच भूमियों और पांच ज्ञानेन्द्रियों के पवित्र विषयों में जो तेज वा यश बल होता है। वह सब हम उपासकों के लिये दीजिये और पुंस्त्व एवं मेधा बुद्धि।

ओज बल धन आपका जगति में जो फैला हुआ।
ज्ञान की इन इन्द्रियों के द्वारा हम को दो सदा।

منتر نمبر ۲۶۳ — کھنڈ ۴

آنند برسانے والے!

३ २ ३ १र २र ३ १२ ३ २
सत्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽविता।
२ ३क २र ३ १ २ ३ २ ३
वृषा ह्युग्र शृण्विषे परावति
१ २ ३ १ २ ३ २
वृषो अर्वावति श्रुतः ॥१॥

ہے (اُگر) تیجسوی بلوان پرمیشور! (ستیم اِتھّا وِرشا اِت) سچ ہے کہ آپ اُن پدارتھوں کی ورشا کرنے والے ہیں جن کو ہم چاہتے ہیں (ورِش جُوتی نہ اِوتا) نیک زین بندوں کے ذریعے آپ پُوجے جاتے ہیں۔ ہمارے محافظ ہیں (ورشا ہی شرِن وشے)

مشہور عالم دھرم کی مُورتی ہیں (پراوتی ارواوتی) دُور اُور نزدیک سے بھی آپ آنند کو برسانے والے پرسِدھ ہیں۔ ایسا (شرُتہ) ہم ہمیشہ سے سُنتے آرہے ہیں۔

ستیہ رُوپ پربھُو ہمارے تیج بل بھنڈار ہیں
دُور بھی ہیں پاس بھی سُکھ ورشا سرجن ہار ہیں

मंत्र 263--आनंद के प्रसिद्ध वर्षक खंड 4

हे तेज युक्त बलवान प्रभो ! हमारे काम्य पदार्थों की वर्षा करने वाले आप प्रसिद्ध हैं श्रेष्ठों के द्वारा ही पूजे जाते हो और हमारे सुरक्षक हो। धर्म मूर्ति हैं आप यह सब सत्य ही हैं। दूर और निकट से भी आनंद बरसाते रहते हो। सदा से यही सुनते हैं।

सत्य रूप प्रभु हमारे तेज बल भंडार हैं।
दूर भी हैं पास भी सुख वर्षा सरजन हार हैं।

منتر نمبر ۲۶۴ — ویدبانی سے بُلائیں آپ کو! — کھنڈ ۴

यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन् ।
अतस्त्वा गीर्भिर्द्युगदिन्द्र केशिभिः
सुतावाँ आ विवासति ॥२॥

ہے (شکر) سروشکتی مان! آپ (ہت پراوتی اسی) چاہے دُور سے بھی دُور ہیں اور (ورِترہن) پاپ راکھشس کو مارنے والے (یدارواوتی) نزدیک سے نزدیک تر بھی ہیں (رتہ دیُوگت) لہٰذا نظامِ شمسی کو سنبھالے ہوئے ہیں اِندر! (کیشی بھی گو بھی) آپ کے سوروپ کے دیدار کرانے والی ویدبانیوں کے ذریعے یہ اُپاسک عابد آپ کی (آوِواسنی ستاوان) خدمت گزاری کے قابل ہو کر پیشِ نظر بھگتی بھاؤ کو نذر کرتا ہے۔

ہر جگہ موجود ہو کر جب نظر آئیں نہیں
وید بانی کے ذرائع سے بُلائیں کیوں نہیں

मंत्र 264 -वेद वाणी से बुलायें क्यों नही

हे सर्वशक्तिमान ! आप चाहे दूर से भी दूर हैं और निकटतम भी इसलिये हे पाप नाशक भगवान ! आप के स्वरूप को दर्शाने वाली यह वेद वाणियां ही हैं जिन के द्वारा उपासक आप की सेवा के लिये भक्ति रस को भेंट करता है ।

हर जगह मौजूद होकर जब नजर आयें नहीं ।
वेद वाणी के द्वारा क्यों बुलायें हम नहीं ?

کھنڈ ۴ — منتر نمبر ۲۶۵ وید منتروں سے اُسے یاد کرتے رہو

अभि वो वीरमन्धसो मदेषु
गाय गिरा मह्य विचेतसम् ।
इन्द्रं नाम श्रुत्यं शाकिनं वचो यथा ॥३॥

(وہ) آپ لوگ (اندھسہ مدیشو) جہالت کو دُور کرنے والے، خوشیوں کے جلسوں میں (مہا وچیتسم ویرم شاکی نم نام اِندرم) لاانتہا عالم، بہادر جہاں عالمی طاقتوں کے منبع وید شاستر وغیرہ سبھی قدیم ترین کتب ہائے میں پرسدّھ اِندر الشور کی (بچھا وچہ گِرا گایہ) بحکم وید کے انہی وید شاستروں سے حمد و ثنا کریں، گایا کریں۔

۵ عابد و سچے بہادر اِندر کی پُوجا کرو
اُور اُس کی یاد میں دیدوں کی بانی کو پڑھو

मंत्र 265—वेद मंत्रों से उसकी याद

नवीन अभ्यासी जनो ! आप लोग अज्ञान को हटाने वाले, आनंद

अवसरों पर अनंत ज्ञान स्वरूप शक्तियों के स्रोत वेद शास्त्र प्रसिद्ध उस इन्द्र की स्तुति वेद मंत्रों से गाया करो।

वीर सच्चे इन्द्र की जिज्ञासुओ पूजा करो।
और उस की याद में वेदों की वाणी को पढ़ो।

منتر نمبر ۲۶۶ کھنڈ ۴

جنم اور مرن سے چھڑائیں!

इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तये।
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च
मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः ॥४॥

(چھردی تری دھاتو) خانۂ جسم تین دھاتو وات پت کف والا ہے اور (تری ورُوتھم) ستھول سوکھشم اور کارن تین جسموں والا ہے، (مگھود بھیہ) رُوحانی دولتوں سے مالا مال عالم عرفان کے لئے اور ادھیاتمک پُرش کے لئے ہے۔ اِندر پرمیشور! اپنی (شرنم یچھ) شرن دیجئے۔ تاکہ (سوستئے بھیہ د دیُوم یاوبہ) اِن سب کے اور ہمارے کلیان کے لئے موت کے چمکتے ہوئے بجر کو دُور کیجئے۔

تین دھاتُو سے مُرکّب تین پردوں سے ڈھکا
نُور کا مندر ہے اِنساں مَوت سے اِیشور بچا

मंत्र 266—जन्म मरण से मुक्त कीजिये

यह शरीर रूपी घर तीन धातुओं से युक्त तीन स्थूल, सूक्ष्म, कारण शरीरों वाला अध्यात्मक सम्पदाओं से युक्त है। मुझ अध्यात्मिक पुरुष के लिये हे इन्द्र! अपनी शरण दीजिये। इन के और हमारे सब के कल्याण के लिये मृत्यु के वज्र को दूर कीजिये। इस से मुक्त कीजिये।

तीन धातु युक्त है और त्री शरीरों से ढका।
ज्ञान का मंदिर है मानव मृत्यु से ईश्वर छुड़ा।

منتر نمبر ۲۶۷ کھنڈ ۴

باپ کی دی ہوئی وراثت کو بھوگو

श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जातो जनिमान्योजसा
प्रति भागं न दीधिम ॥४॥

ہے پاکیزہ انسانو! جیسے تُم (سُوریم شرانئیہ) سُورج کا سہارا لے کر اِس کے تاپ اور روشنی کا استعمال کرتے ہو۔ ویسے تُم سب مل کر (اِندرسیہ وِشوا وسُوئی جاتا) بھگوان سے پیدا کی ہوئی سب طرف بکھری ہوئی نعمتوں اور (جنی مانی) آگے پیدا ہونے والی نعمتوں کا (بھکشت) بھوگ کیا کرو۔ تاکہ تم سب (اوجسا) اِن قُدرتی نعمتوں سے پُرنور ہو سکو (نہ پرتی بھاگم دی دھیمہ) جیسے کہ آل اولاد اپنے باپ دادا کی وراثت، کو حاصل کر کے سُکھی ہوتی ہے۔

ے

اِیش ہے سب کا پتا اُس کی سبھی ہیں نعمتیں
بھوگنے کو ہیں ملیں مل کے سدا بھوگیں اِنہیں

मंत्र 267 –पितृ सम्पत्तियों को मिलकर सुख से भोगो

हे मनुष्यो ! जैसे तुम सूर्य का आश्रय लेकर इसके ताप और प्रकाश का सेवन करते हो, वैसे तुम सब मिलकर जो उत्पन्न हुई परमेश्वर इन्द्र की सम्पदाएं हैं वा आगे को भी होती जायेंगी उनका भोग करते हुए इन सम्पदाओं से तेजस्वान होओ जैसे कि सन्तानें अपने माता पिता की सम्पदाओं की अधिकारी होती हैं।

ईश है सबका पिता उसकी सभी हैं नियामतें
भोगने को हैं मिलो मिलके सदा भोगे इन्हें।

منتر نمبر ۲۶۸ کھنڈ ۴

پرماتما سے منہ موڑ کر اِنسان کامیاب نہیں ہوسکتا!

न सीमदेव आप तदिषं दीर्घायो मर्त्यः ।
एतग्वा चिद्य एतशो युयोजत
इन्द्रो हरी युयोजते ॥६॥

(دیرگھ آیُو مرتیہ) ہے لمبی عمر والے پیارے مانو! (ادیوتت اِشم سیم آپ نہ) ایشور بھگتی اور دان سے رہت ہو کر تو اپنی حد یعنی جس کے لئے تجھے یہ زندگی ملی ہے اُس کے صحیح راستے کو حاصل نہیں کر سکتا۔ (ایتگ واچِت ایتش یہ یُیو جتے) بھگوان کی پراپتی کے راستے پر جانے والا آدمی اپنی تمام قوتوں کو یوگ سے جوڑ لیتا ہے۔ تب ہی اِندر پرمیشور بھی (ہری یُیوجتے) گیان اور کرم اِندری رُوپی دونوں گھوڑوں کو اُس عابد کے لئے یوگ میں لگا دیتا ہے۔ جس سے اُس کی منزل سیدھی ہو جاتی ہے۔

ے عمر لمبی بھی ہو چاہے اِیش کی بھگتی نہ ہو
زندگی کی راحتیں اُس کو کبھی ملتی نہیں

मंत्र 268--परमात्मा से विमुख होकर सफलता नहीं

हे लम्बी आयु वाले मरण धर्मा मनुष्य ! ईश्वर भक्ति और दान से रहित होकर तू जीवन मार्ग को प्राप्त नहीं कर सकता। ईश्वर प्राप्ति की ओर जाने वाला उपासक अपनी इन्द्रियों रुपी घोड़ों को योग युक्त करके ऐसे जोड़ लेता है जैसे सूर्य अपनी किरणों को नियंत्रण में रखता है। तब इन्द्र भी कृपा करके उसके मार्ग को खोल देते हैं।

दीर्घ आयु हो भी कितनी ईश की भक्ति न हो।
ज़िंदगी की राहतें उस को कभी मिलती नहीं।

منتر نمبر ۲۶۹ کھنڈ ۴

زندگی کے ہر شعبے میں ایشور کی پوجا

आ नो विश्वासु हव्यमिन्द्रं समत्सु भूषत ।
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन्
परमज्या ऋचीषम ॥७॥

(نہ وِشوا سُو سمتسُو ہویم اِندرم آبھُو شت) منشیو! سبھی خوشیوں کے اوقات پر اور دیو اُسر سنگرام یعنی زندگی کی جد و جہد نیکی بدی کی لڑائی ہمارے اِندر پرمیشور کی پُوجا کیا کرو۔ (رِچی شم) سبھی وید منتروں میں سمائے ہوئے الیشور! (برہمانی سونانی) ویدک انوشٹھان اور یگیہ وغیرہ بھگتی بھاؤنا آپ کا سناحاضرِ خدمت ہے، (ورِنرہن برم جیاہ) جہالت کا ازالہ کرنے والے پربھو! آپ کے انصاف کی باگ ڈور بڑی لمبی ہے، جس سے آپ بدکرداروں کو باندھ لیتے ہیں۔

ــــــ

نیک و بد کی جنگ میں آنند کے سب اوسروں پر
وید منتروں میں سمائے اِلیش کی پُوجا کرو

मंत्र 269 -आनंद और संघर्ष सब में ईश पूजा प्रथम

मनुष्यो ! सभी आनंद अवसरों पर और देवासुर संग्राम में हमारे इन्द्र परमेश्वर की पूजा किया करो। वेद ऋचाओं में समए हुए ईश्वर! वेदोक्त अनुष्ठानों और यज्ञ, उपासना भक्ति रस आप की सेवा में अर्पण है। हे पाप तथा अविद्या नाशक प्रभो। आपकी न्याय डोरी बहुत लम्बी है जिस से आप पापियों को बांध लेते हैं।

देवासुर संग्राम में आनंद के सब अवसरों पर।
वेद मंत्रों में समाए ईश की पूजा करो।

کھنڈ ۴

منتر نمبر ۲۷۰

تینوں لوکوں پر جس کا راج ہے اُسے کون پا سکتا ہے!

तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम् ।
सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि
न किष्ट्वा गोषु वृण्वते ॥८॥

ہے اِندر پرمیشور! (اوم وسُو تو اِت) نیچے کی دولت زمینی بھی آپ کی ہے اور (توم مدھیم وسُو پشی یسی) آسمانی درمیانی دولت کو بھی آپ بڑھاتے ہو اور (پرمسیہ وِشوسیہ سترا راجسی) پرم سب سے اونچا جو زر و مال عرشِ بریں پر دیوتاؤں کی آنند سمپدائیں ہیں اُس کے

بھی راجہ آپ ہیں (گو شو ئنہ کہ ورن وستے) لیکن باہری حواس خمسہ (اندریوں) کے عیش و عشرت میں پھنسا ہوا آدمی آپ کو نہیں پا سکتا۔

جنہیں تیرے ملنے کی چاہ تھی تیری راہ میں وہ بڑھے گئے
جنہیں دل لگی کا خیال تھا وہ بہشت میں ہی ٹھہر گئے

मंत्र 270---तीनों लोकों पर ईश्वर का राज—

हे इन्द्र परमेश्वर ! नीचे की सम्पदा भूमि की भी आपकी है। मध्य (अन्तरिक्ष) की सम्पदा को भी पुष्टि देने वाले आप हैं और परम सम्पदा अध्यात्म आनंद की सम्पदाओं के भी राजा आप हैं इन्द्रियों के भोग विलास में रमा हुआ मनुष्य आप को नहीं पा सकता, क्योंकि आप इन्द्रियों का विषय नहीं हैं।

जिन्हें तेरे मिलने की चाह थी तेरी राह में वे बढ़े गये।
जिन्हें दिल लगी का खयाल था वे बहिश्त में ही ठहर गये।

منتر نمبر ۲۷۱ — کھنڈ ۴

کس عابد کے دل میں آپ آتے ہیں؟

कयथं कंदसि पुरुत्रा चिद्धि ते मनः।
अलर्षि युध्म खजकृत्
पुरन्दर प्र गायत्रा अगासिषुः ॥६॥

ہے پرمیشور! کس عابد کے دل میں آپ آتے ہیں؟ کس دل میں آپ رہتے ہیں۔ آپ کا من تو بے شمار بھگتوں میں لگا ہوا ہے۔ دیوتاؤں اور راکھشسوں کی جنگ میں راکھشسوں کو پچھاڑنے والے! آسمان میں ستاروں کو پیدا کرنے والے، پاپیوں کے قلعوں کو توڑنے والے پرمیشور! عابدوں کے بھگتی رس کو سویکار کیجئے۔ گائتری وغیرہ چھندوں کے ذریعے گانے والے عابد آپ کا عزّت و احترام سے ورد کر رہے ہیں۔

تم ہو کہاں! جاتے کہاں ہو، یہ کہو مجھ سے پربھو
سب کی بھلائی میں لگا ہے من تمہارا ہے وبھو

मंत्र 271—किस उपासक के हृदय में आप आते हैं ?

हे परमेश्वर ! किस उपासक के हृदय में आप का वास होता है । आप का मन तो अनेक भक्तों में लगा हुआ है देवासुर संग्रामों में असुरों को पछाड़ने वाले ! आकाश में तारों को उत्पन्न करने वाले, पापियों के गढ़ों को तोड़ने वाले परमेश्वर ! उपासकों के भक्ति रस को पान कीजिये गायत्री आदि छन्दों द्वारा गाने वाले उपासक आपका श्रद्धा भक्ति से गान कर रहे हैं ।

तुम हो कहां ! जाते कहां हो, यह कहो मुझ से प्रभो ।
सब की भलाई में लगा है मन तुम्हारा हे विभो ।।

کھنڈ ۴ — منتر نمبر ۲۷۲

३ १ २ ३ १र २र ३ २ ३ १ २
वयमेनमिदा ह्योऽपीपेमेह वज्रिणम् ।
१ २ ३ १र २र
तस्मा उ अद्य सवने
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते ।।१०।।[३१४]

برہم گیانی لوگ پاپیوں کو سزا دینے والے پرماتما کو ہی اپنے ماضی میں سب طرح سے پرسن (خوش) کرتے رہے ہیں۔ ہے منشیو! تم بھی آج ویدوں کے مطابق برہم یگیہ میں اُس کے لئے جوڑے گئے گیان اور بھگتی سے اپنی شان کو بڑھاؤ۔

؎ جو جگت میں پرسدھ ہے اُس کو ہی سب بھجتے رہے
ہم بھی جپیں اُس کو سدا جس کو ہی سب جپتے رہے

मंत्र 272—ब्रह्म ज्ञानी, दुष्टों को दण्ड देने वाले परमात्मा को ही अपने। अतीत जीवनों में सब प्रकार से प्रसन्न करते रहे हैं । हे मनुष्यो ! तुम भी आज वेदानुकूल ब्रह्मयज्ञ में उसी के लिये सम्पादित ज्ञान तथा भक्ति को धारण कर अपनी शोभा बढ़ाओ ।

जो जगत में प्रसिद्ध है उसको ही सब भजते रहे ।
हम भी जपें उसको सदा जिस को ही सब जपते रहे ।

کھنڈ ۵ — منتر نمبر ۲۷۳

شہنشاہوں کا شہنشاہ!

यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः ।
विश्वासां तरुता पृतनानां
ज्येष्ठं यो वृत्रहा गृणे ॥१॥

جو پرمیشور منشیوں (چرشنی نام راجہ) کا راجہ ہے، (رتھے بھی یاتا) سُورج چاند تاروں کے رتھوں سے مانو سب جگہ جا آ رہا ہے، (ادھری گو) جس کو کوئی روک نہیں سکتا، (یہ وِشوا اسام پرتنا نام ترُوتا) جو سب شیطانی طاقتوں پر فتح پاتا رہتا ہے اور گُناہوں سے نجات دِلاتا ہے، (جیشٹھم گنے) مَیں اُس اِیشور کا گُن کیرتن کرتا ہُوں ۔

جیشٹھ سب سے شریشٹھ ہے جو شترُو سینا کا وجئی
شہنشاہوں کا شہنشاہ چندر سُورج کا رتھی

मंत्र 273—मनुष्यों के महान राजा— खण्ड 5

जो परमेश्वर मनुष्यों का राजा है । सूर्य, चन्द्र, तारे, आदि रथों के द्वारा मानो गति कर रहा है । जिसे कोई रोक नहीं सकता । जो सब आसुरी सेनाओं को परास्त कर देता है । और पापों का हनन । उस ज्येष्ठ परमेश्वर की मैं स्तुति करता हूं ।

ज्येष्ठ सबसे श्रेष्ठ है जो शत्रु सेना का विजयी ।
राजा है मानो प्रजा का चन्द्र सूर्य का रथयी ।

منتر نمبر ۲۷۴ **بیخوف ہو کر رہیں !** کھنڈ ۵

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये
वि द्विषो वि मृधो जहि ॥२॥

اندر پرمیشور ! (یتہ بھیامہے تتہ ابھیم کردھی) جہاں جہاں سے ہم خوفزدہ ہوں وہاں

سے ہمیں ڈر سے مبرا کیجئے ۔ مال و زر کے مالک کل ایشور ! (مگھوں تسگدھی تت تو نہ اُوتیے)
ہمیں طاقت ور بنائیے جس سے ہم محفوظ رہیں ' (دوشہ وجہی) ہمارے اندر کی بغض و حسد وغیرہ
بُرائیوں کو دُور کیجئے ۔ مار دیجئے ۔ (مردھ وجہی) ہم پر بدیوں کے حملوں کو تحس نحس کر دیجئے ۔

۵ ڈر ہو جہاں اُس سے ہمیں ہے اندر بے ڈر کیجئے
شکتی کے بھنڈار جب ہو شکتی ہم کو دیجئے

मंत्र 274—सब ओर से भय रहित कीजिये

हे इन्द्र ! जहां जहां से हमें भय होता है वहां से हमें अभय कीजिये ऐश्वर्यशाली भगवान ! हमें शक्ति दीजिये । जिससे हमारी रक्षा हो सके आप हमारी द्वेश भावनाओं को नष्ट कीजिये और हमारी शत्रु वृतियों और शत्रु प्राणियों को भी विनष्ट कीजिये ।

भय हो जहां उससे हमें हे इन्द्र निर्भय कीजिये ।
शक्ति के भण्डार भगवन हम को शक्ति दीजिये ।

منتر نمبر ۲۷۵ کھنڈ ۵

سُورج چندر وغیرہ نظامِ شمسی کا بسیرا

वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणांसत्रं सोम्यानाम् ।
द्रप्सः पुरां भेत्ता
शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा ॥३॥

(واستوشپتے) سُورج چاند تاروں کو بسانے والے خانۂ دُنیا ایشور ! (دُھروا سھتونا)
آپ اِس سنسار کے کھمبے ہو کر سہارا دے رہے ہو اور (سومیانام الس ترم) عابدوں
کے حقیقی غلاف بازرہ بکتر ہو ' (درپسیہ بھنیا شاسوتی نام پُرام) ازلی ابدی النانوں
کے ساتھ لگے ہوئے زندگی موت کے بندھنوں کو کاٹ کر نجات دلانے والے آپ ہو
(اندر منی نام سکھا) اور عارفوں کے سچے دوست رہنما ہو ۔ ۵

چاند سُورج اور ستاروں کے بسیرے ہو پتا ۔ زرہ بکتر سے محافظ عارفوں کے سمنوا

मंत्र 275—सूर्य चन्द्र आदि ग्रहों का बसेरा

सूर्य चन्द्रमा नक्षत्र आदि को वास देने वाले जगत रुपी घर के स्वामी! आप संसार के एक ध्रुव स्तम्भ हैं और भक्तों के कवच रूप रक्षक हैं। जैसे सूर्य अन्धकार का भेदन करता है वैसे आप शरीरों के जन्म मृत्यु का भेदन कर के जीव को मोक्ष देते हैं ! और ऋषि मुनियों के प्यारे सखा हैं।

चन्द्र सूर्य सब ग्रहों के वास दाता हो पिता।
कवच सम रक्षक हो सबके मुनियों के प्यारे सखा।

منتر نمبر ۲۷۶ — عَظِیم تَرِین مُعَظّم — کھنڈ ۵

बण्महाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि।
महस्ते सतो महिमा पनिष्टम
मह्ना देव महाँ असि ॥४॥

(سُوریہ) سُورجوں کے سُورج! (بٹ مہان اسی) فی الحقیقت آپ عظیم ہیں، (آدتیہ بٹ مہان اسی) ہر سُو پُر نُور، آپ مہان ہیں، (مہہ تے ستا مہما) کیونکہ آپ مہان سے مہان ہیں۔ اِسی لئے چاروں طرف آپ کی توقیر ہے (پنِشٹم دیو) بے مثال حمد وثنا والے دانیوں کے بھی داتا، (مہنا مہان اسی) بس آپ مہان ہیں، مہان ہیں، عظیم العظیم ہیں۔

مہما تمہاری بے پناہ پھیلی ہوئی ہے سُو بسُو
ہو مہان مہان تم اور جلوہ گر ہو چار سُو ۵

मंत्र 276—महान्तो महान महिमा

सूर्यों के सूर्य परमेश्वर सत्य है कि आप महान हैं। आदित्य हैं, अखण्ड हैं, और महान्तो महान हैं सब ओर आपकी महिमा फैल रही है। स्तुति करने योग्य देवों के देव आप अपनी महिमा से महान हैं।

महिमा तुम्हारी बे पनाह फैली हुई है सू बसू।
हो महान महानतम और जलवा गर हो चारसु।

منتر نمبر ۲۷۷ کھنڈ ۵

ایشور کا بھگت چاند تاروں سی روشنی کو پا لیتا ہے!

अश्वी रथी सुरूप इद्गोमान् यदिन्द्र ते सखा ।
आत्रभाजा वयसा सचते
सदा चन्द्रैर्याति सभामुप ॥५॥

ہے اندر (یدتے سکھا) جب تیرا بھگت سکھا ہو جاتا ہے تب وہ (اشوی رتھی سوروپا) من پر قابو رکھتے ہوئے شریر روپی گاڑی کا مالک اور پاکیزہ شکل ہو جاتا ہے (گومان ویسا شواتر بھاجا سچتے) وید بانی کا گیاتا اور حواسِ خمسہ (اندریوں) کو بس میں کر لیتا ہے اپنے اسی جنم میں ہی تیزی سے ترقی کرتا ہوا آپ ایشور کے نزدیک ہو جاتا ہے اور ہمیشہ چاند ستاروں کی سی روشنی کو حاصل کر (سبھام اُپ یاتی) ہر ایک مجلس میں عزت پاتا ہے۔

بھگوان آپ کا بھگت سکھا جب اپنے کو وش کرتا ہے ۵
بڑھتا ہوا تیری طرف کو وہ پھر چندر سمان چمکتا ہے

मंत्र 277—तेरा सखा चन्द्र तारों के समान प्रकाशित है

हे इन्द्र ! जब मनुष्य तेरा सखा हो जाता है तब वह अपने मन इन्द्रियों पर नियंत्रण रखता हुआ शरीर रुपी रथ का स्वामी बन जाता है उत्तम स्वरूप होकर वेद वाणी का स्तोता बनकर अपनी आयु में ही शीघ्रता से आप के साथ सम्बन्ध जोड़ कर चन्द्र तारों समप्रकाश को प्राप्त कर प्रत्येक सभा समाज में जाकर प्रतिष्ठित होता है ।

भगवान आपका भक्त सखा जब अपने को वश करता है ।
बढ़ता हुआ तेरी ओर को वह फिर चन्द्र समान चमकता है ।

منتر نمبر ۲۷۸ کھنڈ ۵

سینکڑوں ارض و سما بھی تیری حد نہیں پا سکتے!

१२ २र ३ २ ३ १र २र ३ २
यद्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः ।
१ २ ३ २ ३ २ ३
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अनु न जातमष्ट रोदसी ॥६॥

ہے اِندر پرمیشور! (یدشتم دیاوا) اگر سینکڑوں شمس و قمر ہوں، (اُت شتم بھومی سیوہ) اور سینکڑوں ایسی زمینیں (سہسر سُوریاہ) چاہے ہزاروں سورج (تے نہ انوَاشٹ) تب بھی یہ آپ کا انت نہیں پا سکتے، (جاتم رودسی نہ تُوا) پیدا ہوا سارا جگت اور زمین آسمان آپ کا پار نہیں پا سکتے۔ آپ (وجرن) بجر ہست ہو کر ان سب پر اپنا کنٹرول رکھتے ہیں۔

ہوں سینکڑوں دیولوک بھی اور سینکڑوں بھولوک بھی
چمکیں ہزاروں سُوریہ بھی، تو بھی نہ تجھ کو پا سکیں

मन्त्र 278—सैकड़ों द्यु लोक भी तेरी सीमा को नहीं पहुंच पाते

हे इन्द्र परमेश्वर ! यदि द्यु लोक भी सैकड़ों हो जायें, और यदि भूमियां भी सैकड़ों हो जायें, हजारों सूर्य हों वे भी तेरी सीमा को नहीं व्याप्त कर सकते । आप ये पैदा हुए इन सब के प्रति वज्र धारण किये हुए शासन कर रहे हैं ।

हों सैकड़ों द्यु लोक भी और सैकड़ों भूलोक भी ।
चमकें हजारों सूर्य भी तब भी न तुझ को पा सकें ।

کھنڈ ۵ منتر نمبر ۲۷۹

حواسِ خمسہ کے فاتح پر ہی آپ پرگٹ ہوتے ہیں!

१ २ ३ २उ ३ २ ३क २र ३ २ ३ १ २
यदिन्द्र प्रागपागुदङ्न्यग्वा हूयसे नृभिः ।
१ २ ३ १र २र
सिमा पुरू नृषूतो
३ २ ३ १ २ ३ १ २
अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे ॥७॥

(پرشردھ اِندر) سب کو مغلوب کرنے والے اِندر (یدپراک اپاک اُدک وا

سمانر بھی ہوپسے) آپ پورب پچھم اُتر دکھشن میں سب طرف سے بلائے جانے پر (شُو نہ پروآنوے اسی ترُوشے) پر یرت ہوئے پران اور حواس خمسہ (اندریوں) پر جلدی سے قابُو پالینے والے عابد کے اندر ظاہر ہوتے ہیں۔

سب دِشاؤں سے بلاتے رہتے بھگون آپ کو ۵
آپ تو ہیں پرگٹ ہوتے سنیمی جت اِندری پر

मंत्र 279--इन्द्रियों के विजेता में ही आप प्रकट होते हैं

सब को पराभव करने वाले इन्द्र परमेश्वर ! आप पूर्व, पश्चिम, उत्तर, और दक्षिण में सब ओर से मनुष्यों द्वारा बुलाये जाने पर, प्रेरित होने पर भी आप प्राण संयमी और इन्द्रियों को शीघ्र अपने वश में कर लेने वाले उपासक में प्रकट होते हैं।

सब दिशाओं से बुलाते रहते भगवन आपको ।
आप तो हैं प्रकट होते संयमी जितइन्द्रि में ।

منتر نمبر ۲۸۰ — طاقتوں کی بخشش کرنیوالے — کھنڈ ۵

१२ ३२ ३ १२ ३२
कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति ।
३ १२ ३२ ३ १ २
श्रद्धा हि ते मघवन् पार्ये
३ २ ३ १२ २२
दिवि वाजी वाजं सिषासति ॥८॥

(اندر وشو) سب کو بسانے والے ایشور! (کہ مرتیہ تم توا آ ددھرشتی) کون آپ کو دبا سکتا ہے۔ (مگھون پار ئیے) ہے مخزنِ دولت، سب کو پار لگانے والے (دِوی شردھا ہی واجام سشا ستی) علمِ عرفان کی روشنی سے پیدا ہوئی عقیدت ہی عابد کی روحانی طاقت کو بڑھاتی ہے۔ (واجی) آپ طاقتوں کے بخشندہ ہیں۔

شکتی کے بھنڈار ہیں جب کون ہے جو دبا سکے ۵
آپ سے شردھا کو پاکر بل بڑھاتا آتما

मंत्र 280—बल दाता आप हैं

सब को वास देने वाले परमेश्वर! कौन मनुष्य आप को दबा सकता है? हे ऐश्वर्यशाली सब को पार लगाने वाले! ज्ञान के प्रकाश से पैदा हुई आपके प्रति श्रद्धा ही उपासक को अध्यात्म बल दे सकती है क्योंकि आप शक्ति के भण्डार बल दाता हैं।

शक्ति के भंडार हैं जब, कौन है जो दबा सके।
आप से श्रद्धा को पाकर, बल बढ़ाता आत्मा।

منتر نمبر ۲۸۱ کھنڈ ۵

شردھا سے ہی عابد معبود کو پالیتا ہے!

१ २ ३ २ ३ १र २र ३ १ १
इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात् पद्वतीभ्यः।
३ १र २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
हित्वा शिरो जिह्वया रारपच्चरत्
३ २ ३ १ २
त्रिंशत् पदा न्यक्रमीत् ॥६॥

(اِندر اگنی) مال و زر کے مرکز والی دُنیا (دیمّ ایات) شردھا (عقیدت) کے پاؤں نہیں ہیں، تب بھی عابد کے دِل میں (پوُروا آگات) پہلے ہی آجاتی ہے۔ جب کہ پیروں والے سب صبح صادق میں بھی سوئے رہتے ہیں' (شرہ ہتوا جہویا رارپت) شردھا کا سر نہیں ہے' پھر بھی اُپاسک کی زبان پر ایش گُن گاتی ہے' اور یہ شردھا (ترِنشت پدانی اکرمیت) ۳۰ مہورتوں (دن کے ۳۰ حصوں) یعنی ساری زندگی میں اُس کے اندر بھری رہتی ہے۔

۵ سو رہا ہوتا ہے جگ جب شردھا تب ہے جاگتی
دِل میں زباں پر اور من میں ایش نام ہے جاپتی

मंत्र 281—श्रद्धा से ही उपसाक उपास्य देव को पा लेते हैं

परम ऐश्वर्यवान जगत के नेता अग्नि! श्रद्धा के पैर नहीं हैं, तब भी उपासक के हृदय में पहले आ जाती है जब कि पैरों वाले सब जने ब्रह्ममहूर्त मे भी सो रहे होते हैं। श्रद्धा का सिर नहीं है फिर भी उसासक की वाणी पर ईश गुण गाती है उपासक के जीवन में दिन रात के 30 महूर्तों और 30 पदों रुद्र, वसु और आदित्य में सदा विराजति है इकतीसवां तो जीव

आत्मा आप ही है ।

सो रहा होता है जग जब, श्रद्धा तब है जागती।
हृदय वाणी और मन में, ईश नाम है जापती।

منتر نمبر ۲۸۲ پرم بندھو ہمارے لئے شانتی لائیں! کھنڈ ۵

इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः ।
आ शन्तम शन्तमाभिरभिष्टिभिरा
स्वापे स्वापिभिः ॥१०॥[३१५]

(نے دی یا اِندر) ہمارے نزدترین دل میں ہی بس رہے بھگوان (اِت آ ابی) آپ پرگٹ ہوویں، (رُوتی بھی مِت میدھابھی) رکھشا کے لئے ہمارے سدا سنگ رہیں، تاکہ ہم اپنی حفاظت کے لئے فکرمند نہ رہیں؛ (شنتم شنتمابھی) انت شانتی رُوپ پربھو! ہمارے لئے شانتی لائیں؛ (آسُو آپے سُو آپی بھی آ) ہے پرم بندھو! آؤ اور ہمارے لئے زیادہ سے زیادہ شانتی کی سمپدا کو لاؤ۔ آپ کی خواہشات اعلےٰ ہمیشہ ہماری شانتی کے لئے ہوں۔

ہو پرم بندھو ہمارے اور نکٹ تر آپ ہو ۵
شانتی کے منبع ہو اور شانتی کے داتا آپ ہو

मंत्र 282—परम बंधु परमेश्वर शान्ति लेकर आयें

हमारे अत्यन्त निकट हृदय में विराजमान परमेश्वर ! आप प्रगट होकर हमारी रक्षा के लिये सदा हमारे संग रहें अत्यन्त शान्त और शान्ति देने वाले भगवान अपनी शान्ति की सम्पदा के साथ आयें । आप हमारे परम बंधु हैं सुख शान्ति की हमारी कामनाओं की पूर्ति के लिये प्राप्त होवें ।

हो परमबंधु हमारे और निकट तर आप हो।
शान्ति के स्त्रोत हो और शान्ति दाता आप हो।

منتر نمبر ۲۸۳ اُس کی شَرن میں جاؤ! کھنڈ ۶

इत ऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम् ।
आशुं जेतारं होतारं
रथीतममतूर्तं तुग्रियावृधम् ॥१॥

(یہ اجرم پر ہیتارم اپرہیتم آشُوم جیتارم ہتارم رتھی تمم اتُوامتم تُوگریاوردھم) جو بڑھاپے سے مبرّا ہے، سب کو ترغیب دیتا ہے۔ اُسے کوئی ترغیب دینے والا نہیں ہے، جو متحرک ہے اور سب کو حرکت دیتا ہے، جو سبھی اجسام کے رُوحوں کا رکھشان ہے۔ جس کا ناش کوئی نہیں کر سکتا اور اہلِ خانہ کے دل میں اپنے بال بچوں کے لئے بے پناہ محبت اور رحم دلی کو بھرتا ہے' (رُوتی اِت) اپنی رکھشا کے لئے اُس پرمیشور کی شرن میں جاؤ۔

رتھ شریر کا ایش وجیتا پریرک سب دُنیا کا ہے
اُس کی شرن میں جاؤ پیارے جو رکھشک ہم سب کا ہے

मंत्र 283 —उस की शरण में जाओ

जो जरा रहित है, सब को प्रेरणा देता है परन्तु किसी से आप प्रेरणा नहीं लेता जो शीघ्र विजेता है, गति और वृद्धि देने वाला है। जो शरीर रुपी रथों के रथी जीवात्माओं का भी रथी है जिस की हिंसा नहीं हो सकती, जो सन्तान वाले गृहस्थियों में सन्तानों के पालन करने के लिये दया कृपा को बढ़ाता है। हे उपासको ! अपनी रक्षा के लिये उस परमेश्वर की शरण में जाओ।

रथ शरीरों का ईश विजेता प्रेरक सब दुनिया का है।
उसकी शरण में जाओ प्यारे जो रक्षक हम सब का है।

منتر نمبر ۲۸۴ کھنڈ ۲

دُنیاوی عشرت کے سامان آپ سے دُور نہ کریں!

१र २र ३ १ २ ३ २उ ३ १र २र
मो षु त्वा वाघतश्च नारे अस्मन्नि रीरमन् ।
३ १ २ ३ १ २ ३
आरात्ताद्वा सधमादं न
१ २ ३ २ ३ १र २र
आ गहीह वा सन्नुप अधि ॥२॥

ہے پرمیشور! (وا گھتا اسمت تُو آرے ما اُو) دنیاوی چمک دار اشیاء وغیرہ آپ کے راستے سے ہمیں دُور نہ رکھیں بلکہ (نِرِی رمن) یہ سبھی آپ کی مائیہ ناز ہستی کے ملانے میں مددگار بنیں، (اسمت آرات نات نہ ادھم سادھم آگہی) آپ دُور ہوتے ہوئے بھی ہمارے برہم یگیوں میں آکر ہماری آتماؤں میں پرگٹ ہوتے رہیں، (اِیہہ وا سن اُپ اَدھی) اور ہمارے نزدیک ترین ہیں۔ اس لئے ہماری پرارتھناؤں سُنیں۔ ۵

تُم دُور ہو یا پاس میرے یگیہ میں آؤ سدا
پیاری کومل پرارتھنائیں سُن کے بھردو سمپدا

मंत्र 284—संसार के पदार्थ हमें आप से दूर न करें—

हे परमेश्वर ! आप को प्राप्त कराने वाले सांसारिक पदार्थ हम से आप को परे न रखें अपितु आपकी आनन्दमयी सत्ता का निरंतर अनुभव कराते रहें । आप दूर होते हुए भी हमारे ब्रह्मयज्ञों में हमारी आत्माओं में प्रकट होवें । और निकट से निकट होने पर भी हमारी स्तुति प्रार्थनाओं को सुनें ।

तुम दूर हो या पास मेरे यज्ञ में आओ सदा ।
कमनीय कोमल प्रार्थनायें सुनके भर दो सम्पदा ।

منتر نمبر ۲۸۵ کھنڈ ۲

مُحافظوں کا مُحافظ

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सुनोता सोमपाव्ने सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
१ २ ३ १र २र ३ २उ
पचता पक्तीरवसे कृणुध्वमित्
३ १र २र ३ १र २र
पृणन्नित् पृणते मयः ॥३॥

(بجرنے سوم پائینے اِندرائے سومم آئینوت) پاپوں کو دُور ہٹانے کے لئے بجردھاری اور بھگتوں عابدوں کا استقبال کرنے والے اِندر کے لئے ہے عابدو! اپنے اندر اُس کے لئے عقیدت پیدا کرو (پکیتو بچِنا) اُس کے نام پر پکایا کرو یعنی بانٹنے کی بھاونا سے (اوسے اکرنوَ دھوّم) اپنی رکھشا کے لئے اِیشور کو اپنا بناؤ' (پرِنت اِت پرِنتے میہ) وہ پالن کرنے والوں کی پالنا کرتا ہے اور اُنہیں سُکھ آنند دیتا ہے ۔ ۵

سوم پائی بجر دھاری اِندر ہیں رکھشک سبھوں کے
پالکوں کی پالنا کرتے ہیں سُکھ دیتے سدا

मंत्र 285—पालना करने वाले के लिये वह सुखदाता है—

पापों के प्रति **वज्रधारी और** भक्ति रस का पान करने वाले इन्द्र के **लिये** हे उपासको तुम अपने में भक्ति रस पैदा करो, उसके नाम पर **पकाया करो अर्थात्** दान की **भावना** से । **अपनी** रक्षा के **लिये** भगवान को **अपना बनाओ** वह **सब** की पालना करता है और पालना करने वाले को **सुख आनन्द** देता है ।

सोम पायी वज्रधारी इन्द्र है रक्षक सबों का ।
पालकों की पालना करता है सुख देते सदा ॥

منتر نمبر ۲۸۶   کھنڈ ۹

گناہگاروں پر غُصّے کی آگ برسانے والا

१ २ ३१२ २२ ३ २ ३ १ २ ३ २
यः सत्राहा विचर्षणिरिन्द्रं तं हूमहे वयम् ।
१ २ ३
सहस्रमन्यो तुविनृम्ण सत्पते
१ २ ३ १ २ ३ २
भवा समत्सु नो वृधे ॥४॥

(یہ ستراہا وِچرشنی تم اِندرم ویّم ہومہے) جو بُروں کا ناشک اور بُرائی کا، اور سب کو دیکھنے والا ہے، اُس پرمیشور کو ہم یاد کرتے ہیں - (سہسر ینیو توی نرمن ست پتے) ہے ہزاروں حرکات بَد پر کرودھ کی آگ برسانے والے عظیم طاقت ور اور سچائی اور سچّوں کے محافظ (سمتسو نہ آورِدھے بھو)

دیو اسُر سنگراموں (نیکی بدی کی جنگ) اور ہمارے جلسوں میں ہمیں خوشیاں دینے کے لئے آپ موجود ہوں۔

ے

دُشٹ سنگھارک ہے جو اور دیکھتا رہتا ہے سب کو
اُس سچائی اور سچوں کے مُحافظ کو بُلائیں

मंत्र 286—दुष्टों पर क्रोध करने वाला—

जो पापों और पापियों का संहारक और सब का द्रष्टा है उस परमेश्वर का हम आह्वान करते हैं। हे सहस्त्रों दुष्टों पर अपनी क्रोधाग्नि बरसाने वाले महान शक्तिमान सत्पते! देवासुर संग्रामों और हमारे आनंद उत्सवों में आप सदा वर्तमान रहें।

दुष्ट संहारक है जो और देखता रहता है सब को।
उस सच्चाई और सत्पुरुषों के रक्षक को बुलायें।

منتر نمبر ۲۸۷ **عقلِ سلیم دے کر ہماری رہنمائی کیجئے** کھنڈ ۲

१ २ ३ २ ३ १ २
शचीभिर्नः शचीवसू दिवा नक्तं दिशस्यतम्।
१ २ ३ १र २र ३ २
मा वां रातिरुपदसत् कदा
३ २उ ३ २ ३ २ ३ २
चनास्मद्रातिः कदा चन ॥५॥

(شچی وسُو) علم عرفان کے مالکِ اعلےٰ! آپ (شچی بھی نہ دوانکتم دِشستیم) عقلِ سلیم کے ذریعے ہمیں شب و روز اپنی رہنمائی دیجئے۔ تاکہ (دوام راتی یا اُپ دست) آپ کی بخششوں کو ہم ضائع نہ کر دیں، اور ہم یہ بھی چاہتے ہیں کہ آپ نیاز میں دی گئی (اسمت راتی ما اُپ درت) ہماری بھگتی کی بھینٹیں بھی آپ محفوظ رکھیں۔ تاکہ ہمارا رشتۂ خیال قائم رہے۔

ے

رہنمائی کے لئے بخشو ہمیں عقلِ سلیم
تیرے دانوں کو نہ بھولیں نہ ہی بھولیں آپ ہمیں

मंत्र 287—सुबुद्धि दे कर मार्ग दर्शन कीजिये—

प्रज्ञाओं वा आध्यात्मिक सम्पदाओं के स्वामी ! आप सुबुद्धि के द्वारा रात दिन हमारा मार्ग दर्शन कीजिये ! जिससे हम आपके महादानों को व्यर्थ न गंवा सकें । हम यह भी चाहते हैं कि आपको समर्पित की गई हमारी भक्ति की भेटें भी आप सुरक्षित रखें ताकि हमारा सम्बन्ध आप से बना रहे ।

मार्ग दर्शन के लिये सद्बुद्धि हम को दीजिये ।
तेरे दानों को न भूलें, न ही भुलें आप हमें ।

منتر نمبر ۲۸۸ دُعائے خُدا بھی عمل کے ساتھ! کھنڈ ۶

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
यदा कदा च मीढुषे स्तोता जरेत मर्त्यः ।
१ २ २ २ ३ १ २ ३ २
आदिद् वन्देत वरुणं विपा
३ २ ३ २ ३ १ २
गिरा धर्तारं विव्रतानाम् ॥६॥

(ستوتا) ایشور کی سُتتی کرنے والا (مرتیہ) منش (یداکداچہ میڑھشے جریت) جیسے ہی وقت ملے بھگوان کی عبادت (بھگتی) کیا کرے' (آت ورُونم وِپاگِرا وندیت) اور بعد ازآں برائیوں کو نکالنے والے ایشور کی بانی اور بُدھی کے علاوہ اپنے کرموں سے بھی اُس کا پُوجن بالضرور کیا کرے یعنی وندنا یا حمد وثنا کو اپنے عمل میں لائے۔ جو پرمیشور کہ (وِورتانام دھرتارم) اپنے اپنے راستوں پر چلنے والے سُورج' چاند وغیرہ گرہوں کو دھارن کرنے والا ہے۔

جب جب ملے موقع ہمیں بھگوان کو دھیایا کریں
بانی بدُھی اور عمل سے اُس کے گُن گایا کریں

मंत्र 288—प्रार्थना भी व्यवहार के साथ—

ईश्वर की स्तुति करने वाला मनुष्य ज्यों ही समय मिले प्रभु की उपासना में लग जाये । तत्पश्चात् पापों के निवारक वरुण भगवान की वन्दना, वाणी,

बुद्धि और अपने कर्मों से किया करें, जो परमेश्वर कि अपने विविध मार्गों पर चलने वाले सूर्य चन्द्र आदि ग्रहों को धारण करने वाला है।

जब जब मिले अवसर हमें भगवान को ध्याया करें।
वाणी, बुद्धि और अमल से उस के गुण गाया करें।

منتر نمبر ۲۸۹ حواسِ خمسہ کو پاک رکھ کر اُسے حاصل کرو! کھنڈ ۶

३ १र   २र ३   २ ३   १   २
पाहि गा अन्धसो मद इन्द्राय मेध्यातिथे ।
१र   २र   ३ २ ३ १
यः सम्मिश्लो हर्योर्यो
२ ३   २ ३   १   २   ३ १   २ ३   १ २
हिरण्यय इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥७॥

(میدھیا تِتھے) قابلِ پُوجا پرمیشور جس کے خانۂ دل قابلِ تعظیم مہمان ہوگیا ہے۔ اَے پیارے عابد تُو! (اندھسہ مدے اِندرائے گایا ہی) پرمیشور سے حاصل اُس مستی میں اُس کو ہی حصولِ زندگی مان کر اپنے حواسِ خمسہ کی بھوگ وِلاس سے حفاظت کیا کرؔ (یہ ہر یویم مشلا) جو ایشور کہ رگ وید کے منتروں اور سام کے گیتوں میں گھلا ملا ہوا ہے اور (یہ ہرنیہ یادجری) جو روشن بالذّات ہے اور انصاف کے ڈنڈ کو ہاتھ میں رکھتا ہے۔

مہمانِ اعظم کی طرح جو بس چکا خانۂ دل میں
اِندریوں پہ حاوی ہو اُس کو سدا رکھ اپنے من میں

मंत्र 289—इन्द्रियों को विषयों से रहित कर भगवान को

पूजनीय अतिथि परमेश्वर ! जिसके हृदय रुपी घर में बस गया है वह प्रभु का प्यारा भक्त उसके आनन्द में ही अपना जीवन उपदेश समझ कर अपने मन और इन्द्रियों को भोग विलास से बचाता हुया रहता है जो ईश्वर, कि ऋगवेद के मन्त्रों और सामवेद के गीतों में घुला मिला है और जो तेज स्वरूप वज्रधारी है।

पूज्यनीय अतिथि सम जो बस गया अन्त:करण में।
इन्द्रियों को जीत कर उसको रख सदा अपने मन में।

منتر نمبر ۲۹۰ آمنے سامنے ہو کر ہماری پرارتھنا سنیئے! کھنڈ ۲

उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः ।
सत्राच्या मघवान्त्सोमपीतये
धिया शविष्ठ आ गमत् ॥८॥

(اندر نہ اواک ادم اُبھیم وچہ شرن وت) اندر پرمیشور ہمارے سامنے ہو کر ہماری ستتی اور پرارتھنا دونوں کو سنیئے اور وہ (مگھوان شوشٹھ ستراچیا دھیا سوم پیتئے آگمت) بھگوان ہماری طرف اپنی دیالو بدھی کے ساتھ بھگتی رس پان کے لئے آئیں۔

ہو ہمارے سامنے عرضی سنو بھگوان جی!
بھگتی رس کی نذر منظور نظر کر آئیے

मंत्र 290—सन्मुख होकर हमारी प्रार्थना सुनिये—

हे इन्द्र परमेश्वर ! हमारे सन्मुख होकर स्तुति और प्रार्थना दोनों को सुनिये और हमारी ओर अपनी दयालू प्रेरणा के साथ हमारे संजोये हुये सोम रस पान के लिये पधारिये ।

सन्मुख हमारे बैठ के बिनती सुनो भगवान जी ।
भक्ति रस की भेंट को स्वीकार करने आइये ।

منتر نمبر ۲۹۱ بڑے سے بڑے لوبھ لالچ سے آپ کو نہ چھوڑوں کھنڈ ۲

महे च न त्वाद्रिवः परा शुल्काय दीयसे ।
न सहस्राय नायुताय
वज्रिवो न शताय शतामघ ॥९॥

(ادری وہ وجری وہ شتامگھ) پہاڑوں بادلوں اور بے شمار دولتوں کے مالک عدل کے ڈنڈ کو اپنے ہاتھ میں رکھنے والے پرمیشور! (توا نہ شتائے نہ سہسرائے نہ ایوتائے

پرادی یسے) مَیں آپ کو سینکڑوں ہزاروں، لاکھوں لوبھ لالچ آنے پر بھی نہیں چھوڑ سکتا (چہ نہ مہے شُلکائے) اور نہ کسی دولتِ عظیم کے دباؤ پر بھی ۔

لاکھوں ہزاروں دولتیں دے کر مجھے گمراہ کریں
تو بھی نہ تجھ کو دے سکوں چاہے کوئی کتنا کریں

मंत्र 291—किसी भी प्रलोभन से आप को न छोड़ूं—

पर्वतों मेघों और अनन्त ऐश्वर्यों के स्वामी वज्रधारी परमेश्वर ! मैं आपको सैंकड़ों हज़ारों और लाखों प्रलोभनों पर भी न छोड़ूं और न किसी महान शक्ति के दबाओ पर भी आप का परित्याग न करूं ।

लाखों हज़ारों दौलतें दे कर मुझे गुमराह करें ।
तो भी न तुझ को दे सकूं चाहे कोई कितना करे ।

منتر نمبر ۲۹۲ باپ اور بھائیوں سے زیادہ ماں کا پیار دینے والے کھنڈ ۱

वस्याँ इन्द्रासि मे पितुरुत भ्रातुरभुञ्जतः ।
माता च मे छदयथः
समा वसो वसुत्वनाय राधसे ॥१०॥[३।६]

اندر پرمیشور! آپ (مے پتُو وسیان اسی) میرے پتا سے بھی بڑھ کر دولت مند ہیں۔ (اُت ابھُو نجت بھراتُو) اور میرے کنجوس دھنوان برادر سے بھی آپ زیادہ دھنوان ہیں۔ میرے لئے تو (مے ماتا چہ سما چھدیتھا) میری ماں اور آپ دونوں برابر ہیں جو میرے روزی، روٹی، لباس وغیرہ اور تکالیف کو دُور کرنے کا خیال کرتے ہیں۔ ہے (وسُو) میرے اندر بسے ہوئے بھگوان! (وسُو تونائے رادھسے) دُنیاوی زر و مال اور روحانی دولتوں کی دولت آپ ہیں ۔

باپ اور بھائیوں سے زیادہ دولتیں ہیں آپ کی
ماں کی ممتا اور تکلیفوں کی راحت ہو سدا

मंत्र 292—पिता और भाईयों से भी अधिक माता सम प्यार

हे इन्द्र परमेश्वर ! आप मेरे पिता से भी बढ़कर धनवान हैं और मेरे कृपण धनी भाई से भी ज्यादा धन सम्पन्न हैं। जो मेरे पालन पहराव और कष्टों को दूर करने का ध्यान रखते हैं। मेरे अन्दर बसे हुये भगवान ! संसारिक ऐश्वर्य और आध्यात्मिक सम्पदाओं के स्वामी आप हैं।

बाप और भाईयों से ज्यादा दौलतें हैं आपकी।
मां की ममता और तकलीफों की राहत आप ही।

منتر نمبر ۲۹۳ — کھنڈ ۷

ہردیہ کی گُفا میں آیئے!

३१र २र ३ १ २ ३ १ २
इम इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः ।
१र २र ३ २ ३
ताँ आ मदाय वज्रहस्त पीतये
१ २ ३ २ ३ २
हरिभ्यां याह्योक आ ॥१॥

(دھدیاشرِہ امے سوماسہ اندرائے سنورے) دھارنا دھیان وغیرہ یوگ کے انگوں سے یہ بھگتی رس اندر پرمیشور کے لئے بنائے ہیں، (بجرہست) بُرائیوں کے ناش کرنے والے بجردھاری! (تان آیاہی) اُن کے لئے آؤ (مدائے پیتئے ہری بھیام اوکے) اپنی اور ہماری خوشی کے لئے اور اِس بھگتی رس کو پینے کے لئے ہم سے کئے گئے سام وید گان اور رگ وید کی شتتی منتروں کے ذریعے اِس دل کی گُفا میں آیئے!

یوگ سادھن سے بنائے بھگتی رس تیار ہیں
کیجئے منظور بھگون! یہ ہمارے پیار ہیں

मंत्र 293—हृदय गुफा में आईये— खंड 7

धारणा ध्यान आदि योगांगों से यह भक्तिरस इन्द्र परमेश्वर के लिये बनाये हैं। हे वज्रधारी ! इन अमृतों का पान करने आओ जिसमें हमारी और आपकी प्रसन्नता निहित है। हमारे द्वारा ऋग् के स्तुति मंत्रों और साम गान से प्रार्थना किये गये आप इस हृदय गुफा में पधारिये।

योग साधन से बनाए भक्तिरस तैयार हैं।
कीजिये स्वीकार भगवन यह हमारे प्यार हैं।

منتر نمبر ۲۹۴ کھنڈ ۷

رُوحانی دَولت دیجئے!

३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
इम इन्द्र मदाय ते सोमाश्चिकित्र उक्थिनः ।
१ २ ३ १र २र ३ १ २
मधोः पपान उप नो गिरः
३ १ २ ३ १ २
शृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः ॥२॥

ہے اندر پرمیشور! (امے سوماسہ اُکتھنہ مدائے چکترے) یہ بھگتی رس جو کہ وید بانیوں کو گا گا کر سُتتی کرتے ہوئے دل میں بھرا ہے۔ آپ کے خوش کرنے کے لئے ہے، یہ ہم جانتے ہیں۔ (مدھو پیانہ نہ گرہ اُپ شرنو) ہمارے اس بھگتی رس کا پان کرنے اور اس کی رکھشا کرتے ہوئے ہماری پریم بھری پرارتھناؤں کو سُنیئے (گروِنہ) وید بانی سے بھجن کرنے یوگیہ ایشور! (ستو ترائے راسو) ہماری وید منتروں سے حمد وثنا کو سُن کے اب تو ہمیں روحانی دولت سے مالا مال کیجئے!

ے

وید بانی گاتے بھگون آپ کی خُوشیوں کو لے
مانگتے دھن آتمک ہیں اپنی خُوشیوں کیلئے

मंत्र 294—अध्यात्मिक धन की अभिलषा—

हे इन्द्र परमेश्वर ! यह भक्तिरस जो कि वेद वाणियों से स्तुति करते हुए हृदय में भरा है, आपको प्रसन्न करने के लिये है, ऐसा हम जानते हैं। इस मधुर भक्तिरस का पान करने और इसकी रक्षा के हेतु हमारी प्रार्थनाओं को सुनिये। वेद वाणी द्वारा भजन करने योग्य ईश्वर ! हमें अध्यात्मिक सम्पदा से युक्त कीजिये।

वेद वाणी गाते भगवन आपकी खुशियों को ले ।
मांगते अध्यात्मिक धन अपनी खुशियों के लिये ।

منتر نمبر ۲۹۵ کھنڈ ۷

اَمرت دُودھ پلانے والی گائے

१ २ १ २३१ २ ३१ २३१२
आ त्वा३द्य सबर्दुघां हुवे गायत्रवेपसम् ।
१ २ ३२ ३२ ३२ ३
इन्द्रं धेनुं सुदुघामन्या-
१२३१ २ ३ १२
मिषमुरुधारामरङ्कृतम् ॥३॥

(ادیہ توُاِاندرم آہوئے) آج کے شُبھ دن آپ بھگوان کو بلُا رہا ہوں (دھینو سبرُدگھام) جو کہ آپ اَمرت دوُدھ دینے والی گئو کی طرح ہیں، (گایتر ویپسم) اور جو گایتر وغیرہ سام گان کو محسوس کرتے ہیں (سُودھام انیام) اور بھگتوں کے ذریعے آسانی سے دوہنے والی ایسی اعلےٰ گائے کی طرح ہیں، (اِشم اُرو دھام ارم کرِتم) جو چاہی گئی بارش کی طرح بہت سُکھوں کو برسانے والے اور جلدی پھل دینے والے ہیں۔

سُکھوں کی برسات جب چاہیں برس جاتے ہو تم
کام دھینو کی طرح امرت بھری گائے ہو تُم

मंत्र 295—अमृत दूध पिलाने वाली गौ—

आज शुभ दिन आपका आह्वान कर रहा हूं। जो कि आप अमृत दुग्ध पान कराने वाली गाय के समान हैं। तथा गायत्र आदि सामगान को अनुभव करते हैं। एवं भक्तों द्वारा सरलता से दुहने वाली उत्तम धेनु तुल्य हैं जो पर्जन्य मेघ समान सुखों की वर्षा कर शीघ्रफल देते हैं।

काम धेनु की तरह अमृत भरी हो गाय तुम।
सुखों की बरसात जब चाहें बरस जाते हो तुम।

منتر نمبر ۲۹۶ کھنڈ ۷

آپ کا دِیا عِلم عِرفان کبھی نشٹ نہیں ہوتا!

१ २ ३२ ३ १२ ३ १२ ३१२
न त्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीडवः।
१२ २२ ३१२ २२३
यच्छिक्षसि स्तुवते मावते
२ ३ २ ३१२ २२
वसु न किष्टदा मिनाति ते ॥४॥

ہے اندر (برہنتہ ویڈوہ ادر یہ توآ ورنت نا) بڑے بڑے پہاڑوں گھور گھنے جنگلوں کی طرح روکاوٹیں بھی آپ کا راستہ نہیں روک سکتیں' (ماوتے ستُووتے شکھشی یت وسُو) میرے جیسے عابد کو جو آپ گیان سمپدا دیتے ہیں' (تے نت نہ کہ آمناتی) اُس آپ کی علم کی لازوال دولت کو کوئی گزند نہیں پہنچا سکتا۔

جنگل گھنے پہاڑ تم کو روک سکتے ہیں کہیں ؟
اور دی ہوئی جو سکھ آپکی نشٹ ہوتی ہے کہیں ؟

मंत्र 296—आपका दिया ज्ञान नष्ट नहीं होता—

हे इन्द्र ! महान पर्वतों और घोर घने बीहड़ जंगलों के समान बाधाएं भी आपको रोक नहीं सकतीं। मेरे जैसे उपासक को जो ज्ञान सम्पदा आप देते हैं, उसे क्या कोई नष्ट कर सकता है ? कदापि नहीं।

जंगल घने, पहाड़ तुम को रोक सकते हैं कहीं ?
दी हुई जो सीख आपकी नष्ट होती है कहीं ?

منتر نمبر ۲۹۷ — کھنڈ ۷

کون جانے ؟

क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे ।
अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा
मन्दानः शिप्र्यन्धसः ॥५॥

(سُتے) بھگتی رس کے پیدا ہو جانے پر ہے پرمیشور! (سچا پبنتم) اُپاسک اور آپ مل کر آنند رس پیتے ہیں' (ایم کاہ وید) ایسے بھگوان کو کون جان سکتا ہے؟ (کت وَیہ ددھدے) عابد بھی کتنی عمر تک بھگتی کا رس پی اور پلا سکتا ہے' یہ بھی کون جانے؟ ہے پرمیشور! (ایم یہ مندانہ ادھسا یترہ ببھنتی) وہ ہیں جو پرسن ہو کر اپنی طاقت سے شیطانی گڑھوں کو ایسے توڑ پھوڑ دیتے ہیں' جیسے کہ (شُوشیری اندھسہ پڑا) طاقتور قوجی کمانڈر گیہوں سے بھرے دشمنوں کے قلعوں کو تحس نحس کر دیتا ہے۔

کون جانے کتنی آیو آپ بخشتے ہو یہاں؟
اپنے اُمرت کو پلا خورسند کرتے ہو یہاں؟

मंत्र 297—**कौन जाने ?**

भक्तिरस के उत्पन्न होने पर हे परमेश्वर ! उपासक और आप साथ-2 आनंदरस पान करते हैं । ऐसे भगवान को कौन जान सके ? उपासक भी कितनी आयु तक भक्ति का रस पी और पिला सकता है, यह भी कौन जाने ? हे परमेश्वर आप प्रसन्न होकर पापियों के गढ़ों को ऐसे तोड़ फोड़ देते हैं जैसे बलवान सेना पति अन्नों से भरे शत्रुओं के गढ़ों को नष्ट कर देता है ।

कौन जाने कितनी आयु आप देते हो यहां ?
अपने अमृत को पिला प्रसन्न करते हो यहां ?

منتر نمبر ۲۹۸ آپ کا بسیرا میرے اندر سدا رہے! کھنڈ ۶

यदिन्द्र शासो अव्रतं च्यावया सदसस्परि ।
अस्माकमंशुं मघवन् पुरुस्पृहं
वसव्ये अधि बर्हय ॥६॥

ہے اِندر پرمیشور! (یت شاسہ) آپ ہمارے راجہ ہیں، لہٰذا ہم کے اعلےٰ اخلاقی اصولوں (اَورتم سدسپری چیاویہ) (برتوں) سے مبرا جو کاربد وغیرہ بُری عادات ہمارے اندر گھس گئی ہیں۔ اُنہیں قطعاً باہر نکال دیجئے۔ (مگھون) ہے زر و مال کے مالک! (پُروس پرہم اسماکم انشُم وسویے ادھی آور دھئے) اور اس کی جگہ جس بھگتی رس کو آپ بہت چاہتے ہیں۔ اُس کو میرے دل میں خوب بڑھائیں، جس سے کہ آپ کا بسیرا میرے اندر سدا بنا رہے!

آپ راجہ ہیں بُرے افعال سے من کو بچائیں۔ میرے دل کو پاک کر اپنی جگہ اُس میں بنائیں

मंत्र 298—आपका वास मेरे अन्दर सदा रहे—

हे इन्द्र परमेश्वर ! आप हमारे राजा हैं । अतः जो यम् नियम आदि व्रतों रहित हमारे जीवन हो गये हैं, अपने शासन से उन दुर्वासनाओं को हमारे अन्दर से सर्वथा परे कर दीजिये । हे अध्यात्मिक सम्पदा के स्वामी ! इसके बदले भक्तिरस को मेरे अन्तः करण में भरकर सदा वास करते रहें ।

आप राजा हैं बुरे कर्मों से हृदय को बचाये !
करके इसको शुद्ध निर्मल अपना वास इस में बनाएं ।

منتر نمبر ۲۹۹

بھگوان کا دیا وچن (ویدواکیہ) ہمارا محافظ

کھنڈ ۷

त्वष्टा नो दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः ।
पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु
नो दुष्टरं त्रामणं वचः ॥७॥

(توشٹا پرجنیہ برہم نسپتی ادِتی) دُنیا کو بنانے والا کاریگر، سب رعیت کے برسنے والے بادلوں کی طرح پالک، وید اور جگت کا سوامی اکھنڈ پرمیشور اور (دَیویہ وچہ) اُس دیو کا دیا وچن (وعدہ) ویدبانی کا اُپدیش (پُتری بھراترِی بھی نہ پاتُو) ہمارے آل اولاد بھائی وغیرہ سب کی رکھشا کرتا ہے (نہ) یقیناً، وہ (وچہ دُشٹرم ترامنم) پرمیشور کا دیا وعدہ کبھی ٹوٹتا نہیں بلکہ ہمیشہ ہماری حفاظت پر رہتا ہے ۔

آغازِ دُنیا میں دِیا جو وید واک ہیں وعدہ
وہ محافظ ہے ہمارا تب سے ہی تو بنا ہوا

मंत्र 299—प्रभु की वेद वाणी हमारी सुरक्षा—

जगत के निर्माता विश्व कर्मा कारीगर मेघों की भान्ति प्रजाओं के पालक, वेद और ब्रह्माण्ड के स्वामी, अदिति अखंड परमेश्वर और उस देव का आदि सृष्टि में दिया हुआ वेद वचन (वाक्य) हमारे पुत्रों भाई बंधुओं सब की रक्षा करता रहता हैं वह देव वचन वेद वाक्य कभी नष्ट नहीं होता ।

आदि सृष्टि में प्रभु ने वेद वचनों को दिया !
सर्व रक्षक वह हमारा तब से ही है बना हुआ ।

منتر نمبر ۳۰۰ — کھنڈ ۷

دان کرنے والے کو آپ دیتے ہیں!

कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे ।
उपोपेन्नु मघवन् भूय इन्नु ते
दानं देवस्य पृच्यते ॥८॥

ہے اِندر (کداچن نہ ستراں تارسی) آپ کبھی کسی کی ہتیا نہیں کرتے۔ آپ (اشوُشے سسشچسی) دینے والوں کے سدا محافظ ہیں۔ ہے (مگھون) دھنوں کے بھنڈار! (آپ اُپ اِت نو) جس نے اپنے کو آپ کے لئے سپرد کر رکھا ہے۔ اُس کے آپ نزدیک بہت نزدیک ہیں۔ (بھوُیہ اِت نو تم دیوسیہ دانم پرچیتے) اور اُسے بار بار بہت مقدار میں آپ دیتے رہتے ہیں۔

دینے والوں کے محافظ آپ ہیں اور نزد تر
دیتے جاتے اُن کو بارم بار زیادہ زیادہ تر

मंत्र 300—**देने वालों को आप देते हैं**—

हे इन्द्र ! आप किसी की हिन्सा कभी नहीं करते, देने वालों की सदा रक्षा करते हैं। हे ऐश्वर्य शाली भगवान ! जो आपको समर्पित हो चुका है उसके आप अत्यन्त निकट हैं। तथा उसे आप बार-बार बहुत-बहुत देते हैं।

देने वालों के हैं रक्षक आप और हैं निकट तर।
देते जाते उन को बारंबार अधिक से अधिक तर।

منتر نمبر ۳۰۱ — کھنڈ ۷

بُرائیوں کی طرف بھاگتے ہوئے اِندریوں کے گھوڑے روکئے!

युङ्क्ष्वा हि वृत्रहन्तम हरी इन्द्र परावतः ।
अर्वाचीनो मघवन्त्सोमपीतय
उग्र ऋष्वेभिरा गहि ॥९॥

(اندر) ہے پرمیشور! (ورتر ہنتم) برائیوں کو دور کرنے یا مارنے والے! (ہری پراونہ) ہمارے کرم اندری، گیان اندری روپی گھوڑے (حواس خمسہ) جو دور دور وشیوں کی طرف بھاگتے ہیں، انہیں (آہنگستو) ہمارے شریروں کے ساتھ جوڑ دیجئے۔ (مگھون اُگر) آپ دھن شالی اور مضبوط ترین حاکم ہیں۔ (سوم پیتئے ارواچینہ یشوے بھی آگہی) ہمارے بھگتی رس کے پان کے لئے آپ اپنی مہان شکتیوں کے ساتھ آئیے!

بھاگتے ہیں دور وشیوں کی طرف یہ اندری گھوڑے
ہو نوازش آتما کے ساتھ جڑ جائیں یہ جوڑے

मंत्र 301—इन्द्रियों के घोड़ों को विषय मार्ग से रोकिये—

हे इन्द्र परमेश्वर ! पाप राक्षक के विनाशक ! हमारे ज्ञान, कर्मइन्द्रिय रूपी घोड़े जो दूर-2 विषयों की ओर भागते हैं, उन्हें हमारे शरीरों के साथ जोड़ दीजिये । आप ऐश्वर्य शाली और तेजस्वी हैं । हमारे भक्ति रस के पान के लिये अपनी महान शक्तियों के साथ आईये ।

भागते हैं दूर विषयों की तरफ इन्द्रिय घोड़े ।
हो निवाजिश, आत्मा के साथ जुड़ जाये यह जोड़े

منتر نمبر ۳۰۲ — اِسی جیون میں ہی پرگٹ ہوویں! — کھنڈ ۷

२ ३ १२   २२   ३   १ २
त्वामिदा ह्यो नरोऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः ।
१ २ ३   १ २
स इन्द्र स्तोमवाहस
३ १   ३   २ ३   १ २ ३ १   २
इह श्रुध्युप स्वसरमा गहि ॥१०॥[३।७]

(بجر دھاری) یعنی بروں کو سزا دینے کے لئے ہر وقت ہاتھ میں نیائے دنڈ رکھنے والے! (بھورنیہ نرا آہی یا تو ام اِت اجی پیپنی) دھرتی کے باسی زن و مرد آپ کی ہی بڑائیاں کرتے رہتے ہیں۔ ہے اِندر پرمیشور! (سہ ستوم واہسہ ابہہ اُپ شرُدھی) وہ آپ مجھ اپنے بھگت کو اسی جیون میں ظاہر ظہور ہو کر میری بات کو سنیئے اور (سوسرم ابہہ اگہی) شُبھ دن میرے

اندر پرگٹ ہو آئیے۔

ہیں کرتے بڑائی سبھی دُنیا، سارے
سُنو بات میری نکٹ بیٹھ پیارے

मंत्र 302—इसी जीवन में ही प्रगट होवें—

आप वज्धारी यानी हर समय न्याय दण्ड को धारण किये रखते हैं। सब धरती के वासी नर नारी आपकी महिमा गाते रहते हैं। हे इन्द्र परमेश्वर आप मुझ उपासक के अंदर सारे जीवन में प्रगट होकर किसी शुभ दिन मेरी बात को सुनिये।

है करते बड़ाई सभी दुनियां, सारे।
सुनो बात मेरी प्रगट होके प्यारे।

منتر نمبر ۳۰۳ کھنڈ ۸

اَدھیاتمک چِت وِرتی

प्रत्यु अदर्शायत्यू३च्छन्ती दुहिता दिवः।
अपो मही वृणुते चक्षुषा
तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी ॥१॥

(دِوَہ دُوہتا) عرش بریں کی بیٹی سُوریہ کی کرن کی طرح دل کو منوّر کرنے والی چِت کی ورتی کو مَیں نے (پرتی اُوادرشی) ظاہر ظہور کر لیا ہے۔ جو (آیتی اُوچھنتی) جو آتی ہوئی میرے اگیان اندھکار کو دُور کر رہی ہے۔ یہ (مہی) مہان ہے۔ اِس کی دِویہ جیوتی (نورِ حق) سے (تمۃ اپ اُوورتے) میری جہالت کا پردہ ہٹ گیا ہے۔ اِس نے میرے اندر (جیوتی کرنوتی) چاروں طرف روشنی پھیلا دی ہے۔ کیونکہ یہ (سُونری) راہِ راست دکھلانے والی دلرُبا پیاری روشنی پرم یوگ رِتم بھرا خدائی وصل کرانے والی عقلِ سلیم ہے۔

اُتری ہے عرشِ بریں سے دِل میں عرفاں روشنی
ہٹ گیا جہل بطالت نور کا ماحول ہے

मंत्र 303 —अध्यात्मिक चितवृति— अष्टम खंड

द्यौलोक की पुत्री उषा की तरह चमकीली अध्यात्मिक चितवृति का दर्शन हो गया, आती हुई मेरे अज्ञान अंधकार को दूर कर रही है। यह महान प्रज्ञा है अत्यंत श्रद्धा ज्योति है जो मस्तिष्क से पैदा हुई ज्योतियों की ज्योति है जिससे मेरा अन्तरात्मा जगमगा उठा है।

सूर्य की दुहिता यह उषा बन है चमकी आत्मा में।
हर तरफ प्रकाश है अध्यात्म ज्योति का हुआ॥

منتر نمبر ۳۰۴ — کھنڈ ۸

سُورج اَور چَندر ماں آپ کا رُوپ

इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना।
अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू
विशंविशं हि गच्छथः ॥२॥

(شچی وسُو) رُوحانی دولتوں کے سربراہ پرمیشور! (اشوی نا) سُورج اور چندر ماں یہ دولوں آپ کا رُوپ ہیں جو ارواحِ عالم کی حفاظت اور خدمت میں دن رات جُٹے ہوئے ہیں۔ (دوِشٹیا اِما) تیرے وصل کو چاہنے والے یہ رُوحانی مجسّمے عابد لوگ (وام اُوہونتے) آپ کے پُرنُور ان دونوں رُوپوں کو چاہ رہے ہیں، (اُسرا) یہ دونوں ہمارے اندھکار کو دُور کرتے ہیں، (اَیم اَوسے وام اہوسے) اور لیہ کہ مَیں بھی ان دونوں رُوپوں کو روشنی کا مینار سمجھ کر آپ کو پُکار رہا ہُوں۔ ہے بھگوان! آپ اِن دونوں روشن میناروں کے (وِشم وِشم ہی گچھتہ) پر کاش دانا ہوکر ہر ایک یوگی جن کو ہی پراپت ہوتے ہو۔

ے

چَندر ماں سُورج یہ دولوں آپ ہی کا رُوپ ہیں
اِس روشنی کے پانے کو ہم بھگت جَن ہیں بُلا رہے

मंत्र 304 —सूर्य और चन्द्रमा आपका रूप—

हे इन्द्र ! ऐश्वर्यवान अध्यात्म सम्पदाओं के स्वामी परमेश्वर ! **सूर्य** और चन्द्रमा आपके स्वरूप को प्रगट कर रहे हैं। प्रज्ञा और दिव्यता को तथा मोक्ष को चाहने वाले उपासकजन आप के दोनों स्वरुपों का चिन्तन करते हुए आह्वान कर रहे हैं। आपके यह सूर्य चंद्र जैसे दोनों रूप हमारे अज्ञान को दूर कर रहे हैं। मैं उपासक भी अपनी रक्षा के लिये तुम्हें पुकार रहा हूं। परमेश्वर देव आप योगाभ्यास से ही प्राप्त होते **हो।**

चंद्रमा सूरिज यह दोनों आपका ही रूप हैं।
तेज यह पाने को तेरा भक्तजन है बुला रहे ॥

منتر نمبر ۳۰۵ **کون مُستحق ہے آپ کے وِصال کا؟** کھنڈ ۸

कुष्ठः को वामश्विना तपानो देवा मर्त्यः ।
घ्नता वामश्नया
त्तपमाणोऽशुनेत्थमु आद्वन्यथा ॥३॥

(اشوی نا) سُورج اور چندرماں کی طرح پرکاشمان پرمیشور! (کشٹھ کاہ وام) دھرتی کا باسی کون آپ کے اِن سُورَیہ چندرماں کے سمان رُوپ کی چاہنا کرتا ہے؟ (دیو) ہے نورِ تجلّی کے داتا! جو (مرتیہ تپانا ہ) آدمی اپنے کو تپاتا ہے، تپ، تیاگ اور ریاضت کرتا ہے اور آپ کو پکارتا بھی رہتا ہے، (گھننا اشمیا) ساتھ ہی اُسری (شیطانی) خیالات کو پتھر کی طرح پیس دینے والا اور (اشونا) گیان کی شعاؤں کے ذریعے جو آیا سک (عابد) (اِتھم کھشے مانہ) راکھشی بھاوناؤں کا ناش کرتا ہوا جیسے کہ (ریھا آدون اشمیا) جیسے کہ اَن کھانے والا پتھر کی چکّی سے اُس کو پیستا ہے وہ ہی آپ کو بُلانے کا مُستحق ہے۔

۵ کون دھرتی پہ ریاضت سے جو تجھ کو پا سکے
اپنی بدکاری کو پتھر مار کے جو مٹا سکے

मंत्र 305 —कौन दर्शन कर सके ?—

सूर्य और चंद्रमा के समान प्रकाशमान परमेश्वर ! कौन मरण धर्मः संसारी मनुष्य आपके स्वरूप का दर्शन कर सकता है ? हे दिव्यसरूप भगवान ! जो अपने आप को तपाता है तपश्चर्या करता है वह ही आप का आहवान करता है और आसुरी भावनाओं का हनन करके उन्हें पाषाण वत पीस देता है वह आप के दोनों स्वरूपों को साक्षात कर लेता है ।

कौन धरती पे रियाज़त से जो तुझ को पा सके ।
अपने दुश्कर्मों को पत्थर मार कर जो मिटा सके ॥

منتر نمبر ۳۰۶ اپنے رُوحانی خزانے کو دیجئے! کھنڈ ۸

अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोमो दिविष्टिषु ।
तमश्विना पिबतं तिरोअह्न्यं
धत्तं रत्नानि दाशुषे ॥४॥

(دوِشٹی شُو) رُوحانی خزانے کی چابی ادھیاتمک پڑگیا یا پاکیزہ عقل بریں کو حاصل کرنے کی خواہشات میں (ایّم سوم وام سُتا) یہ سوم بھگتی رس آپ کے دونوں رُوپوں کے لئے بھینٹ کرنے کو تیار رہے اور (مدھومتمہ) اتینت مدھر ہے (اشونا) سوریہ اور چندرماں کی طرح منّور ایشور! آپ (ترہ اہنیم پیبتم) اس کو ہمیشہ منظور نظر کرتے ہوئے (داشوشے رتنانی دھتم) اِس پریم بھگتی سے پرسّن ہو کر اپنے رُوحانی خزانے کے رتنوں کو عطا فرماتے رہیں۔

ہے یہ میٹھا بھگتی رس منظور بھگون کیجئے
اور دانی بھگت پر رتنوں کی ورشا کیجئے

मंत्र 306 —अध्यात्मिक रत्न दीजिये—

दिव्य आध्यात्मिक धनों और प्रज्ञाओं की प्राप्ति की इच्छा से यह सोम रस भक्ति तेज और सत्व बल पराक्रम आप की भेंट के लिये तय्यार है । जो अत्यन्त मधुर है । प्राण अपान स्वरूप परमेश्वर ! प्रतिदिन जोड़े

हुए इस भक्ति रस वा अमृत तेज को स्वीकार कीजिये और उपासक को अध्यात्म रत्न प्रदान कीजिये।

मधुर है यह सोमरस स्वीकार भगवान कीजिये।
भटकतो भक्त पर रत्नों की वर्षा कीजिये॥

منتر نمبر ۳۰۷ **آپ کبھی ناخوش نہ ہوں مجھ پر!** کھنڈ ۸

२ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १२३१ २
आ त्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्नहं ज्या।
१ २ ३१र २र ३
भूर्णिं मृगं न सवनेषु चुक्रुधं
१र २र ३ १ २
क ईशानं न याचिषत् ॥५॥

ہے اِندر پرمیشور (سومسیہ جیا گلدیا) بھگتی کے رس میں ڈوبی ہوئی جو آپ پربھی وِجے کر لیتی ہے، ایسی پرارتھنا کی بانی سے (اہم سدا تُوا آیاچن) میں ہمیشہ آپ سے یاچنا کرتا رہا ہوں (سونیشوُ نہ چُکرُودھم) کبھی آپ کو کرودھت یا ناخوش نہیں کیا، (کاہ ایشانم یاچِشت نہ) کون ہے جو آپ جگت کے سوامی سے یاچنا نہیں کرتا' مانگتا نہیں ہے؟ بلاشک آپ ہی تو (بھوُرنم مرگم) بھرن پوشن کرنے والے کھوجے جانے کے یوگیہ ہیں۔

سوم رس کی دھار سے کرتا رہا ہُوں یاچنا
ناخوش نہ ہوں مجھ سے کبھی رہتی سدا یہ چاہنا

मंत्र 307 —भगवान कभी न रूठे —

हे इन्द्र परमेश्वर ! भक्ति रस में सनी प्रार्थना जो आपको भी जय कर लेती है ऐसी वाणी से निरन्तर आपसे याचना करता रहा हूं। कभी आपको अप्रसन्न नहीं करता। कौन है जो आप जगत के पिता नही मांगता। निसंदेह आप ही तो हमारे पालक पोषक खोजे जाने के योग्य है।

सोमरस को धारकर करता रहा हूं याचना।
मेहरबां हों आप हम पर है यही इक चाहना॥

منتر نمبر ۳۰۸ **بھگتی رس پیدا کر بھگوان منتظر ہیں!** کھنڈ ۸

अध्वर्यो द्रावया त्वं सोममिन्द्रः पिपासति ।
उपो नूनं युयुजे वृषणा हरी
आ च जगाम वृत्रहा ॥६॥

(ادھوریو) اہنسائے اُپاسنا یگیہ کو رچانے والے اُپاسک (توم سوم آدرویہ) تم اپنے بھگتی رس کو بہاؤ، (اندر پپاسنی) اندر پرمیشور اُسے پینا چاہتے ہیں۔ دیکھ! اُس نے تیرے (اُپ اُو) نزدیک ہی (ہری ورشنا) گیان اندری اور کرم اندری روپی گھوڑوں کو (نُونم یُویُجے) نشچے سے تیرے ساتھ جوڑ دیا ہے اور (چہ) دیکھ! وہ (ورترہا آجگام) پاپ اور بُرائیوں کا وِناشک بھگوان تیرے اندر آ رہا ہے۔

پریم کر سب سے نہ دُکھ دے ایشور کو یاد کر
ہو سکے تو اُس کی خلقت کو دکھوں سے پار کر

मंत्र 308 —भक्ति रस के लिए प्रभु प्रतीक्षा में—

अहिंसा मय उपासना यज्ञ का आयोजन करने वाले भक्त! बहा अपने भक्ति रस को तुरन्त, इन्द्र तो पीने की प्रतीक्षा में है। देख तो सही उसने तुझ में ज्ञान और कर्म इन्द्रिय रुपी घोड़ों को तेरे साथ जोड़ दिया है। और देखो वह पाप नाशक भगवान तेरे अंदर आ रहा है।

प्रेम कर सबसे न दुख दे, ईश्वर को याद कर।
हो सके तो उसके प्राणी मात्र का उधार कर॥

منتر نمبر ۳۰۹ **نجات بخشئے!** کھنڈ ۸

अशीपतस्तदा मरेन्द्र ज्यायः कनीयसः ।
पुरूवसुर्हि मघवन् बभूविथ
भरेभरे च हव्यः ॥७॥

(جیایاہ اِندر) سب سے بڑے اِندر پرمیشور! بلحاظ طاقت اور صفات سے آپ سے
مَیں بہت ہی (کنی لیہ) چھوٹا ہوں، پر (ابھی شتہ) اپنی خواہشات کو پوری تو کرنا چاہتا ہوں،
لہذا مجھے (تت آبھر) وہ موکھش مُکتی کا دھن یا نجات بخشئے (مگھون ہی پرودسو بھیو تھ)
کیونکہ آپ ہی تو اِس پرم آنند کی دولت کے مرکز ہیں، اِس لئے (بھرے بھرے ہو یہ) ہر ایک
پالن پوشن اور حفاظت کے لئے آپ ہی بُلائے جاتے ہیں۔

تُم ہو بڑے ہے اِندر سب کچھ ہی تمہارے پاس ہے
بھگت چھوٹا ہوں تمہارا تم سے ہی پر آس ہے

—मोक्ष धन दीजिये—

मंत्र 309

हे मेरे ज्येष्ठ श्रेष्ठ परमात्मन ! अपने छोटे भ्राता सदाचरण युक्त अनुज को मोक्ष धन से भर दीजिये। हे अध्यात्म ऐश्वर्य वाले परमेश्वर ! आप ही इस धन के धनी हैं। आप ही प्रत्येक देवासुर संग्राम में और भरण पोषण के लिये सदैव बुलाए जाते हैं।

हे इन्द्र ! जो थोड़ा बहुत जो कुछ तुम्हारे पास है।
तुम हो बड़े मैं भक्त छोटा हूं, तुम्हीं से आस है ॥

منتر نمبر ۳۱۰ — کھنڈ ۸

آپ کی دی ہوئی دَولت گناہوں میں نہ لگاؤں

यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय ।
स्तोतारमिद्दिधिषे रदावसो
न पापत्वाय रंसिषम् ॥८॥

اِندر پرمیشور! (یاوتہ توم) جتنی دولت کے آپ مالک ہیں، اگر (اہم اِشیہ) مَیں اِس کا
مالک بن جاؤں تو مَیں اس دھن کو (ستوتارم اِت دھدِ شے) آپ کے بھگتوں میں ہی لگادوں،
(رداوسو) ہے دھن کے داتا بھگوان! مَیں آپ سے پائی ہوئی اِس دولت کو (پاپتوائے نہ رنسی شم)
پاپ یا گناہ کرنے میں نہ لگاؤں۔

ے　دولتوں کے سوامی ہو جتنے، اگر مَیں بھی ہو جاؤں
آپ کے بھگتوں کو بھر دوں، بدیوں میں نہ اِسے لگاؤں

मंत्र 310　—आप का दिया धन पाप में न लगाऊं—

इन्द्र परमेश्वर ! जितने धन ऐश्वर्य के आप स्वामी हैं यदि मैं उतने धन का पति बन जाऊं तो इस तेरे दिये धन को तेरे भक्तों मे ही लगा दूं, कभी पाप में न लगाऊं।

हे इन्द्र ! धन वाले हो जितने आप, अगर मैं भी बनूं।
पुण्यकारी तेरे भक्तों को सदा, धन से भरूं।।

کھنڈ ۸　　　خیالاتِ بَد کو دُور کیجئے　　　منتر نمبر ۳۱۱

त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः।
अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि
त्वं तूर्य तरुष्यतः　　　॥६॥

ہے اِندر پرمیشور! (توّم پرتُورتیشو سپردھا ابھی اسی) آپ دیو اسُر سنگرام نیکی بدی کے جھگڑے میں حسد بُغض وکینہ وغیرہ بُرے خیالات کو دبا دیتے ہو اور (اشستہا) اُنہیں تحس نحس بھی کر کے اوصافِ حمیدہ کو (جنیتا) اُبھارتے ہو اور (توّم) آپ ہی (ورِتر تُواسی) رُوحِ پاک پر غلبہ جما لینے والی بدیوں کو نشٹ کر ڈالتے ہو۔ لہذا (ترُوشیتہ تُورِیہ) ہمارے اندر کی بُرائیوں کو مار دیجئے۔

ے　دُشمانِ نفس کے پنجے سے چھڑاؤ مجھے۔ دُور کر کے ہر بُرائی کو بھلائی دو مجھے

मंत्र 311　—हिंसक वृत्तियों को नष्ट कीजिये—

हे इन्द्र ! आप हमारे आत्म भाव को हिंसित करने वाली आसुरी वृत्तियों को नष्ट कर दीजिये। आप ही अन्तःकरण में उठने वाली काम क्रोध आदि भावनाओं को दबाकर सदगुणों को उभारने में समर्थ हैं अतः

पाप ताप संताप को विनष्ट कीजिये ।

दुष्टघातक श्रेष्ठ पालक सर्वदा हो हे प्रभो ।
दूर करके हर बुराई को भलाई दो प्रभो ।।

منتر نمبر ۳۱۲ — **عَظِیم تَرِین رہنُما** — کھنڈ ۸

१२ २र३१र २र ३१२ २र ३ १२
प्र यो रिरिक्ष ओजसा दिवः सदोभ्यस्परि ।
१ २ ३ १२ ३
न त्वा विव्याच रज इन्द्र
१ २३२ ३ १ २
पार्थिवमति विश्वं ववक्षिथ ।।१०।।[३।८]

ہے اِندر پرمیشور (یہ پرری رِکھشم) جو آپ دُنیا سے بالکل الگ تھلگ ایک معظم ہستی ہیں اور (دِوہ سدو بھیہ) عرش بریں کی دُنیا یعنی سُورج چاند وغیرہ سے بھی بالاتر ہیں (پری ریتھوم رجا تُوا نہ وِویاچ) اور پھر ارض وسما تو آپ کی موجودگی کا مقابلہ ہی کیا کر سکتے ہیں، لہٰذا آپ ہے اِندر (اتی وِشوم ادِجسا ووکھشِتھ) آپ تو تمام جگت سے اُوپر ہی اُوپر رہ کر اپنی مطلقاً ذاتی حیثیت سے ساری دُنیا کو چلا رہے ہیں۔

ارض وسما عرش بریں غرضیکہ دُنیا جو بھی ہے
اُن سب کے اُوپر اور پر ہو کے ہو وِشو چلا رہے

मंत्र 312 —महान्तो महान—

हे परमेश्वर ! आप अपने ओज से द्योलोक के भी ऊपर दूर-दूर तक समाए हुए सर्वव्यापक हैं तथा सर्वत्र दुष्ट संहारक हैं । विश्व को अतिक्रमण कर सब को धारण कर रहे हैं । आप की ख्याति और महान्ता का कोई सामना नहीं कर सकता अत: आप महान्तो महान हैं ।

हे देव ! यह द्योलोक भी तुम से अधिक विस्तृत नहीं ।
लांघ करके विश्व को हो इसके ऊपर पर यहीं ।।

منتر نمبر ۳۱۳ **بھگتی بھاؤ سے بندھے ہوئے بھگوان** کھنڈ ۹

१ २ ३ १र २र ३ २ ३क
असावि देवं गोऋजीकमन्धो
२र ३ १ २ ३ १ २
न्यस्मिन्निन्द्रो जनुषेमुवोच ।
१ २ ३ १र २र
बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर्बोधा
३ २ ३ १ २ ३ १ २
न स्तोममन्धसो मदेषु ॥१॥

(گورِجی کم) اِندریوں کو سیدھے اور سیدھے رستے سے چلانے والا (دیوم اندھ اساوی) دویہ گُن بھگتی رس تیار ہوگیا ہے۔ (اسمن اِندر جنُوشا، نی اُووچ) جس بھگتی کے بھاؤ سے پرمیشور فطرتاً ازل سے جُڑا ہوا ہے۔ (ہری اشو) ہے اِندریوں (حواسِ خمسہ) کے مالک! ہم عابد لوگ (یجّیئ) رفاعِ عام کے یگ کرموں کے ذریعے (توام بودھامسی) آپ کو دِلوں میں روشن کرتے ہیں، (اندھسہ مدیشُو) ازراہِ نوازش اِس بھگتی کے رس یا مُحبّانہ جذبات سے سرشار ہو کر (نہ ستومم بودھ) آپ ہماری دُعاؤں کو سُنیئے۔

ھ فطرتاً بھگتی کے جذبے سے بندھے ہیں اِیشور
اِس لئے سمجھیں گے ہم کو بھگت اپنا اِیشور

मंत्र 313 —भक्त के बस में है भगवान— खंड--9

इन्द्रियों को सरल सत्य मार्ग पर चलाने वाला दिव्य गुण भक्ति रस तैयार हो गया है। जिस भक्ति भाव से ईश्वर अनादिकाल से बंधे हुए हैं। हे इन्द्रियों के स्वामी, हम उपासक यज्ञ कर्मों के द्वारा आपको हृदयों में प्रकाशित करते हैं। कृपा करके इस भक्ति भेंट से प्रसन्न होकर हमारी प्रार्थनाओं को सुनें।

सर्वदा भक्ति के भावों में बंधे हो ईश्वर ।
इसलिये समझेंगे हम को भक्त अपना ईश्वर ॥

منتر نمبر ۳۱۴ — کھنڈ ۹

خانۂ دِل میں اپنا گھر تیجیے!

योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि
तभा नृभिः पुरुहूत प्र याहि ।
असो यथा नोऽविता वृधश्चिद्दो
वसूनि ममदश्च सोमैः ॥२॥

ہے اِندر پرمیشور! (تے سدنے یونی اکاری) آپ کے رہنے کے لئے ہم نے اپنے دِل کو آپ کا گھر بنالیا ہے، (نربھی پُوروہُوت) آدم زاد بہتوں عابدوں سے بلائے گئے خداوندکریم! (پر آیاہی) آئیے جلدی سے اِن گھروں میں، (یتھانہ اوِتااسہ) جس سے ہم محفوظ ہو جائیں، (وِردھ چِت) اور بڑھتے جائیں، (وسُونی ددہ) آپ ہمیں روحانی دولتوں کو بخشئے، (چہ سومیٔ ممدہ) اور ہمارے جذباتِ محبّانہ سے آنندت ہوں۔

آپ کے رہنے کو ہم نے گھر بنایا اپنا دِل
تاکہ ہو محفوظ بڑھتے جائیں ہر ساعت میں مِل

मंत्र 314 —हमारे हृदय में अपनी घर बनायें—

हे इन्द्र! आपके रहने के लिये अपने हृदय को आपका घर बना दिया है। असंख्य भक्तों से बुलाये गये जगदीश्वर आईये और इन घरों में निवास बनाईये जिससे हम सुरक्षित होकर वृद्धि को प्राप्त होवें। हमें अध्यात्मिक ऐश्वर्य प्रदान करें और भक्तिभाव से आनंदित करें।

आपके रहने को हम ने घर बनाया अपना दिल।
जिससे हो [1]महफूज बढ़ते जायें हर [2]साअत में मिल॥

---

1 सुरक्षित 2 घड़ी

منتر نمبر ۳۱۵ کھنڈ ۹

جہالت کے پہاڑوں کو توڑ دیا!

अदर्दरुत् समसृजो वि खानि
त्वमर्णवान् बद्धधानाँ अरम्णाः ।
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः
सृजद्धारा अव यद्दानवान् हन् ॥३॥

ہے اِندر پربھُو! آپ نے ہمارے اندر بھگتی رس کا (اُت سم ادردہ) دریا بہادیا۔ (اُت کھانی اسرج) اور ہمارے حواس خمسہ کو بنایا، (ارن وان بدو دھانان توم ارمناہ) ہمارے پریم محبت، بھگتی کے سمندروں کو جو ابھی تک بندھے پڑے تھے۔ اُن کو آپ نے چلا دیا۔ اس کے بہاؤ کے آگے جو بڑے بڑے (مہانتم پَروتم) جہالت کے پہاڑ راستہ روکے کھڑے تھے (ہت وی وہ دھارا وِسرجیت) اُنہیں توڑ کر آپ نے بھگتی رس کو بہایا اور (دان وان اُدہن) خیالات بد کو نکال دیا۔

راستہ روکے ہوئے پربت جہالت کے کھڑے
توڑ کر اُن کو بہائے بھگتی کے دریا بڑے

मंत्र 315 —अज्ञान पर्वतों को तोड़ दिया—

हे इन्द्र परमेश्वर ! आपने हमारे अंदर भक्ति का अमृत बहा दिया। हमारी इन्द्रियों का निर्माण किया। प्रेम भक्ति के सागर जो रुके हुए थे आपने चालित कर दिये। इसके बहाव के आगे जो बड़े-बड़े अविद्या के पर्वत मार्ग रोके खड़े थे उन को तोड़ फोड़ कर सोम आनंद रस बहा दिया आसुरी भावों को निकाल दिया।

रास्ता रोके हुए पर्वत जहालत के खड़े।
तोड़ कर उनको बहाए भक्ति के दरिया बड़े।

منتر نمبر ۳۱۶ شیطانی جذبات کے مقابلے کی طاقت بخشو! کھنڈ ۹

सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि त्वा
सनिष्यन्तश्चित्तुविनृम्ण वाजम् ।
आ नो भर सुवितं यस्य कोना
तना त्मना सह्याम त्वोताः ॥४॥

ہے پرمیشور! ہم نے (سُوشواناسہ) پریم بھگتی رس کو پیدا کیا ہے، جس سے (توا سوسسی) تمہاری حمد وثنا گاتے ہیں۔ (تُووی نرمن) ہے عظیم طاقتوں کے مالک! (واجم چت سنی شینت) ہم آپ کے لئے اپنی طاقتوں کو بھینٹ کر رہے ہیں، (نہ سُووی تم آبھر) ہمیں آپ اُتم گتی پردان کریں، (لسیہ کونا) جس کی ہمیں دیرینہ خواہش ہے، (تونا ہ تنا تمنا سہیام) جس سے آپ سے محفوظ ہوئے ہم اپنی جسمانی اور رُوحانی طاقتوں کو بڑھا کر بدکرداری کو مٹا سکیں۔

ے آپکی ہی مہربانی سے ہوئے بھگتی رساں
جس سے بُرائی دب سکے وہ طاقتیں دو مہرباں

मंत्र 316 - आसुरी वृत्तियों को दबाने की शक्ति दो—

परमेश्वर ! हमने भक्ति रस बनाया है जिससे आपका गुण कीर्तन करते रहते हैं। हे शक्ति स्त्रोत आपके प्रति हम अपनी शक्तियों को समर्पित कर रहे हैं। हमें आप उतम गति प्रदान करें। जिसकी हम कामना कर रहे हैं। जिससे आप से सुरक्षा प्राप्त हम अपने शारीरिक और आत्मिक बलों को बढ़ा कर आसुरी भावों को दबा सकें।

आप की ही मेहरबानी से हुए भक्ति रसां।
पाप जिससे दब सकें वे शक्तियां दो मेहरबां ॥

منتر نمبر ۳۱۷ کھنڈ ۹

اپنی رکھشا کیلئے تیرے ہاتھ کو پکڑتے ہیں!

३ २ ३ १ २ ३ १ २
जग्रहा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तं
३ १ २ ३ १ २
वसूयवो वसुपते वसूनाम् ।
३ २उ ३ १ २ ३
विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर
१ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
गोनामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥५॥

ہے اندر! (تے دکھشنم ہستم جگربہما) تیرے دائیں ہاتھ کو ہم پکڑتے ہیں جو حوصلہ افزا اور روانی ہے۔ کیونکہ ہم (وسُویوہ) آرام دِہ رہائش اور سُکھ آنند کی اِچھا رکھتے ہیں، اور آپ (وسُونام وسُوپتے) دولت مندوں کے بھی دولت مند ہیں، ہے شُور مہابلوان! آپ (گونام گوپتم) مالکِ ارض وسما ہیں، حواسِ خمسہ کے بھی مالک ہیں اور وید بانی کے بھی سوامی ہیں، (ہی تُوا وِدم) ایسا ہم آپ کو جانتے ہیں، لہٰذا ہم اُپاسکوں (عابدوں) کو (چترم ورِشنم ریِّم دا) آنند برسانے والی روحانی دولتیں دیجئے۔

ے
دُنیا کی دولت کے سوامی مالکِ ارض وسما
پکڑتے ہیں ہاتھ ہم جس سے ہو تیرا آسرا

मंत्र 317 —अपनी रक्षा हेतु तेरा हाथ पकड़ें—

हे इन्द्र ! तेरे दक्षिण हाथ को हम पकड़ते हैं जो दानी है और उत्साह वर्धक, भगवान हम तो सुखशान्ति आनंद के इच्छुक हैं और आप धनियों के धनी शूर और बलवान ! भला हम आपको छोड़ कहां जायें । जब कि आप इन्द्रियों के स्वामी, पृथिवियों और वेद बाणी के भी स्वामी हैं ऐसा हम आप को मान कर आनंद की वृष्टि करने वाले अध्यात्मिक धनों को मांगते हैं ।

विश्व धन के स्त्रोत पृथिवी लोक इन्द्रिय देवता ।
पकड़ते हैं हाथ हम जिस से हो तेरा आसरा ॥

منتر نمبر ۳۱۸ **نیکی اور بدی کے جھگڑے میں بھگوان سہائی** کھنڈ ۹

इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते
यत्पार्या युनजते धियस्ताः ।
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम
आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥६॥

(نیم دھِتا) اندر ہی اندر جب نیکی اور بدی کا سنگرام چل رہا ہو تو (نرہ اندرم ہونتے) اپنے کو راہِ راست پر لے جانے والا آدمی بھگوان کو پکارتا ہے، (یت پار یا ہ تاہ دِھیہ یُنجتے) جب کہ بُرائیوں کو یوگی جن یوگ کے ذریعے پار کر لیتے ہیں، کب؟ جب اُپاسکوں میں (شردسہ کامے) یش کی کامنا جاگ جائے، تب (نرشاتا شُور) اپنے بھگتوں کو طاقت دینے میں شُور پرمیشور! (نہ) آپ ہمیں (گومتی ورجے آبھج) بھگت جنوں میں آگے کیجئے۔

ے جھگڑا یہ نیکی بدی کا چلتا اندر آدمی کے
کامنا سے یش کی یوگی جن ہیں اُسکے پار ہوتے

मंत्र 318 —देवासुर संग्राम में भगवान सहाई—

अन्तःकरण में जब देवासुर संग्राम नेकी बदी का झगड़ा चल रहा हो तो धर्म मार्ग से जाने वाला मानव भगवान को ही पुकारता है जब की योगीजन योगादि चित्तवृत्तियों को रोक कर पार कर जाते हैं। कब? जब उपासकों में यश कामना जाग उठती है। तब स्वभक्तों को शक्ति देने में शूर वीर परमात्मा पुण्यात्माओं को उत्थान पथ पर खड़ा कर देते हैं।

झगड़ा यह नेकी बदी का चलता रहता रोज दिन।
कामना से यश की उसको पार करते योगी जन ॥

منتر نمبر ۳۱۹ پکشیوں کی طرح جال میں بندھے ہوئے ہمیں چھڑاؤ کھنڈ ۹

वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं
प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः ।
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि

२र ३ २ २३१२ ३२
चक्षुर्मुमुग्ध्या३स्मान्निधयेव बद्धान् ॥७॥

(پریہ میدھا رِشیا) بھگوان کی بھگتی کے پیارے ست پُرش رِشی گن پرارتھنا یا فریاد کرتے ہوئے (اندرم اُپ سیدُو) پرماتما کے نزدیک تر ہو کر دھیان میں لِین ہو جاتے ہیں، (سپُرناہ دیہ) جیسے پکشی اُڑانیں بھرتے ہیں، وہ بھی ایشور میں اُڑانیں بھرتے ہوئے کہتے جاتے ہیں کہ ہے پرمیشور! ہمارے (دھوانتم اپ ارنُوہی) اگیان اندھکار کے پردے کو ہٹا دیجئے، ہماری (چکھشو پُوردھی) نظرِ رُوح کو بھر دیجئے (ادھیاتمک درِشٹی) (اسمان مُومگدھی) ہمیں مُکت کر دیجئے۔ ہم پکشیوں کی (اِو) طرح (ندھیا بدھوان) دُنیا کے جال میں پھنس رہے ہیں۔

ع جال میں پھنسے ہوئے اگیان کے وش ہو رہے
مُکت کر دو ایش پیارے دھیان میں ہیں کھو رہے

मंत्र 319 —पक्षियों की भांति जाल में फंसे हमें छुड़ाओ

प्रभु भक्ति में संलग्न सत्पुरुष ऋषि-मुनि प्रार्थना करते करते भगवान के निकटतर होकर समाधिस्थ हो जाते हैं। पक्षी वत परमेश्वर में उड़ानें भरते हुए कहते जाते हैं कि प्रभो! हमारे अज्ञान अंधकार के परदों को हटाकर हमें अध्यात्म दृष्टि दे सांसारिक जाल में पक्षी समान बंधे हुओं को मुक्त कर दीजिये।

जाल में फंसे हुए अज्ञान के वश हो रहे।
मुक्त कर दो ईश प्यारे ध्यान में हैं खो रहे॥

کھنڈ ۹

منتر نمبر ۳۲۰

سچے دِل سے چاہنے والے درشن کر ہی لیتے ہیں!

१ २   ३ २उ ३ १र   २र   ३ १र
नाके सुपर्णमुप यत् पतन्तं हृदा
२र   ३ १ २
वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा ।
१ २   ३ १ २   ३ २ ३ २ ३
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य
१ २   ३ १ २ ३ २
योनौ शकुनं भुरण्युम् ॥८॥

پرمیشور! (ہر داوے ننتا) دِل سے چاہنے والے (ناکے تُو ابھی اچکھشت) سورگ لوک یعنی دُکھ رہت آنند کے ماحول میں آپ کو ظاہر ظہور کر ہی لیتے ہیں (اُپ پتنتم) آپ کے نزدیک تر بیٹھ کر ہردیہ آکاش میں آنند کی اُڑانیں لے رہے ہوتے ہیں۔ (ہرنیہ پکھشم) سونے کی طرح چمکتے ہوئے سُوریہ تارے وغیرہ جو آپ کے پنکھ ہیں، اِن کے خوبصورت ماحول میں ہمیں دِلی آنند کی پریرنا دینے والے اگیان کے ناشک ہیں اور (یمسیہ یونؤ) یم نیم پالن کرنے والے بلا ناغہ آپ کے دھیان میں بیٹھ کر ستیہ کرم کانڈی اُپاسکوں کا گھر ہیں، (بھرنیوُم) اُن کا پالن پوشن کرتے ہیں۔

سندر سنہرے پنکھ والے سُوریہ وت ہو چمک رہے
شریشٹھتا، آنند دائیک ہو کے درشن دے رہے

मंत्र 320   - हार्दिक कामना से दर्शन सुलभ—

परमेश्वर ! हृदय से इच्छा करने वाले दुख रहित आनंद लोक में आप के दर्शन कर ही लेते हैं। आप के निकटतम होकर आनद की उड़ानें भी भरते रहते हैं।

स्वर्ण समान चमकते हुए सूर्य नक्षत्रादि जो आपके पंखों के समान है इनके सुन्दर वातावरण में हमें सच्ची शान्ति मिलती है। श्रेष्ठता और आनंद के आप प्रेरक हैं और अज्ञान के विनाशक, यम नियम आदि व्रतों में लगे हुए उपासकों का आप घर हैं। और पोषक।

सुंदर सुनहरे पंख वाले सूर्यवत हो चमक रहे।
श्रेष्ठता आनंददायक हो के दर्शन दे रहे॥

منتر نمبر ۳۲۱ — کھنڈ ۹

وہ ہی اُپاسنا کے یوگیہ

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि
सीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः
सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥९॥

(برہم) سب سے بڑا (جگیانم) سب کا پیدا کرنے اور جاننے والا (پُرستات) ازلی ہے اور (پرتھم) اپنی اوّلین طاقت سے پھیلا ہوا ہے، (سُورُچہ) جس کو سب چاہتے ہیں۔ جو (وینہ) گرہن کے یوگیہ (بُدھنیہ اسیہ وِشٹھاہ اُپماہ) جس کے آکاش میں سُوریہ، چندر، تارے، زمین وغیرہ مختلف جگہوں میں ٹھہرے یا گھومتے ہوئے ایشور کی جانکاری دیتے ہیں، (سہ اَوہ) وہی سب جگہ موجود ہونے سے اِن سب کو ڈھک رہا ہے۔ محفوظ کر رہا ہے، (وِسی یتانہ استہ چہ یونِم وِوہ) وہ ایشور مریادہ کے اندر دیکھنے لائق اور نہ دیکھنے لائق بھی کارن کے آکاش روپ کو گرہن کر رہا ہے، اُسی کی اُپاسنا (عبادت) سب کو ہمیشہ بالضرور کرنی چاہیئے۔

وہی برہم سب کا ہی آدھار ہے ۔ اُسی کو ہمارا نمسکار ہے

321 **वह ही उपासना के योग्य —**

ब्रह्म ही सर्वतो महान सर्वोत्पादक और सर्वज्ञ है अनादि और सर्व व्यापक है जिसकी सभी कामना करते हैं जो सबके ग्रहण करने योग्य है आकाश में अपनी-अपनी जगह पर ठहर वा भ्रमण करते सूर्य, चन्द्र नक्षत्र आदि जिसका ज्ञान कराते हैं और वही सब पर छत्र समान छाया हुआ इन सब को सुरक्षित कर रहा है। वह ईश्वर दर्शन के योग्य व अयोग्य है ज्ञान व अज्ञान के कारण से। उसी की उपासना ही सब को अवश्य करनी चाहिये।

वही ब्रह्म ही सब का आधार है।
उसी को हमारा नमस्कार है॥

منتر نمبر ۳۲۲ کھنڈ ۹

اُسی کیلئے سب تعریفیں گھڑی جاتی ہیں!

१ २ ३ १ २
अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै

महे वीराय तवसे तुराय ।

विरप्शिने वज्रिणे शन्तमानि

वचांस्यस्मै स्थविराय तक्षुः ॥१०॥[३१९]

(مہے ویرائے) مہان ویر اَور راعِب (توَسے تُرائے وِرپشنے بجرِنے) بلوان تیزگام عظیم العظیم بُرائیوں کے وِناشک اَور (ستھورائے اسمَیٔ وچانسی تکھشُو) اچل اِس پرمیشور کے لئے بھگت جن اپنے اپنے سُتتی وچنوں، تعریفی کلمات، رُباعیات، نغمے یا گیت گھڑ گھڑ کر تیار کرتے ہیں، جوکہ (اپُوروپا پرُوتمانی شنت مانی) بھگوان کی بھگتی کے بھجن کیرتن حمد وثنا سے بھرے ہوئے لاثانی طور پر متاثر کرنے اور شانتی دینے والے ہوتے ہیں۔

ے
تعریف اُس خدا کی جس نے جہاں بنایا
جس نے زمیں بنائی اَور آسماں بنایا

322 —सभी स्तुतियां उसी के लिये हैं—

सबसे शक्तिमान और प्रेरक, वेगवान सबसे महान, पाप ताप सन्ताप नाशक और कूटस्थ अचल परमेश्वर के लिये उपासक जन अपने अपने स्तुति वचनों का निर्माण करते हैं जो कि प्रभु के गुण कीर्तन स्तुति आदि अनुपम रूप से हम सब को सदा आनंदित करते रहते हैं।

तारीफ़ उस प्रभू की जिसने जहां बनाया ।
जिसने बनाई भूमि आकाश को बनाया ॥

منتر نمبر ۳۲۳ — کھنڈ ۱۰

بُرے خیالات کو ایشور دبا دیتا ہے!

१२ ३ १ २३१२ ३२
अव द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदियानः

३ २ ३१२ ३१२
कृष्णो दशभिः सहस्रैः ।

२३२उ ३ २ ३ १२ ३२३
आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमप

१२ ३१२ ३२
स्नीहितिं नृमणा अधद्राः ॥१॥

یوگ ابھیاس سے من میں پیدا (انشومتیم) نیک خیالات (شُبھ چت ورتیاں) کو بار بار (کرشنہ درلپسہ دی یانہ) خیالاتِ بد آ آ کر تنگ کرتے رہتے ہیں اور چت میں (دش بھی سہسرئی اواتشہٹت) بے شمار شکلیں بنا کر آ ٹھہرتی ہیں (دھمنتم تم سنیہتم) سانپ کی طرح پھنکارتی ہوئیں ناش کرنے والی کالی چت ورتیوں کو (نرمناہ اندر) بھگتوں کا پیارا بھگوان (شچیا اپ آ اوت ادھ درا) اپنی خصوصی طاقت سے ہٹا کر دور بھگا دیتا ہے۔

یوگ کے ابھیاس سے پیدا ہوئے جو نیک فال
روک رستہ بیچ میں وارد ہوئے آ بد خیال
آ گئے بھگوان رکھشا میں دیا اُن کو نکال

खंड- 10

323 —पाप वासना को भगवान नष्ट कर देते हैं—

जीवात्मा पापाचरणवश हो हजारों नस नाड़ियों से युक्त प्राणवती मानव देह पुरी को भटकता 2 प्राप्त होता है। जब यह भगवान की स्तुति करता है तब परमात्मा ज्ञान देकर इसकी रक्षा करता है और इस की विनाशक सूर्यवत फूंकारती हुई पाप वासना को भगा देता है वा नष्ट कर देता है।

योग के अभ्यास से पैदा हुए जो नेक फ़ाल,
रोक रस्ता बीच में वारिद हुए आ बद खयाल,
आ गये भगवान रक्षा में दिया उनको निकाल।

منتر نمبر ۳۲۴ کھنڈ ۱۰

بُرائیوں پر فتح یابی کب حاصل ہوتی ہے ؟

वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा
विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः ।
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा
विश्वाः पृतना जयासि ॥२॥

ہے اِندر پرماتمن ! (وِشوے دیو) سبھی حواسِ خمسہ جو دوست بنے ہوئے تھے (ورِتر سیہ شوشتھات اِیش مانہ) وہ سب پاپی راکھشس رُوپ سانپ کی پھُنکار سے بھاگ رہے ہیں - اور انہی نے آپ کو ہم سے جُدا کر دیا ہے، مگر (مرُدبھی تے سکھیم استو) پرانایام طریقۂ کار سے جب ہمارا آپ کے ساتھ پھر رابطہ قائم ہو جاتا ہے، (اتھ) تب بدی کی (اِما وِشواہ پرتناہ جیاسی) اِن سب شیطانی طاقتوں کو آپ فتح کرا دیتے ہیں ۔

اِندریاں دب کر بدی سے چھوڑتیں جب ساتھ ہمارا
قابو پا کر نفس پر تم کو رِجھا لگتا کنارا

324 — दुरितों पर बिजय कब ?—

हे इन्द्र परमात्मन् ! सभी इन्द्रियां जो मित्र थीं, वे सब पाप रुपी राक्षस की फुंकार से भाग गई और आप को भी हम से जुदा कर दिया । परन्तु जब जब प्राणायाम आदि साधनों से आपके साथ फिर सम्पर्क हो जाता है तब दुरितों कुविचारों की यह भीड़ दूर हो जाती है और शान्ति होती है।

इन्द्रियां दब के बदी से छोड़ती जब साथ हमारा ।
मन को वश में करने पर तुम को रिझा लगता किनारा ।

منتر نمبر ۳۲۵ کھنڈ ۱۰

خُدا کی قُدرت کو دیکھ جو کل زِندہ تھا آج مر گیا !

३ १ २ ३ १र २र ३ १र
विधुं दद्राणं समने बहूनां
२र ३ १ २ ३ १ २
युवानं सन्तं पलितो जगार ।
३ १ २ ३ १ २ ३ २उ
देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या
३ २ ३ १र २र
ममार स ह्यः समान ॥३॥

(بہونام سمنے وِدھم ددرانم یُوانم سنتم پلِتہ جگار) بہتوں کے زندہ رہتے، دشمنوں کو بھگا دینے والے، امیر کبیر اور جوان آدمی کو بھی وہ پُرانا پُرش نگل جاتا ہے، اس کی عظمت کو جاننے کے لئے (دیوسیہ کاویم پشیہ) اُس بھگوان کے وید کاویہ (گرنتھ) کو دیکھ (مہتوا ادیہ ممار) اُس کی مہما یا قانونِ اوّل سے جو آج مر گیا ہے (سہ ہیہ سمان) وہ کل زندہ تھا۔

ے یہ ہے قانون قدرت کا کر و جیسا بھرو ویسا
نہ رشوت اور سفارش سے وہاں تو بچنے پائیگا

325 —जो कल जीवित था वह आज मर गया—

वृद्ध मनुष्य, संसार के धारण करने वाले देवासुर संग्राम में असुरों को भगा देने वाले प्राचीनतम अजर अमर भगवान की स्तुति करता है। उस महान परमेश्वर के वेद तथा प्रकृति काव्य को देखो जो आज मर गया वह कल जीवित था। औ मरने वाला भी कल फिर पैदा होगा।

प्रभु देव के प्रिय काव्य की महिमा तो देखो तुम ज़रा।
जो जी रहा था कल जगत में आज वह ही मर गया।

کھنڈ ۱۰ — منتر نمبر ۳۲۶

پاپ وناشک ایشور

२ ३ २ ३ २ ३
त्वं ह त्यत् सप्तभ्यो
१ २ ३ १ २ ३ १ २
जायमानोऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र ।
३ १र २र ३ १र २र
गूढे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो
३ २ ३ १ २ ३ १ २
विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः ॥४॥

ہے اِندر پرمیشور! (تیّت ہا) یہ بات عام ہے کہ (تُوّم جایہ مانہ سپت بھیہ اشترو بھیہ شتّرابھوہ) آپ جب اُپاسک (عابد) کے آتما میں پرگٹ ہوتے ہیں تب سات پاپ جو کہ آپ سے دُور ہی رہتے ہیں، اُن کے بھی آپ شترُو ہو جاتے ہیں، اُن کا ناش کر اپنے بھگت کی رکھشا کرتے ہیں۔ ہے پرمیشور! (گوڑھے دیا واپرتھوی الوونِدہ) پرکرتی کے گربھ میں چھپے دئیو اور پرتھوی لوک کو بھی آپ نے ظاہر کیا ہے اور (دِبھوم ادبھیہ) آپ کی ویوستھا (نظام) میں رہنے والے (کبھُو وسنے بھیہ رتم ددھا) لوک لوکانتروں میں بھی آپ نے ہی خوبصورتی قائم کی ہے۔

نوٹ:- سات پاپ یا بُرائیاں کیا ہیں؟ ۱- چوری، ۲- گورو پتنی سے دُراچار، ۳- برہم ہتیا، ۴- گئو ہتیا یا اسقاطِ حمل، ۵- شراب نوشی، ۶- بار بار اپرادھ کرنا، ۷- بُرا کرنے پر اُس کو چھپانا اور جھوٹ بولنا۔

سہ

اپنے بھگتوں کے ہردیہ میں پرگٹ ہوتے آپ جب
سات پاپوں کے دباؤ سے بچاتے اُن کو تب

326 --पाप विनाशक ईश्वर—

हे इन्द्र परमेश्वर ! आप जब उपासक में प्रगट होते हैं तब सात पाप जो आप से दूर रहते हैं उनके भी आप बिनाशक होकर अपने भक्तों की रक्षा करने आत्मा में चमत्कृत हो उठते हैं । प्रकृति के गर्भ में छुपे द्यौ और पृथिवी को भी आप ही निकालते हैं एवं अपनी व्यवस्था में भ्रमण करने वाले लोक लोकान्तरों में भी आपने ही सौंदर्य भर रखा है । (मानव के सात पाप—चोरी, गुरू पत्नी दुराचार, ब्रह्म हत्या, गोहत्या व भ्रूण हत्या, मद्यपान, बारंबार अपराध करना, कुकर्म को छपाना वा असत्य बोलना ।)

अपने भक्तों के हृदय में प्रगट होते आप जब ।
सात पापों के दबावों से बचाते उन को तब ।

منتر نمبر ۳۲۷ — کھنڈ ۱۰

اُپاسک کی پرارتھنا

मेडिं न त्वा वज्रिणं भृष्टिमन्तं
पुरुधस्मानं वृषभं स्थिरप्स्नुम् ।
कराष्यर्यस्तरुषीर्दुवस्युरिन्द्र
द्युक्षं वृत्रहणं गृणीषे ॥५॥

(میڈیم ناںجرنم) وید بانی کے بجر (ہتھیار) سے (بھرشٹم انتم) بُرائیوں کا ناش کرنے والے (پُرو دھسمانم) پاپوں کو پوری طرح بھسم کر دینے والے (ورشبھم) سچے عابدوں پر سُکھوں کی درشا کرنے والے (سِتھر پسُنم) سدا آنند سروپ (دیُوکھشم) سدا پرکاشمان (ورِترہنم) کام کرودھ وغیرہ اور وِگھن بادھاؤں کو دُور کرنے والے اِندر پرمیشور! میں آپ کی (گرِنیشے) اُستتی (حمد و ثنا) کرتا ہوں۔ (دُوسیُو) میں عابد آپ کی اُپاسنا کرنے والا ہوں (اریہ) آپ میرے مالک ہیں، (تروُشی کروشی) میرے پر حملہ کرنے والی بدیوں کو نشٹ کیجیے۔

ے
میں اُپاسک گاتا ہوں گُن کیرتن تیرے سدا
کام کرودھ لوبھ اور موہ آدی بُرائیوں سے بچا

327 —उपासक की विनय—

वेद वाणी के वज् से पापों को भस्मी भूत करने वाले, अपने प्यारों पर सुख वर्षाने वाले, सदा आनंद स्वरूप, प्रकाशमान, काम क्रोधादि बिघ्न बाधाओं को दूर करने वाले इन्द्र ! मैं आपकी उपासना में बैठा हूं। आप ही मेरे जगत अधिपति है कृपा कर मुझ पर आक्रमणकारी पाप वासनाओं को नष्ट कीजिए ।

मैं उपासक गाता हूं गुण कीर्तन तेरे सदा ।
काम क्रोधादि बुराईयों से प्रभु मुझ को बचा ।

منتر نمبر ۳۲۸ — کھنڈ ۱۰

اپنی عقلِ سلیم کو ایشور کی نذر کرو!

प्र वो महे महे वृधे भरध्वं
प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम् ।
विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः ॥६॥

ہے اُپاسکو! اپنے پھلنے پھُولنے کے لئے (وہ) تم لوگ (مہے پرچیتسے) مہان اور عالمِ کُل پرمیشور کے لئے (سُومتم پربھر دھوم) عقلِ پاک کو (پرکرنو دھوم) پھر پھر اور پاک نیک اور پوتّر بنا کر اسے بطور تحفہ بھگوان کی بھینٹ کیا کرو، ہے پرمیشور! آپ کی ساری مخلوق رعیّت ہے۔ آپ اِسی کے پالن ہار ہیں، (چرشنی پراوِشہ پرچر) اور ازل سے ان میں رہتے ہیں۔

پروردگارِ خلق جو رمتا ہے سب میں ازل سے
تو پاک عقل سے نیک عمل کو بھینٹ کر اُس کے لئے

328 —भगवान को मेधा की भेंट दे—

हे उपासको ! अपनी वृद्धि के लिये तुम लोग महान्तो महान परमेश्वर के लिये मेधा बुद्धि को और पवित्र बनाकर सुमति भेंट करो। वह परमेश्वर हमारे पालक हैं अनादि काल से हम में रमे हुए। हम हैं उनकी प्यारी प्रजा।

जो है बड़ों का भी बड़ा सब को बढ़ाता है वही।
उसके लिए मेधा समर्पण, जो प्रजाओं का पति।

منتر نمبر ۳۲۹ — کھنڈ ۱۰

نیکی اور بدی کی جنگ میں بھگوان کی پکار

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्
भरे नृतमं वाजसातौ ।

शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं
वृत्राणि सञ्जितं धनानि ॥७॥

(اسمن بھرے واج ساتو) ہر گھڑی جسم کے اندر اور باہری دُنیا میں نیکی اور بدی کی جنگ (دیوا اسرسنگرام) میں طاقت آزمائی کے لئے ہم لوگ (اندرم ہوویم) مہان شکتی مان اندر پرمیشور کو بُلاتے ہیں۔ جو (شُرنونتم سکھو انم نت مم شرنوتم) سُکھ روپ، تمام زر و مال کا مالکِ کُل، رہنمائے دُنیا اور ہماری دُعاؤں کو سُننے والا ہے، ساتھ ہی جو (اُگرم سمتسو اُوتیئے) دُشٹوں کے لئے مہا تیج وان ہے۔ وہی اس پاپ اُدھرم کے ساتھ یُدھ میں (ورترانی ہنتم) گناہگاروں کو مارنے اور (دھنانی سنجتم) دھن دولت اور روحانی خزانوں کی بخشش کرتا ہے۔

سامنا ہے نفس کا اور دُنیوی جنگ و جدل کا
آؤ مِل اُس کو پکاریں مالکِ ارض و سما کا

329 —देवासुर संग्राम में परमेश्वर का आहवान—

प्रतिक्षण पिण्ड और ब्रह्माण्ड में चल रहे देवासुर संग्राम में विजयी होने के लिए महान शक्तिशाली इन्द्र को बुलाते हैं, जो सुखरूप सभी सम्पदाओं का स्वामी हमारा नेता और प्रार्थनाओं को श्रवण करता है और जो दुष्टों के लिए उग्र तथा पुण्य पाप के युद्ध में अधर्मियों का संहार कर अपने उपासको पर अध्यात्मिक सम्पदा को देता है।

सम्पदा समृद्ध जो नेता हमारा है अनादि।
पुण्य पाप के युद्ध में उसको पुकारें कर मनादि।

منتر نمبر ۳۳۰ کھنڈ ۱۰

ویدمنتروں کا اونچے سُور سے گان کرو!

उद् ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं
समर्ये महया वसिष्ठ।

१र २र ३ १२
आ यो विश्वानि श्रवसा
३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २
ततानोपश्रोता म ईवतो वचांसि ॥८॥

ہے اُپاسکو! (شروسّیا برہمانی اُدا اُدا ایرت) برہم کی مہما کے وید منتروں کو اُونچے سَور سے گاؤ، (وسِشٹھ سمریے اندرم مہیا) پرانایام کے ذریعے ریاضت کرنے والے عابد! ایشور کی حمد وثنا خوب گا، (یاہ شروسا وشوانی آتَ تان) جس مہان اندر نے اپنی مہان کیرتی اور طاقت سے سب لوکوں کو خلائیں پھیلایا ہوا ہے، وہ (وچانسی اُپ شروتا ایہوتہ) میری پرارتھناؤں کو قریب سے سن لیتا ہے اور میں اُس کے پاس پہنچ جاتا ہوں.

ہو کے قریب اُس کے حمد وثنا جو گائے ۸
بھگتوں کا پیارا ایشور اُس کو گلے لگائے

330 —वेद ऋचाओं को उच्च स्वर में गाओ—

उपासको ! ब्रह्म की महिमा को वेद मंत्रों से ऊंचे स्वर में गाओ। योगाभ्यास द्वारा ईश्वर का सत्कार गुण कीर्तन द्वारा कर। जिसने अपनी महान कीर्ति से विश्व भर का विस्तार किया है। वह भगवान मेरे वाक्यों को निकट से सुनें जिससे मैं उन के निकटतम हो जाऊं।

होके निकट जो उसके गुण कीर्तन को गाए।
भक्तों का प्यारा ईश्वर उसको गले लगाए।

منتر نمبر ۳۳۱ ## سرِشٹی کا یہ چکّر کھنڈ ۱۰

३ १र २र ३ १र २र ३ १र
चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तमुतो
२र ३ १र २र
तदस्मै मध्विच्चच्छद्यात् ।
३ १र २र ३ २उ ३
पृथिव्यामतिषितं यदूधः
२ ३ १र २र ३ १२
पयो गोष्वदधा ओषधीषु ॥६॥[३।१०]

(اسیہ یدچکرم اپ سُو آنشتم) اِس پرمیشور کا جو کارخانۂ قُدرت بصُورت سرشٹی چکر سب پرانی پرجا ہیں چل رہا ہے (اُت اُو) اور (اسمئی) اِس کے لئے (مدھُو اِت) وشیش کر میٹھے اَن جَل دودھ وغیرہ جیون رس کو (چھدّیات) کھول رہا ہے، اور (یداودھ برھتوی یام اتی سِنتی) جو اوپر اُٹھا ہوا رس کا بھنڈار بصُورت سمندر یا دل اور پربت اِس زمین پر بڑی مضبوطی کے ساتھ بندھا ہوا ہے اُسی سے وہ (گوشُو اوشدھی شُو یہ اددھاہ) گئو دں میں اوشدھی جڑی بُوٹیوں میں پینے لائق رس کو دھارن کرتا ہے، اِسی پرمیشور کی بھگتی عبادت ہمیشہ کرنی چاہیئے۔

نوٹ:- اِسی منتر کا ہی واضح طور پر مفصّل بیان بھگوت گیتا کے تیسرے ادھیائے میں ہے کہ برہم ایشور سے وید، وید سے کرم، کرم سے یگیہ، یگیہ سے بادل اور بادلوں سے بارش، بارش سے اَن اور اَن سے سب جاندار پلتے ہیں، اِس سرشٹی کے چکر کو جو نہ چلا کر یعنی یگ کرم نہ کرتا ہوا جیتا ہے، وہ پاپی اپنی عمر عزیز کو رائیگاں کھو دیتا ہے، بقول شاعر ؎

جو اِس چکر میں رہتا ناکارہ ہے
گناہ گار حیات اُس کی بیکار ہے

331 —सृष्टि नियम का चक्कर—

परमात्मा ने सृष्टि क्रम चक्र परमाणुओं में चलाया गति प्रद प्राणों को स्थिर किया। गौ आदि पशुओं में दूध और औषधियों मे अन्न रस मनुष्यों के लिए धारण कराया। तथा इस जीवन रस से निर्वाह करने का विधान किया। उसी प्राण दाता की उपासना सदा करनी चाहिये। (गीता के तीसरे अध्याय में जो इस सृष्टि चक्र का वर्णन किया है उस पर ध्यान देना चाहिये कि ब्रह्म से वेद, वेद से कर्म, कर्म से यज्ञ, यज्ञ से मेघ मेघों से अन्न और अन्न से प्राणी मात्र का पालन। जो इस चक्र के अनुकूल नहीं वर्तता वह पाप, जीवन अपनी आयु को नष्ट कर देता है।)

जो इस चक्र में रहता नाकार है।
वह पापों का जीवन है बेकार है।

منتر نمبر ۲۳۲ — کھنڈ ۱۱

اُسی مشہور عالم ایشور کو ہی پوجیں

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
त्यमू षु वाजिनं देवजूतं
३ १ २ ३ २ ३ १ २
सहोवानं तरुतारं रथानाम् ।
१ २ ३ १ २ ३ २
अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुं
३ २ ३ १ २ ३ १ २
स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवेम ॥१॥

(سُوستئے) اپنے سُکھ آرام کے لئے (ایہہ تیم اوسُوآہُو ویم) اِسی جیون میں ہی اُسی پرسدھ بھگوان کا اُتم وِدہی اچھے طریقہ کار سے آواہن کریں، جو پرمیشور کہ اَن گیان وِگیان اور طاقتوں کا مالک ہے، (دیو جُوتم) سُوریہ وغیرہ کا دیوتاؤں اور وِدوانوں کے آتماؤں میں پریرنا دے رہا ہے، (سہووانم رتھانام ترُوتارم) سہن شِیل ہو کر ہمارے شریروں کی گاڑی کو چلانے والا ہے، (ارشٹ نیمِم، پرتناجم) سنسار چکر کو اڈِگ ہو کر چلا رہا ہے اور شیطانی عناصر اور اندرونی بُرے جذبات پر فتح پائے ہوئے ہے، (آشُوم تارکھیم) اپنے کاموں کو تیزی سے نپٹاتے ہوئے بھی سب جگہ ظاہر ظہور ہے۔

گیان، اَن، بَل کا جو سوامی سب کا سِرجن ہار ہے
اپنے سُکھ آرام کا سمجھو وہی آدھار ہے

खंड—11

332 —अपने सुख आनंद का आधार वही—

परमात्मा उत्तम अन्न भोगादि का दाता भक्त आत्माओं का प्यारा, बलवान पृथिवी आदि लोक लोकान्तरो तथा शरीरों रथों का संचालक है। विरोधी प्रकृति और दूषित कामादि वासनाओं पर जय पाने वाला है। हम अपने कल्याणार्थ इसी जीवन में ही उसे आमन्त्रित करते रहें।

ज्ञान अन्न बल का जो स्वामी सब का सृजन हार है।
अपने सुख आराम का समझो वही आधार है।

منتر نمبر ۳۳۳ — کھنڈ ۱۱

ہماری دِلی دُعاؤں کو منظور فرمائیں!

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३
त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम् ।
३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ २ २ ३ २
ह्वे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिदं
३ २ ३ १ २ ३ १ २
हविर्मघवा वेत्विन्द्रः ॥२॥

(ترا تارم اوی تارم اندرم) سب کے پالک اور رکھشک اندر ایشور کو (ہوے ہوے سو ہوم) ہر پکار یا فریاد پر آسانی سے بُلائے جا سکنے والے (شورم اندرم) شور ویر پرماتما کو (شکرم پرو ہوتم) جو عظیم طاقت ور اور جس کو سب بے شمار ناموں اور ڈھنگوں سے بلاتے رہتے ہیں، اسی کو (نو ہووے) میں بھی بالضرور بلاتا ہوں۔ اس لئے کہ وہ (مگھوا، اندر، ہوی، ویتو) دولت مند عظیم اندر ہماری منوکامناؤں کو پورن کرے، منظور فرمائے۔

ہ
پالک وہی رکھشک وہی ہے شور ویر اعظم وہی
جس کو بلاتے ہیں سبھی میں بھی بلاؤں اس کو ہی

333 —मनोकामनाएं पूर्ण हों—

इन्द्र ईश्वर प्राणकर्ता नित्य रक्षक है। सुगमता से बुलाए जाने योग्य है। शूरवीर और महान बलशाली है जिसको असंख्य नामों और अनेक प्रकार से बुलाया जाता है। मैं भी उसको ही अवश्य आमंत्रित करता हूं। इसलिये कि ऐश्वर्यवान परमात्मा हमारी मनो कामनाओं को पूर्ण करे

पालक वही रक्षक वही महान शूरवीर वही।
जिसको बुलाते हैं सभी मैं भी बुलाऊं उसको ही।

منتر نمبر ۳۳۴ — کھنڈ ۱۱

گنہگاروں سے مال و زر اور سکھ چھین لیتا ہے!

यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं
हरीणां रथ्यां३ विव्रतानाम् ।
प्र श्मश्रुभिर्दोधुवदूर्ध्वधा भुवद्वि
सेनाभिर्भयमानो वि राधसा ॥३॥

(اِندرم یجامہے) ہم اُپاسک (عابد) جَن اِندر یگیہ کرتے ہیں، یعنی اِیشور کی پُوجا ست سنگ کرتے ہوئے اپنے کو اُس کے حوالے کرتے ہَیں، جو (بجری دکھشنم) انصاف کا ترازو لے کر سب کو بڑھا رہا ہے، جو اِس کا بجر ہتھیار ہے اور جو (وِورِتا نام ہری نام رتھیّم) مختلف کارہائے سرانجام دینے والے اِندری رُوپ گھوڑوں کو آتما رتھی کے ذریعے چلوا رہا ہے، (شمشرُو بھی پری دودھُووت اُوردھو دھا بھُووت) سُورج کی کرنوں کے ذریعے دُنیا بھر کے روگوں کو دُور کرتا اور عرشِ بریں کے ستاروں وغیرہ کو بھی دھارن کر رہا ہے، اَور وہ (سینا بھی وِرا دھسا بھئے مانہ) اپنی عجیب و غریب طاقتوں کے ذریعے دُشٹ پاپی جنوں کا دھن، سُکھ اور آرام چھین کر اُن کو خبردار بھی کرتا رہتا ہے۔

ے کرتے یجن اُس کا جو سُورج تاروں کو چمکا رہا
بدکاروں سے دھن چھین اپنی ہستی سے ہے ڈرا رہا

334 —पापियों से धन बल आदि छीन लेता है—

हम उपासक जन इन्द्र यज्ञ करते हुए अपने ईश्वर के समर्पण करते हैं। जो न्याय का तराजू लेकर अपने वज्र से सब पर शासन कर रहा है। आत्मा रथी द्वारा अनेक कार्यों के साधक इन्द्रिय रूपी घोड़ों को भी चलवा रहा है। सूर्य किरणों से जहां विश्व भर के रोगों को दूर करता है वहां द्यौलोक के नक्षत्रों से भी ऊपर सब को धारण कर रहा है। एवं अपनी अद्भुत शक्तियों के द्वारा पापी जनों का धन सुख और आराम छीन कर उन्हें सावधान करता रहता है।

करते यजन है उसका जो सूरज को है चमका रहा।
पापियों से छीन धन उन को है जो धमका रहा।

منتر نمبر ۳۳۵ **ہم اُس اِندر کی پُوجا کرتے ہیں** کھنڈ ॥

सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं
महामपारं वृषभं सुवज्रम् ।
हन्ता यो वृत्रं सनितोत वाजं
दाता मघानि मघवा सुराधाः ॥४॥

جو پرمیشور (ستراہنم، دادھرشم) ستیہ سے استیہ کو مارتا ہے اَور پاپوں کا وِناش کرتا ہے' (تُومرم، مہام، اپارم) عظیم اور عظمتِ دُنیا تھا بے کنار ہے' (وِرشبھم، سُوبجرم) جہاں آنند کی بارش برساتا ہے وہاں انصاف کے زبردست ہتھیار بجر کو ہاتھ میں رکھتا ہے اَور (وِرترم ہنتا اُت واجم سنتا) خیالات بد کو دُور کرتا اور گیان بل طاقتوں کا دینے والا ہے جو (مگھانی داتا مگھوا سُرادھاہ) دھن دولت کا دانی' مال و زر کا بھنڈار اور تمام کاموں کو پورا کرنے والا ہے۔ ہم اُس اِندر کا یگ' پُوجا اور ست سنگ یا عبادت کرتے ہیں۔

بے کنار ہے جس کی طاقت دولتیں جس کی بہیں
بجر دھاری ستیہ رُوپ اُس اِیش کی پُوجا کریں

335 —उसकी ही उपासना करनी चाहिये—

परमात्मा आसुरी वृत्तियों का नाशक पापों को दूर भगाने वाला, महान और अपरमपार है। जहां आनंद का वर्षक है वहां न्याय के वज्र को भी धारण किये हुए हैं। अमृत भोग और ऐश्वर्य का भण्डार होकर सभी कार्यों का पूर्ण करने वाला है। हमें उसकी ही उपासना करनी चाहिये।

अपरमपार है जिसकी शक्ति दौलतें जिस की बहें।
वज्रधारी सत्य रूप उस ईश की पूजा करें।

منتر نمبر ۳۳۶ **تجھ سے طاقت پاکر ادھرمی کو دبا سکیں** کھنڈ ۱۱

यो नो वनुष्यन्नभिदाति मर्त्त
उगणा वा मन्यमानस्तुरो वा ।
क्षिधी युधा शवसा वा तमिन्द्राभी
ष्याम वृषमंगस्त्वोताः ॥५॥

(یہ مرتہ ونوشیتن نہ ابھی داستی) جو ہم عابدوں کو مارنا چاہتا ہوا حملہ کرتا ہے اور جو منیہ مانہ واترہ واگنہ) شیطانی ٹولیوں سے مغرور ہو اور مار کاٹ کے جذبے سے متاثر ہو کر دھرماتماؤں کو فنا کرنا چاہتا ہے، ہے اندر پرمیشور! (تم کھشدھی) اُس اُس کا آپ وناش کریں، (ورش منہ اندر) آنند کی ورشا کرنے والے اندر! (تسوتا شوسا یدھا وا لم ابھی شیام) آپ سے محفوظ ہوئے ہم اپنی طاقت سے اُن بُرے خیالات اور بدکار انسانوں کو پامال کر سکیں۔

ٹولیاں بدمعاشوں کی لے، آ کر ڑیں کرتا ہے
کر دو فنا اُس کو پربھو جو نیکوں پر حملہ کرے

336 —तेरी शक्ति से अधर्मी को दबा सकें—

जो हम उपासकों को मारना चाहता हुआ आक्रमण करता है। अथवा अभिमानी होकर धरमात्माओं को नष्ट करना चाहता है हे इन्द्र परमेश्वर उसका आप विनाश करें। आनन्द के वर्धक इन्द्र ! आप से सुरक्षित हुए हम उन पापों और पापियों पर जय पा सकें।

हे इन्द्र जो हिंसक मनुष्य हम को दबायें रोष में।
उसको तुम्हारी शक्ति से रक्षित हुए हम पीस दें।

منتر نمبر ۳۳۷   **وہ ہے اِندر پرمیشور**   کھنڈ ۱۱

२ ३ १ २   ३ २ ३   १ २   ३
यं वृत्रेषु क्षितयः स्पर्धमाना
२ ३ १ २   ३ १ २   ३   १ २
यं युक्तेषु तुरयन्तो हवन्ते ।
१र   २र   ३   २ ३ १र २र ३
यं शूरसातौ यमपामुपज्मन्
१र   २र   ३ १ २   ३ १र   २र
यं विप्रासो वाजयन्ते स इन्द्रः   ॥६॥

(یم ورِتریشو کھشتی یا سپردھ مانہ ہوَنتے) جب بُرے خیال عقلِ سلیم پر غلبہ کر لیتے ہیں تب اُپاسک لوگ ایک دوسرے سے بڑھ چڑھ کر جس کو پکارتے یا بلاتے ہیں (یُکتشو تُریَنتہ یم) اور یوگ سادھنا میں بڑھے ہوئے یوگی جن جس کو پالنے کی زبردست خواہش کرتے ہیں اور (یم شوُرساتوَ) شرارتی عناصر کو دبانے کی طاقت حاصل کرنے کے لئے جس کو بُلایا جاتا ہے اور (اپام اُپ جمن یم) آبیاری کرنے کے بعد پیداوار بڑھانے کی خواہش سے کسان لوگ جس کو پکارتے ہیں اور (وپراسہ یم واجینتے) دانشور لوگ عقل و دانش کے حصُول سے جس کی پرارتھنا کرتے ہیں (سہ اِندر) وہ ہی اِندر ہے۔

ؔ گھِر کر بدی سے اور پانے نیک عقل جس کو پکاریں
وہ جگت کا اِندر، جس کو سب طرف سے سب پکاریں

337   —वह है इन्द्र परमेश्वर

आसुरी वृत्तियां जब मेधा बुद्धि को घेर लेती है तो उपासक जिसको बढ़ चढ़ कर पुकारते हैं। योग साधना में विघ्न बाधाओं को दूर करने योगी जिसको बारंबार बुलाते हैं। खेती सींचन के पश्चात् अन्नादि उत्पादन की वृद्धि के लिए जिसकी पुकार होती है। पापी शत्रु को जीतने के लिए वीर जिसका स्मरण करते और ज्ञानी जन मेधा प्राप्ति के लिये जिसकी स्तुति करते है वह है इन्द्र परमेश्वर।

पाप से घिर कर निवृति के लिये जिसको पुकारें।
वह जगत का इन्द्र जिसको सब तरफ से सब पुकारें।

منتر نمبر ۳۳۸ — **بادلوں کی طرح آنند برسانے والے** — کھنڈ ۱۱

इन्द्रापर्वता बृहता रथेन
वामीरिष आ वहतं सुवीराः ।
वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा
वर्धेथां गीर्भिरिडया मदन्ता ॥७॥

(اندراپروتا) بادلوں کی طرح ایشوریہ اور آنند کی ورشا کرنے والے بھگوان! (برہتا رتھین وامی رش آوہتم) اِس مہان سنسار رُوپی رتھ سے آپ ہمیں منوہر اُتم حسب خواہش پھلوں کو حاصل کراؤ اور ہمیں (شوویراہ) ویر شُور سنتان پردان کرو (دیوا ادھورلیشو ہویانی ویتم) آپ کیونکہ ایشوریہ اور آنند دونوں کے بھنڈار ہیں، لہٰذا پریم بھگتی پُورن یگیوں میں ہماری آہوتی رُوپ بھینٹوں کو سویکار کیجئے اور (اِڈیا گیربھی مدنتا وردھے تھام) اُس سے آنندت ہوکر ہمیں بڑھائیں۔

ہے اِندر پربت کی طرح آنند کی وَرشا کرو
یگیہ میں بیٹھو ہمارے وِیر وَرسنتان دو

338 **—आनंद वर्षक भगवान—**

मेघों के समान ऐश्वर्य और आनंद वर्षक भगवान ! संसार रुपी रथ से हमें अभीष्ट फलों को प्राप्त कराओ तथा शूर वीर सन्तान प्रदान करो। प्रेम भक्ति पूर्ण यज्ञों में हमारी आहुतियों को स्वीकार कर अपनी आशीर्वाद से हमें बढ़ाएं। सदैव वेद वाणियों से आपके गुण कीर्तन करते रहें।

हे इन्द्र पर्वत की तरह आनंद की वर्षा करो।
यज्ञ में बैठो हमारे, वीर वर सन्तान दो।

منتر نمبر ۳۳۹ — **برہم مہورت میں پرمیشور کو گاؤ** — کھنڈ ۱۱

१ २ ३ २ ३ १ २
इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा
३ १र २र ३ १ २ ३ १ २
अपः प्रैरयत् सगरस्य बुध्नात् ।
१र २र ३ २ ३
यो अक्षेणेव चक्रियौ
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
शचीभिर्विष्वक्तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम् ॥८॥

(اِندرائے) پرمیشور کا بھگت (سگرسیہ بدھنات گرا پر یریت) رات کے پچھلے پہر میں وید بانی سے حمد و ثنا کرتا ہے۔ (انی شِت سرگاہ اپہ پر یریت) جو پرارتھنائیں کبھی نشٹ نہیں ہوتیں، اُسی امرت ویلے میں ہی اپنے ست کرموں کو بھی بھگوان کے ارپن کرتا ہے، پرمیشور وہ ہے کہ (یہ شچی بھی پرتھویم اُت دیام وشوک تستمبھ) جس نے اپنی طاقتوں سے ارض و سما کو تھام رکھا ہے، (اِو اکھشن چکری یو) جیسے کہ دُھری میں چکر کے چاروں طرف کے آرے، اُسی پرمیشور کے چرنوں میں ہی ہمارا سمرپن ہے۔

ے سپُردم بتو مایۂ خویش را ۔ تو دانی حساب کم و بیش را

339 —ब्रह्म महुर्त में ईश गुण गा—

प्रभु का भक्त रात के पिछले प्रहर में वेद वाणी द्वारा इन्द्र का गान करता है जो प्रार्थनाएं कभी नष्ट नहीं होतीं। इसी अमृत वेला में ही उपासक अपने शुभ कर्मों को भगवान के अर्पण करता है परमेश्वर वह है कि जिसने अपनी शक्ति से द्यौ और पृथिवी को थाम रखा है जैसे धुरी में चारों ओर अररे। उसी को हमारा समर्पण है।

रथ के धुरे चक्र से जैसे जुड़े रहते स्वयं।
ठहरा उस की शक्ति से है भूमि द्यौ वैसे स्वयं।

منتر نمبر ۳۴۰ کھنڈ ۱۱

جیسے پتا پُتر کا پالن کرتا ہے ویسے ہی ہماری رکھشا کیجئے!

२ ३ १ २ ३ १
आ त्वा सखायः सख्या
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
ववृत्युस्तिरः पुरू चिदर्णवाञ्जगम्याः ।

पितुर्नपातमा दधीत वेधा
अस्मिन् क्षये प्रतरां दीद्यानः ॥६॥

پرمیشور دیو! (سکھا سکھیا تو اآوورت یوُ) ہم آپ کے سکھا (سچّے دوست) ہیں، اِسی دوستی کے صدقے ہم آپ کو اپنی طرف کھینچتے ہیں۔ کیونکہ آپ (اپور وچیت ترہ ارنوان جگمیاہ) بڑی مدت سے ہم سے اوجھل تھے، خوش قسمتی سے ابھی ہمارے ہردیہ آکاش میں (دِل کے آئینے میں ہے تصویرِ یار) آپ (دیدھاہ پُتر تیاہم آدودھیت) ہماری ایسے رکھشا پالن کیجئے جیسے پِتا اپنی سنتانوں کی کرتا ہے، آپ ہی جگت کے واحد ودھاتیک (قانون مرتب کرنے والے) ہیں، لہٰذا ہمارے (اسمن کھشیے پرترام دی دیانہ) دِلوں کو اپنے نُور سے خوب روشن کیجئے۔

ـــہ اِس طرح میری ہو رکھشا آپ کے سہواس میں
باپ کی رکھشا میں ہوتا پُتر جیسے پاس میں

340 —पिता जैसे पुत्र को—वैसे रक्षा कीजिये—

परमेश्वर देव, हम आपके सखा हैं। इसीलिये आपको अपनी ओर खैंचते हैं। चिरकाल से आप हम से ओझल थे। सौभाग्य वश अभी हमारे हृदय आकाश में विद्युत के समान चमके हैं। भगवन! हमारी ऐसे रक्षा कीजिये जैसे पिता अपनी सन्तानों की करता है। आप ही तो जगत के एक मात्र विधाता हैं अतः अपनी ज्योति से हमारे हृदयों को प्रकाश पूर्ण कर दें।

इस तरह मेरी हो रक्षा आप के सहवास में।
बाप की रक्षा में होता पुत्र जैसे पास में।

منتر نمبر ۳۴۱ کھنڈ ۱۱

کون زندہ ہے؟ سچ بولنے والا!

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य
शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून्।

३ १ २ ३ १ २ ३ १२ २२
आसन्नेषामप्सुवाहो मयोभून् य एषां
३ २ ३ २ ३ १ २
भृत्यामृणधत् स जीवात् ॥१०॥[३।११]

(کہ ادّیہ رِتسیہ دُھری گاہ نیکتے) کون ہے جو آج کے زمانہ میں ستیہ کی دُھری میں بانی کو جوتتا ہے یعنی حق کی آواز کو بلند کرتا ہے اور پھر اُس کا ملنا تو اور مشکل ہے جو آدمی کہ (شِمی وتہ بھامِنہ پرہنایُون) اُس ستیہ بانی کے مطابق جس کا عمل ہو اور پھر اُس ستیہ بانی کو بنا جھجک اور خوف کے برملا بول سکے؟ ہاں! ایسی ستیہ بانی اور کرم (ایشام آسن) اُن عابد اُپاسکوں کے ہوتے ہیں کہ جن کے (اپ سُو واہ) رس اور لہو کے اندر ایک ایک رگ میں اُس کا پرواہ چل رہا ہے۔ بلاشک ایسی ستیہ بانی کے نتائج یا اثر (میو بھُون) لاانتہا خوشیوں کو دینے والے ہوتے ہیں، (یہ اشیام بھُوتیام رِن وحت سہ جیوات) جو آدمی اِس ستیہ بانی کا بندۂ بے دام ہو جاتا ہے، وہی حقیقت میں زندہ ہے۔ دوسرے تو مُرے سمان ہیں۔ (مہاپُرشوں کے جیون شاہد ہیں)۔

ے
ہے کون ایسا آج جو بے خوف ہو کر سچ کہے
جیسا کہے ویسا کرے، بندہ خدا وہ ہی جئے

341 —कौन जीवित है ? सत्य वक्ता—

कौन है जो आज के युग में सत्य की धुरी में वाणी को जोतता है। और फिर उसका मिलना तो और दुर्लभ है जिसका कर्म सत्य वाणी के अनुरूप हो, एवं उस सत्य वाणी को बिना हिचक और भय के बरमला बोले। हां ऐसी सत्य वाणी और तदनुकूल आचरण उन उपासकों के होते हैं, जिनके रस और रक्त में उसका प्रवाह प्रति क्षण चल रहा है। निसंदेह सत्य वाणी का फल असीम आनंदों को देने वाला होता है। वस्तुतः संसार में सत्यवान ही जीवित है अन्य तो मृत समान ही हैं।

है कौन ऐसा आज जो भय रहित होकर सच कहे।
जैसा कहे वैसा करे, ईश भक्त वही जिये।

منتر نمبر ۳۴۲ — کھنڈ ۱۲

ہمیشہ آپ کا پُوجن کرتے ہیں!

१२ ३१२ २र ३२३१२
गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।
३ १ २ ३ २३१ २
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे ॥१॥

(شت کرتو) بے شمار کار ہائے نمایاں کرنے والے عالم کُل ایشور (اوبرہمانہ ونشم اُدّے مرے) جیسے ویدوں کو پڑھ کر نیک کام کرنے والے اشخاص اپنے خاندان آل اولاد کو نیک اور صاف سے بھر کر پر شارتھی بناتے ہیں، ویسے ہی (گایتری نا) قابلِ تعریف راگ وِدیا کو جاننے والے ایشور کے اُپاسک (توا گاینتی) سام وید وغیرہ کے گیتوں سے مہا گاتے ہیں، (ارکنہ ارکس توا ارچنتی) اور جو وید منتروں کے پڑھنے کی مشق رکھتے ہیں، وہ سب لوگوں کے ساتھ مل کر پُوجنے کے لائق آپ کا ہمیشہ پُوجن کرتے ہیں۔

ے کاموں کا ہے کیا شمار ہے پُوجیہ لوگیہ ایشورا!
پُوجا سے ہم ہیں آپ کو پرسن کرتے گیت گا

342— सामगान से आपकी स्तुति— खंड—12

असंख्य कर्मों के कर्ता शतक्रतो ! सामगान कर्त्ता आप का ही गान करते हैं। स्तोता तेरी स्तुति और भक्त तेरा पूजन करते हैं चारों वेदों के विद्वान अपने वंश ध्वज दण्ड द्वारा तुझे ऊपर उठाते वा उच्च पद पर मानते हैं।

शतक्रतु भगवान सब पूजा तुम्हारी ही करें।
सामगान से अर्चना कर गीत गा तुम को पढ़ें।

منتر نمبر ۳۴۳ — کھنڈ ۱۲

ویدوں کی سب بانیاں ایشور کا وِیاکھیان کرتی ہیں!

२ ३ १ २ ३१ २ ३ १२
इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः ।
३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥२॥

(سُمدر وجیشٹھم رتھی نام رتھی تمم واجانام اِزتم ست پتم) جو پرمیشور کہ سمندروں اور سب طرف خلا میں سمایا ہوا ہے۔ رتھیوں میں مہارتھی ہے جو اَن بل اور گیان کا سوامی ہے اور جو سب کا سچا مالک اور پالک ہے، (وشوا گِراہ اندرم ورِدھنتم) ویدوں کی اور ہماری سب بانیاں اُسی اندر پرمیشور کا دیاکھیان کرتی ہیں۔

ھ ہے جو مالک اَن دھن بل گیان کا جانا ہوا
بانیاں سب وید کی گاتی اُسے مانا ہوا

343 —सभी वाणियां ईश्वर का व्याख्यान करती—

समुद्र के समान व्यापक, रथियों में महारथी विराट ब्रह्माण्ड रथ के स्वामी इन्द्र की सब वाणियां व्याख्यान करती है जो सत्य रक्षक, सर्व-पालक अन्न जल आदि का स्वामी है।

है जो स्वामी अन्न धन बल ज्ञान का जाना हुआ।
वाणियां सब वेद की गाती उसे माना हुआ।

منتر نمبر ۳۴۴ بھگتی رس منش کو امرت کر دیتا ہے! کھنڈ ۱۲

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम् ।
३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३२ ३ १ २
शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारा ऋतस्य सादने ॥३॥

(اندر) ہے پرمیشور! آپ (سُتم اِمم پیب) میرے اس بھگتی رس کو سویکار کیجئے، یہ پریم رس (جیشٹھم امریتم) اعلےٰ ترین ہے جو آدمی کو امرت بنا دیتا ہے اور زندگی کو (مدم) حقیقی مسرتوں سے بھر دیتا ہے، (رِتسیہ سادنے) میرے اس سچے خانۂ دل میں (شکرسیہ دھارا تُوا ابھی اکھشرن) شدھ پوتر بھگتی رس کی دھارائیں آپ کے لئے بہہ رہی ہیں۔

ھ ہے اندر پیو پریم رس اُمت رسیلا ہے بنا
آپ کی کرپا سے میرے ہردے کے اندر بہا

344 —भक्ति रस अमृत बना देता है—

इन्द्र परमेश्वर ! आप इस भक्ति रस को स्वीकार कीजिये । जो अमृत प्रदान करने वाले दिव्य आनंद का उपभोग है । जो हमें अमृत बना रहा है जिसके द्वारा आप के लिए इस प्रेम रस की धारायें मेरे हृदय में बह रही हैं ।

हे इन्द्र पीओ प्रेम रस उत्तम रसीला है बना ।
आप की कृपा से मेरे हृदय के अंदर बहा ।

منتر نمبر ۳۴۵ رُوحانی دَولت دونوں ہاتھ سے دیجئے! کھنڈ ۱۲

यदिन्द्र चित्र म इह नास्ति त्वादातमद्रिवः ।
राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर ॥४॥

(چتر ادریوہ اِندر) عجیب وغریب ہستی کائنات اِندر اِیشور! (ایہہ یت مے تُوادا تم ناستی) سب کچھ دے کر بھی اِس جیون میں اگر آپ نے مجھ کو نہیں دیا۔ (تت رادھ) تو وہ اُپاسنا کا دھن ہے' (وِ دوسو) ہے سب دولتوں کے مالک! (نہ تت رادھ آبھر) ہمیں وہ آنند دھن بھگتی کا دیجئے اَور (اُبھے یا ہست یا) دونوں ہاتھوں سے بھر کر دیجئے۔

اپنی بھگتی کا وہ دھن جواب تلک ہے نہیں دیا
دونوں ہاتھوں سے پربھو دو' زندگی کا کیا بقا

345 —दोनों हाथों से दीजिये—

हे पूजनीय इन्द्र विचित्र अद्भुत परमेश्वर ! सब कुछ देकर भी इस जीवन मे यदि आपने मुझ को नहीं दिया तो वह उपासना का धन है । हे सर्वधन सम्पन्न ! आप हमें वह अध्यात्म धन दीजिये और दोनों हाथों को भर कर दीजिये ।

अपनी भक्ति का वह धन जो अब तलक है नहीं दिया।
दोनों हाथों से प्रभु दो ज़िंदगी का क्या पता ?

منتر نمبر ۳۴۶ کھنڈ ۱۲

انتردھیانی کی بھگوان سُنتے ہیں!

श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति ।
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि ॥५॥

ہے اندر پرمیشور! (یہ ترشچیا) جو عابد انتردھیان ہوکر (بحالتِ یکسوئی)، (توا سپریتی) آپ کا سامگم کرتا ہے اُس (سُووِیرسیہ گومتہ) اُتم ویریہ وان بلوان اِندریوں کو جیتنے والے سادھک کی (ہوم شُرُدھی) فریاد کو سُنیئے اور (رایہ پُوردھی) رُوحانی دولت سے اُسے بھر دیجئے (مہان اسی) کیونکہ آپ عظیم اور فراخ دل ہیں۔

۵ میری پکاریں بھی سنو مَیں آپ میں ہُوں رما ہوا
آپ میں ہی رہنا چاہتا ہُوں سدا مَیں جُڑا ہوا

346 —अन्तर्ध्यानी भक्त को सुनें—

हे इन्द्र परमेश्वर! अन्तर्ध्यान होकर जो उपासक आपका सामगान करता है उस जितेन्द्रिय वीर्यवान साधक की प्रार्थना को सुनिये और विद्यादि धनों से उसे भर दीजिये। वस्तुतः आप महान उदार हैं।

मुझ भक्त की भी सुनो प्रभु मैं आप में हूं रमा हुआ।
आप में ही रहना चाहता हूं सदा मैं जुड़ा हुआ।

منتر نمبر ۳۴۷ کھنڈ ۱۲

ہردیہ میں پرگٹ ہوویں!

असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि ।
आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियं
रजः सूर्यो न रश्मिभिः ॥६॥

ہے اندر پرمیشور! (تے سوما ساوی) آپ کے لئے بھگتی رس تیار ہوچکا ہے۔

(شوشٹھ دِھشنو آگہی) مہابلوان پرمیشور! آسُری ورتیوں کو ہٹا دینے والے! ہمارے ہردیوں میں پرگٹ ہو دیں، (تواّ اندریم آ پرنکتو) آپ کے ساتھ ہمارا من اِندریوں کے ساتھ یوگ ابھیاس سے ایسا ملن ہو جائے، (نا سُوریہ رشمی بھی رجہ) جیسے سُوریہ کی کرنیں زمین کے ایک ایک ذرّے کے ساتھ گھُل مِل جاتی ہیں۔

۵ آسُری بھاووں کے ناشک شکتی کے بھنڈار اِیش
بھگتی رس کے سوم کو سویکار کرنے آئیے

347 —हृदय में प्रगट होवें—

हे परमेश्वर ! आप के लिये भक्ति रस तय्यार हो चुका है। महाबल-वान आसुरी वृत्तियों वा अज्ञान के नाशक इन्द्र ! हमारे आत्माओं में प्रगट होवें जैसे सूर्य, किरणों से पृथिवी आदि लोकों को भर देता है। वैसे हमारी मन इन्द्रियों को अपनी भक्ति से भर दीजिये।

आसुरी वृत्तियों के नाशक शक्ति के भंडार इन्द्र,
भक्ति रस के सोम को स्वीकार करने आईये,

منتر نمبر ۳۴۸ — آؤ ہمارے آنگنے — کھنڈ ۱۲

آؤ ہمارے آنگنے

एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम् ।
दिवो अमुष्य शासतो
दिवं यय दिवावसो ॥७॥

ہے اِندر پرمیشور! (ہری بھی آیاہی) اپنی دُکھوں کو دُور کرنے والی طاقتوں کے ساتھ آئیے اور ہمارے اندر ظاہر ظہور ہو جائیے، (کنو سیہ سُوشٹُوتم اُپ) اپنے بھگت آتما کی سُتتی حمد و ثنا کو پاس میں آکر سُنئے، (دِوا وسو) پُورن آنند میں واس کرنے والے اِیشور! (امُشیہ دِوہ شاسنہ دِوم یییہ) دیو لوک اور دِوّیہ موکھش پر شاسن کرنے والے

اپنے جیوتی لوک کے آنند کو دیجئے۔

ے عرشِ زمیں عرشِ بریں پر راج آپ کا چمکتا
آؤ ہمارے آنگنے جس سے ہو نُور برستا

348 हे इन्द्र ! आप दुःख हरण करने वाली शक्तियों के साथ हमारे हृदयों में प्रगट होवें तथा मेधावी उपासकों की स्तुति को निकट से सुनिये पूर्ण आनंद में वास करने वाले इन्द्र ! दिव्य मोक्ष के शासक ! अपनी ज्योति को प्रदान कीजिये ।

शासक बने हो दिव्य तुम ऊंचे प्रकाशित लोक में ।
हे देव मुझ को ले चलो अपने निकट आलोक में ।

منتر نمبر ۳۴۹ — کھنڈ ۱۲

یہ بانیاں گائیں ہماری

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
आ त्वा गिरो रथीरिवास्थुः सुतेषु गिर्वणः ।
३ २ ३ १ २ ३
अभि त्वा समनूषत
१ २ ३ २उ ३ १ २
गावो वत्सं न धेनवः ॥८॥

(گِروِنہ) وید بانیوں سے بھجن کرنے لوگیہ اِیشور! (سوتیشو گِرہ آستھُو) ہمارے اندر بھگتی رس آگیا ہے، ہماری حمد و ثنائیں آپ کے لئے ہیں اور منتظر ہیں آپ کی' (اوِ رتھی) جیسے رتھ کا مالک گاڑی تیار کر کے انتظار کرتا ہے کسی کے آنے کی' ہماری (گاوہ ابھی تُو اُسم نُوشت) بانیاں آپ کا گُن کیرتن کر رہی ہیں۔ (نا دھینوہ وتسم) جیسے کہ دودھ پلانے والی گائیں اپنے بچھڑوں کو دیکھ کر رنبھاتی رہتی ہیں۔

ے دیکھ جیسے اپنے بچھڑوں کو رنبھاتی گئوئیں پیاری
یاد کر کے آپ کو یہ بانیاں گائیں ہماری

349 —यह वाणियां गायें हमारी—

हे स्तुति वाणियों से वंदनीय परमेश्वर ! तेरे प्रति सम्पन्न उपासना भक्ति प्रसंग और स्तोत्र तेरे ही आश्रित हो जाते हैं। जैसे रथवान प्राप्त स्थान को पाकर आश्रित हो जाते हैं और जैसे दुधारू गौएं अपने बछड़ों को देखकर पुचकारती हैं वैसे हमारी वाणियां तुझे पुकारती रहती हैं।

देख जैसे वत्स को अपने रंभाती गौएं प्यारी।
याद करके आपको यह वाणियां गायें हमारी।

منتر نمبر ۳۵۰ کب ہم کو بھگوان کا آشیرباد ملتا ہے؟ کھنڈ ۱۲

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्धैराशीर्वान् ममत्तु ॥९॥

جلدی آؤ پیارے عابدو! (اندرم ستوام شدھم سامنا شدھئی اُکتھئی) شدھ پوتر سام گان شانتی اور بھگتی کے منتروں سے اُس مہان شدھ پوتر بھگوان کا مل کر (ستوَن) گُن کیرتن کریں، وہ ایشور (وا ور دھوانسم ممّت آشیروان) نیک پاک دلوں سے وید منتروں کے ذریعہ کی گئی حمد وثنا سے خوش ہو کر ہمیں آشیرباد دیتا اور بڑھاتا ہے۔

؎ آؤ بھگتو دوستو! مل کر کریں اُس کی دُعا
آسیس پا جس کی بڑھیں گے دیگا وہ اسکی جزا

350 —भगवान का आर्शीवाद प्राप्त करें—

आओ प्यारे मित्रो ! शुद्ध पवित्र साम गान शान्ति तथा भक्ति के स्तोत्रों से उस महान ईश्वर का गुण गान करें जिसमे शुद्ध पवित्र हृदयों से स्तोत्रों से प्रसन्न हो कर वह हमें आर्शीवाद देकर बढ़ाएं।

आओ मित्र उपासको ! मिल उसकी हम वंदना करें।
आनंद की वर्षा से और आसीस से उसकी बढ़ें।

منتر نمبر ۳۵۱ کھنڈ ۱۲

دھنوں اور شہرتوں کے مالک

यो रयिं वो रयिन्तमो यो द्युम्नैर्द्युम्नवत्तमः ।
सोमः सुतः स इन्द्र
तेऽस्ति स्वधापते मदः ॥१०॥[३।१२]

ہے اُپاسکو! (رین تمہ یہ وہ) جو دھنوں کا سوامی ہے وہ تمہیں یوگ دھن بخشے (یہ دیومن وتمہ) جو یش کا سوامی (عالمی شہرت کا مالک) ہے، وہ تمہیں یش کیرتی عطا کرے (سومہ سُتنہ) ہم میں بھگتی رس پیدا ہو گیا ہے، ہے اندر (سہ تے اسنی) وہ آپ کے لئے ہے، (سودھاپتے مدہ) ہے بھگتی رس اُن کے سوامی! ہمارا بھگتی رس بھی آپ کی نذر ہے۔

برگِ سبز است تحفۂ درویش ۔ گر قبول اُفتد زہے عز و شرف

351 —धनों और यशों का स्वामी—

हे उपासको ! जो धनों का स्वामी और जो महान यशस्वी है वह तुम्हें ऐश्वर्य और यश प्रदान करे । हे इन्द्र हमारे अंदर जो भक्ति रस उत्पन्न हो गया है वह आप के लिये है और आप की ही भेंट है ।

सोमरस जो आत्मा में है बहा है आपका ।
आपका ही आप को कर भेंट आता है मजा ।

منتر نمبر ۳۵۲ کھنڈ ۱

چوتھا ادھیائے

اپنے آپ کو سمرپت کر دے!

प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर ।
अरङ्गमाय जग्मयेऽपश्चादध्वने नरः ॥१॥

(یہی شتے وِدُشے) تمہیں بڑھانے والے اور تمہاری بھگتی کو چاہنے والے عالم کُل (ارنگ مائے جگمئے) گتی رہت ہوتے ہوئے بھی حرکت پذیر اور (اپشچات ادھوے

اسمئی) کبھی پیچھے نہ ہٹنے والے سب کے اگوُوا نیتا اس پرمیشور کے لئے ہے اُپاسک!
تو (وِشوانی بھر) اپنا سب کچھ ارپن کر دے، (خرہ) اور ہے نرناریو! (پرتی) منِ میں سے بھی
ہر ایک اپنا سب کچھ بھگوان کے حوالے کر دو۔

سے نیتا ہے سارے جگت کا سروگیہ جو پرماتما
اُس کے لئے ارپن کرو جو کچھ بھی ہے سب اپنا

—चतुर्थ अध्याय— खंड-1

352 —अपने आपको समर्पित कर—

हे उपासक ! तुम्हारी वृद्धि करने वाले, तुम्हारी भक्ति रस की इच्छा करने वाले, सर्वज्ञ ,गतिमान, कभी पीछे न रहने वाले अग्रगामी नेता परमेश्वर के लिये अपना सर्वस्व अर्पण कर दे।

नेता है सारे जगत का सर्वज्ञ जो परमात्मा।
उस के लिये अर्पण करो जो कुछ भी है सब आपना।

منتر نمبر ۳۵۳ کھنڈ ۱

سخت کلامی چھوڑ، میٹھا بول

आ नो वयो वयःशयं महान्तं गह्वरेष्ठाम् ।
महान्तं पूर्विणेष्ठामुग्रं वचो अपावधीः ॥२॥

اے مہذب انسان! (نہ ویہ دیہ) ہمارے سب کے اندر (شیم مہانتم گہورلیشٹھام
مہانتم پوُر وِبنیشٹھام) گپت رُوپ ہیں فراخ دل ہیں سب سے مہان اور ہمارے افعال اور
نتائج کے مالک پرمیشور کے لئے اپنی انتہائی محبت و پریم کی بھینٹ کر اور (اُگرم وچہ اپاودھی)
سخت کلامی سب کے لئے چھوڑ کر مہذب بول!

سے ہمارے اندر مقام جس کا ہمارے کرموں کا جان جاناں
نذر کریں پریم بھگتی اُس کو، سبھی سے بولیں مہذبانہ

353 — उग्रवाणी का परित्याग —

हे सभ्य पुरुष ! हम सब के अंदर रमे हुए हृदय गुहा में स्थित महान्तो महान, हमारे पूर्व किये कर्मों के अधिष्ठाता भगवान के लिये भक्ति को भेंट कर और उग्रवचनों को छोड़कर प्रिय वाणी बोल ।

कर्म फलों के विधाता हृदय में भगवान हो ।
छोड़ देवें उग्रवाणी ऐसी अनुकम्पा करो ।

منتر نمبر ۳۵۴ — کھنڈ ۱

آپ کو اپنی طرف لاتے ہیں!

आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि ।
तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्रं शविष्ठ सत्पतिम् ॥३॥

(شوشٹھ) ہے بلوان اندر پرمیشور! (اُوتیّے سومنائے) اپنی حفاظت اور سُکھ آرام کے لئے (رتھم ییتا) آدمی جیسے اپنے رتھ گاڑی سواری کو چلاتا ہے، اُسی طرح (تُوی کُرمی) عظیم طاقت ور (رتی سہم) دشمنوں کو تخس نخس کرنے اور دکھوں کو مٹا دینے والے (ست پتیم تُوا اندرم ورتیاسی) سچے نیکوں کے محافظ آپ اندر کو ہم اپنے پاس لاتے ہیں ۔

دُرجنوں کو مارتے اور سجّنوں کو پالتے
اپنی رکھشا کے لئے ہم آپ کو ہیں پاس لاتے

354 हे महाबलवान इन्द्र ! अपनी सुरक्षा के हेतु जैसे मनुष्य अपनी गाड़ी को चलाता है, उसी प्रकार हम उपासक दुख विनाशक कष्टों को परा भूत करने वाले सत्यपति आप परमेश्वर को अपने निकट लाते है ।

दुर्जनों को मारते और सज्जनों को पालते ।
अपनी रक्षा के लिए हम आपको हैं निहारते ।

منتر نمبر ۳۵۵ کھنڈ ۱

عابدوں میں ظاہر ظہور

२ ३ २ ३ १ २ ३ १२ २र
स पूर्व्यो महोनां वेनः क्रतुभिरानजे ।
२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
यस्य द्वारा मनुः पिता देवेषु धिय आनजे ॥४॥

(پُوروِیّہ مہونام کرتُوبھی) وہ پرمیشور ازلی طاقتوں میں عظیم طاقت اپنے بھگتوں کے کے شریشٹھ کرموں یگیوں سے (وینہ آن جے) امرت ہوں یا آہُوتی پریم بھگتی رس کے لئے پرگٹ ہوتا ہے، (لیسیہ دوارا) جس یگیہ کے ذریعے (دِھیہ دیویشُو پتا منو آن جے) کرم شیل عابدوں میں سب کا پالک وہ پتا پرمیشور ظاہر ظہور ہوتا ہے۔

ے کرم شیلوں عابدوں میں ہوتا ہے ظاہر ظہور
ازلی ابدی طاقتیں جس کی ہیں سب جی حضور

355 यह परमेश्वर पूज्यों में प्रमुख अनादिकाल से महान है। अपने भक्तों के श्रेष्ठ कर्मों तथा उपासना यज्ञों के द्वारा यह उपासक हृदय में प्रगट होता है और उन्हें सब का पालक पिता सद् बुद्धियों और सत्कर्मों को प्रदान करता है।

कर्मशील उपासकों में होता जब उसका जहूर।
सत्यकर्म और बुद्धियां मिलती हैं उस को ही जरूर।

منتر نمبر ۳۵۶ کھنڈ ۱

سچے گیان اور سچے کرموں سے ہی سچی خوشی

२ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ २३ २
यदी वहन्त्याशवो भ्राजमाना रथेष्वा ।
१ २ ३२उ ३ २ ३ १ २
पिबन्तो मदिरं मधु तत्र श्रवांसि कृण्वते ॥५॥

ستیہ گیان اور ستیہ کرم (یت رِی آشوہ بھراجمانا ہ) جب ہی تیز ہو کر آپا سکوں

ہیں چمک اُٹھتے ہیں، تب یہ اعلےٰ ترین جذبات عابدوں کے (رتھے شوُ) اجسام رُوپی گاڑیوں میں (آدہنتی) بھگوان کو بُلاتے ہیں، تب ہی وہ (مدرم مدھو ہپونتاہ) آنند میں مست سرشار ہو کر جھوم اُٹھتے ہیں، (اتر شروانسی کرن وتے) تب اُن کے سب کام اُن کی شہرت کو بڑھاتے ہیں۔

ے
ایش بھگتوں میں چمکتے سچّے گیان اور کرم جب
خُوشیوں میں ہیں جھوم اُٹھتے ایش کو پھیلاتے ہیں تب

356—सत्य ज्ञान कर्म से सम्पदा तथा यश की प्राप्ति—

जहां शरीर रूपी रथों में बैठे हुए उपासकों में सत्य ज्ञान और कर्म तीव्र होकर प्रकाश पूर्ण हो जाते हैं तब ही वे परमेश्वर का आह्वान कर के मधुर आनंद रस का पान करते हुए अपने जीवन में अन्न, धन और यश को प्राप्त कर लेते हैं।

ईश भगतों में चमकते सत्य ज्ञान और कर्म जब।
खुशियों में हैं झूम उठते यश को फैलाते हैं तब।

منتر نمبر ۳۵۷ کھنڈ ۱

اِنسانات کی بہبُودی کیلئے اِیشور کا بیان

१ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २
त्यमु वो अप्रहणं गृणीषे शवसस्पतिम् ।
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रं विश्वासाहं नरं शचिष्ठं विश्ववेदसम् ॥६॥

اے اِنسانو! (وہ تیم اُو اندرم گرنیشے) تمہارے گیان کے لئے مَیں اندر پرمیشور کا بیان کرتا ہوں کہ جو اِیشور اُپاسک کو (اپرہنم) موت سے بچاتا ہے (شوسہ سپتم وشوا ساہم) بل شکتی کا مالک اور سب دُکھ بادھاؤں کو دُور کرنے والا ہے اور (نرم شچشٹھم وشو ویدسم) سنسار کا نیتا، ستیہ گیان اور ستیہ کرموں میں ٹھہرا ہوا تمام علوم و فنون اور دولتوں کا مالک ہے۔

ے درحقیقت مالکِ ہر شے خدا است

اِیں امانت چند روزہ نزدِ ما است

357 —परमेश्वर की महिमा—

हे मनुष्यो ! तुम्हारे ज्ञान के लिए मैं उस परमेश्वर का वर्णन करता हूं जो न मारा जाने वाला, अहिंसक, बल का स्वामी सब का पालक सर्व-विघ्न विनाशक सब का नेता तथा सर्व शक्तिमान है।

महिमा गाऊं उसकी जो बल ज्ञान का भण्डार है।
विश्व नेता विघ्न नाशक सब का पालन हार है।

منتر نمبر ۳۵۸ کھنڈ ۱

پربھو کے گُن گان سے آیو بڑھتی ہے!

दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्
प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥७॥

(جِشنو ددھی کراوِنہ) سب کو وِجے کرنے والے جگت کرتا (اشویہ واجِنہ) ہر جگہ موجود شکتی شالی پرمیشور کی (اکارِشم) ستتی میں نے کی۔ اِس کیرتن سے وہ اِندر (نہ مُکھا سُربھی کرت) ہمارے منہ ناک وغیرہ سبھی اعضا کو اپنی خوشبو یا اُسیس سے طاقت دیتا رہے اور (نہ آیونشی پرتارِشت) ہماری عمرِ حیات بڑھائے، بڑھاتا ہے۔

ے حمد و ثنا سے اِیش کا کرتے ہیں جب گُن گان ہم
عمر اور طاقت بڑھاتا ہے کہ اسیس ایک دم

358 —ईश गुणगान से आयु वृद्धि—

धर्म को धारण कर जगत को सुनियमों में चलाने वाले महाशक्ति शाली सर्वव्यापक परमेश्वर की स्तुति करता हूं कि मेरे सब अंगों के सुख के लिये सुगंधित पदार्थ दें और आयु को भी बढ़ाएं।

प्रार्थना से ईश का करते हैं जब गुण गान हम ।
आयु और शक्ति बढ़ाता दे के आशिष एकदम ।

منتر نمبر ۳۵۹ کھنڈا

اِنصاف کا بحر لئے اَوصافِ حمیدہ سے پُر ہے!

३ २ ३ १र २र ३ १र २र
पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत ।
२ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो
३ २ ३ १ २ ३ २
धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥८॥[४।१]

اِندر پرمیشور (اجایت) ہر دیہ میں پرگٹ ہوا ہے، وہ پرانیوں کے کرموں کے مطابق (پُرام بھندوُ) شریروں کو توڑتا، بدلتا اور پھر بناتا ہے، وہ سدا (یُوا کوی امت آوجا) جوان وید کا ویہ کاکوی ہے اور اپار بل شکتی والا ہے تھا (وشوسیہ کرمنا دھرتا) سب کے کرم کریاؤں کا دھارک ہے (وجری پُرُوشٹتہ) انصاف کا بحر لئے ہوئے اوصافِ حمیدہ سے پُر ہے۔

ے بچہ و بوڑھا جواں ہو کے فنا پھر آگیا
توڑ بھن اور پھر بنا یہ کھیل اُس کا سدا رہا

359 मोक्षदाता परमेश्वर सूक्ष्म स्थूल शरीरों का निर्माता सदा युवा सर्वश्रेष्ठ कवि क्रान्तदर्शी अनंत बल युक्त, विश्व धारक न्याय वज्र को धारण करने हारा, उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय कर्त्ता सब का उपास्य देव है ।

न्यायकारी वज्रधारी क्रान्तदर्शी आत्मा ।
बल अनत हैं विश्वकर्ता पूज्य वह परमात्मा ।

منتر نمبر ۳۶۰ کھنڈ ۲

اُتم بُدھی کا داتا!

अग्र वस्त्रिष्टुभमिषं वन्दद्वीरायेन्दवे ।
धिया वो मेधसातये पुरन्ध्यां विवासति ॥१॥

ہے عابد لوگو! (وہ تری ششٹھم اِشم وندو ویرے اندوے پر پر) من، بانی، کرم اور شتتی، پرارتھنا، اُپاسنا یا جسمانی، رُوحانی اور الیشوری طاقتوں سے قابلیت حاصل کر دھرماتما ویروں سے پُوجا کئے جاتے ہے، چاند کی طرح سب کو آنند دینے والے پرمیشور کے لئے اپنے آپ کو قطعی طور پر حوالے کر دو، (میدھا ساتیے) وہ ایشور آپ کی اِس عظیم قربانی کو پاکر (پُرندھیا دِھیا) تمہاری زندگی کو خوبصورت اور سُکھی بنانے کے لئے اُتم بدھی کو (وہ وِواستی) دے کر ان شریروں میں رہنے کے یوگیہ بناتا ہے۔

ع قول فعل اقرار سے اُس کے حوالے ہو کے تم
ایش کی پوجا کرو پا عقل پاکیزہ کو تم

360 —प्रज्ञा का दाता— खंड-2

हे उपासको ! मन वाणी, कर्म, स्तुति प्रार्थना, उपासना और आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक शक्तियों से योग्यता प्राप्त कर धर्मीवीरों से पूजित चंद्र के समान सब को आनंदित करने वाले परमेश्वर के लिये अपने को पूर्ण रूप से समर्पित कर दो। वह प्रभु आपको सुख समृद्ध बनाने के लिये प्रज्ञा बुद्धि को देकर इन मानवी शरीरो में वास के योग्य करता है।

मन, वचन और कर्म से भक्ति करो, अर्पण करो।
मानवी देह वास पाके प्रज्ञा बुद्धि से बढ़ो।

کھنڈ ۲ — منتر نمبر ۳۶۱

بَرت اور یگیہ

कश्यपस्य स्वर्विदो यावाहुः सयुजाविति ।
ययोर्विश्वमपि व्रतं यज्ञं धीरा निचाय्य ॥२॥

(سُور ودہ دھیراہ) سوَرگ جیسے آنند کو پائے ہوئے وِدوان ایش بھگت (سَچائے یُواتی آہُو) یہ نشچے کرکے جن دو اوّلین صفات کے متعلق یہ کہتے ہیں، کہ یہ دو اوصافِ حمیدہ (کیشپسیہ سہ یُومُو) عالمِ کل پرماتما کے ہمیشہ ساتھ رہتے ہیں اور (ہیوہ وِشوم اپی) اِن دو پر ہی ساری دُنیا ٹھہری ہوئی ہے وہ ہیں (برتم یگیم) برت اور یگیہ یعنی مصمم ارادہ اور رفاعِ عام کا جذبہ!

ارادے پکّے اور جذبہ ہے جن میں خلقِ خدمت کا
یہ دُنیا جس کو کہتے ہیں اِنہی نے ہی سجائی ہے

361 —व्रत और यज्ञ—

स्वर्ग सा आनंद पाए हुए विद्वान ईश भक्त यह निश्चय करके कह रहे हैं कि दो महान तत्व सर्व द्रष्टा परमेश्वर के सदा संगी रहे हैं और इन्हीं दो विशेष तत्वों पर ही सारा विश्व ठहर रहा है वे दो हैं व्रत और यज्ञ अर्थात् व्रत निष्ठा होना और यज्ञ की भावना ।

जो व्रत संकल्प और यज्ञ भाव को हृदय में धरते हैं ।
यही दो तत्व हैं जो विश्व में आनंद भरते हैं ।

منتر نمبر ۳۶۲ **بندگی کر بندگی کر بندگی!** کھنڈ ۲

अर्चत प्रार्चता नरः प्रियमेधासो अर्चत ।
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरमिद् धृष्ण्वर्चत ॥३॥

(نرہ ارچت پراچیت) بھگوان کا وصال چاہنے والے عابدو، بھگتو! پرمیشور کی بھگتی کرو، دل وجان سے پریم بھگتی کرو (پریہ میدھاسہ ارچیت) ہے دانشور پیارے اُپاسکو! بھگوان کا یگیہ کرو، پوجا کرو، ارچنا کرو (اُت پُترکا ارچنتو) اور اپنے بال بچوں کو بھی اُس کی بھگتی میں لگاؤ، (اِت پُورم دھرشنُو ارچت) جیسے تم اپنے شریر کی

سیوا پُوجا کیا کرتے ہو، ویسے ہی پاپوں کا ناش کرنے والے اُس پرمیشور کی پُوجا ہمیشہ کیا کرو! ؎ زندگی بے بندگی شرمندگی
بندگی کر بندگی کر بندگی

362 —भक्ति करो और पुत्रों को भी साथ लो—

प्रभु प्यारे के दर्श के प्यासे उपासको ! परमेश्वर की भक्ति करो प्रेम से भक्ति करो यजन करो, अर्चन करो, पूजन करो, । प्यारे भक्तो ! अपने पुत्र पौत्रों को भी उस की भक्ति में लगाओ । जैसे तुम अपने शरीर की सेवा करते हो वैसे ही पापों का धर्षण करने वाले उस ईश की पूजा सदा किया करो ।

आओ प्यारे मित्रजन भगवान की पूजा करो ।
अपने प्यारे पुत्रों को भी उस की राह पर ले चलो ।

منتر نمبر ۳۶۳ کھنڈ ۲

بُرائیوں سے چھُوٹنے کیلئے وید منتروں کو گائیں!

३ १२ २२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
उक्थमिन्द्राय शंस्यं वर्धनं पुरुनिष्पिधे ।
३ १२ २२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
शक्रो यथा सुतेषु णो रारणत् सख्येषु च ॥४॥

(پُورُو نِشد ھے اِندرائے وردھنم اُکتھم شنسیم) پاپوں سے چھُوٹنے کے لئے بھگوان کی مہما کے وید منتروں کو گانا چاہیئے، (یتھا شکرہ نہ سُوتیشُو) جس سے وہ عظیم طاقتور بھگوان ہمارے آل اولاد میں (چہ سکھیشُو رارنت) اور ہمارے دوستوں میں راہِ راست پر چلنے کی ترغیب دے، لہذا یہ ویدوں کے سُوکت (باب) ہماری ترقی کی راہیں ہیں!

؎

پاپ ناشک اِندر کی کبھی دوستی ٹوٹے نہیں
اَولاد میں بھی اِیش کی پُوجا کبھی چھُوٹے نہیں

363 —पापों से निवृत्ति के लिये वेद मत्र गाओ—

पापों से मुक्त होने के लिये वेद मंत्रों के सूक्त गाओ जिससे वह महा-बलवान इन्द्र हमारे पुत्र, पौत्रों और मित्रों को भी इस सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे। अतः यह वैदिक सूक्त हमारी उन्नति वृद्धि के साधन हैं।

पापनाशक इन्द्र की यह मित्रता टूटे नहीं।
और सन्तानों में उसकी अर्चना छूटे नहीं।

منتر نمبر ۳۶۴ **اپنی اور سب کی رکھشا کیلئے پکار!** کھنڈ ۲

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
विश्वानरस्य वस्पतिमनानतस्य शवसः।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
एवैश्च चर्षणीनामूती हुवे रथानाम् ॥५॥

(اُوتی اے وی ہُووے) میں بھگوان کا سیوک اپنی رکھشا کے لئے اپنے اچھے کردار کی وساطت سے بھگوان کا آواہن کرتا ہوں، پکارتا ہوں، جو (وشوانرسیہ پتم) منش مانز کا مالک، پالک اور خالق ہے، (شوسہ چرشنی نام رتھانام چہ) اور ہم سب کے شریر روپی گاڑیوں کو چلانے والا ہے، (وہ) تم سب کی رکھشا کے لئے میں بھی اُنہیں پکارتا ہوں!

اپنی اور خلق خدا کی رکھشا راحت کے لئے
سب کے پالک اور خالق کو بلاؤں بر ملا

364 —अपनी और सब की रक्षा की पुकार—

प्रभु की प्रेम भक्ति करने वाला मैं उपासक अपने सद्व्यवहारों द्वारा प्यारे प्रभु का अपनी और सब की रक्षा के लिये आह्वान करता हूं। जो सब का पालक है और हमारे शरीर रथों को चलाने वाला है।

अपनी और परमेश की प्यारी प्रजा की रक्षा को।
शुभ कर्म करते हुए उसको पुकारो सर्वदा।

منتر نمبر ۳۶۵ کھنڈ ۲

شانت عابد رکاوٹوں کو ترجاتا ہے!

स घा यस्ते दिवो नरो धिया मर्त्तस्य शमतः।
ऊती स बृहतो दिवो द्विषो अंहो न तरति ॥६॥

بھگت اُپاسک! (سہ گھ یہ دھیاتے نرہ) وہ ایشور ہی حقیقی مالک ہے، جو ازلی اَبدی علم اور عمل کے درس کو دے کر تیرا راہنما بنا ہے، وہ (مرتسیہ دوہ شمتہ) اُس عابد کا نیتا بنتا ہے، جو کہ روحانی روشنی سے پُر اور شانت رُوپ ہے، ابرہستہ دوہ اُوتی سہ دوِشہ ترتی نہ انگھہ) وہ اُپاسک پرکاش روپ پرمیشور کی حفاظت میں ادھیاتمک مارگ کی رکاوٹوں کو ایسے پار کرجاتا ہے، جیسے کہ اُس نے پاپ کی ندی کو پار کیا ہے۔

ے شانت ہوکر نورِ حق کو جس بھگت نے پالیا
علم عرفان کی مدد سے ایش کا گھر آلیا

365 —शान्त उपासक बाधाओं को तर जाता है—

उपासक भक्त ! ईश्वर ही सत्पति है जो अनादि ज्ञान वेद की सम्पदा देकर तेरा नेता बना है वह ईश्वर उसका सखा होता है जो अध्यात्म ज्योति से शान्ति युक्त हो गया है। और वह ही भक्त उस ज्योतिस्वरूप भगवान की प्रेरणा से सब विघ्न बाधाओं को तर जाता है जैसे पाप की नदी को पार किया है।

है वही नेता हमारा पापनाशक जो रहा।
जिस की ज्योति से रहा है शान्त मानव सर्वदा।

منتر نمبر ۳۶۶ کھنڈ ۲

یش کیرتی بڑھانے والا دھن دیجئے!

विभोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो।
अथा नो विश्वचर्षणे द्युम्नं सुदत्र मंहय ॥७॥

(شت کرتو اِندر) سینکڑوں ہزاروں طاقتوں والے اِندر! (وِبھو رادھسہ) بہت دھن دولت کے (دتے راتی وِبھوی) تیرے مہان دان چاروں طرف پھیلے ہوئے ہیں۔ (اتھ) لہٰذا (وِشو چرشنے شُودتر) سب کو دیکھنے والے عظیم دانی اور پالک پرمیشور! (سہ دیئو ممنہیا) ہمیں بھی یش بڑھانے والا دھن عطا کریں۔

ے سینکڑوں ہیں کارنامے آپ کے ہر سُو عیاں
دان بھی جب ہر طرف ہیں ہم کو بھی دو رازداں

366 —यशस्वी ऐश्वर्य दीजिये—

हे असंख्य पराक्रम और प्रज्ञाओं वाले इन्द्र ! बहुत धन के दान आपके चारों ओर फैले हुए हैं । हे सर्व द्रष्टा और उत्तम दानी परमेश्वर ! हमें भी यशस्वी ऐश्वर्य प्रदान कीजिये ।

वैभव तुम्हारा हे प्रभो ! फैला हुआ सारे जहां ।
दान हम को दो यशस्वी, कर दो हम को शादमां ।

منتر نمبر ۳۶۷ — کھنڈ ۲

اُشا کال کی مہما!

वयश्चित्ते पतत्रिणो द्विपाच्चतुष्पादर्जुनि ।
उषः प्रारन्नृतूँरनु दिवो अन्तेभ्यस्परि ॥८॥

(ارجنی اُوشا) شبھ جیوتر مئے پر پرنا سروت اُوشا! (رتے رتون انو) تیرے آنے کے بعد، تیرے آتے ہی پاپُو پھٹتے ہی (دُوی پاد چتش پاد میتر نہ وپہ چیت) دو پائے، چو پائے، منش اور پشو، ڈنگر، ڈھور تھا پکھشی بھی (دِواہ انتے بھیہ پری پرارن) آسمان کے اُوپر چاروں طرف اُڑنے پھرنے لگ جاتے ہیں (لہٰذا عابدوں کے خدائی وصال کیلئے تو ابرِ رحمت ہے)۔ ے پَو کے پھٹتے اُوشا کی آئی چمک جلوہ فشاں
جاگ اُٹھے دُنیا والے ہوگیا سب کچھ عیاں

367 — शुभ्र वर्ण उषे !—

शुभज्योतिर्मय उषे ! तेरे आने के पीछे ही सब चरन्दि परिन्द जाग कर गतिमान हो गए और आकाश मंडल भी पक्षियों की मधुर ध्वनि से चह चहा उठा।

पौ के फटते उषा की आई चमक हर ओर से ।
जाग उठे दुनिया वाले आसमां के शोर से ।

منتر نمبر ۳۶۸ کھنڈ ۲

عرش بریں پر چمکتے ہوئے تاروں سے خدا کا ظہور!

३ १र २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
अमी ये देवा स्थन मध्य आ रोचने दिवः ।
१ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
कद्व ऋतं कदमृतं का प्रत्ना व आहुतिः ॥६॥

(دیواہ) دیو لوک میں چمکتے ہوئے ستارو! (امی دِوہ آروچنے مدھیے سھتن) یہ جو تم آکاش میں چاروں طرف پھیلے ہوئے جگمگا رہے ہو، (کت وہ رِتم) کون ہے جو تم کو چمکا رہا ہے، نیم میں چلا رہا ہے؟ (کت امرتم) کون وہ امرت ہے جو تم کو امر بنا رہا ہے؟ (کا پرتنا وہ آہوتی) وہ شکتی پراچین کون سی ہے، جس کے لئے تم اپنی آہوتی دے رہے ہو؟ (بلاشک وہ وہی پرم آتما دُنیا کا سربراہ ہے جس کے حصول میں سبھی بے تاب ہو رہے ہیں)۔

ے چمکتے اور جگمگاتے آسماں کے پیارے تارے!
کون اُمرت ہے اُمر بن کس سے لیکر رہ رہے ؟

368 —द्यौ लोक के देवता—

द्यौ में चमकते नक्षत्र देवो ! यह जो तुम अन्तरिक्ष में सब ओर फैले हुए जगमगा रहे हो, कौन है जो तुम्हें ज्योतिमान कर रहा है ? नियम बद्ध करता है ? वह कौन अमृत है जो तुम्हें अमर बना रहा है और जिस के लिये प्राचीनता से तुम अपनी आहुति दे रहे हो ? निसंदेह वह

परम आत्मा है जगत का, जिसके मिलने के लिए सभी बिलबिला रहे हैं।

चमकते और जगमगाते आसमां के प्यारे तारे।
कौन अमृत है अमर पन किससे लेकर रह रहे हो।

منتر نمبر ۳۶۹ — کھنڈ ۲

رگ اور سام کے منتروں سے اُپاسنا!

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
ऋचं साम यजामहे याभ्यां कर्माणि कृण्वते।
१ २ २ २
वि ते सदसि राजतो
३ २ ३ १ २
यज्ञं देवेषु वक्षतः ॥१०॥[४१२]

(یابھیام کرمانی کرن وَتے) جن رگ وید اور سام وید سے اُپاسنا آدی کرم کئے جاتے ہیں اُن (رچم سام یجامہے) اُن رچاؤں اور سام کو گا کر ہم یگیہ کرتے ہیں، (وِتے سدسی راجتہ) وہ رگ وید اور سام وید کے منتر یگیہ منڈپ میں شوبھامان ہوتے ہیں اور (دیویشو یگیم وکھشتہ) دیووں، وِدوانوں میں یگیہ کرموں کو پھیلاتے ہیں!

ے بھگتی کرتے سام رگ کے منتروں سے ایش کی
شبھ کرم کی امر شکھشا دیتے جو جگدیش کی

369 —ऋग् साम के मंत्रों से यज्ञ और उपासना—

जिन ऋग् और सामवेद से उपासनादि कर्म किये जाते हैं उन्हीं ऋचाओं को गाकर हम यज्ञ करते है वे ऋग् और सामवेद के मंत्र यज्ञ मंडप में शोभामान होते हैं और देव विद्वानों में यज्ञ कर्मों को प्रकाशित करते हैं।

भक्ति करते साम ऋग् के मंत्रों से ईश की।
शुभ कर्म की अमर शिक्षा देते जो जगदीश की।

منتر نمبر ۳۷۰ — کھنڈ ۳

اندرونی اور بیرونی دُنیا کے فاتح!

२ ३ १२ ३ १२३ १२
विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरः
३१ २ ३१२ ३१२ ३१२
सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे ।
२३ १२ ३२ ३१२३१२ २२
क्रत्वे वरे स्थेमन्यामुरीमुतोग्रमोजिष्ठं
३१२ ३ १२
तेरस तरस्विनम् ॥१॥

عابد لوگ اپنے تمام اندر کے دشمنوں کام، کرودھ، لوبھ وغیرہ خیالاتِ بد کو دبا سکنے والے پرماتما کو واحد اپنا مددگار خصوصی طے کر کے اُسے اپنے آتما میں دھارن کرنے اور ساکھشات کرنے کے لئے لگ جاتے ہیں، پھر رُوحانیت پیدا کرنے والے سانوک کرموں کو کرتے ہوئے مہابلوان تیجسوی پرمیشور کی عبادت میں جُڑ جاتے ہیں۔

آسُری اندرونی دُشمن اور بدی کے جال باہر
جب پھنسانے لگتے، ایشور ہوتے ہیں دل بل سے ظاہر

खंड-3

370 —अंदर और बाहर की बाधाओं पर विजयी—

स्तोता भक्त लोग अपने समस्त बिघ्न बाधाओं को दबा देने वाले परमात्मा को ही निश्चित कर अपने अंदर धारण करने से उसे साक्षात् करने में लग जाते हैं जिससे इन विरोधी शक्तियों को दबा सकें। तथा अध्यात्म कर्मों को करते हुए उस महाबलवान तेजस्वी प्रभु के साथ युक्त रहें।

आसुरी अंदर के शत्रु और बदी के जाल बाहर।
जब फंसाने लगते, ईश्वर होते हैं दल बाहर से ज़ाहर।

منتر نمبر ۳۷۱ کھنڈ ۳
نفسِ امّارہ پر آپ کا غُصّہ ہمارے لئے اَمرت

१२ ३१२ ३२३ ३
श्रत्ते दधामि प्रथमाय मन्यवेऽहन्
२उ ३ १२ ३१३२
यद् दस्युं नर्यं विवेरपः ।

२ ३ उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३
उभे यत्वा रोदसी धावतामनु भ्यसाते
१ २ ३ १ २
शुष्मात् पृथिवी चिदद्रिवः ॥२॥

ہے پرمیشور! جب آپ کا غصّہ گرتا ہے نفسِ امارہ پر، جو ہمیں تحس نحس کرنے پر تُلے ہوئے ہیں تو آپ کے لئے اتینت شردھا پیدا ہوتی ہے میرے دل میں، اور جب آپ ان کا ناش کرنے کے لئے نیک عمل کا راستہ کھول دیتے ہیں، تب سبھی صد صد بار شکر گزار ہوتے ہیں، یہ آپ ہی ہیں مہابلوان پرمیشور جن کے ڈر سے ارض وسما دوڑ رہے ہیں اور ہماری دھرتی سورج کے چاروں طرف چکر کاٹ رہی ہے۔

ے نفس پر غصہ برستا دیکھ کر کے آپ کا
ہوتا ہوں خوش آ گئے میرے بچانے کے لئے
عرش پر اور فرش پر تیری حکومت دیکھ کے
ڈر کے مارے دھرتی اور سُورج ہیں کب سے دوڑتے

371 —परमेश्वर का मन्यु रूप अमृत है—

परमेश्वर देव जब आप का मन्यु (तेजमय क्रोध) बरसता हैं मेरी आन्तरिक आसुरी वृत्तियों पर जो मेरे विनाश पर तुल रही हैं तो मेरे हृदय में अत्यन्त श्रद्धा हो जाती है आपके प्रति ! इन के बिनाश पर ही हमारे लिये आप सन्मार्ग खोल देते हैं जिस पर हम बिना रोक टोक चलते हुए इष्ट सिद्धि पा लेते हैं परमेश्वर ! आप धन्य हैं जिनके भय से यह सभी लोक लोकान्तर भ्रमण शील हैं और पृथिवी सूर्य के चहों ओर दौड़ रही है ।

भगवन तुम्हारे मन्यु से कांपें हैं वृत्तियां आसुरी ।
भय से तुम्हारे सूर्य के चुहों और पृथिवी भ.गती ।

منتر نمبر ۳۷۲ کھنڈ ۳

اکیلا ہو کر ایک ہی وقت میں سب کا مہمان

समेत विश्वा ओजसा पतिं दिवो
य एक इद् भूरतिथिर्जनानाम् ।
स पूर्व्यो नूतनमाजिगीषन्
तं वर्तनीरनु वावृत एक इत् ॥३॥

منش لوگو! جو پرماتما اپنی طاقت سے عرشِ بریں کا مالک ہے، اُس کو تم سبھی مِل کر عبادت سے رِجھاؤ، جو واحد ہے اور ہر ایک عابد کے دل میں ایک ہی وقت میں معزز مہمان ہوتا ہے، وہ پہلے بھی تھا اب بھی ہے، اپنے ہر بھگت کو جو کام وغیرہ کے غلبے سے پریشان ہو کر شرن میں آتا ہے، اُس کو وہ پرمیشور نئی زندگی بخش دیتا ہے۔

ے مِل کے سب جن اُس کو پوجو جو ہے مالک سب جہاں کا
ایک ہو کے بھی اتھتی ہے سب کرّوبیاں کا

372 —हमारा पूज्य अतिथि–

प्यारे मानव ! परमेश्वर अपनी शक्ति से द्यौ लोक का पति है, उसको तुम सब मिलकर प्रेम भक्ति से रिझाओ जो एक है और प्रत्येक जिज्ञासु के हृदय में एक ही समय में पूज्य अतिथि हो जाता है । वह पूर्वकाल में भी था और अब भी है । अपनी शरण में आए हुए नये उपासक को भी जो आन्तरिक वासनाओं से तंग आ गया है, नया जीवन दे देता है ।

मिलके सब जन उस को पूजो जो है स्वामी सब जगत का ।
एक होकर के भी अतिथि है सब प्राणी जगत का ।

منتر نمبر ٣٧٣ کھنڈ ٣

تیرے سہارے ہی چل رہا زندگی کا سفر

इमं त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत
ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो ।
न हि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्
क्षोणीरिव प्रति तद्धर्य नो वचः ॥४॥

بہت پر کار سے سُتتی یا حمد و ثنا کرنے یوگیہ اور بہت دھن دولتوں والے اِندر! ہم تیرے اُپاسک تجھ سے ہی زندگی کا سفر شروع کر کے اور تیرا ہی سہارا لے کر اپنی جیون یاترا چلا رہے ہیں، آپ ہی دُنیا بھر میں سُتتی کے یوگیہ ہیں اور کوئی نہیں، جو ہماری پرارتھناؤں کو سُنے، اُس پر دھیان دے اور پھر منظور بھی فرمائے، آپ پربھو ہماری بانی کو سُننا بھی چاہتے ہیں، جیسے پرتھوی اپنی گود سے کسی کو نہیں ہٹاتی، ایسے ہی شرناگت ہوئے کسی کو بھی آپ دُور نہیں کرتے۔

ے زندگی کا یہ سفر تجھ سے ہُوا آغاز ہے
چل رہے تیرے سہارے گیت ہے یہی ساز ہے

373 —जीवन नय्या तेरे सहारे—

बहुत प्रकार से स्तुति योग्य तथा प्रभूत ऐश्वर्य पति इन्द्र! हम तेरे उपासक तुझ से ही जीवन यात्रा आरम्भ करके तेरे ही आश्रय चल रहे हैं। आप से अन्य विश्व में दूसरा कोई उपास्य देव नहीं है जो हमारी पुकारों को सुने, ध्यान दे और स्वीकार करे। फिर आप हमारी प्रार्थनाओं को सुनना ही चाहते हैं। जैसे धरती मां अपनी गोद से किसी को हटाती नहीं हैं ऐसे ही शरणागत हुए मानव पुत्र को आप दूर नहीं करते।

जिंदगी का यह सफ़र तुझ से हुआ आग़ाज़ है।
चल रहे तेरे सहारे गीत है यही साज़ है।

منتر نمبر ۳۷۴ کھنڈ ۳

ویدبانی سدا آپ کو ہی گا رہی ہے!

चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्या३मिन्द्रं
गिरो बृहतीरभ्यनूषत।
वावृधानं पुरुहूतं सुवृक्तिभिरमर्त्यं
जरमाणं दिवेदिवे ॥५॥

ہماری حمد وثنائیں اور وید کی پوتّر بانیاں اُس اِندر پرمیشور کو گا رہی ہیں، جو سب کا دھارن کرنے والا ایشور شالی سب کا پالک بے شمار فضیلت کا مالک اور سنسار میں اَمر ہے، اُسی ایشور کی ہی مہما سب کر رہے ہیں۔

ے ہو نتے دُعا گو رات دن سب اُس کی بھگتی میں سَدا
ویدوں کی گاتی بانیاں ہیں ہو رہیں اُس پر فِدا

374 —वेद वाणी सदा तुझ को गा रही है—

हमारे स्तोत्र और वेद की पवित्र वाणियां उस इन्द्र परमेश्वर को गा रही हैं जो सब का धरता और भरता है। असंख्य गुणों का स्वामी मृत्यु से रहित अमर है उसी की महिमा ही सब गा रहे हैं।

रात दिन रहते हैं उसकी शरण, भक्ति में सदा।
हो रही हैं वाणियां गाती हुई उस पर फ़िदा।

منتر نمبر ۳۷۵ حِفاظت کیلئے سچّے مُحافظ بھگوان کا آسرا کھنڈ ۳

अच्छा व इन्द्रं मतयः स्वर्युवः
सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषत ।
परि ष्वजन्त जनयो यथा पतिं
मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये ॥६॥

پیارے عابدو! آپ سب کی عقل و دانش جو سُورگ کا سا سُکھ چاہتی ہے اَور ایشور کو حاصل کرنے کی کامنا بھی کرتی ہے، یہ بُدھیاں بھگوان کی ہی حمد و ثنا کھُل کر کیا کریں۔ ایسے جیسے کہ غریب آدمی اپنی رکھشا کے لئے دولت مند کی تعریفیں ہی زور زور سے کیا کرتا ہے اور جیسے خاوند سے سچّا پریم کرنے والی عورت اُس کے ساتھ محبت سے سَرشار ہو کر اُس سے لپٹ جاتی ہے، ویسا پریم بھگوان سے کرو۔

ے سمرن (ایشور) کی سُدھ یُوں کرو جیسے دام کنگال
کہت کبیر بسرے نہیں پل پل لیت سنبھال

375 —सिमरन की सुध यों करो—

प्यारे भक्तजनो ! आप सब की सुमतियां जो स्वर्ग का सुख चाहती हैं और भगवान की प्राप्ति को भी। यह मतियां परमेश्वर की स्तुति खुलकर किया करें ऐसे जैसे कि निर्धनजन धनवान की स्तुति करता है और जैसे पतिव्रता स्त्री अपने पति से लिपट जाती है। वैसा प्रेम भगवान से करना चाहिये।

सिमरण (ईश्वर) की सुध यों करो जैसे दाम कंगाल।
कहित कबीर बिसरे नहीं पल-पल लेत संभाल।

منتر نمبر ۳۷۶ — کھنڈ ۳

دَولتوں کا سمُندر

अभि त्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्द्रं
गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम् ।
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषं
भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत ॥७॥

پرمیشور دیو سُکھوں کے برسانے ولے، دھن ایشور یہ کا ساگر، آنند کا داتا، وید منتروں کا داتا اور اِنہی میں رَما ہوا ہے۔ سُورج کی کِرنوں کی طرح چاروں طرف پھیل کر اپنی دولتوں کو بانٹ رہا ہے، اُس مہادانی، پری پُورن اِشٹ دیو بھگوان کی ارچنا کرکے اُس کو سَدا پرسّن رکھا کریں۔ جس کی حمد وثنا سب گاتے رہتے ہیں۔

ے
سرچشمہ دَولتوں کا آنند کا ہے داتا
ہے اِشٹ دیو ہمارا جگ اُس کو رہتا گاتا

376 ऐश्वर्य सम्पदाओं का सागर

परमेश्वर देव सुखों के वर्षक, धन ऐश्वर्य का सागर, आनंद का दाता, वेद ऋचाओं का मूल और उन में रमता हुआ सूर्य किरणों के समान चहों ओर अपनी सम्पदाओं को सब के पालन पोषण हित फैला रहा है। उस महादानी परि पूर्ण इष्ट देव की अर्चना करते हुए उसे सदा प्रसन्न रखें।

है स्रोत सम्पदा का आनंद का है दाता।
है इष्ट देव हमारा जग उसको रहता गाता॥

منتر نمبر ۳۷۷ کھنڈ ۳

بار بار پکاروں اور پکارتا ہی جاؤں!

त्यं सु मेषं महया स्वर्विदं शतं
यस्य सुभुवः साकमीरते।
अत्यं न वाजं हवनस्यदं रथमिन्द्रं
ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः ॥८॥

پرماتما مکتی کے آنند کو دینے والا، جس کے ساتھ بے شمار لوک لوکانتر حرکت پذیر ہیں، ہمیشہ تیز گھوڑوں کے سمان گتی شیل ہماری اُپاسنا بھگتی گُن کیرتن سے ترپت ہونے والا وہ اِندر پرمیشور ہی قابلِ صد ہا تعظیم اور عبادت ہے، اُس کو ہم بار بار یاد کرتے ہوئے بلاتے رہیں۔

ے جو انادی کال سے برہمانڈ کو ہے گھما رہا
نجات کا بخشندہ ہے اُسکو ہے وشو بلا رہا

377 बार बार मैं उसे बुलाऊँ

परमात्मा मोक्षानंद वर्षक, जिसके साथ असंख्य लोक लोकान्तर गति शील हो रहे हैं। जो वेग वान घोड़ों के समान प्रति क्षण प्रगति कर रहा है। हमारी स्तुतियों से तृप्त हो जाता

है वही इन्द्र परमेश्वर ही उपासना भक्ति के योग्य हैं। हम उसे बार 2 ही बुलाते रहें।

जो अनादि काल से ब्रह्माण्ड को है घुमा रहा।
मोक्ष आनंद का है दाता जिसको विश्व बुला रहा ॥

منتر نمبر ۳۷۸ — کھنڈ ۳

بندے ماترم سب کی پالک دھرتی ماں

घृतवति भुवनानामभिश्रियोर्वी
पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा।
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा
विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ॥६॥

تیج، اَن، دھن، دودھ، گھی کی بھنڈار، سب کی پالک چاروں طرف پھیلی ہوئی سب کے ڈھکنے اور رکھشا کرنے والی دھرتی، جو میٹھے رس دار اشیاء کو دیتی رہتی ہے، اور ہرے ہرے کھیتوں، پہاڑوں، باغ، باغیچوں سے لہلہاتی ہوئی خوبصورت منوہر اور طاقت ور جس نے دُنیا کے تمام بھار کو اپنے اُوپر لیا ہوا ہے اور یہ سبھی ارض و سما ورون بھگوان کے دھرم رُوپ بل سے خلا میں بندھے ہوئے چل رہے ہیں۔

سب کی پالک سب کی رکھشک آشرا سب کا دھرتی ماں
سُورج اور اِس کو بھی جس نے تھاما وہ ماؤں کی ماں

378 सबकी पालक धरती माँ

तेज, अन्न धन दूध घी की भंडार सब की पालक चहुं ओर फैली हुई, सब की रक्षक पोषक धरती जो मुझे रसीले, मधुर पदार्थों को देती रहती है। हरे-2 खेतों पर्वतों बाग बगीचों से लदी हुई सुन्दर मनोहर और शक्तिशाली जिसने विश्व के सम्पूर्ण भार को अपने ऊपर लिया हुआ है। और यह सभी लोक-लोकान्तर वरुण भगवान के धर्म रूप बल से अन्तरिक्ष में बंधे हुए चल रहे हैं।

सबकी पालक सबकी रक्षक आश्रय सबकी धरती मां
इसको और द्यौ को भी जिसने थामा वह माओं की मां ।

منتر نمبر ۳۷۹ کھنڈ ۳

بھگوان کی جننی ویدبانی اَور شُدھ بھاونا

उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव ।
महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम् ।
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा
जनित्र्यजीजनत्   ॥१०॥

ہے اِندر پرمیشور! جو آپ سُورج اور زمین پر چاروں طرف بھر رہے ہو، جیسے کہ اُوشا جو کہ سحر انوار کی پہلی کرنیں سارے جگ کو بھر دیتی ہیں، لہٰذا آپ عظیم العظم منشیوں کے راجاؤں کے راجہ ہیں، جس کو سب کا کلیان کرنے والی وید ماتا پرگٹ کرتی ہے اور ہمارے اندر کی شُدھ چِت ورتی یعنی ساتوک خیالات بھی!

ے سمراٹ بن کے جگت کے ویاپک ہو سُورج پرتھوی میں
اُوشا کی کرنوں میں ظہور ہوتا ہے وید رِچاؤں میں

379 **भगवान को प्रगट करने वाली**

हे इन्द्र परमेश्वर ! जो आप द्यौ और पृथ्वी पर सब ओर भर रहे हैं जैसेकि उषा की किरणें निकलते ही सब जग को प्रकाश से भर देती हैं । अतः आप सब के राजा महान्तो महान हैं जिस को वेद वाणी और हमारे अंदर की शुद्ध चित्त वृत्ति प्रगट करती है ।

सम्राट बनके विश्व के व्यापक हो सूरिज पृथ्वी में ।
उषा की किरणों में प्रगट होते हो वेद ऋचाओं में ॥

منتر نمبر ۳۸۰ پرجاؤں کی رکھشا کیلئے بھگوان کا آواہن کھنڈ ۳

२ ३१ २ ३१२ ३ २ ३
प्र मन्दिने पितुमदर्चता वचो
२ ३ १२ ३१२ ३ १ २
यः कृष्णगर्भा निरहन्नृजिश्वना ।
३ २ ३ १२ ३ १ २
अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं
३१ २ ३ १ २
मरुत्वन्तं सख्याय हुवेमहि ॥११॥[४१३]

آنند روپ بھگوان کے لئے اَمرت بانیاں اُچارن کرو، جو اپنے اثر سے ہمارے اندر کے خیالاتِ بد کو اپنے ستیہ گیان سے زائل کر دیتا ہے، رکھشا اور سُکھ کی ورشا کرنے والے ہمارے مددگار اوّلین اور ہمارے پرانوں اور پرجاؤں کے واحد سہارے پرمیشور کا ہم سچے مترّ کے طور پر آواہن کرتے ہیں، بُلاتے ہیں۔

ہے ہمارا دوست سچّا اور سب پر مہرباں
اِس لئے تو یاد کرتے اُس کو سب کرّوبیاں

380 प्रजाओं की रक्षा के लिए प्रभु का आह्वान

आनन्द रूप भगवान के लिए अमृत वाणियां उच्चारण करो। जो अपनी शक्ति से हमारे अन्तः पाप वृत्तियों को अपने सत्य ज्ञान से दूर कर देता है। रक्षक, सुखवर्षक, परम सहायक और हमारे प्राणों तथा प्रजाओं के एक मात्र आश्रय परमेश्वर का हम सच्चे मित्र के रूप में आह्वान करते हैं।

है हमारा मित्र सच्चा और सब पर मेहरबां।
इसलिए आह्वान करता है उसे सारा जहां॥

منتر نمبر ۳۸۱ نیک عابدوں پر ایشور مہربان! کھنڈ ۴

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र
इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीष उक्थ्यम् ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
विदे वृधस्य दक्षस्य महाँ हि षः ॥१॥

ہے پرمیشور! گیان اور بھگتی رس جب اُپاسک میں پیدا ہو جاتا ہے تو وہ آپ کی تذر ہی کر دیتا ہے۔ جس پر اِس نیک کرم کرنے والے اپنے عابد کو آپ شُدھ پوتر کر دیتے ہیں۔ وہ اُپاسک آتم بل کو حاصل کرنے کے لئے تیری شرن ہو جاتا ہے، اِس لئے کہ آپ مہان ہیں!

ے

شرابور بھگتی میں ہوتا بھگت جب
اُسے شُدھ نرمل بنا دیتے ہو تب

381 उपासकों पर ईश्वर की कृपा

परमेश्वर देव ! जब उपासक में ज्ञान और भक्ति रस पैदा हो जाता है तो वह आपकी भेंट कर देता है, जिस पर इस श्रेष्ठ कर्मा उपासक को आप शुद्ध पवित्र कर देते हैं। उपासक आत्म बल की प्राप्ति के लिए तेरी शरणागत हो जाता है इसलिए कि आप महान हैं।

भक्ति में आनन्द होता, भगत जब।
उसे शुद्ध निर्मल बना देते हो तब॥

منتر نمبر ۳۸۲ کھنڈ ۴

نور پھیلے گا ہی تب!

तमु अभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम्।
इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत ॥२॥

ہے منشیو! جس کو بے شمار لوگ بہت ناموں سے ہمیشہ یاد کرتے، پکارتے اور حمد و ثنا کرتے رہتے ہیں، اُس کو خوب گایا کرو، جس سے چاروں طرف اُس کی روشنی پھیلتی جائے۔

ے

اُستتی کے یوگیہ ہے جس کو ہیں کرتے یاد سب
گاؤ، گاتے جاؤ اُس کا نور پھیلے گا ہی تب

382 सब ओर उस का प्रकाश फैलाओ

हे मनुष्यों ! जिस को असंख्य लोग सदा अनेक नामों से स्मरण करते और आह्वान करते हैं उसको आनन्द मगन हो कर गाया करो जिससे सब ओर उसकी ज्योति फैलती जाए ।

अर्चना के योग्य है जिसको हैं करते याद सब ।
गाओ गाते जाओ उसका नूर फैलेगा ही तब ।।

منتر نمبر ۳۸۳ کھنڈ ۴

خیالاتِ بد کو دُور کرنے والے!

तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृत्सु सासहिम् ।
उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् ।।३।।

مہاتیجسوی پرماتما! بار بار اُٹھنے والے اندر کے خیالاتِ بد کو دبا ہم پر سُکھوں کی بارش کر کے ہماری زندگی کو خوش نما بنا رہے ہو، دُکھوں کو ہرنے اور کلیان کو لاتے والے پریشور! ہم آپ کی اُپاسنا (بھگتی) کا سہارا لے کر آپ کے آنند رُوپ کا گان کرتے رہتے ہیں۔

دُکھوں کے ہرنے والے ہو سُکھوں کے لانے والے ہو
کر دُور خیال بُرائی کے جیون کو ترانے والے ہو

383 आसुरी भावों को दूर करने वाले

महा तेजस्वी परमात्मन् ! हर समय दूषित चित्त वृत्तियों के उठने पर उन्हे पराजित करके हम पर सुखों की वर्षा कर हमारी जीवन यात्रा को सुन्दर बनाते रहते हो । दुःखों का अपहरण और कल्याण का आहरण करने वाले परमेश्वर ! हम उपासना भक्ति का आश्रय लेकर आपके आनन्द रूप का गान करते रहते हैं ।

दुःखों के हरने वाले हो सुखों के लाने वाले हो ।
कर दूर खयाल बुराई के जीवन को तराने वाले हो ।

منتر نمبر ۳۸۴ **اِن سب آنندوں کی بخشش کیجئے!** کھنڈ ۴

१२ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
यत् सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्त्ये ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १र २र
यद्वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः ॥४॥

پرمیشور دیو! سُورج میں جو سوم ہے اور ارض وسما فوس وقزاح وغیرہ تینوں لوکوں میں اور گیان کرم اُپاسنا میں جو آنند امرت ہے، ہواؤں، مان سُونوں، چندرماں کی کرنو یوگی کی آتما میں سمادھی کا اور پرانیوں کے پرانوں میں جو آنند ہے، اِن سب آنندوں کے سوم سرو ور آپ ہیں، بس اِن سب سے ہمیں بھی آنندت کیجئے!

ے چاروں طرف بکھرا ہوا دُنیا میں ہے آنند جو
آپ کی بخشیش سے ہم کو بھی کچھ مل جائے وہ

384 इन सब आनन्दों को प्रदान कीजिए

हे परमेश्वर ! सूर्य में जो सोम है पृथ्वी अन्तरिक्ष और द्यौ तीनों लोकों में तथा ज्ञान कर्म उपासना में जो आनन्द अमृत है, हवाओं मानसूनों, चन्द्रमा की किरणों, योगी की आत्मा में समाधी के आनन्द और प्राणियों के प्राणों में जो आनन्द है इन सब आनन्दों के सोम सरोवर आप ही हैं कृपया इन से हमें भी आनन्दित कीजिए ।

चहों तरफ बिखरा हुआ दुनियां में है आनन्द जो ।
आपकी बख्शीश से हम को भी कुछ मिल जाए वो ॥

منتر نمبر ۳۸۵ **بھگتی کے رس سے اِیشور پریم کو سینچو!** کھنڈ ۴

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
एदु मधोर्मदिन्तरं सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः ।
३ २उ ३ १र २र ३ १ २
एवा हि वीरस्तवते सदावृधः ॥५॥

پرانی ماتر کے ساتھ پیار کرنے والے اہنسک پربھو اُپاسکو! ایشور بھگتی کا منوہر اتینت سُکھدایک رس اپنے آتما میں بھر کر بھگوان کے ارپن کرو۔ وہ ویر دھیر بلوان اندر پرمیشور اپنے بھگتوں کے ذریعے ہی پرسدھ ہوتا ہے۔

ہے ویر دھیر مہان اُستت یوگیہ وہ پرماتما
سب کو بڑھاتا ہے وہی سارے جگت کی آتما

385 **भक्ति रस से ईश्वर प्रेम को सींचो**

प्राणी मात्र के साथ प्यार करने वाले अहिंसक प्रभु उपासको ! ईश्वर भक्ति का अत्यन्त मनोहर सुख दायक रस अपने आत्मा में भर कर भगवान के अर्पण करो। वह वीर धीर बलवान इन्द्र परमेश्वर अपने भक्तों के द्वारा ही प्रसिद्ध होता है।

है वीर धीर महान स्तुति योग्य वह परमात्मा।
सब को बढ़ाता है वही सारे जगत की आत्मा॥

منتر نمبر ۳۸۶ کھنڈ ۴

بھگتی رس کو بھگوان کی بھینٹ کرو

एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु ।
प्र राधांसि चोदयते महित्वना ॥६॥

اے عابدو ودوانو! شانتی اور آنند دینے والے بھگتی رس کو اندر پرمیشور کی نذر کرو، وہ اندر تمہیں رُوحانی خزانوں کی بخشش کرے گا۔ تمہارا دامنِ اُمید گوہرِ مُراد سے بھر دے گا۔

اندر راجہ کی نذر اپنی عقیدت کو کرو
دامنِ اُمید کو رُوحانیت سے پُر کرو

386 **भक्ति रस को भगवान की भेंट कर**

प्रभु भक्त विद्वानों ! शक्ति और आनन्द देने वाले भक्ति रस को इन्द्र परमेश्वर की भेंट करो वह इन्द्र तुम्हें आध्यात्मिक

सम्पदाओं को देकर निहाल कर देगा।

इन्द्र है राजा हमारा भेंट भक्ति की करो।
आध्यात्मिकता के धनों को अपनी झोली में भरो॥

منتر نمبر ۳۸۷ **عالَمِ اَرْواح کا اکیلا راجہ** کھنڈ ۴

एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखायः स्तोम्यं नरम्।
कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत् ॥७॥

پیارے دوستو! آؤ اور اُس اپنے پیارے محبوب معبود والیٔ دُنیا پرمیشور کے گُن گان کرو، جو سبھی عالمِ اَرواح پر اکیلا ہی راج کر رہا ہے۔

آؤ سکھے! بیٹھو یہاں اُس اِندر کی پُوجا کریں
راج ہے سب پہ جو کرتا اُس میں اپنا من دھریں

387 **प्राणी प्रजा का एक ही राजा**

प्यारे मित्रो! आओ और अपने प्यारे विश्व अधिपति उपास्य देव भगवान के गुण गान करो। जो सभी प्राणी मात्र पर अकेला ही राज कर रहा है।

आओ सखे! बैठो यहां उस इन्द्र की पूजा करें।
राज्य है सब पे जो करता उसमें अपना मन धरें।

منتر نمبر ۳۸۸ **بھگوان کا اُونچے سُور سے اُونچا گان** کھنڈ ۴

इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्।
ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥८॥

سب سے مہان، سب جگہ پُورن، سب کو ہمیشہ خوش رکھنے والے دُنیا کے

معمار، ویدگیان کے داتا، عبادت کے یوگیہ پرماتما کا اُونچے سوَر سے اُونچا گان کرو۔

سب جگہ پُورن معظّم، خُوشیوں کا داتا ہے جو
اُس کے گان کو اُونچا گاؤ، سرشٹی کا نرماتا ہے جو

388 **ऊंचे स्वर से ऊँचा गान**

सब से महान परिपूर्ण, सब के हर्ष दाता, विश्व के निर्माता वेद ज्ञान स्वरूप, उपासना के योग्य परमात्मा का उंचे स्वर से ऊंचा गान करो।

सब जगह परिपूर्ण है और हर्ष का दाता है जो।
उसके गान को ऊंचा गाओ सृष्टि का निर्माता जो ॥

منتر نمبر ۳۸۹ **دانی کو پرمیشور سدا بھرتا رہتا ہے!** کھنڈ ۴

य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे ।
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥६॥

ہے منشیو! وہ پرمیشور اکیلا ہی دان شیل کو سدا زر و مال مختلف قسم سے دیتا رہتا ہے، وہ سب کا مالک ہے اور کسی سے مغلوب نہیں ہو سکتا۔

جو ایک کیول ایک ہے جس کی ہے عظمت چار سُو
دینے والے داتا کو ہے دیتا جاتا سُو بہ سُو

389 **दानी को परमेश्वर सदा भरता रहता है**

हे मनुष्यों ! वह परमेश्बर अकेला ही दान शील व्यक्ति को सदा सम्पदाओं से भरता रहता है। वह सब का अधिपति है और किसी से पराजित नहीं हो सकता।

जो एक केवल एक है जिस की है महिमा चारसू।
देने वाले दाता को है देता जाता सूबसू ॥

منتر نمبر ۳۹۰ — کھنڈ ۴

ہمارا شکھشا گورو

सखाय आ शिषामहे ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे ।
स्तुष ऊ षु वो नृतमाय धृष्णवे ॥१०॥[४।४]

مخلوقات کے دوست عابدو! والیٔ دُنیا، سب کے عادل، خیالاتِ بد کو پسپا کر دینے والے بھگوان کے لئے ہم سب مل کر وید منتروں کو گاتے جاویں، وہ ایشور ہمارا اوّلین مُعلّم ہے، جس کی حمد و ثنا ہم کر رہے ہیں!

یہ مخلوق ساری ہے کنبہ خُدا کا ۔ ہے درس پہلا کتابِ خُدا کا
اُسی کی اُڑاتے چلیں ہم پتاکا ۔ یہی دے رہا منتر حکمِ خُدا کا

390 — हमारा शिक्षा गुरु

प्राणी प्रजा के मित्र उपासको ! संसार के मालिक, न्याय-कारी और आसुरी चित्त वृत्तियों को दबा देने वाले भगवान के प्रति हम सब मिलकर वेद मन्त्रों को गाते जाएं वह ईश्वर हमारा पहला शिक्षा गुरु है जिसके स्तोत्र हम गाते रहते हैं ।

है दर्स पहला किताबे खुदा का । कि मख्लूक सारी है कुंबा खुदा का ।
उसी की उड़ाते चलें हम पताका । यही दे रहा मन्त्र हुक्मे खुदा का ॥

منتر نمبر ۳۹۱ — کھنڈ ۵

خُدا کی تعریف ہمارے اندر نیکیوں کو لاتی ہے!

गृणे तदिन्द्र ते शव उपमां देवतातये ।
यद्धंसि वृत्रमोजसा शचीपते ॥१॥

ہے پرمیشور! آپ کی طاقت عظمیٰ کی میں تعریف کرتا ہوں جو ہمارے لئے قابلِ تقلید ہے، جس سے کہ نیک صفات ہمارے اندر آئیں اور وہ آپ کے دِویہ گُن (دیوتا پن)

سب طرف پھیلتے جائیں ۔ ہے بُدھی شکتی اور بانی کے داتا! آپ کی طاقت سے ہی بُرائیوں کا نحس نحس ہوتا ہے ۔ اس لئے آپ کی اُستتی کرتا ہوں!

ے آپ کی طاقت سے ڈر جاتی بدی کی طاقتیں
اِس لئے تعریف دیتی آپ کی سب راحتیں

391 परमेश्वर की स्तुति सद्गुणों को भरती है

हे परमेश्वर ! आप की महान शक्ति की मैं स्तुति करता हूं जो हमारे लिए प्रेरक है। जिससे कि अनेक सद्गुण हमारे अन्दर आते हैं। यह आपके दिव्य गुण सब ओर फैलते जाएं जिस से दुर्गुणों का नाश हो। हे बुद्धि शक्ति और वाणी के दाता ! इसलिए मैं आप की स्तुति कर रहा हूं।

आपकी शक्ति से डर जाती बदी की ताकतें।
और है प्रशंसा देतीं आप की सब राहतें ॥

منتر نمبر ۳۹۲ مُکتی کے اَبھیلاشی کی دیواروں کو توڑ دیتا ہے! کھنڈ ۵

२ ३ १र २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
यस्य त्यच्छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयन् ।
३ १र २र ३ १र २र
अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ॥२॥

عبادت کے پریم رس سے سرشار پرمیشور نجات کے خواہش مند عارف کی رکاوٹوں کو دُور کر دیتا ہے، لہٰذا عابد کے بھگتی رس کو بھگوان منظور فرما کر پی لیتے ہیں! ے

ہے عارفوں کے دل میں بھگوان مقام تیرا ۔ مسرُور بھگتی سے جو پیتے ہیں جام تیرا

392 मुक्ति के अभिलाषी की विघ्न बाधायें

भक्ति के प्रेम रस में मद मस्त मुक्ति के अभिलाषियों की विघ्न बाधाओं को परमेश्वर दूर कर देता है। अतः उपासक के सोम रस को भगवान स्वीकार कर पान कर लेते हैं।

भक्तों के दिल में रहता भगवन मकाम तेरा।
मसरूर भक्ति में जो पीते हैं जाम तेरा ॥

منتر نمبر ۳۹۳ کھنڈ ۵

ستیہ کی طاقت سے سب پر غالب!

एन्द्र नो गधि प्रिय सत्राजिदगोह्य ।
गिरिर्न विश्वतः पृथुः पतिर्दिवः ॥३॥

پیارے پرمیشور! سچائی سے سب پر فتح حاصل کئے ہوئے اور نہ چھپ سکنے والے، پربت اور بادلوں کی طرح سب طرف پھیلے ہوئے مضبوط ترین اور اچل سُورج وغیرہ لوکوں کے بھی سوامی ہیں، لہذا ہمارے اندر ظاہر ظہور ہوں۔

پیار اور سچائی سے وسعت ہے تیری۔ پہاڑوں سے مضبوط حکومت ہے تیری
ہمیں درس اپنا دکھاؤ گے کب تم؟ پہلو میں اپنے بٹھاؤ گے کب تم؟

393 सत्य की शक्ति से सब ओर विजय

प्यारे परमेश्वर आप सत्य से सब को पराजित किए हुए हैं और कभी छुप नहीं सकते । पर्वत और मेघों के समान सब ओर फैले हुए अडिग और अचल सूर्य आदि लोकों के भी स्वामी हैं । अत: हमारे आत्मा में प्रगट होवें ।

प्यार और सचाई से वुसअत है तेरी । पहाड़ों से मज़बूत हकूमत है तेरी।
हमें दर्स अपना दिखाओगे कब तुम । पहलू में अपने बिठाओगे कब तुम ॥

منتر نمبر ۳۹۴ کھنڈ ۵

ہمیں کھا جانے والے پاپوں کو آپ نشٹ کر دیتے ہو!

य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति ।
येना हंसि न्या३त्रिणं तमीमहे ॥४॥

بے شمار طاقتوں والے بھگوان! آپ بھگتی رس کو چاہتے ہیں، اس سے جو آپ کو خوشی ہوتی ہے، وہ ہمیں اور زیادہ آپ کی بھگتی کی طرف مائل کر دیتی ہے، آپ

کی پرسنتا ہمارے پاپوں کا ناش کر دیتی ہے۔

ے بھگتی رس کی چاہ تمہیں رہتی ہے یہ مشہور ہے
ہے نہیں بھگتی میں جو دِل آپ سے وہ دُور ہے

394 हिंसक पापों को नष्ट कर दीजिए

अगणित शक्तियों के स्वामी भगवान ! आप भक्ति रस को चाहते हैं। उस से जो आप को प्रसन्नता होती है वह हमें आपकी भक्ति की ओर अधिक बढ़ावा देती है। आप की प्रसन्नता हमारे पापों का नाश कर देती है।

भक्ति रस की चाह तुम्हें रहती है यह मशहूर है।
है नहीं भक्ति में जो दिल आप से वह दूर है ।।

منتر نمبر ۳۹۵ عُمر دراز ہو ہماری آل اَولاد کی! کھنڈ ۵

तुचे तुनाय तत्सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे ।
आदित्यासः समहसः कृणोतन ।।५।।

پُورن برہم چریہ کے پرتاپ سے یُکت مہان بَل اور تیج وان وِدوانو ہمارے پُتر پوتروں کے لیے اپنا اُتم اُپدیش دے کر اُن کی عمر دراز کیجیے!

ے عمُر لمبی دو ہمارے پُتر پوتوں کی بنا
ایسا دو اُپدیش وِدوانو! نوازش ہو سدا

395 हमारे पुत्र पौत्रों को दीर्घायु हो

पूर्ण ब्रह्मचर्य के प्रताप से युक्त महान बलवान और तेजस्वी विद्वानों ! हमारे पुत्र पौत्र मादि के लिए अपना उत्तम उपदेश दे कर उनकी दीर्घ आयु कीजिए।

दीर्घ आयु दो हमारे पुत्र पोतों की बना।
ऐसा दो उपदेश विद्वानों ! अनुग्रह हो सदा।

منتر نمبر ۳۹۶ جیسے سُورج کا تیج کیڑوں کو ہلاک کر دیتا ہے! کھنڈ ۵

वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम् ।
अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव ॥६॥

پرمیشور دیو! پاپ اور بُرائی کے حملوں پر آپ بجر پات یعنی قہر برسانے والے ہیں، موت کی طرف لے جانے والی اِن بدیوں کو دُور کرنا آپ جانتے ہیں، جیسے سُورج اپنے تاپ اور تیز روشنی سے بے شمار بیماریوں کے کیڑوں کو ہلاک کر سب کو سُکھ دیتا ہے، وَیسے ہی آپ عارفوں کی بُرائیوں کا قلع قمع کر کے اُنہیں پاکیزہ بنا دیتے ہو۔

راکھشسوں کے ناش کا بھی ڈھنگ تم ہو جانتے
اِس طرح بھگتوں کے من کو شُدھ کرنا ٹھانتے

396 आसुरी आक्रमण से बचाईए

परमेश्वर देव ! असुर वृत्तियों और पाप के आक्रमण पर बज्र पात करते हैं जो मृत्यु की ओर हमें ले जाने वाली हैं। निसंन्देह इसको दूर हटाना आप ही जानते हैं जैसे सूर्य अपने ताप और तीव्र प्रकाश से असंख्य रोग कीटाणु को हनन कर सब को सुख देता है वैसे ही आप उपासकों के दुरितों और दुःखों का विनाश कर उन्हें शुद्ध निर्मल बना देते हैं ।

राक्षसों के नाश का भी ढंग तुम हो जानते ।
इस तरह भक्तों के मन को शुद्ध करना ठानते ॥

منتر نمبر ۳۹۷ دُور کرو دُور کرو دُور کرو کھنڈ ۵

अपामीवामप स्त्रिधमप सेधत दुर्मतिम् ।
आदित्यासो युयोतना नो अंहसः ॥७॥

سُورج کی طرح چمکتے ہوئے تیجسوی وِدوانو! ہمارے روگوں کو دُور کرو، ہمارا لہو پی جانے والی چنتاؤں، کمزوریوں اور شترووں کو دُور کرو، دُشٹ بُدھی کو دور کرو۔ اور پاپوں سے دُور کیجئے۔

ے ہے دیو وِدوانو! بچاؤ پاپ کے سنتاپ سے
روگ، دُشٹ وِچار، دُشٹ آچار، چنتا تاپ سے

397 **दूर करो दूर करो दूर करो**

सूर्यवत् ज्योतिमय विद्वानों ! हमारे रोगों को दूर करो। रक्त पात करने वाली चिन्ताओं, निर्बलताओं और शत्रुओं को हम से दूर करो। दुष्ट बुद्धि और पापों को दूर कीजिए।

हे देव विद्वानों ! बचाओ पाप के संताप से।
रोग, दुष्ट विचार, दुष्ट आचार, चिन्ता ताप से ॥

منتر نمبر ۳۹۸ **ہماری بھگتی کو سویکار کیجئے!** کھنڈ ۵

पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा
यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः।
सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा ॥८॥[४१५]

دُکھ اور پاپوں کا ہرن کرنے والے اور آگ کی طرح پاپوں کے انبار کو بھسم کر دینے والے اِندر پرمیشور! جس بھگتی رس کو پربت کی طرح اٹل برت والے بھگت نے آپ کے لئے تیار کیا ہے، اُسے آپ سویکار کریں، وہ آپ کی نذر ہے۔ آپ تو اُسی طرح بھگت کے بس میں ہو جاتے ہیں بھگوان! جس طرح گھوڑ سوار اپنے بازوؤں سے تھامی ہوئی لگام سے گھوڑے کو بس میں کر لیتا ہے۔

ے سوم رس ہے بھگت کا بھگتی کا ارپن لیجئے
نذر آپ کی ہے پربھو سویکار اِس کو کیجئے

398 **हमारी भक्ति को स्वीकार कीजिए**

दुःख और पापों का हरण करने वाले, अग्नि के समान दुरितों के अम्बार को भस्म कर देने वाले इन्द्र परमेश्वर ! जिस भक्ति रस को पर्वत की भांति अटल व्रत शील भक्त ने आपके लिए तैयार किया है उसे आप स्वीकार कीजिए वह आप की भेंट है। जिस तरह अश्व रोही अपनी बाहों में थामी हुई लगाम से अश्व को वश में कर लेता है वैसे ही आप भक्त के वशीभूत हो जाते हैं।

सोम रस है भक्त का भक्ति का अर्पण लीजिए।
भेंट आपकी है प्रभु स्वीकार इसको कीजिए ॥

منتر نمبر ۳۹۹ **اِیشور کِن کے ساتھ بھائی چارہ چاہتا ہے!** کھنڈ ۶

अभ्रातृव्यो अना
त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि।
युधेदापित्वमिच्छसे ॥१॥

ہے اِندر بھگوان! آپ قُدرتی طور پر اجات شترُو ہیں، کوئی آپ کا شترُو نہیں ہے آپ کا بھائی بندھو بھی کوئی نہیں، نہ کوئی آپ کا نیتا ہے، انسانی شکل بھی آپ کی نہیں۔ آپ نِراکار ہیں، اور سناتن یعنی قدیم ترین ہیں، ہاں! جب کوئی دھرماتما نیک انسان کِذب و باطل یعنی بُرائیوں کے ساتھ جنگ آزما ہو جاتا ہے، تب آپ اُس کے ساتھ بھائی چارہ چاہتے ہوئے اُس کی سہایتا کو آجاتے ہیں۔

ے آپ تو ہی آپ ہیں کوئی بیگانہ ہے نہ اپنا
یُدھ میں بدیوں سے گھِر جاتا جو، وہ ہو جاتا اپنا

399 ईश्वर किन को चाहता है

हे इन्द्र आप तो अजात शत्रु हैं अर्थात् कोई आप का शत्रु नहीं है। आप का भाई बन्धु भी कोई नहीं। न कोई आप का नेता है। आकार से रहित आप निराकार हैं और सनातन अर्थात् प्राचीनतम। हां जब कोई धर्मात्मा मनुष्य पापों के साथ युद्ध करने को तैयार हो जाता है तब आप उसके साथ भ्रातृभाव चाहते हुए सहायता को आ जाते हैं।

आप तो ही आप हैं कोई बेगाना है न अपना।
युद्ध में पापों से घिर जाता जो वह हो जाता अपना।

منتر نمبر ۴۰۰ اپنی رکھشا کے لئے اُس کی اُستتی کریں! کھنڈ ۲

१ २ ३ १ २ ३ १र २र
यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य
३ २ ३ १ २
आनिनाय तमु व स्तुषे ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
सखाय इन्द्रमूतये ॥२॥

آپس میں دوستی سے رہنے والے پیارے منشیو! جو پرمیشور ہم سب کے لئے اناادی کال یعنی ہمیشہ ہمیشہ سے مختلف شریرادر قسم قسم کے اعلےٰ کھانے پینے وغیرہ بھوگ پدارتھوں کو جُٹاتا رہتا ہے، ہم سب کو اپنی رکھشا وغیرہ کے لئے اُس کی ہی اُستتی کرنی چاہیئے!

دھن مال لایا ہے وہی اپنے پُراتن کال سے
مل کر بھجیں ہم سب اُسی کو شُدھ سچّے خیال سے

400 रक्षा के लिए उसकी स्तुति करें

परस्पर मित्रता से रहने वाले प्यारे मनुष्यो ! जो परमेश्वर हम सबके लिए अनादि काल से उत्तम-2 पदार्थ और खाने पीने आदि के सभी भोग आदि भी जुटाता रहता है हम सब को अपनी रक्षा के लिए उसकी स्तुति करनी चाहिए।

धन माल लाया है वही अपने पुरातन काल से ।
मिल कर भजें हम सब उसी को शुद्ध सच्चे ख़याल से ।।

منتر نمبر ۴۰۱ کھنڈ ۶

بھگوان کی راہ پر

आ गन्ता मा रिषण्यत
प्रस्थावानो माप स्थात समन्यवः ।
दृढा चिद्यमयिष्णवः ।।३।।

ہے پرجاجنو! آؤ ایشور کی عبادت کے سیدھے راستے پر، دیکھنا کہیں اس راہِ راست سے بھٹک کر نشٹ نہ ہو جانا، اس بھگتی مارگ پر ہی چلتے جانا نہ رکنا نہ ہٹنا، بلکہ یم نیموں کے یوگ مارگ کا پالن کرتے ہوئے اپنے آپ پر تسلّط جمائے رکھنا۔

ے آؤ سکھا پیارے چلیں مل کر پربھو کی راہ پر
نیم کا پالن کریں بڑھتے رہیں درگاہ پر

401 **भगवान की राह पर चलें**

हे प्रजाजनो ! आओ ईश्वर की भक्ति के मार्ग पर चलें । कहीं रुकना नहीं और इस सन्मार्ग से भटकना नहीं इस भक्ति के मार्ग पर चलते ही जाना है हटना नहीं अपितु यम नियमों के योग मार्ग को धारण करते हुए अपने आप पर नियंत्रण करते हुए चलना है ।

आओ सखा प्यारे चलें मिल कर प्रभु की राह पर
यम नियम पालन करें बढ़ते रहें दरगाह पर ।

منتر نمبر ۴۰۲ کھنڈ ۶

دیش کی ہریالی بھومی کے مالک

आ याह्ययमिन्दवेऽश्वपते

गोपत उर्वरापते ।

सोमं सोमपते पिब ॥४॥

پرمیشور دیو! آپ ہمارے من اور اندریوں (حواسِ خمسہ) کے مالک ہیں، اِس ہری بھری دیہہ کی بھومی کے پتی ہیں اور سوم آنند کے بھی پتی ہیں، اِس لئے اِس سوم آنند بھگتی کے رس کو ہے چندرماں سمان شیتل پرکاش والے پربھو! آپ کے لئے ہی ہردے میں رکھا ہے، آئیے اور اِسے سویکار کیجئے!

آپ سوامی ہیں شریروں، اندریوں اور سوم کے
سویکار اِس کو کیجئے ہیں بھگتی رس یہ ہوم کے

402 देह की हरियाली भूमि के अधिपति

हे परमेश्वर देव ! आप हमारे मन और इन्द्रियौं के स्वामी हैं । हरी भरी देह की भूमि के भूमिहार और सोम आनन्द के भी भण्डार हैं इसलिए इस सोम रस को जो भक्ति में आपकी कृपा से आत्मा में उतरा है वह आप के लिए ही हृदय में संग्रहित है । आइए और इसे स्वीकार कीजिए ।

आप स्वामी हैं शरीरौं, इन्द्रियों और सोम के ।
स्वीकार इसको कीजिए हैं भक्ति रस यह होम के ॥

منتر نمبر ۴۰۳ — کھنڈ ۲

ہمیشہ آپ کے ساتھ ہی جڑے رہیں!

त्वया ह स्विद्युजा वयं प्रति

श्वसन्तं वृषभ ब्रुवीमहि ।

संस्थे जनस्य गोमतः ॥५॥

سُکھ کی ورشا کرنے والے بھگوان! ہم آپ کے ساتھ ہی ہمیشہ جڑے رہیں، تاکہ پاپوں کے پھنکارتے ہوئے سانپوں کا مقابلہ کر سکیں، اور یہ تب ہوگا جگت پتا

پرمیشور! جب ہمارے ہردیوں میں آپ کا آسن جما رہے اور ہمیں ہر سمے تیرا ہی دھیان رہے۔

آپ جب ہوں ساتھ ہمارے بدیوں سے پھر ڈرنا کیا
آپ کے ہی واسطے ہردیہ میں ہے آسن بچھا

403 **आप के साथ ही युक्त रहें**

सुखवर्षक भगवान ! हम आपके साथ ही जुड़े रहें जिससे पापों के फुंकारते हुए सांपों का मुकाबला कर सकें । और यह तब होगा । जगत पिता परमेश्वर ! जब हमारे हृदयों में आप का आसन जमा रहे और हमें हर समय तेरा ही ध्यान रहे ।

आप हों जब साथ हमारे पापों से फिर डर है क्या ।
आप ही के वास्ते हृदय में है आसन बिछा ।।

منتر نمبر ۴۰۴ — کھنڈ ۶

ویدبانی اور پرمیشور کو دھارن کرو!

गावश्चिद् घा समन्यवः
सजात्येन मरुतः सबन्धवः ।
रिहते ककुभो मिथः ॥६॥

ہے منشیو! وید بانی اور پرمیشور یہ دونوں گیان کے سروت (علم کے سرچشمہ) ہیں، اور تم سبھی انسانات ایک ہی بھگوان سے پیدا ہوئے ہم جنس ہو، اور ایک دوسرے کے بندھو، متر، دوست۔ جیسے گائیں سبھی ایک جنس ہونے سے جہاں تہاں گھومتی ہوئیں ایک دوسرے کو پیار سے چاٹتی رہتی ہیں، ویسے ہی تم ایک دوسرے سے پیار (پریم) کرتے ہوئے بھگوان اور اُس کی گیان جیوتی کو دھارن کر آنند پراپت کرو۔

وید بانی اور ایشور دونوں ہیں ودیا کے گھر
مل کے تم آپس میں بندھو اس سے ہو دیں جلوہ گر

404 वेदवाणी और परमेश्वर को धारण करो

हे मनुष्यो ! वेद वाणी और परमेश्वर यह दोनौं ज्ञान के स्रोत हैं। और तुम सभी एक ही जगत जननी मां से उत्पन्न हुए सजातीय हो और परस्पर बन्धु और सखा। जैसे गौएं सभी सजातीय होने से यत्र तत्र घूमती एक दूसरे को प्यार से चाटती रहती है। वैसे ही तुम एक दूसरे से प्यार करते हुए भगवान और उसकी ज्ञान ज्योति को धारण कर आनन्द प्राप्त करो।

वेद वाणी और ईश्वर दोनौ है विद्या के घर।
मिलके हम आपस में बन्धु इससे होवें जलवागर ॥

منتر نمبر ۴۰۵ **ایسی آل اولاد جو کہ بدوں پر غالب آسکے!** کھنڈ ۹

१ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वं न इन्द्रा भर ओजो
३ १ २
नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे ।
२ ३ १ २ ३ १ २
आ वीरं पृतनासहम् ॥७॥

بے شمار کارہائے نمایاں کرنے اور سب کو دیکھ سکنے والے اندر پرمیشور! آپ ہمیں اوج یعنی ہمت و حوصلہ بخشیں اور زر و مال کے ساتھ نیک نامی و شہرت دیں، ہمیں ویر سنتان دیں جو کہ کام کرودھ ... برائیوں کی فوج کو پامال کر سکیں۔

بہت کرموں والے ایشور دھن دو لیش بل دھیر دو
بدیوں بدکرداروں پر جے پانے والے ویر دو

405 ऐसी सन्तान जो पापियों को दबा सके

असंख्य कर्मों के कर्ता और सर्व द्रष्टा इन्द्र परमेश्वर ! आप हमें अपने अनुग्रह से ओज, धन सम्पदा और यश प्रदान करें। हमें वीर सन्तान दें जोकि काम क्रोध आदि पापौं की सेना को परास्त कर सकें।

शत क्रतो परमात्मा ! धन दो, यश, बल, धीर दो ।
पापियों और पापों पर, जय पाने वाले वीर दो ।।

منتر نمبر ۴۰۶ پانی اور پانی کیطرح گھل مل کر آپ کے ساتھ رہیں! کھنڈ ۶

अधा हीन्द्र गिर्वण
उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे ।
उदेव ग्मन्त उदभिः ॥८॥

وید بانیوں کے ذریعے اُستت کئے گئے اندر پرمیشور! اب تو اپنی کامناؤں کی سدھی کے لئے ہم آپ کو چاہتے ہیں، ہم آپ سے ایسے مل کر رہنا چاہتے ہیں جیسے جل کے پرانی جل میں ہی رہنا چاہتے اور جیسے پانی اور پانی مل کر ایک ہو جاتے ہیں -

جیسے جل میں جل ملیں اور ایک ہو کر ہی رہیں
ایک رس ہو کر کے ویسے آپ میں گھل مل رہیں

406 **जल और जल ज्यों जीव समाना**

वेद वाणी के द्वारा स्तुति किए गये परमेश्वर ! अब तो अपनी कामना सिद्धि के लिए हम आपको चाहते हैं । आप से मिल जुल कर ऐसे एकाकार होना चाहते हैं जैसे जल चर जल में ही रहना चाहते । और जैसे दो जल मिल कर एक हो जाते ।

जैसे जल में जल मिलें और एक होकर हो रहें ।
एक रस होकर के वैसे आप में घुल मिल रहें ।।

منتر نمبر ۴۰۷ آپ کی حمد و ثنا میں ہی آنند ہے! کھنڈ ۶

मादन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते
मधौ मदिरे विवक्षणे ।
अभि त्वामिन्द्र नोनुमः ॥९॥

ہے اِندر! جیسے پکھشی برکھشوں پر آکر بیٹھ اپنی حفاظت، آرام اور سُکھ محسوس کرتے ہیں، وَیسے وید بانی کے مطالعہ، پاٹھ اور گان کرنے سے جو ہمارے اندر سُکھ وشانتی اور پاکیزگی دینے والا بھگتی کا رس پیدا ہوتا ہے، اُس سے ہم آپ کا آسرا لیتے اور حمد و ثنا کرتے ہوئے آنند مانتے ہیں۔

ے پکھشی سم ہو کے اکٹھے بیٹھ کر تُم کو بُلاتے
اُستتی گُن کیرتن سے آپ کو پھر پھر رجھاتے

407 आप की उपासना में ही आनन्द है

हे इन्द्र जैसे पक्षी वृक्षों पर वास करते हुये अपनी सुरक्षा और आराम अनुभव करते हैं वैसे वेद वाणी के अध्ययन पाठ और गान करने से जो हमारे अन्दर सुख शान्ति और निर्मलता दायक भक्ति रस पैदा होता है उससे हम आपका आश्रय लेते और स्तुति करते हुये आनन्द मानते हैं।

पक्षी सम होके इकट्ठे बैठ कर तुम को बुलाते।
स्तोत्र और गुण कीर्तन से आपको फिर फिर रिझाते॥

منتر نمبر ۴۰۸ کھنڈ ۲

شَرن کی اوٹ گہی!

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न
कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः।
वज्रिञ्चित्रं हवामहे ॥१०॥[४।६]

جیسے اَن، دھن چاہنے والے دُنیاوی آدمی دولت مند کی تعریف کرتے ہیں، ویسے ہم آپ کے بھگت، عارف لوگ، بے بہا طاقتوں کے مخزن پاپیوں کو اپنے عدل و انصاف کے بجر سے رُلانے والے پربھو! آپ کے لئے پریم بھگتی کی نذر لاتے ہوئے اپنی رکھشا کے لئے آپ کا آواہن کرتے ہیں۔

ے دھن مال سمپد کے لئے جاتا دھنی کے آدمی
ویسے ہی رکھشا کو چاہتے سرن آئے آپ کی

408 **शरण की ओट गही**

जैसे अन्न धन आदि सम्पदा के इच्छुक, धनी की स्तुति करते हैं वैसे हम आप के भक्त भी असीम शक्तियौं के भण्डार और पापियौं को अपने न्याय बज्र से रूलाने वाले प्रभो ! आपके लिये प्रेम भक्ति की भेंट लाते हुये अपनी रक्षा के लिये आपका आह्वान करते हैं।

धन माल सम्पद के लिये जाता धनी के आदमी।
वैसे ही रक्षा चाहते आये शरण हैं आप की ॥

منتر نمبر ۴۰۹ **انسانی قالب میں آتما کا سُوراجیہ** کھنڈ ۷

स्वादोरित्था विषूवतो मधोः पिबन्ति गौर्यः ।
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति
शोभथा वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥१॥

شریر (جسم) اندریوں (حواسِ خمسہ) اور من پر جب آتما کا سوراجیہ ہو جاتا ہے تو سبھی چت ورتیاں شانتی نرملتا اور پرکاش کا انوبھو کر آتما کے وشی بھُوت (ماتحت) ہو جاتی ہیں، تب پرمیشور کے اوم نام کے جاپ میں آنند لیتا ہوا آتما رام شوبھا کو پراپت ہوتا ہے۔

ے ایش کی بھگتی سے جتا آتما کا راجیہ جب
اندریاں من چت کی ورتیاں شانت ہو جاتی ہیں تب

409 **कब होगा हमारे अन्दर आत्म स्वराज्य**

शरीर इन्द्रियौं और मन पर जब आत्मा का स्वराज्य हो जाता है तो सभी चित्त वृत्तियां शान्ति निर्मलता और प्रकाश को

अनुभव कर आत्मा के वशीभूत हो जाती हैं तब परमेश्वर के ओम नाम के जाप में आनन्द लेता हुआ आत्माराम शोभा को प्राप्त होता है।

ईश की भक्ति से जमता आत्मा का राज जब।
इन्द्रियां मन चित्त की वृत्तियां शान्त हो जाती हैं तब ॥

منتر نمبر ۴۱۰ کھنڈ ۷

دیہہ سے پاپ نکلنے پر ہی سُوراجیہ ہوگا!

३ २उ ३ २उ ३ १ २ ३ २३ १ २
इत्था हि सोम इन्मदो ब्रह्म चकार वर्धनम् ।
१ २ ३ १ २ ३ १२
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः
२र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥२॥

مہابلوان گناہ کی طاقتوں کو دبا دینے والے بجر دھاری ایشور! بلاشک تیری بھگتی کا کا امرت رس ہی خوشیوں اور آنند کو دینے والا ہے۔ اس کے پیدا ہو جانے پر ہی آپ مجھے بڑھاتے ہیں، پربھو! میری دیہہ کی دیہہ (زمین) میں سے پاپ کو نکال دیجئے جس سے میرا سوراجیہ ہو سکے اور میں آپ کی ارچنا کرتا رہوں۔

کب ہوگا سُوراجیہ دیہہ میں؟ پاپ نکلنے پر ہوگا
بھگتی جب ایشور کی ہوگی شانت ہردیہ اور من ہوگا

410 पाप मुक्त देह पर ही आत्म राज्य होगा

महा शक्तिशाली आसुरी वृत्तियों को दबा देने हारे बज्र हस्त परमेश्वर ! निसन्देह तेरी भक्ति का सोमरस ही आनन्दों को देने वाला है जिस के उत्पन्न हो जाने पर ही आप मुझे बढ़ाते हैं। इस लिये हे प्रभु ! मेरी देह की देह से पाप रूपी राक्षस को निकाल दीजिये जिस से मेरे स्वराज्य की स्थापना हो सके और मैं आप की उपासना का अमृत आनन्द लेता रहूं।

कब होगा स्वराज्य देह में ? पाप निकलने पर होगा।
भक्ति जब ईश्वर की होगी, शान्त हृदय और मन होगा ॥

منتر نمبر ۱۱؍۴ اِندر پرمیشور پاپ کے راکھشس کو مار دیتا ہے! کھنڈ ۷

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र
इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।
२उ ३ २ ३ २ ३१र २र ३
तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे
१र २र ३ १ २
स वाजेषु प्र नोऽविषत् ॥३॥

منشیوں سے پُوجا گیا اندر پرمیشور پاپ کے راکھشسوں کو ناش کر کے سُکھ شانتی اور آنند دے کر عارفوں کے بل کو سدا بڑھاتا رہتا ہے اور چھوٹے بڑے سب قسم کے دیواسر سنگراموں میں وہ سب کا محافظ پرمیشور گیان اور شکتی دے کر ہماری وشیش رکھشا کرتا رہتا ہے۔

پاپ کے راکھشس کو مارے رکھشا میں سب کی کھڑا
گیان بل دھن شکتی دے کر عارفوں کو دے بڑھا

411 देवासुर संग्राम में हमारा रक्षक

मनुष्यों से पूजा गया इन्द्र परमेश्वर पाप के राक्षसों का विनाश कर सुख शान्ति और आनन्द देकर उपासकों के बल को सदा बढ़ाता रहता एवं छोटे-बड़े सब देवासुर संग्रामों में वह सब का रक्षक परमेश्वर ज्ञान और शक्ति देकर हमारी विशेष रक्षा में रहता है।

पाप के राक्षस को मारे, रक्षा में सब की खड़ा।
ज्ञान-बल, धन, शक्ति दे कर, भक्तों को देता बढ़ा।

منتر نمبر ۱۲؍۴ سُوراجیہ کے لئے ارچنا کھنڈ ۷

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र
इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवोऽनुत्तं वज्रिन् वीर्यम् ।
२ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३
यद्ध त्यं मायिनं मृगं तव
२ ३१र २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
त्यन्माययावधीरर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥४॥

کون کرتا ہے وہ جو اپنے اندر آتم راجیہ کو چاہتا ہے اور یہ ارچنا کرتا ہے کہ ہے پاپ ناشک، بُرے خیالات کے لئے بجر کو دھارن کئے ہوئے آدر کے یوگیہ اندر پرمیشور! ہر وقت اندر اُٹھنے والے مایا کے چھل کپٹ پاپ وغیرہ سے پیدا نیچ خیالوں کو آپ اپنے سامرتھیہ سے تحس نحس کر کے اُس کی رکھشا کرتے ہیں، جو اپنے اندر آتما کے راجیہ کے لئے آپ کی ارچنا کرتا رہتا ہے۔

کامنا سوراجیہ کی لے کرتا ایشور ارچنا
مایا کی دھوکا دھڑی سے چھوٹیں ہے یہ پرارتھنا

412 स्वराज्य के लिए अर्चना

कौन करता है ? वह जो अपने अन्दर आत्म राज्य को चाहता हुआ यह अर्चना करता है कि हे पापनाशक दुरितों के लिये बज्र धारी, अत्यन्त प्रशंसनीय परमेश्वर ! प्रतिक्षण अन्तः करण में उठने वाली पाप वृत्तियों को अपने सामर्थ्य से नष्ट भ्रष्ट करके आप उस की रक्षा करते हैं जो अपने अन्दर आत्मा के स्वराज्य की कामना करता रहता है ।

कामना स्वराज्य की ले करता ईश्वर अर्चना ।
माया की धोखाधड़ी से छूटूं है यह प्रार्थना ।

منتر نمبر ۴۱۳ — کھنڈ ۷

وہ شکتی جو آتما کے راجیہ کو بڑھائے!

प्रहाभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते ।
इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो
वृत्रं जया अपोऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥५॥

بھگوان میرے اندر پرگٹ ہوویں، ظاہر ظہور رہوں، مجھے سویکار کریں، میری روحانیت مضبوط ہو۔ آپ کی شکتی لا انتہا ہے اور دیو جنوں کے لئے اُپکارک ہے

جو پاپ کو نشٹ کرتی ہے ۔ اِس شکتی کی ارچنا ہی میرے اندر آتما کے سوراجیہ کو دے گی ۔

ے میرے اندر ہو پرگٹ سویکار مجھ کو کیجئے
پاپ نشٹ ہوں آتما کا راجیہ ایسا دیجئے

413 वह शक्ति जो आत्म राज्य को बढ़ाये

भगवान मेरे अन्दर प्रगट होवें । मुझे स्वीकार करें, मेरी अध्यात्मिकता दृढ़ हो आप की शक्ति असीम है और देव जनों के लिये उपकारक है । पाप भावना को नष्ट करती है इस शक्ति की ही अर्चना है जो मेरे अन्दर आत्म स्वराज्य की स्थापना कर सके ।

मेरे अन्दर हो प्रगट स्वीकार मुझ को कीजिये ।
पाप नष्ट हूं, आत्म का राज्य ऐसा दीजिये ॥

منتر نمبر ۴۱۴ **نیکی اور بدی کے جھگڑے پر دیوسہایک!** کھنڈ ۷

यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम् ।
युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः
कं वसौ दधोऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः ॥६॥

جب نیکی اور بدی کا جھگڑا اندر چلتا ہے تو اُپاسک (عارف) کی جیت کے لئے پرماتما اُس کو آتمک بل پردان کرتے ہیں ، گیان اندریاں اور کرم اندریاں ان دو گھوڑوں کو بدی کو شکست دینے کے لئے پرمیشور جوڑ دیتے ہیں ، جس سے بُرائی کی طاقتوں کو ہرانے میں عارف سپھل ہو جاتا ہے ، یہ ہے اُسری سمپدا پر دَیوی سمپدا کا غلبہ ، (دیکھو بھگوت گیتا ادھیائے ١٦) ۔

ے نیکی بدی کا جھگڑا چلتا ہے روز روز
بھگوان ہی مٹاتے ہیں کل کل یہ روز

414 नेकी और बदी के झगड़े पर देव सहायक

नेकी और बदी का झगड़ा जब अन्दर चलता है तो उपासक की जीत के लिये परमात्मा उस को आत्म बल प्रदान करते हैं ज्ञान और कर्म इन्द्रिय रूप अश्वों को पाप के पराजय के लिए परमेश्वर जोड़ देते हैं जिससे इन आसुरी शक्तियों पर उपासक विजय प्राप्त कर लेता है यह है आसुरी सम्पदा पर दैवी सम्पदा की सफलता । (भगवद्गीता अध्याय 16)

नेकी बदी का झगड़ा चलता है रोज़-रोज़
भगवान ही मिटाते हैं कल कल यह रोज़ रोज़ ॥

منتر نمبر ۴۱۵ گیان اَور کرم اِندریوں کو شُدھ کیجئے! کھنڈ ۷

अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया
मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥७॥

پرمیشور دیو! ہمارے گیان اندری اَور کرم اِندری رُوپی گھوڑوں کو جو عادتاً وِشئے واسناؤں کی طرف دوڑتے ہیں، انہیں اپنے یوگ میں لگا دیویں، تب تو اُپاسک بھگت جن بھی آپ کے پیارے ہو کر آپ کے دیئے امرت بھوگوں کو بھوگنے کے حق دار ہو جاتے ہیں اَور وہ سُکھی ہو جاتے ہیں، دُکھوں سے چھُوٹ جاتے ہیں، بعد ازاں وہ وِپر ارتھات بُدھیمان وِدوان، دانشور سب بُرائیوں سے رہت ہو کر نئے نئے منتروں سے طریقوں سے تیری اُستتی میں مگن رہتے ہیں!

ے

کرم اَور گیان اِندریوں کو شُدھ کر دو ہے پِتا
سب بلائیں چھُوٹ جائیں تجھ کو گائیں سَر ودا

415 ज्ञान और कर्म इन्द्रियों की शुद्धि

परमेश्वर देव ! हमारे ज्ञान और कर्म इन्द्रियों को शुद्ध कर दीजिए जो स्वाभाविक विषय वासनाओं की ओर भागती रहती है। इन्हें अपने योग में लगाइए, जिस से उपासक जन आपके प्यार को प्राप्त हो कर आपके दिये अमृत भोग प्राप्त कर सकें। और वे दुःखों से मुक्त होकर सुख को प्राप्त हों एवं दुरितों से रहित हो कर वे वीर बुद्धिमान विद्वान नये-नये मन्त्रों और सूक्तों से तेरी स्तुति में संलग्न रहें।

कर्म और ज्ञान इन्द्रियों को शुद्ध कर दो हे पिता !
सब बलायें छूट जायें तुझ को गाएं सर्वदा ॥

منتر نمبر ۴۱۶ — کھنڈ ۷

ہماری بانی کو کب سچی بناؤ گے؟

२ ३ १ २ ३२उ ३ १२३ १२
उपो षु शृणुही गिरो मघवन्मातथा इव ।
३ १ २ ३१२ ३ २३ २३ १२३
कदा नः सूनृतावतः कर इदर्थयास
२उ ३क २र ३ १२
इदयोजा न्विन्द्र ते हरी ॥८॥

دولتوں کے بھنڈار پرمیشور! جب آپ ہمارے نزدیک تر ہیں تو ہماری پرارتھنا کو اچھی طرح سُنیئے اور سویکار کیجیئے، اسویکار نہیں، اِس لئے کہ ہم پُتر ہیں اور آپ پِتا، پُتر کا پِتا پر بھی تو زور ہوتا ہے کبھی، پِتا! یہ بتاؤ کہ ہماری بانی کو سچی کب بناؤ گے؟ ہماری پھر یہ فریاد ہے، کہ گیان اور کرم اِندریوں کو اپنے بس میں چلائیں۔ اِس لئے ہم اِن کو آپ کے سُپرد کرتے ہیں۔

۸

نزدیک تر جب ہیں ہماری پرارتھنا کیوں نہ سُنیں؟
واک ہو سچی ہماری من میں جو ہو وہ کہیں

416 हमारी वाणी कब सत्यमय होगी ?

परम ऐश्वर्य के स्रोत इन्द्र ! जब आप हमारे निकटतम हैं तो हमारी प्रार्थना को अच्छी प्रकार सुनिए और स्वीकार कीजिए हम पुत्र हैं और आप हमारे पिता इसलिए भी हमारी वन्दना अस्वीकार नहीं करेंगे। हमारी वाणी को आप कब सत्यमय बनायेंगे ? ज्ञान और कर्म इन्द्रियों को भी अपने वशीभूत होकर चलायें, इस लिए हम इन्हें आपके समर्पित करते हैं।

निकटतम जब हैं, हमारी प्रार्थना क्यों न सुनें।
वाक् हो सच्ची हमारी, मन में जो है वह कहें ॥

کھنڈ ۷   منتر نمبر ۴۱۷

چندرماں اور مَن کا وِگیان

चन्द्रमा अप्स्वा३न्तरा सुपर्णो धावते दिवि।
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो.
वित्तं मे अस्य रोदसी ॥६॥

عارفو! جیسے آنند کی روشنی دینے والا چندرماں پانی کے مرکز زمین اور روشنی کے مرکز آسمان کے درمیان دوڑ رہا ہے، اِسی طرح آنند اور پرکاش دینے والا من پانی کا آدھار جسم کے نچلے حصے اور روشنی کا آدھار سر کا حصہ اِن دونوں کے درمیان ہردیہ آکاش میں دوڑ رہا ہے، اِس من کی گتی کو سونے کی طرح چمک دار بجلی بھی نہیں جان سکتی یعنی اس کی دوڑ کا مقابلہ نہیں کر سکتی، بھگوان کے سوا اِس کی گتی کو کوئی نہیں پا سکتا۔

ے   آسماں میں چندر جیسے لوک میں من ہے یہی
روشنی آنند اور برکات اِس کی ہیں سبھی

417 चन्द्रमा मन का विज्ञान

ईश्वर भक्तो ! जैसे आनन्द और शीतल प्रकाश का देने वाला चन्द्रमा जल केन्द्र भूमि और प्रकाश केन्द्र अन्तरिक्ष के मध्य

भ्रमण कर रहा है । इसी तरह आनन्द और प्रकाश का देने वाला मन जल के आधार शरीर के निचले भाग और प्रकाश के आधार शिरो भाग इन दोनों के मध्य हृदय आकाश में दौड़ रहा है परन्तु इस मन की गति को स्वर्णवत् चमकीली बिजली भी नहीं जान सकती इस की दौड़ का मुकाबला नहीं कर सकती । प्रभु के सिवाय इस की गति को कौन जाने ।

आसमां में चन्द्र जैसे लोक में मन है यही ।
ज्योति शीतल और आनन्द बरकतें इसकी सभी ।।

منتر نمبر ۴۱۸ پتی اور پتنی گرہستیو تم سب کے پیارے اور مدھر بنو! کھنڈ ۷

प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम् ।
स्तोता वामश्विनावृषि स्तोमेभिर्भूषति
प्रति माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥१०॥[४।७]

اہلِ خانہ! آپ دونوں پتی پتنی کو سنسار کا سوامی زیادہ سے زیادہ تم سے پیار کرنے والا سُکھ داتا، موکش کا آنند بھی دینے والا تمہارے خوبصورت شریروں اور رُوپوں کو بھی بنا کردہ ایشور تمہارا پاسبان ہے، جس نے تمہارے لئے وید منتروں کے ذریعے انیک آدرشوں کا بیان کیا ہے، ان گیان سمپدا کو پڑھ پڑھا سُن سُنا کر تم دونوں سب کے پیارے اور مدھر بن جاؤ۔ بھگوان کا یہ اُپدیش غور سے سُنو، کلیان ہو!

پیارے گرہستی اہلِ خانہ! سُن لو ایش اُپدیش یہ
سب کے تم پیارے بنو اور مدھر، ہے آدیش یہ

418 गृहस्थियों ! सब के प्यारे और मधुर बनो

प्यारे गृहस्थ ! आप दोनों पति पत्नी को विश्व नियन्ता परमेश्वर जो तुम्हें अधिकतम प्यारे सुख दाता और मोक्ष का आनन्द भी देने वाला है । तुन्हारे सुन्दर शरीर और स्वरुप को

भी बना कर रक्षा में सदा तत्पर है, इसी भगवान ने ही तुम सब के लिए वेद मन्त्रों के द्वारा अनेक आदर्शों की शिक्षा दी है, जिस को तुम पढ़ पढ़ा और सुन सुनाकर सब के प्यारे और मधुर बनो।

प्यारे गृहस्थी लो सुनो, है ईश का उपदेश यह।
सब के तुम प्यारे बनो, और मधुर, है आदेश यह ॥

منتر نمبر ۴۱۹ کھنڈ ۸

سُتتی کرنیوالوں کیلئے اپنی جیوتی پرگٹ کریں

आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।
यद्ध स्या ते पनीयसी समिद् दीदयति
द्यवीषं स्तोतृभ्य आ भर ॥१॥

ہے نُورالحق پرمیشور! آپ کا دھیان کرتے ہوئے ہم اپنے اندر تجھے پرکاشت کرتے ہیں، کبھی آپ بُوڑھے ہونے والے نہیں، ہمیشہ سے اجر ہیں، اس آپ کے رُوپ کو پُورنتا سے دھارن کرتے ہیں، جو تیری جیوتی چاروں اور دیُولوک میں چمک رہی ہے، وہی ہم عابدوں میں بھی ظاہر کریں جو تیری سُتتی کر رہے ہیں۔

آکاش میں تیری چمک۔ ہے جلوہ گر تُو تاروں میں
سدا جوان اجر پربھو! جیوتی دو اپنے پیاروں میں

419 स्तोताओं के लिए अपनी ज्योति प्रगट करें

हे महा तेजस्वी आप का ध्यान करते हम तुझे अपने अन्दर प्रकाशित करते हैं। आप सदा अजर हैं बूढ़े होने वाले नहीं हम इस रूप को पूर्णता से धारण करते हैं, जो आप की ज्योति चहुं और द्युलोक में चमक रही है वही हम उपासकों में भी प्रगट करें जो तेरी स्तुति कर रहे हैं।

आकाश में तेरी चमक, है जलवागर तू तारों में।
सदा युवा अजर अमर, ज्योति दो अपने प्यारों में ॥

منتر نمبر ۴۲۰   کھنڈ ۸

سَب جَگت پَر آپ کا شاسَن ہے!

अग्निं न स्ववृक्तिभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।
शीरं पावकशोचिषं वि वो मदे यज्ञेषु
स्तीर्णबर्हिषं विवक्षसे ॥२॥

پرمیشور دیو! آپ داتا ہیں اور سرو ویاپک یعنی سب جگہ موجود رہتے ہوئے سب پر اپنا راجیہ چلا رہے ہیں، اگنی کی طرح سب جگت کے اگوا ہیں، اُپاسنا یگیوں میں اپنے ہردیوں میں آپ کے لئے آسن بچھائے ہوئے ہیں، آپ منتروں کے ذریعے گیان داتا ہیں، اور سب کے لئے روزی رساں ہیں، ہم آپ کو ورن کرتے ہیں!

جگت پر چھائے ہوئے سب کیلئے روزی رساں
منتروں کے گیان داتا اگرنی ہیں کل جہاں

420 सब जगत पर आप का शासन

परमेश्वर देव ! आप दाता हैं और सर्वव्यापक होकर सब पर अपना राज्य चला रहे हैं । अग्नि के समान सब जगत के अग्रणी हैं, उपासना यज्ञों में अपने हृदयों में आप के लिए आसन बिछा रखा है। आप मंत्रों के द्वारा ज्ञान और सब के लिए जीवका के दाता हैं । हम आप को वरण करते हैं ।

जगत पर छाए हुए सब के लिए रोज़ी रसां ।
मन्त्रों के हैं ज्ञान दाता, अग्रणी हैं कुल जहां ॥

منتر نمبر ۴۲۱   کھنڈ ۸

اُوشا کی عظمت!

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती ।
यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि
वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥३॥

رُوحانی جلال دینے والی اُوشا! تیرے دویہ پرکاش میں سب جگت جاگ کر آتم گیان کو پراپت کرتا ہے، جو عظیم خزانہ ہے، عارفوں کے لئے تو گیان کی روشنی ہے، تو ستیہ پریم کا سندیش لاتی ہے، بھگوان کی کُل سے پیدا ہوئی تجھ سے سچی کیرتی کی پریرنا بھگت آتماؤں کو ملتی ہے۔

تیری عظمت میں ہیں اُوشا سب جہاں کی عظمتیں
تجھ سے ہی سب بودھ پاتے اُٹھ کے لیتے برکتیں

421 **उषा की महिमा**

अध्यात्मिक तेज देने वाली उषा ! तेरे दिव्य प्रकाश में सब जगत जाग कर आत्म बुद्धि और ज्ञान प्राप्त करता है जो महा धन है और उपासकों के लिए अध्यात्म संपदा । तू सत्य प्रेम का संदेश लाती है परमेश्वर की कुल से हुई तुझ से सत्य कीर्ति की प्रेरणा भक्त आत्माओं को मिलती है ।

तेरी महिमा से हैं उषा, सब जहां की अज़मतें ।
तुझ से हैं सब बोध पाते, उठ के लेते बरकतें ।।

منتر نمبر ۴۲۲ **اُوشا کال برہم مہُورت کی برکات** کھنڈ ۸

भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम् ।
अथा ते सख्ये अन्धसो वि वो मदे
रणा गावो न यवसे विवक्षसे ।।४।।

اُوشا کا پوتر مہُورت صبح صادق ہمارا اُبل بُدھی من اور سنکلپ پاکیزہ کرتا ہے، اور ہمیں کلیان مارگ کی طرف بڑھاتا ہے، یہ برہم مہُورت ہے، اُوشا کا برہم ویلا (وقت) ہمارے اگیان کو دُور کرتا اور روحانی دولت کو دیتا ہے جیسے گئوئیں ہرے بھرے گھاس میں رمن کرتی ہیں۔ ویسے ہم تیرے سہہ واس میں جاگ کر آنند کو پراپت کریں!

ے جاگ کر اُوشا سمے میں بُدھی بل من شُدھ کریں
اور شُدھ سنکلپ سے ایشور میں اپنا چت دھریں

422 **उषा काल ब्रह्म महूर्त**

उषा का पवित्र मुहूर्त हमारे बुद्धि बल मन और संकल्प को पवित्र करता है और हमें कल्याण मार्ग की ओर बढ़ाता है उषा का यह ब्रह्म महुर्त हमारे अज्ञान को दूर करता और आत्म सम्पदा को देता है जैसे गौवें हरे भरे घास में रमण करती हैं वैसे हम उषा के सहवास में जाग कर आनन्द को प्राप्त करें।

जाग कर उषा समय में, बुद्धि बल मन शुद्ध करें।
और शुद्ध संकल्प से ईश्वर में अपना चित्त धरें॥

منتر نمبر ۴۲۳ **پرمیشور ڈراؤنی طاقت اور دیا بھاؤ دونوں سے رکھشا کرتا ہے!** کھنڈ ۸

क्त्वा महाँ अनुष्वधं भीम आ वावृते शवः।
श्रिय ऋष्व उपाकयोर्नि शिप्री हरिवान्
दधे हस्तयोर्वज्रमायसम् ॥४॥

مہان بلوان اور بھینکر یعنی ڈراؤنا ہوتا ہوا پرماتما بُدھی اور بل کے ذریعے سارے برہمانڈ کو دھارن کر رہا ہے، اُپاسکوں کو رُوحانی خوراک یعنی آنند رس بخشش کر کے اُسے لکشمی وان بنا دیتا اور اُن کے نزدیک تر ہو جاتا ہے جیسے تیجسوی گھوڑ سوار راجہ اپنے سیوک کو سمپدا دینا اور پرجا کی رکھشا کے لئے اپنے ہاتھ میں لوہا دھارن کرتا (استر شستر) ویسے بھگوان بھگت جن اور پرجا سب کی رکھشا کرتا ہے۔

ے سوم بھی ہے اور رُدر بھی ہے پرمیشور سب کا بھرتا ہے
بَدوں کو ڈراتا طاقت سے نیکوں کی حفاظت کرتا ہے

महा बलवान और भयंकर होता हुआ प्रभु बुद्धि और बल के द्वारा ब्रह्माण्ड को धारण कर रहा है। उपासकों को सोम अर्थात् आनन्द रस देकर उसे श्रीमान बना देता है। और उनके निकट-तम हो जाता है। जैसे अश्वारोही क्षत्री राजा अपने सेवकों को सम्पदा देता और प्रजा की रक्षा के लिए अपने हाथ में लाहा कर्थात् अस्त्र शस्त्र धारण करता है वैसे रुद्र और सोम रूप भगवान, भक्त जन और प्रजा सब की रक्षा करते हैं।

सोम भी है और रुद्र भी है परमेश्वर सब का भरता है।
पापी को डराता ताकत से नेकों की हिफ़ाज़त करता है ॥

منتر نمبر ۴۲۴ شریر کے رتھ کا سوار کون ہو سکتا ہے؟ کھنڈ ۸

स घा तं वृषण रथमधि तिष्ठाति गोविदम्।
यः पात्रं हारियोजनं पूर्णमिन्द्र चिकेतति
योजा न्विन्द्र ते हरी ॥६॥

ہے اندر! وہی منش یا عارف انسان اس سکھدائیک شریر کی گاڑی پر سوامی ہو کر بیٹھنے کے لائق ہے، جو اپنی اندریوں روپی گھوڑوں کو وش میں کرنے والے یوگ ابھیاس اور پوتر کرم کانڈ، آچار، وہار کے ابھیاس کو کر لیتا ہے، آتما کا دھرم ہے کہ وہ پران ایان کے ابھیاس سے سارے پنڈ پر قابو پا جیون یاترا کو سکھی بنا ئے!

اندریوں کے اشو جوڑے جسم میں پرماتما
شدھ اور قابو میں کر ان کو سکھی ہو آتما

424 शरीर के रथ का रथी कौन हो ?

हे इन्द्र ! वही मनुष्य इस सुख दायक शरीर के रथ पर सवारी करने के योग्य है जो अपनी इन्द्रिय रूपी घोड़ों को वश में करने वाले योगाभ्यास और पवित्र आहार विहार आचार का

अभ्यास बना लेता है । आत्मा का धर्म है कि वह प्राण अपान के नियंत्रण से सारे पिण्ड को वशीभूत कर जीवन यात्रा को सुखी बनाए ।

इन्द्रियों के अश्व जोड़े, देह में परमात्मा
शुद्ध और काबू में कर इनको सुखी हो आत्मा ।

منتر نمبر ۴۲۵ کھنڈ ۸

کَون ہَے اَگنی اَور کیا کرتا ہَے؟

३ १र २र ३ २उ ३२ ३ १र २र ३१२
अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः ।
२ ३१२ ३२उ ३ १ २ ३२३
अस्तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिन
१२ ३२ ३ १ २
इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥७॥

مَیں اُپاسک اُس کو اگنی مانتا ہوں جو سب میں بسا ہوا ہے اور جس کے اندر سمے (وقت) آنے پر دُودھ دینے والی گئو ییں، تیز چال گھوڑے اَور تمام شکتی شالی پدارتھ جو اپنے کو ہمیشہ رہنے والا مانتے ہیں۔ ایک دن وہ سبھی ولِین یعنی نشٹ (فنا) ہو جائیں گے، لہٰذا ہے پرمیشور ہمیں وہ ادھیاتمک دھن دیجئے جو سدا امر رہنے والا ہو!

ے
اگنی جو سب کو بساتا اور قیامت ڈھاتا جو
دُنیا کے سارے پدارتھ اپنے میں ہے سماتا جو

425 कौन है अग्नि और क्या करता है ?

मैं उपासक उसको अग्नि मानता हूं जो सब में बसा हुआ है जिस के अन्दर समय आने पर दुधारु गौवें, तीव्र गति घोड़े और सभी शक्तिशाली जो अपने को सदा रहने वाला मानते हैं । एक दिन वे सभी विलीन हो जायेंगे । अतः हे परमेश्वर हमें वह अध्यात्म धन दीजिए जो शाश्वत हो ।

अग्नि जो सबको बसाता, और प्रलय ढाता है जो ।
दुनियां के सारे पदार्थ, अपने में है समाता जो ।।

منتر نمبر ۴۲۶ کھنڈ ۸

پرمیشور کی تین شکتیاں!

न तमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम् ।
सजोपसो यमर्यमा मित्रो नयति
वरुणो अति द्विषः ॥८॥[४।८]

اوصاف حمیدہ والے عارفو! اُس منش کو نہ پاپ لگتا ہے اور نہ اُس کی دُرگتی ہوتی ہے یعنی نہ اُسے دُکھ کلیش بیماریاں تڑپاتی ہیں، جس کو پرمیشور کی تین شکتیاں مل کر راگ دویش خطرناک جنگل سے پار کر دیتی ہیں، وہ تین طاقتیں ہیں، ۱۔ ایشوری انصاف کا برتاؤ، ۲۔ سب کے ساتھ دوستی، ۳۔ پاپ سے سدا بچے رہنا!

ے نہ ستائے اُس کو عذاب دُکھ کلیش چنتا نہ آسکے
جو دوستی، انصاف اور نِشپاپتا اپنا سکے

426 परमेश्वर की तीन शक्तियां

सद्गुण युक्त उपासको ! उस मनुष्य को न पाप लगता है न उस की दुर्गति होती है, जिस को परमेश्वर की तीन शक्तियां मिल कर राग द्वेष के भयंकर क्षेत्र से पार कर देती हैं वह हैं 1) न्याय व्यवहार 2) सब के साथ मैत्री 3) पाप से निवृति ।

न सताये उसको महान दुःख, चिन्ता क्लेश न आ सके ।
जो मित्रता, इन्साफ और निश्पापता अपना सके ॥

منتر نمبر ۴۲۷ کھنڈ ۹

بھگتی اور پریم پرمیشور کے لئے ہو!

परि प्र धन्वेन्द्राय सोम
स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय ॥१॥

یہ بھگتی رس دیا ہوا بھگوان کا حوالے ہو بھگوان کے، دُنیاوی بندھنوں سے دُور ہو جائے، سب کے مِتر پیارے، سب کو بل دینے والے، سب کے بھاگیہ سوبھاگیہ کے داتا بھگوان کے لئے ہی وقف رہے سدا۔

ے یہ سوم رس یہ بھگتی رس کس نے دیا؟
کر حوالے اُس کے جس نے ہے دیا

427 **भक्ति और प्रेम परमेश्वर के लिए**

यह भक्ति रस दिया हुआ भगवान का समर्पित हो भगवान के। यह अमृत रस संसारिक बन्धनों से दूर रहे। सब के मित्र प्यारे सब को बल देने वाले भाग्य सौभाग्य के दाता परमेश्वर के लिए ही सदा बना रहे।

यह सोम रस यह भक्ति रस किस ने दिया।
कर समर्पण उसको जिस ने है दिया ॥

منتر نمبر ۴۲۸ کھنڈ ۹

رُوحانی دَولتوں کی پراپتی!

पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये
परि वृत्राणि सक्षणिः ।
द्विषस्तरध्या ऋणया न ईरसे ॥२॥

آتما میں پیدا ہوا بھگتی رس سنساری رشتوں سے مُبرّا ہو کر جب ایشور کی طرف بہنے لگتا ہے تو بھگت کو تب روحانی دھنوں کی پراپتی ہوتی ہے اور پاپ کے راکھشس بھی اندر سے بھاگ جاتے ہیں۔ دویش کی خطرناک ندی بھی پار ہو جاتی ہے اور دیو، پتر اور رشیوں کے قرضوں سے بھی چھوٹ کر کلیان کی طرف عارف بڑھنے لگتا ہے۔

ے پریم بھگتی کا اَمرت رس ایشور کی طرف بہتا ہے۔ بدیوں سے رہائی ملتی ہے اور آتم دھن بھی بڑھتا ہے

428 अध्यात्मिक धनों की प्राप्ति

आत्मा में प्रगट हुआ भक्ति रस सांसारिक नातों से रहित होकर जब ईश्वर की ओर बहने लगता है तब भक्त को अध्यात्मिक सम्पदा की प्राप्ति होती है और पाप के राक्षस भी भाग जाते हैं। द्वेष की भयंकर नदी भी पार हो जाती है एवं देव, पितर और ऋषि ऋण से भी उऋण हो कल्याण मार्ग की ओर बढ़ने लगता है।

प्रेम भक्ति का अमृत रस ईश्वर की ओर जब बहता है।
पापों से रिहाई मिलती है और आत्म धन भी बढ़ता है॥

منتر نمبر ۴۲۹ پربھو پریم کا بھگتی رس پوتر کر دیتا ہے! کھنڈ ۱

१२ ३१ २३२
पवस्व सोम महान्त्समुद्रः
३ २ ३२ ३ २ ३१र २र
पिता देवानां विश्वाभि धाम ॥३॥

ہے سوم آنند بھگتی رس تو ہمیں پوتر کر دے، تو مہان شکتی ہے، سمندر ہو کر مجھ میں بھر جا، یہ بھگتی رس ہی ہمارا رکھشک ہے اور سبھی اوصافِ حمیدہ کو دینے والا اور حواسِ خمسہ کو پاکیزگی دینے والا ہے!

ے پربھو پریم کا پی کر پیالا ہو جاؤں متوالا
رگ رگ میں امرت کو بھر دے گیان کا کرے اجالا

429 प्रभु प्रेम का भक्ति रस पवित्र करता है

हे सोम आनन्द भक्ति रस ! तू हमें पवित्र कर दे। महान शक्ति है सागर समान मुझ में भर जा। यह भक्ति रस ही हमारा रक्षक है। अनेक सद्गुणों को देने वाला और मन तथा इन्द्रियों को पवित्र करने वाला हैं।

प्रभु प्रेम का पीकर प्याला हो जाऊं मतवाला।
रग-रग में अमृत को भर दे ज्ञान का करे उजाला।

منتر نمبر ۴۳۰ **گیان، بل اور دھن کیلئے پوِتّر کرو!** کھنڈ ۹

१२ ३२उ ३ २ ३
पवस्व सोम महे दक्षायाश्वो
१ ३ २ ३ १र २र
न निक्तो वाजी धनाय ॥४॥

ہے سوم آنند امرت رس پُورن پرمیشور! ہمیں پوِتّر کرو، بَل، گیان اور دھن کے لئے اگنی یا گھوڑے کی طرح طاقت ور ہو کر آپ کے سوم کو حاصل کر سدا شُدھ، پوِتّر اور شانتی یُکت ہوں۔

گیان دھن بَل کے لئے جیون ہمارے شُدھ ہوں
ہے سوم تیرے سوم سے ہم بُدھ اور پربُدھ ہوں

430 **ज्ञान बल और धन के लिये पवित्र करो**

हे सोम आनन्द अमृत रस पूर्ण परमेश्वर हमें पवित्र करो बल ज्ञान और धन के लिए अग्नि वा अश्व के समान शक्तिशाली होकर आप के सोम को प्राप्त कर सदा शुद्ध पवित्र और शान्ति युक्त हों।

ज्ञान धन बल के लिए जीवन हमारे शुद्ध हों।
हे सोम तेरे सोम से हम बुद्ध और प्रबुध हों॥

منتر نمبر ۴۳۱ **شانتی داتا بھگتی رس** کھنڈ ۹

१ २ ३ २३१ २३२३१ २
इन्दुः पविष्ट चारुर्मदायापामुपस्थे
३१र २र
कविर्भगाय ॥५॥

چندرماں کی طرح عابد میں شانتی دینے والا بھگتی رس ہمیں پوِتّر کرتا ہے، جو بہت ہی زیادہ خوبصورت اور دِل کش ہے، ہردیہ میں پیدا ہو کر سب خوشیوں کو دیتا اور آنند کی

مستی میں شاعری بھی اُبھر پڑتی ہے، جس کے سہارے عارف ایشور کی طرف بڑھنے لگتا ہے!

ے چندرسم ہے شانتی کی روشنی یہ بھگتی جام
جس سے ہو سرشار عارف جھومتا ہے صبح و شام

431 **शान्ति दाता भक्ति रस**

इन्द्र के समान शान्ति देने वाला भक्ति रस हमें पवित्र करता है। जो अति सुन्दर और हृदयग्राही है अन्तकरण में प्रगट होकर हर्ष और उल्लास को देता और इस आनंद के मद में काव्य भी उमड पड़ता है जिस के सहारे उपासक ईश्वर की ओर बढ़ने लगता है।

चन्द्र सम है शान्ति की ज्योति यह प्यारा भक्ति जाम।
जिससे हो मद मस्त मानव झूमता है सुबह शाम ॥

منتر نمبر ۴۳۲ **بھگوان کی بھگتی سے آنند ہی آنند!** کھنڈ ۹

अनु हि त्वा सुतं सोम
मदामसि महे समर्यराज्ये ।
वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे ॥६॥

جس کے پیدا ہو جانے پر چاروں طرف مستی کا عالم برپا ہو گیا ہے۔ ایسا محسوس ہوتا ہے کہ ہم سچے پتا پربھو کے راجیہ میں آنند سے بھر رہے ہیں۔ یہ بھگتی رس ہمیں پاکیزگی دیتا ہوا رگ رگ میں بھر رہا ہے!

ے بھگتی رس پیدا ہوا جو ایشوری چمکار ہے
شانتی، پاکیزگی، آنند کا سنچار ہے

432 **भगवान की भक्ति में आनंद ही आनंद**

जिसके प्रगट हो जाने पर चहूं ओर आनन्द ही आनन्द छा गया है। ऐसा लगता कि हम सच्चे पिता प्रभु के राज्य में आनन्द

से भर रहे हैं। यह भक्ति रस नस नस में पवित्रता देता हुआ वह रहा है।

भक्ति रस पैदा हुआ जो ईश्वरी चमकार है।
पवित्रता और शान्ति आनन्द का संचार है॥

منتر نمبر ۴۳۳ کھنڈ ۹

کون ہیں! یہ جاننا ہے؟

क ई व्यक्ता नरः सनीडा रुद्रस्य
मर्या अथा स्वश्वाः ॥७॥

۱۔ کون ہیں جو آپس کے برتاؤ میں چھل کپٹ سے مبرّا ہو کر صاف گوئی سے کام لیتے ہوں؟ ۲۔ جیسے پکھشی ایک گھونسلے میں پریم پیار سے رہتے ہیں، ایسے بھگوان کے گھر اس دھرتی پر ایک دوسرے سے پیار کرتے رہتے ہوں؟ ۳۔ سب کو ایشور کے سنتان بھائی چارے سے ورتتے ہوں؟ اور ۴۔ جن کے من اور اندریاں پوتر ہوں؟

شُدھ کر من اندریوں کو بھائی چارے سے جو رہتے
ایشور کا گھر سمجھ کر ستیہ کا ویوہار کرتے

433 कौन है यह जानना है ?

कौन है जो आपस के व्यवहार में छल कपट से रहित होकर स्पष्ट यानि सत्य बोलते हों 2) जैसे पक्षी एक घौंसले में प्रेम प्यार से रहते हैं ऐसे भगवान के घर इस धरती पर परस्पर प्यार करते रहते हों 3) सब को ईश्वर की सन्तान मान भाई चारे से वर्तते हों और 4) जिन के मन और इन्द्रियां पवित्र हों।

शुद्ध कर मन इन्द्रियों को भाई चारे से जो रहते।
ईशवर का घर समझ कर सत्य का व्यवहार करते॥

منتر نمبر ۴۳۴ — کھنڈ ۹

ہے اگنے گیان روپ ایشور

२३ २३ २ ३ २उ ३
अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः
२३ २ ३१ २३ १२
क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम् ।
३ १ २ ३ १२
ऋध्यामा त ओहैः ॥८॥

ہے اگنے گیان روپ ایشور! گھوڑے یا یگیہ اگنی کی طرح دنیا کے کارخانے کو چلانے والے، بجلی کی طرح منوّر، برہمانڈ کا نرمان (بنانے) کرنے والے، بھگتوں کے ہردیوں میں پرگٹ ہونے والے، خوشیوں کے سرچشمے! ہم آج ہی اور ہمیشہ ہمیشہ آپ کی ستتی (حمد و ثنا) کرتے رہیں۔

ے سنسار رچانے والے ایش! سب کے پیارے رکھوالے ہیں
کرتے ہیں آپ کے ستوتر گان خوشیوں کے دینے والے ہیں

434 **हे अग्ने ज्ञान रूप ईश्वर**

घोड़े या यज्ञ अग्नि के समान विश्व का संचालन करने वाले विद्युत की भांति चमकदार, ब्रह्माण्ड के निर्माता उपासकों के हृदयों में प्रगट होने वाले, हर्ष समुदाय के स्रोत परमेश्वर ! हम आज ही और सर्वदा आप के स्तोत्र गाते रहें।

संसार के रचने वाले ईश सब के प्यारे रखवाले हैं।
करते हैं आप के स्तोत्र गान खुशियों के देने वाले हैं॥

منتر نمبر ۴۳۵ — کھنڈ ۹

اپکاری انسان سورگ کو جیت لیتے ہیں!

३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
आविर्मर्या आ वाजं वाजिनो
३ १ २ ३ २ ३२
अग्मन् देवस्य सवितुः सवम् ।
३ १ २
स्वर्गां अर्वन्तो जयत ॥६॥

اِنسانوں کی دُوا بننے والے بھگت جَن پرمیشور کی شکتی کو حاصل کر لیتے، اَور اُس کی نوازش یا پریرنا کو بھی پا لیتے ہیں، پیارے عارفو! پرمیشور کی راہ میں آگے بڑھتے ہوئے پاپوں اَور گناہوں سے کنارہ کش ہو کر سورگ کے پُورن سُکھ کو پراپت کر لو۔

~

اِنسان بنا ہے کر کچھ اِنسان کی بھلائی
دُنیا میں سُورگ یہ ہے آواز ہے خدائی

435 **उपकारों मानव स्वर्ग को जीत लेते हैं**

मनुष्यों के हितकारी भक्त जन परमेश्वर की शक्ति आशीर्वाद और प्रेरणाओं को पा लेते हैं। प्यारे उपासको भगवान की राह में अग्रसर होते हुए पापों से मुक्त होकर स्वर्ग के पूर्ण सुख को प्राप्त करो।

मानव बना है कर कुछ, मानवता की भलाई।
है स्वर्ग विश्व में यह, आवाज है खुदाई॥

منتر نمبر ۴۳۶ **ہماری زندگیوں کو پاکیزہ بناؤ** کھنڈ ۹

१२ ३ १ २ ३ २
पवस्व सोम द्युम्नी सुधारो
३ १र २र ३ १ २ ३ २
महाँ अवीनामनुपूर्व्यः ॥१०॥[४१६]

سوم اَمرت پرمیشور! ہماری زندگیوں کو پوِتّر کرو، ہمارے دل شُدھ اور روشن ہوں، ایش رُوپ سچّی دولت بخشو، آپ آنند کی دھارائیں اور مہان شکتی، رکھشا کرنے والی طاقتوں میں آپ ایک بے مثال طاقت ہیں، جس کی وجہ سے ہم سدا محفوظ رہتے ہیں!

~

شُدھ اَور نِرمل کرو جیون ہمارے مہرباں
رکھشکوں کے آپ رکھشک اَور سچّے پاسباں

436 हमारे जीवन शुद्ध पवित्र हों

प्यारे सोम अमृत परमेश्वर ! हमारे जीवनों को पवित्र करो हमारे मन शुद्ध और प्रकाशमान हों । यश रूपी सम्पदा प्रदान कीजिए । आप आनंद की धारा हैं और महान शक्ति । रक्षकों के भी आप परम रक्षक हैं जिस से हम सदा सुरक्षित रहते हैं ।

शुद्ध और निर्मल करो जीवन हमारे मेहरबां ।
रक्षकों के आप रक्षक और सच्चे पासबां ॥

کھنڈ ۱۰ — منتر نمبر ۴۳۷

سب طرف سے ہمیں بھردو!

विश्वतोदावन् विश्वतो न आ भर
यं त्वा शविष्ठमीमहे ॥१॥

سب طرف سے دینے والے داتا ایشور! آپ مہان دھنی ہیں، جو ہماری منو کامنائیں ہیں، وہ سب طرف سے پُورن کر دیجئے!

سب کے داتا ہو پربھو ہم کو بھی دیجئے کر کرپا
جو اُٹھتی من میں چاہنا پُوری ہی ہوں وہ سروَدا

437 सब ओर से हमें भर दीजिये

सब ओर से देने वाले दाता ईश्वर ! आप महान्तो महान् धनी हैं कृपा करके हमारी मनोकामनाओं को सब ओर से भर दीजिए ।

सबके दाता हो प्रभु हम को भी दीजिए कर कृपा ।
जो उठती मन में चाहना पूरी ही हों वे सर्वदा ॥

کھنڈ ۱۰ — منتر نمبر ۴۳۸

اسی کی ہی میں ستتی کر رہا ہوں!

एष ब्रह्मा य ऋत्विय
इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे ॥२॥

یہی تو ظاہر ظہور برہم ہے، جو مختلف موسموں کو پیدا کر رہا ہے، جس سے سبھی عالم ارواح خوشی خوشی زندگی بسر کرتے ہیں اور یہی تو "اندر" نام والا ہے، جس کو وید شاستر سب گا رہے ہیں، اسی کی ہی میں ستتی کر رہا ہوں!

سب موسموں کو بنا رہے ظاہر ظہور ہو ہر طرف
جس سے ہیں پرانی سب سکھی اسکو ہی گاؤں سب طرف

438 **इसी की ही मैं स्तुति कर रहा हूँ**

यही तो प्रत्यक्ष ब्रह्म है जो ऋतुश्रों की रचना करता है जिस से सभी प्राणी हर्ष पूर्ण जीवन बिताते हैं और यही तो इन्द्र नाम वाला है जिस को वेद शास्त्र सब गा रहे हैं इसी की ही स्तुति मैं कर रहा हूं।

ऋतुश्रों के हो रचियता प्रत्यक्ष हो चारों तरफ़।
जिस से हैं प्राणी सब सुखी उस को ही गाऊं सब तरफ़॥

منتر نمبر ۴۳۹ **بھگوان کی مہما کو کیوں گانا چاہیئے؟** کھنڈ ۱۰

३ २ ३ १ २ ३ १ २
ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो
३ १र २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अर्कैरवर्धयन्नहये हन्तवा उ ॥३॥

پرمیشور اور اس کے گیان ویدوں کو جاننے والے اس اندر پرمیشور کی عظمت کے گیت گاتے ہوئے وید منتروں سے اس کی بھگتی کرتے رہتے ہیں، تاکہ سانپ کی طرح زہر بھرنے والے برے خیالات تباہ و برباد نہ کر سکیں۔

عابد بھی عارف اور سب ویدوں کے گیاتا جو بھی ہیں
کرتے ہیں اس کو یاد جس سے دور سب بدکار ہوں

439 **भगवान की महिमा का कीर्तन क्यों ?**

परमेश्वर और उसके ज्ञान वेदों के ज्ञाता उस इन्द्र परमेश्वर की महिमा के गीत गाते हुए वेद मन्त्रों से उस की भक्ति में रत

रहते हैं ताकि सांप के समान विष भरने वाली दूषत प्रवृतियां हमारा हनन न कर सकें।

भक्त जन विद्वान और वेदों के ज्ञाता जो भी हैं।
करते हैं उसको याद सब हों दूर आसुरी वृत्तियां॥

منتر نمبر ۴۴۰ کھنڈ ۱۰

مُکتی دھام تک لے چلو!

१२ ३ २३१ २
अनवस्ते रथमश्वाय
३ २३ १२ ३१ २
तन्नुस्त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम् ॥४॥

بہتوں سے پکارے جانے والے پرمیشور دیو! لمبی عمر پانے والے عابد لوگ آپکی عظمت کو جان کر اپنے شریروں کی گاڑی کو ویریہ رُوپی بجر سے خُوبصُورت اور طاقت ور بنا کر سجا لیتے ہیں، تاکہ آپ اِن شریروں میں بیٹھے ہوئے آتما کو مُکتی کی منزل تک پہنچا سکیں!

چاہتا نجات اِنساں مَرن سے اور جنم سے
تم رتھی جب تک نہ ہوو پاسکے کِس کرم سے

440 **बहुतों से स्तुति किये जाने वाले परमेश्वर**

दीर्घ आयु प्राप्त उपासक लोग आप की महिमा को जान कर अपने शरीर रूपी रथ को वीर्य रूपी वज्र से शक्तिशाली और सुन्दर बना लेते हैं ताकि आप इन शरीरों में व्याप्त आत्मा को मुक्ति धाम तक पहुंचा सकें।

चाहता है मोक्ष मानव मरण से और जन्म से
तुम रथी जब तक न होवो पा सकें किस कर्म से ?

منتر نمبر ۴۴۱ نیم برت رہت اِنسان کچھ نہیں پاسکتا ! کھنڈ ۱۰

शं पदं मघं रयीषिणे
न काममव्रतो हिनोति न स्पृशद्रयिम् ॥५॥

شانتی پد دھام، گیان دولت اور روحانی دھن اُن کو حاصل ہوتا ہے، جوکہ ملے ہوئے دھن کو خدمتِ خلق میں سدا وقف کئے رکھتے ہیں۔ دھرم، کرم، ریاضت، دان وغیرہ سے ہینّا انسان، اِن رُوحانی مقامات اور اشیاء کو حاصل کرنا تو کُجا، وہ چھُو بھی نہیں سکتا۔

ے نیم برت کو چھوڑ انساں پاسکے کچھ بھی نہیں
دولتِ دُنیاوی نہ رُوحانی حاصل ہوں کبھی

441 ब्रत नियम रहित मनुष्य कुछ नहीं पा सकता

शान्ति पद धाम ज्ञान बल और अध्यात्मिक ऐश्वर्य उनको प्राप्त होता है जो कि प्राप्त धनादि पदार्थों को सदा परोपकार में लगाए रखते हैं। धर्म,कर्म दान, सेवा आदि से रहित मनुष्य इन अध्यात्म ऐश्वर्यों और धामों को प्राप्त करना तो क्या उसे स्पर्श भी नहीं कर सकता।

व्रत नियम को छोड़ मानव पा सके कुछ भी नहीं।
दौलतें दुनियां की न अध्यात्म धन देवें कभी।

منتر نمبر ۴۴۲ ویدبانی کا مُطالعہ گائے کی طرح اُپکاری کر دیتا ہے! کھنڈ ۱۰

सदा गावः शुचयो विश्वधायसः
सदा देवा अरेपसः ॥६॥

ویدبانیاں سدا شُدھ پوتر ہیں، اُن کا مطالعہ کرنے والے عارف لوگ بھی من بانی اور

شریر سے پاکیزہ ہوجاتے ہیں۔ اُن کے من اور اندریاں بھی گئوؤں کی طرح پاکیزہ ہو جاتی ہیں، تب ہی وہ وید کے گیا تا عالم ہو کر گئو اور پرتھوی کی طرح سب کو پالن کرنے ہارے اُتم دیو گنوں کو پاکر گناہوں سے مبرّا ہو جاتے ہیں!

ـــــ گئوئیں ہیں شُدھ پوتّر جن سے شُدھی کرتا یگیہ ہے
شُدھ وید کی بانی سے وِدوان کرتا یگیہ ہے

442 वेद वाणी का अध्ययन गौ समान

वेद वाणियां शुद्ध पवित्र हैं उनका पाठ करने वाले जिज्ञासु भी मन वाणी और शरीर से पवित्र हो जाते हैं तब ही वे वेद के ज्ञाता होकर गौ और धरती के समान सब को पवित्र करने हारे उत्तम दिव्य गुणों को पाकर पापों से रहित हो जाते हैं।

गौवें हैं शुद्ध पवित्र जिन से शुद्धि करता यज्ञ है।
शुद्ध वेद की वाणी से विद्वान करता यज्ञ है ॥

منتر نمبر ۴۴۳ **سچی بھگتی سے بھگوان کی طرف آؤ!** کھنڈ ۱۰

आ याहि वनसा सह
गावः सचन्त वर्तनिं यदूधभिः ॥७॥

ہے بھگت آتمن! تو بھگوان کی طرف سچی بھگتی سے آ اور بیٹھ اُس کی عبادت میں جیسے کہ گئوئیں دُودھ بھرے تھنوں کے ساتھ راستوں پر چلتے ہوئے اپنے گھروں میں پہنچ جاتی ہیں!

ـــــ
دُودھ سے جیسے بھری گئوئیں پہنچتی اپنے گھر
بھگتی سے بھر کے ہردیہ آ بھگت تو بھگوان گھر

443 श्रद्धा भक्ति सहित भगवान की ओर आओ

हे भक्तात्मन् ! भगवान की ओर सच्ची भक्ति के साथ आ और बैठ उस की उपासना में। जैसे कि गौवें दूध भरे थनों के साथ मार्ग चलती हुई अपने घरों में पहुंच जाती हैं।

दूध से जैसे भरी गौवें पहुंचती अपने घर।
भक्ति से भर के हृदय आ भक्त तू भगवान घर॥

منتر نمبر ۴۴۴ کھنڈ ۱۰

نزدیک تیرے ہو کے رہیں!

१ २ ३ १र २र ३ २ ३
उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः
१ २ ३ २ ३ १२
पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र ॥८॥

ہے اندر! ہم تیرے ستوتر گاتے ہوئے تیرے مدھر واتاورن (میٹھے ماحول) میں رہتے ہوئے موکھش دھن کو اکٹھا کرلیں، سنبھال لیں اور تیرا دھیان ہی سدا کرتے رہیں!

ھ نزدیک تیرے ہو کے رہیں آتم دھن بھریں
مل جائے مکتی مارگ تیرے دھیان میں رہیں

444 निकट तेरे हो कर रहें

हे इन्द्र ! हम तेरे स्तोत्र गाते हुए तेरे निकट मधुर वातावरण में रहते हुए मोक्ष धन को संग्रह कर लें और तेरा ध्यान ही सदा करते रहें।

निकट तेरे हो रहें और आत्म धन भरें।
मिल जाए मुक्ति मार्ग तेरे ध्यान में रहें।

منتر نمبر ۴۴۵ **بھگوان کے ہو جاؤ وہ تمہارا ہو جائیگا** کھنڈ ۱۰

अर्चन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का

आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः ॥९॥

پرانا یام کی مشق سے عبادت میں رہتے ہوئے عابد لوگ قابلِ تعظیم پرمیشور کی جب پوجا بھگتی میں مصروف رہتے ہیں، تب وہ مشہور عالم اندر پرمیشور جو سدا جوان اور موت سے مبرّا امر ہے، اُن کی بھر پور مدد کرتا ہے۔

ؔ جب عبادت میں لگے عابد سدا مصروف ہیں
اندر بھی اُن کی مدد پر ویسے ہی مصروف ہیں

445 भगवान के हो जाओ वह तुम्हारा हो जायेगा

प्राणायाम योग से उपासना में लगे हुए मुमुक्षु जन प्रशंसनीय परमेश्वर की भक्ति में जब संलग्न रहते हैं तब वह सदा युवा और मृत्यु से रहित अमर इन्द्र परमेश्वर, उनकी भरपूर सहायता करता है।

भक्ति में संलग्न हो के बैठता जब भक्तजन।
इन्द्र भी उसके सहायक, बनते हैं तब प्राणपन॥

منتر نمبر ۴۴۶ **جو تمہارے پریم کو چاہتا ہے!** کھنڈ ۱۰

प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय

गाथं गायत यं जुजोषते ॥१०॥[४।१०]

گیانی لوگو! پاپ کے راکھشس کو مارنے والے مہان بُدھی وان اُس اندر پرمیشور کی گاتھا کو وید منتروں سے گاؤ، جس کو وہ آنند سے سُنتا ہے، اور تمہارے پریم کو چاہتا ہے۔

ے جو پاپ ناشک ہے پربھو اور گیانیوں کا گیان ہے
گاتی ہماری بانیوں کو سُنتا دھر کے کان ہے

446 जो तुम्हारे प्रेम का इच्छुक है

ज्ञानी विद्वानों ! पाप के राक्षस को हनन करने वाले मेधावी उस इन्द्र परमेश्वर की गाथा को वेद मन्त्रों से गाओ, जिस साम गान को वह आनंद से सुनता और तुम्हारे प्रेम को चाहता है।

जो पाप नाशक है प्रभु और ज्ञानियों का ज्ञान है।
गाती हमारी वाणियों को सुनता धर के कान है॥

منتر نمبر ۴۴۷ کھنڈ ۱۱

آہوتی کیطرح پرمیشور ہمیں چلا رہا ہے!

१ २ ३ १र २र ३ २उ ३ १ २
अचेत्यग्निश्चिकितिर्हव्यवाड् न सुमद्रथः ॥१॥

جیسے یگ کی آگ میں ڈالی ہوئی آہوتی وہ مادی آگ لے جا رہی ہے، ویسے ہی گیان سوروپ سارے جگ کی اگوائی کرنے والا اگنی پرماتما رتھ روپ ہو کر ہمیں چلا رہا ہے۔

ے جس طرح آہوتی لے جاتی ہون کی اگنی وہ
اس طرح ہم کو چلاتا وشو نیتا اگنی وہ

447 आहुति के सामान परमेश्वर हमें चलाता है

जैसे यज्ञाग्नि में दी हुई आहूति को भौतिक अग्नि ले जा रही है वैसे ही ज्ञान स्वरूप जग का नेता अग्नि अग्रणी परमात्मा रथ रूप होकर हमें चला रहा है।

जिस तरह आहुति ले जाती हवन की अग्नि है।
इस तरह हम को चलाता विश्व नेता अग्नि है॥

منتر نمبر ۴۴۸ کھنڈ ۱۱

خانۂ دِل میں بسنے والے!

अग्ने त्वं नो अन्तम

उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः ॥२॥

عالمِ کُل پرمیشور! سب سے نزدیک ترین ہمارے آپ ہو اور سب سے زیادہ محافظ کلیان کرنے والے ہو کر ہمارے خانۂ دِل میں بس رہے ہو!

ے
خانۂ دِل میں چھپا تھا مجھے معلوم نہ تھا
پردۂ غفلت کا پڑا تھا مجھے معلوم نہ تھا

448 **हृदय रूप घर के वासी**

सर्वज्ञ परमेश्वर ! आप हमारे निकटतम हो और सब से अधिक हमारे रक्षक तथा कल्याणकारी और फिर हमारे हृदय रूपी घर के सदा वासी हो।

खाना ए दिल में छिपा था मुझे मालूम न था।
पर्दा गफ़लत का पड़ा था मुझे मालूम न था॥

منتر نمبر ۴۴۹ کھنڈ ۱۱

مُکتی داتا

भगो न चित्रो अग्निर्महोनां दधाति रत्नम् ॥३॥

جیسے اُوشا کی رنگین فضاؤں میں صبحِ صادق کا جگمگاتا ہوا سُورج اپنی رنگین شعاؤں سے چِتر وچِتر ہو کر سب کو موہ لیتا ہے، ویسے ہی وہ بے شمار سُورجوں کا بھی سُورج پرمیشور رنگ برنگے جڑ اور پُرانی دُنیا کا معمار مہان آتماؤں کو موکھش رُوپ رتن کو دے دیتا ہے۔

ے
اُوشا کی رنگینیوں کو چمک دیتا سُوریہ جیسے۔ طالبانِ حق کو مُکتی رتن دیتا ایش وَیسے

449 **मोक्ष दाता**

जैसे उषा की रंगीनियों से निकलता हुआ जगमगाता सूर्य अपनी रंगा रंग किरणों से चित्र विचित्र होकर सब को आकर्षित करता है वैसे सहस्रों सूर्यों का सूर्य जगत की आत्मा इन्द्र चित्र विचित्र विश्व का निर्माण करता हुआ मुमुक्षुओं को मोक्ष रूप रत्न प्रदान करता है।

उषा की रंगीनियों को चमक देता सूर्य जैसे।
तालबाने हक को मुक्ति रत्न देता ईश वैसे।।

منتر نمبر ۴۵۰ **سَبْ کے سہارے جَگَت کے کھمبے** کھنڈ ۱۱

विश्वस्य प्र स्तोभ
पुरो वा सन् यदि वेह नूनम् ॥४॥

پرمیشور دیو! آپ سب کو تھامے ہوئے جگت کے کھمبے کی طرح ایک ہی سہارا ہیں، پہلے بھی آپ نے ہی سنبھال رکھا تھا اور اب بھی آپ ہی سارے سنسار کو سنبھالے ہوئے ہیں۔

~ آپ ہی ہو تھمب[1] دُنیا کے سہارے آپ ہو
پہلے تھے آدھار جیسے اب بھی وَیسے آپ ہو

450 **सब के आश्रय स्कम्भ ब्रह्म**

परमेश्वर देव ! आप सब को थामे हुए जगत के एक मात्र स्तंभ रूप आश्रय हैं। पूर्व कल्पों में भी आप ने धारण कर रखा था और आज भी कर रहे हैं।

आप ही स्कम् ब्रह्म दुनियां के सहारे आप हो।
पहले थे आधार जैसे अब भी वैसे आप हो।।

---

[1] کھمبا

منتر نمبر ۴۵۱ کھنڈ ۱۱

دھنیہ ہے اوشا اور دھنیہ ہے آتم جیوتی!

३२उ ३ २३२३
उषा अप स्वसुष्टमः
१ २ ३ १ २ ३ १ २
सं वर्तयति वर्तनिं सुजातता ॥५॥

جیسے اوشا اپنی بہن رات کے اندھکار کو دور کر کے اُسے منوّر بنا دیتی ہے۔ ویسے پرماتم جیوتی آتما میں روشن ہو کر ہماری جڑتا، جہالت، اگیان اور موت کے ڈر کو دور کر کے بھگوان سے ملا دیتی ہے، دھنیہ ہے اوشا اور دھنیہ ہے آتم جیوتی!

اوشا اور رُوحِ منوّر دھنیہ ہو تم دونوں جیوتی
ملتی ہے عارف کو جس سے ایشور پیارے کی جیوتی

451 धन्य है उषा और आत्म ज्योति

जैसे उषा अपनी बहन रात्री के अन्धकार को दूर करके उसे प्रकाशित कर देती है वैसे ही परमात्म ज्योति आत्मा में प्रकाशित होकर हमारी जड़ता, अविद्या, अज्ञान और मृत्यु के भय को दूर करके भगवान से मिला देती है। धन्य है उषा और धन्य है आत्म ज्योति।

आत्म ज्योति और उषा धन्य हो तुम दोनों ज्योति।
भक्त को जिससे है मिलती ईशवर प्यारे की ज्योति॥

منتر نمبر ۴۵۲ کھنڈ ۱۱

سبھی اشیاء ہمارے سُکھ بھوگ کو سِدھ کریں!

३२उ ३ १२
इमा नु कं भुवना
३ १ २ ३ १ २ ३ २
सीषधेमेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ॥६॥

ایشور نے جو ہمیں شاریرک بھُوون یعنی جسم کے مختلف حصے ہاتھ، پیر، چھاتی، پیٹ، دِل، دماغ، پھیپھڑے، ٹانگیں سبھی گیان اور کرم اِندریاں بخشی ہیں، وہی اِندر

اَور سبھی دیوتا ماتا پِتا وِدوان وغیرہ اِن سب سے سُکھ بھوگ سِدّھ کرنے کی رغبت دیتے رہیں۔

اِندریاں بخشیں ہمارے شانتی سُکھ کے لئے
اِندر اَور سب دیوگن دیں سادھنا اِس کے لئے

452 सभी पदार्थ हमारे सुख भोग को सिद्ध करें

ईश्वर ने जों हमें शारीरिक भुवन हाथ, पैर, टांगें, छाती, पेट, हृदय फुफ़स ओर मस्तिष्क आदि सभी ज्ञान और कर्म इन्द्रियां प्रदान की है वही इन्द्र और सभी माता पिता, विद्वान आदि देवगण इन्हीं सब पदार्थों से सुख भोग सिद्ध करने की प्रेरणा देते रहें।

इन्द्रियां दी हैं हमारी शान्ति सुख के लिए।
इन्द्र और सब देवगण दें साधना इसके लिए॥

منتر نمبر ۴۵۳

آپ سے مِلے ہُوئے دان آپ کے حوالے! کھنڈ ۱۱

२३ ३ २ ३ १ २ ३ २ उ
त्रि स्रुतयो यथा पथा
३ १ २ ३ १ २
इन्द्र त्वद्यन्तु रातयः ॥७॥

جیسے ندیاں سمندروں سے نکل کر مختلف راستوں سے پھرتی پھراتی پھر ساگر میں جا کر مِل جاتی ہیں، ویسے ہے اِندر پرمیشور تیرے دیئے ہوئے۔ بے شمار دان یا نعمتیں آخیر میں پھر تیرے ارپن ہو جاتی ہیں۔

سپُردم بتو مایۂ خویش را ۔ تُو دانی حسابِ کم و بیش را

453 आप से मिले हुए दान आपके हो समर्पित

जैसे नदियां सागर से निकल कर अनेक मार्गों से फिरती फिराती फिर सागर में आकर मिल जाती हैं वैसे हे इन्द्र परमेश्वर तेरे दिए हुए असंख्य दान अन्त में फिर तेरे ही अर्पण हो जाते हैं।

मेरा मुझ में कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझ को सौंपते क्या लागे है मोर॥

منتر نمبر ۴۵۴ ویر پتروں والے ہوکر سو ورش جیئیں! کھنڈ ۱۱

अया वाजं देवहितं
सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥८॥

اس طرح پرمیشور اور دیوتاؤں سے دیئے گئے گیان، بل، دھن وغیرہ کو پا کر دھرماتما، نیک، ایماندار، بہادر آل اولاد والے ہوکر سو برس تک آنندپورک جیئیں!

خدا سے دیوتاؤں سے ملی جو بخشش ہیں سب
بہادر نیک بچوں والے ہو بھوگیں برس صد سب

454 वीर पुत्रों वाले होकर सौ वर्ष जीयें

इस प्रकार परमेश्वर और देवताओं से दिए गए ज्ञान, बल धन आदि को पाकर धर्मातमा, श्रेष्ठ और वीर धीर मनुष्य वीर सन्तानों वाले होकर सौ वर्ष और इससे अधिक आनन्द को भोगें।

प्रभु से देवताओं से मिले जो दान हैं यह सब।
बहादुर वीर पुत्रों वाले हो भोगें वर्ष शत् सब॥

منتر نمبر ۴۵۵ سب کا مترٗ پرمیشور ہمیں طاقت بخشے! کھنڈ ۱۱

ऊर्जा मित्रो वरुणः
पिन्वतेडाः पीवरीमिषं कृणुही न इन्द्र ॥९॥

سب کا سچا دوست، سب سے سریشٹھ اور پاپوں سے چھڑانے والا پرمیشور اندر پرانوں کی شکتی سے ساری دھرتی کے باسیوں کو طاقت دے اور ہماری رکھشا کے لئے

شکتی شالی اَن پردان کرے ۔

ے سب کا سچا دوست جو دیتا گناہوں سے بچا
ساری دھرتی کے نواسی اُس سے پاتے ہیں بقا

455 **सर्वमित्र परमेश्वर हमें शक्ति दे**

सब का मित्र सबसे श्रेष्ठ और पापों से छुड़ाने वाला इन्द्र परमेश्वर प्राणों की शक्ति से सम्पूर्ण धरती के वासियों को शक्ति दे और हमारी रक्षा के लिए शक्तिशाली अन्न प्रदान करे ।

सब का सच्चा मित्र वह देता है पापों से बचा ।
सारी धरती के निवासी उस से है रक्षित सदा ।

منتر نمبر ۴۵۶ **جگت کا راجہ پرمیشور** کھنڈ ۱۱

इन्द्रो विश्वस्य राजति ॥१०॥[४।११]

بجلی کی طرح سب کو چمک دار روشنی دینے والا اِندر ہی سارے جگت کا راجہ ہے، ایسا جان کر اُس کی عبادت اور اُس کا حکم فرضِ اوّل ماننا چاہیئے ۔

ے ساری دُنیا پر تسلّط چھایا پیارے اندر کا
سب جگت کا راجہ ہے ہم حکم مانیں اندر کا

456 **जगत का राजा परमेश्वर**

विद्युत की भान्ति सब को ज्योति देने वाला इन्द्र ही सारे जगत का राजा है ऐसा जान कर उसको नित्य उपासना और आदेश उपदेश को सर्व प्रथम मानना चाहिए ।

विश्व पर है राज्य छाया सारे प्यारे इन्द्र का ।
सब जगत का राजा है आदेश मानें इन्द्र का ।

منتر نمبر ۴۵۷ اُپاسنا آنند میں مدمست آتما کھنڈ ۱۲

پرم آتما کا سماگم کر لیتا ہے!

त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृम्पत्
सोममपिबद् विष्णुना सुतं यथावशम् ।
स ई ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरु सैनं
सश्चद्देवो देव सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥१॥

زمین کے تین حصص جل، تھل اور پہاڑ۔ جسم خاکی کے تین حصص شریر، من اور آتما تتھا جیوتی گئو اور آیو ان سب کو بھوگتے ہوئے انسان میں وشنو پرماتما کی کرپا سے حاصل پاسنا بھگتی رس کو مہابلوان پرمیشور سویکار کر پرسن ہو جاتا ہے، جیسے کہ جو یا چاول سے بنائی ہوئی لذیذ کھیر سے کوئی مہاپرش خوش ہو کر دیالو ہو جاتا ہے، ویسے ہی وہ آنند کند بھگوان دیالو ہو کر اپنے رحم کرم سے یعنی امرت دھام کے خواہشمند عارف کو اپنا سماگم بخشیش کرتا ہے۔

شعر
بھگتی میں بھگوان کی لگ جاتا جب یہ آتما
اُس کو کر سویکار اپنا تا اُسے پرماتما

457 भक्ति में आनन्दित आत्मा परमात्मा का समागम

पृथ्वी के तीन भाग जल, थल और पर्वत, देह के तीन भाग शरीर, मन और आत्मा तथा ज्योति गौ और आयु इन सब को भोगते हुए उपासक में विष्णु की कृपा से प्राप्त भक्ति के अमृत रस को महा बलवान परमेश्वर स्वीकार कर प्रसन्न हो जाता है जैसे कि दूध वा चावल से बनी हुई स्वादु खीर से कोई श्रेष्ठ पुरुष प्रसन्न होकर दयालु हो जाता है वैसे ही वह आनन्द कन्द भगवान करुणा कर मुमुक्षु को अपना समागम दे देता हैं ।

भक्ति में भगवान की लग जाता जब यह आत्मा।
उसको कर स्वीकार अपनाता उसे परमात्मा।

منتر نمبر ۴۵۸ **رَوشنی کی طرف ترغیب دینے والا!** کھنڈ ۱۲

अयं सहस्रमानवो
दृशः कवीनां मतिर्ज्योतिर्विधर्म।
ब्रध्नः समीचीरुषसः समैरयदरेपसः
सचेतसः स्वसरे मन्युमन्तश्चिता गोः ॥२॥

پرمیشور ہزار ہا یعنی تمام انسانوں کا مالک، راہبر اور درشن کرنے کے یوگیہ ہے، اور وِدوان دانشمندوں کے لئے وچار اور جاننے کے لائق مختلف دُنیا کو دھارن کرکے اس کے وِدھان کو بنانے والا اور وید بانی کے ذریعے بہت سی آتماؤں میں گیان جیوتی کی پریرنا سدا دیتا رہتا ہے، جیسے سُورج کی کرنیں چاروں اطراف روشن کردیتی ہیں۔

ے جیسے سُورج کی شعاعوں سے نکلتی روشنی
آتما میں پریرنا کی دیتا ایشور روشنی

458 प्रकाश मार्ग की ओर प्रेरणा देने वाला

परमेश्वर मनुष्यों का स्वामी प्रेरक और दर्शन करने के योग्य हैं और मेधावी विद्वानों के लिए मनन योग्य, नाना प्रकार के जगत को धारण करके इसका विधाता और वेद ज्ञान के द्वारा सब की आत्माओं में प्रकाश मार्ग की प्रेरणा देता रहता है जैसे सूर्य रश्मियां चहुं ओर ज्योति फैला देती हैं।

किरणों से सूरज की जैसे है निकलती रौशनी।
आत्मा में प्रेरणा की देता ईश्वर रौशनी।

منتر نمبر ۴۵۹ | کھنڈ ۱۲

جیسے بیٹا باپ کو بُلاتا ہے!

१ २ ३१२ ३२३ १र २र
एन्द्र याह्युप नः परावतो नायमच्छा
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
विदथानीव सत्पतिरस्ता राजेव सत्पतिः ।
१ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ २
हवामहे त्वा प्रयस्वन्तः सुतेष्वा पुत्रासो न
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पितरं वाजसातये मंहिष्ठं वाजसातये ॥३॥

ہے اندر! آئیے اور ہمارے نزدیک تر ہو جائیے، جیسے دُور سے آیا بھگت یگ کرموں میں شامل ہو جاتا ہے۔ آپ ہی تو ہمارے سچّے مالک خالق اور پالک ہیں اور راجہ۔ آپ کے بنا ہمارے پاپوں کو دُور کرنے والا اور کون ہے، جیسے پُتر اپنے یگیہ کو رچاتا ہے اور پتا کو اس میں بُلانے پر بے حد خوشی محسوس کرتا ہے، ایسے ہی ہم اپنے بھگتی یگیہ میں آپ کا آواہن کر رہے ہیں۔ آپ کے وصال سے ہمارا گیان، بَل اور ایشوریہ بڑھے گا۔ دریں چہ شک!

اندر آؤ پاس ہمارے یگیہ ہم نے ہے رچایا
ہیں پِتا سچّے ہمارے اس لئے ہم نے بُلایا

459 जैसे पुत्र पिता को बुलाता है

हे इन्द्र ! आईऐ हमारे निकट आ जाईऐ। जैसे दूर से आया भक्त यज्ञ में शामिल हो जाता है आप ही हमारे सच्चे पति-पिता और राजा हैं आप के बिना हमारे पाप संताप दूर नहीं हो सकते जैसे पुत्र अपने यज्ञ में पिता को बुलाने में हर्ष अनुभव करता है ऐसे ही हम भक्ति यज्ञ में आप का आह्वान कर रहे हैं। आपके मिलन से ही हमारा ज्ञान, बल और ऐश्वर्य बढ़ता जाएगा।

इन्द्र आओ पास हमारे यज्ञ हम ने है रचाया।
हैं पिता सच्चे हमारे इसलिए हमने बुलाया।

منتر نمبر ۴۶۰ گمراہی سے بچاکر راہِ راست پر چلائیں! کھنڈ ۱۲

तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सत्रा
दधानमप्रतिष्कुतं श्रवांसि भूरि ।
मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्त
राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री ॥४॥

جو ایشور دُنیا کی دولتوں کا سرچشمہ ہے اور گناہگاروں کو سزا دینے میں اُگر ہے، سچائی مجسّم ہے اور مالکِ شہرت ہے، وہ سب کا معبود اور ایسی عظیم طاقت ہے، کہ جس کو جھکایا نہیں جا سکتا، جس کے قانون اٹل ہیں، اُسی اِندر کو میں بار بار شردھا اور بھگتی سے بُلا رہا ہوں، عارف اور عابد لوگ لگاتار حمد و ثنا اور دعاؤں سے اُسے بُلاتے ہیں۔ تو وہ اپنی دُنیاوی اور عقبےٰ دونوں دولتیں بخشیش کر دیتا ہے، بھگوان آؤ! ہمیں گمراہی سے بچاکر راہِ راست پر چلاؤ، جس سے ہم بھی نیک شہرت کو پا سکیں!

دولتِ دُنیا و عقبےٰ کے ہو سرچشمہ پتا
گمرہی سے دُور کر نیکی کے رستے پر چلا

460 कुमार्ग से बचा सुमार्ग पर चलाएं

जो ईश्वर सर्व सम्पदाओं का स्रोत और पापियो का धर्षण करता है उग्र है, सत्य स्वरूप और यश का स्वामी है। सर्व पूजनीय और महा बलवान जिस को झुकाया नहीं जा सकता। इस इन्द्र को बार-बार श्रद्धा प्रेम से बुला रहा हूं। भक्त उपासक निरंतर प्रार्थना वाणियों से उसका आह्वान करते रहते हैं तो वह सांसारिक और पारलौकिक सम्पदाओं को उन्हें प्रदान करता है। भगवान आओ और हमें कुमार्ग से हटा कर सन्मार्ग पर चलाओ जिससे हम भी यश और कीर्ति के भागी बनें।

सांसारिक पारलौकिक स्रोत धन के हो पिता।
पाप मार्ग से दूर कर नेकी के रस्ते पर चला।

ہماری پرارتھنا کو سُنیئے!

अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं धिया दध आ नु
त्यच्छर्द्धो दिव्यं वृणीमहे इन्द्रवायू वृणीमहे।
यद्ध क्राणा विवस्वते नाभा सन्दाय नव्यसे।
अध प्र नूनमुप यन्ति धीतयो
देवाँ अच्छ न धीतयः ॥५॥

بھگوان ہماری پرارتھنا کو سُنیئے، دھیان اور بُدھی بَل سے اگنی پرماتما کو دھارن کرتے ہیں اور اُس کے پرسدّھ دِویہ بَل کو سویکار کرتے ہوئے بُدھی اور کرم شکتیوں کو ورن کرتے ہیں، بجلی اور وایُو کی طرح جو پرم دھنی اور گتی مان ہے۔ اُسی کو ورن کرتے ہیں۔ شریر کی نابھی میں من کو لگا کر سدا جو نیا ہے اور سُوریہ کی طرح منوّر ہے اُس کا دھیان دھارنا سے یوگ کرتے ہیں، اُپائے کرتے ہیں۔ بلا شک یوگ کا یہ طریقۂ کار ہمیں اُس کے آگے لے جائے گا، یہ کرم ہمیں دیوگنوں کو حاصل کرا ایشور تک پہنچائیں گے!

اگنی سے ہے پرارتھنا دو بُدھی بَل اور دھیان دو
جس سے تُم کو پراپت ہوویں ایسا ہم کو گیان دو

461 हमारी प्रार्थना को सुनिये

भगवान हमारी प्रार्थना को सुनिए ! ध्यान और बुद्धि बल से हम अग्नि परमात्मा को धारण करते हैं और उसके दिव्य बल को स्वीकार करते हुए धारण और कर्म शक्तियों को वरण करते हैं। विद्युत और वायु की भांति गतिमान परम धनी भगवान को वरण करते है। नाभि में मन को लगाकर जो सदा नया है और हजारों सूर्य के समान प्रकाशमान है उस का ध्यान धारणा से योग करते हैं। निस्सदेह योग साधना के ये उपाय हमें अग्रसर करेंगे

और हम दिव्य गुणों को प्राप्त कर ईश्वर का साक्षात कर पायेंगे ।

अग्नि से है प्रार्थना दो बुद्धि बल और ध्यान दो ।
जिससे तुझको प्राप्त होवें ऐसा हमको ज्ञान दो ।

منتر نمبر ۴۶۲ **وُہ ہی پَرمیشور کی پَراپتی یوگیہ ہوتا ہے!** کھنڈ ۱۲

१ २ ३२ ३१ २ ३ १ २
प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे
३ १ २ ३ १ २३ १२
मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत् ।
१र २र ३ १र २र ३ १२
प्र शर्धाय प्र यज्यवे सुखादये
३१२ ३ १ २ ३ १२ ३ १२
तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे ॥६॥

جو پرمیشور مہان ہے، ہر جگہ موجود ہے، پرانوں کا سوامی ہے، سُکھوں کا سرچشمہ اور بھگتی اُپاسنا پر پرسّن ہوتا ہے۔ آپ گتی سوروپ اور ہم کو گتی دے کر بڑھاتا ہے، ہماری منوکامناؤں کی پُورتی کراتا ہے اور بُرائیاں جس سے کانپتی ہیں، ایسا جو طاقتوں کا مخزن ہے، اُس کی طرف ہی ہمارے من سدا لگے رہیں، ایسا ویدکرم جو کرتا ہے۔ وید بانیوں میں سدا رمن کرتا ہے، وہ عابد اُپاسک اُس پرمیشور کی پراپتی کے یوگیہ ہو جاتا ہے۔

ہر جگہ موجود ہے سُکھوں کا سرچشمہ ہے جو
اُس میں ہمارا من لگے بل شکتی کا منبع ہے جو

462 वह ही परमेश्वर प्राप्ति के योग्य होता है

जो परमेश्वर महान और सर्वव्यापक हैं, प्राणों का स्वामी और सुखों का स्रोत है, उपासना भक्ति पर ही प्रसन्न होता है। स्वयं गतिस्वरूप और सबको गति देकर बढ़ाता है। हमारी मनो-कामनाओं की पूर्ति कराता है। बुराइयां जिससे कांपती है ऐसा वज्र हस्त है। उसमें ही हमारे मन सदा लगे रहें। ऐसे वेद कर्म

करता हुआ जो वेद वाणियों में रमन करता है वह उपासक उस परमेश्वर की प्राप्ति के योग्य हो जाता है ।

हर जगह मौजुद है सुखों का सरचश्मा है जो ।
उसमें हमारा मन लगे बल शक्ति का है स्रोत जो ।

منتر نمبر ۳٦۳ **ایشور کے سماگم سے بھگت کی ترپتی** کھنڈ ۱۲

अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि
तरति सयुग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः ।
धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः ।
विश्वा यद्रूपा परियास्यृक्वभिः
सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः ॥७॥

یوگ سادھنوں کے ذریعے اُپاسک کا ہردیہ جب پوتّر اور شانت ہوجاتا ہے اور پرمیشور کی کرپا سے اُس کے سب دویش اور بُرے خیالات نحس نحس ہوجاتے ہیں تو بھگوان کے وصال سے اُس کی آتما کا سب اندھکار بھی نشٹ ہوجاتا ہے۔ جیسے سورج کی روشنی سے باہر کا اندھکار مٹ جاتا ہے۔ پرماتما کے سماگم سے اُس کا چت بدھی من وغیرہ سبھی روشن ہوجاتے ہیں۔ دُکھ چلے جاتے ہیں، سُکھ آجاتے ہیں، عابد کی منوکامنا اور آشائیں پوری ہوجاتی ہیں اور وہ ترپت ہوجاتا ہے!

~ یوگ کے سادھن سے جب بڑھ جاتی ایشور میں لگن
پورن ہوئیں کامنائیں ترپت ہوجاتا ہے مَن

463 ईश्वर के समागम से भक्त की तृप्ति

योग साधनों के द्वारा उपासक का हृदय जब पवित्र और शान्त हो जाता है और प्रभु कृपा से उसके अन्तः सब द्वेष और

आसुरी चित्त वृत्तियां विनष्ट हो जाती हैं तो भगवान के मिलन से उसकी आत्मा का सब अन्धकार भी नष्ट हो जाता है जैसे सूर्य के प्रकाश से बाहर का अन्धकार मिट जाता है परमात्मा के समागम से उसका अन्तःकरण चतुष्टय भी प्रकाश पूर्ण हो जाता है। दुःख चले जाते हैं सुख आ जाते हैं। उपासक की मनोकामना और आशाएं पूर्ण हो जाती हैं ओर वह तृप्त हो जाता है।

योग के साधन से जब बढ़ जाती ईश्वर में लगन।
पूर्ण होती कामनाएं तृप्त हो जाता है मन।

منتر نمبر ۴۶۴ **دیوؤں کے مہادیو کی ارچنا** کھنڈ ۱۲

३ २उ ३ १ २ ३ १२ ३क २र ३ १ २ ३ १ २
अभि त्यं देवं सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २
सत्यसवं रत्नधामभि प्रियं मतिम्।
१ २उ ३ २ ३ १र २र ३ १ २ ३
ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत् सवीमनि
१ २ ३ १ २ ३ १ २
हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः ॥८॥

مَیں اُپاسک اُس دیوؤں کے مہادیو کی ارچنا کرتا ہوں جو زمین آسمان کا معمار اَور مالک ہے۔ جو دانشمندوں کو عقلِ سلیم عطا کرتا، سب کا پیارا اور مالک عالمِ کُل ہے، جس نے آسمان میں سُورج، چاند، تاروں کو چمکایا ہے اَور جس کی طاقت یا عقل کو کوئی ناپ نہیں سکتا، دُنیا کی عجیب و غریب بناوٹ جس کا ہاتھ کا معمولی کھیل ہے۔ اور اپنی مہربانیوں سے جس نے ہمارے لئے سب سُکھ کے سامان دیئے ہیں۔

کرتا ہوں اُس کی ارچنا دیوؤں کے دیو مہان کی
جس نے ہیں دیں سب نعمتیں بل بُدھی دھن اور گیان کی

464 देवों के महादेव की अर्चना

मैं उपासक उस देवों के महादेव की अर्चना करता हूं जो द्यु और पृथ्वी का अधिपति है और मनुष्यों को मेधा बुद्धि देता है। सब का प्रिय और सर्वज्ञ है जिसने आकाश में सूर्य चन्द्र और नक्षत्रों को चमकाया है और जिस की शक्ति या बुद्धि को कोई नाप नहीं सकता। ब्रह्माण्ड का अद्भुत निर्माण जिसके हाथ का एक साधारण खेल है और अपनी कृपाओं से जिसने हमारे लिए सब सुख के सामान दिए हैं।

करता हूं उसकी अर्चना देवों के देव महान की।
जिसने हैं दी सब नेमतें बल बुद्धि धन और ज्ञान की।

منتر نمبر ۴۶۵ — کھنڈ ۱۲

وِشوکی اَنادِی اَگنی

३ १र २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १र
अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः सूनुं
२र ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १२
सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम्।
२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
घृतस्य विभ्राष्टिमनु शुक्रशोचिष
३ १ २ ३ १ २
आजुह्वानस्य सर्पिषः ॥९॥

مَیں اُپاسک سنسار کی آدی اگنی جگت کا نیتا گیان سوروُپ مُنّور جہاں اَور ہونا یعنی دینے اَور لینے والا جیوآتما کا پریرک سُکھ داتا، دھن داتا، بل داتا، وید گیان کا دینے والا ذرّے ذرّے میں ویاپک عرش بریں کو سورج چاند اَور چمکتے تاروں سے سجانے والا اَور کسی پرکار کی ہنسا کے بغیر ایسے مہان سُندر جگت کا بنانے والا مانتا ہوں۔

ے مانتا ہُوں اِیش کو سارے جگت کا کرتا بھرتا
جان و مال کا دینے والا اور سب کچھ دے کے ہرتا

465 विश्व की अनादि अग्नि

संसार की अनादि अग्नि जगत का नेता ज्ञान स्वरूप और सर्व प्रकाशक तथा होता अर्थात् देने और लेने वाला, जीवात्मा का प्रेरक, सुखदाता, धनदाता, बलदाता और वेद ज्ञान का देने हारा कण-कण में व्यापक और आकाश को चमकीले नक्षत्रों से सजाने वाला एवं किसी प्रकार की हिंसा के बिना ऐसे विशाल सुन्दर जगत का निर्माता उस ईश्वर को मैं उपासक मानता हूं।

मानता हू ईश को सारे जगत का कर्ता धर्ता।
जानो माल का देने हारा और सब कुछ दे के हर्ता।

منتر نمبر ۴۶۶ ویدگیان کو دے کر منشیوں کو امرت پلا دیا ہے! کھنڈ ۱۲

२३ १र २र ३ १ २ ३ २
तव त्यन्नर्य नृतोऽप इन्द्र प्रथमं
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
पूर्व्यं दिवि प्रवाच्यं कृतम् ।
२ ३२ ३ १२ ३ १२ ३ १२ ३२ ३२
यो देवस्य शवसा प्रारिणा असु रिणन्नपः ।
२ ३ १२३ १२३१२ ३१र २र
भुवो विश्वमभ्यदेवमोजसा विदेदूर्जं
३ १ २ ३१र २र
शतक्रतुर्विदेदिषम् ॥१०॥[४।१२]

اندر پرمیشور! منشیوں کے لئے وید گیان دے کر جو اُپکار کیا ہے۔ جس کے اُپدیشوں سے سارا جگت امرت کا پان کر رہا ہے۔ یہ سب سے مہان اور آپ کا شریشٹھ کرم ہے اور آسمان میں بادلوں کو بنا کر سورج دیوتا کے ذریعے سمندروں سے جو جل کھینچنے کا کارِ عظیم چلا رکھا ہے، بادلوں سے پانی برس کر سب جڑ اور چیتن جگت کو زندگی دیتا ہے۔ آپ کے بے شمار کام ہم سب کو بل اور پران بخشیش کرتے ہیں، جس کے لئے ہم آپ کے احسانوں سے دبے ہوئے آپ کی پوجا میں سدا لگے رہنے کے لئے کوشاں ہیں اور یہی ہماری زندگی کا نصب العین

ہے۔

آپ کی بخشش سے جیتے اور پاتے زندگی
اِس لئے ہم کو ہے واجب کرنا آپ کی بندگی

سام وید میں ایندر کانڈ ختم ہوا

466 वेद ज्ञान देकर अमृत का पिलाने वाला

हे इन्द्र परमेश्वर मनुष्य मात्र के लिए वेद ज्ञान देकर आपने जो महान उपकार किया है जिसके उपदेशों से सारा जगत अमृत पान कर रहा है। यह सर्वतो महान और आपका श्रेष्ठतम कार्य है। आकाश में मेघों का निर्माण और सूर्य देवता के द्वारा सागरों से जल खींचने की महान कला जो चला रहा है जिनके द्वारा मेघों से पानी बरस कर सब जड़ और चेतन जगत प्राण पाता है। हे इन्द्र आपके असंख्य महान कार्य हम सब को बल प्रदान कर रहे हैं। जिसके लिए हम आपकी महान कृपाओं से कृत-कृत हुए आपकी पूजा में सदा लगे रहें, जो हमारे मानव जीवन का परम उद्देश्य है।

आपकी बख्शीश से जीते हैं पाते ज़िन्दगी।
इसलिए हमको है वाजिब करना आपकी बंदगी॥

ऐन्द्र काण्ड समाप्त

پوَمانُ کانڈ شُرُوع - پانچواں اَدھیائے

کھنڈ ۱ — منتر نمبر ۴۶۷

سوم رَس کی پیدائش

३ १ २ ३ १र २र ३ १र २र
उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे ।
३ २उ ३ २ ३ १ २
उग्रं शर्म महि श्रवः ॥१॥

سوم رس کا جنم اَنّ کے ذریعے شریر میں سب سے پہلے دماغ میں ہوتا ہے، پھر وہ ہردیہ میں آکر پرتھوی روپ جسم کے نیچے حصے کو بھی طاقت دیتا ہے۔ اور حواس خمسہ کے ذریعے حرکت پذیر ہوتا ہے، جس سے یہ بھگتی رس بڑھا ہوا نئی زندگی، شانتی اور کیرتی کا دینے والا ہوتا ہے، جیسے سورج سے برسا ہوا پرکاش اور جل دھرتی کو سرسبز اور شاداب کر دیتا ہے۔

جسم انسانی میں پیدا ہوتا جب یہ سوم رس
زندگی میں شانتی دیتا ہے امرت سوم رس

पांचवा अध्याय पवमान काण्ड खण्ड 1

467 **सोम रस का जन्म**

सोम रस का जन्म अन्न से शरीर में पहले मस्तिष्क में होता है। फिर वह हृदय में आकर पृथ्वी रूप शरीर के निचले भाग को भी शक्ति देता है। और इन्द्रियों के द्वारा गतिशील होकर बढ़ा हुआ यह भक्ति रस नये जीवन शान्ति, और कीति का देने वाला होता है। जैसे सूर्य से आता हुआ प्रकाश और जल धरती को हरा भरा कर देता है।

जिस्म इन्सानी में पैदा होता है यह सोम रस ।
जिंदगी में शान्ति देता है अमृत सोम रस ॥

کھنڈ ۱ — آنند داتا سوم — منتر نمبر ۴۶۸

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया ।
इन्द्राय पातवे सुतः ॥२॥

راہِ راست پر چلانے والا یہ سوم رس بے حد میٹھا سُوادو خُوشیوں اور آنندوں کے دینے والا ہے ۔ پرمیشور کے حصول کے لئے اور اس کی بخشش سے ہی یہ بھگتی رس پیدا ہوتا ہے، جس سے ہمیشہ ہم اُس کی نوازش اور حفاظت میں رہیں ۔

آنند دینے والا ہے سرشار بھگتی میں رکھتا سوم
اوم کرپا سے ملتا یہ اور اس سے ملتا پیارا اوم

468 आनन्द दाता सोम

सन्मार्ग पर चलाने वाला यह सोम रस अतीव मधुर, स्वादु और आनन्दों को देने वाला है। भगवान की प्राप्ति के लिये उस की कृपा से ही भक्ति रस पैदा होता है जिस से हम सदा उसकी सुरक्षा में रहते हैं।

आनन्द का देने वाला है मदमस्त भक्ति में रखता सोम ।
ओम् कृपा से मिलता यह और इस से मिलता प्यारा ओम् ।

کھنڈ ۱ — خوشیوں کا منبع — منتر نمبر ۴۶۹

वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः ।
विश्वा दधान ओजसा ॥३॥

خوشیوں کا سرچشمہ، روحانیت کی مستی کو دینے والا پرانوں کے سوامی پرمیشور کے لئے یہ بھگتی کا امرت رس میرے اندر پیدا ہوا ہے، پیارے سوم تو میرے ایک ایک انگ میں بہتا چل اور مجھ عابد میں اوصاف حمیدہ کو دیتا جا۔

ے خوشیوں کا منبع ہے آتمک شکتی کا ہے امرت دھام
مجھ میں اوصافوں کو دے گا بھگتی رس کا پیارا جام

469 **आनन्द का स्रोत**

अध्यात्मिकता की ऊंचाई को देने वाला आनन्दों का स्रोत भक्ति का यह अमृत रस प्राणपति परमेश्वर के लिये मेरे अन्दर उत्पन्न हुआ है। प्यारे सोम तू मेरे एक-एक अंग में बहता जा जिस से मुझ उपासक में तेरे उत्तम गुण बढ़ते जायें।

आनन्दों का स्रोत आत्मिक शान्ति का है अमृत धाम।
मुझ में सद गुण को भर देगा भक्ति रस का प्यारा जाम।

منتر نمبر ۴۷۰ **ایشور بھگتی سے ہی برائیوں کا خاتمہ** کھنڈا

यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा ।
देवावीरघशंसहा ॥४॥

پیارے سوم بھگتی رس تیرے سے حاصل جو روحانی مستی ہے وہ قابلِ حصول اور قابلِ تعریف ہے اور اعلیٰ ہے، اس آنند کے ساتھ تو میرے اندر بہتا چل، تو عابدوں کی روحانی غذا ہے، یہ مستی جب پربھو دیو تک رسائی کر لیتی ہے تو سارے پاپ، دوش اور برائیاں نشٹ ہو جاتی ہیں۔

ے سوم پیارے تجھ سے حاصل ہیں روحانی برکتیں
تجھ کو پا کر دور ہو جاتی سبھی ہیں بدعتیں

470 ईश्वर भक्ति से ही पापों का विनाश

प्यारे सोम रस तेरे से प्राप्त जो आत्मिक आनन्द है वह प्रापणीय और प्रशंसनीय है तथा सर्वोत्तम। उस मस्ती के साथ तू मेरे अन्दर बहता चल। तू उपासकों का आत्मिक आहार है तेरी यह मस्ती जब भगवान तक पहुंचा देती है तो बस सारे पाप और दोष नष्ट हो जाते हैं।

सोम प्यारे तुझ से हासिल हैं रूहानी बरकतें।
तुझ को पाकर दूर हो जाती सभी हैं कुलफ़तें।

منتر نمبر ۱۷۴ کھنڈ ۱
اپنے پیاروں کو بھگوان اپنے آپ آملتے ہیں!

तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः।
हरिरेति कनिक्रदत् ॥५॥

پربھو پریم کے اُبال میں جب تینوں بانیاں بشکل نثر، نظم اور ترنّم اُبھر اُٹھتی ہیں یا پیارے اوم کی تین آوازیں "آ اُو اورم" جب ہردے سے اونچے سوَر سے نکلنے لگتی ہیں، تو سب کے منوں کو ہرنے والا ہری پرمیشور ایسے آکر مل جاتا ہے، جیسے دودھ بھرے تھنوں والی گائیں رنبھاتی ہوئی اپنے بچھڑوں کے آگے آکر کھڑی ہوجاتی ہیں۔

تین بانیوں سے پکارتا بھگت بھگتی میں رما ہوا
گئو سمان بچھڑے بھگتوں کے ہوجاتا بھگوان کھڑا

471 अपने प्यारों को भगवान स्वयं आ मिलते हैं

प्रभु प्रेम की तरंगों में जब तीनों वाणियां गद्य पद्य और गीति रूप में उभर आती है वा प्यारे ओम के तीन अक्षर अ, ऊ, म, जब हृदय की गुहा से उच्च स्वर से निकलते हैं तो सब के मनों को हरने वाला हरि परमेश्वर ऐसे आकर मिल जाता है जैसे दूध भरे थनों वाली गायें रम्भाती हुई अपने बछड़ों के आगे आ

कर खड़ी हो जाती हैं।

तीन वाणीयों से पुकारता भक्त भक्ति में रमा हुआ।
गौ समान बछड़े भक्तों के हो जाता भगवान खड़ा

منتر نمبر ۴۷۲ — کھنڈ

مجھے پوتر کر دے!

१ २ ३१ २३ १२ ३ १२
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
अर्कस्य योनिमासदम् ॥६॥

پیارے بھگتی رس تو چندرماں کی طرح شکتی داتا اور مدھروں کا مدھر ہے۔ میرے جیون میں لہرا اور مجھے پوتر کر دے، میں پریم دیوانہ جیون داتا سُوریہ روپی پرمیشور ماں کی گود میں بیٹھ سکوں۔

ے پیارے بھگتی رس سوم امرت میرے جیون کا پیار بنو
میں پریم دیوانہ ایشور کو پاؤں ایسا آدھار بنو

472 **मुझे पवित्र कर दे**

प्यारे भक्ति रस तू चंद्रमा के समान शान्ति दाता और मधुरों का मधुर है, मेरे जीवन में लहर और मुझे पवित्र कर दे। मैं प्रेम दीवाना जीवन दाता सूर्य रूपी परमेश्वर मां की गोद में बैठ सकूं।

प्यारे भक्ति रस सोम अमृत मेरे जीवन का प्यार बनो।
मैं प्रेम दीवाना ईश्वर को पालूं ऐसा आधार बनो।

منتر نمبر ۴۷۳ — کھنڈ ۱

آنند ہی آنند ہے!

१ २ ३१२ २२ ३ १२ २२ ३ २
असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः ।
३ २ ३ ३ १ २
श्येनो न योनिमासदत् ॥७॥

بادلوں میں، پہاڑوں میں، ودوانوں کی بانیوں، گیان اور کرموں میں سوم امرت آنند
کا داتا پرمیشور میرے پریم ہردیہ میں باز پکھشی کی طرح آکر بیٹھ گیا ہے۔ آہا! اب میں
جگت ماتا کی گود میں بیٹھ رہا ہوں، آنند ہی آنند ہے۔

ے باز پکھشی کی طرح میرے ہردیہ میں آبسا
گود میں ماتا کی ہوں آنند ایسا آ رہا

473 **आनन्द ही आनन्द हैं**

मेघों और पर्वतों में विद्वद् जनों की वाणियों ज्ञान कर्मों में अमृत आनंद का दाता परमेश्वर मेरे प्रेम हृदय में श्येन पक्षी के समान आकर बैठ गया है, ओहो अब तो में जगत मां की गोद में बैठा हूं जहां आनंद ही आनंद है।

बाज़ पक्षी की तरह मेरे हृदय मैं आ बसा।
गोद में माता के हूं आनंद ऐसा आ रहा।

منتر نمبر ۴۷۴ **حواسِ خمسہ کو گناہوں سے بچانے والا** کھنڈا

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे।
३ १ २ ३ २ ३ १ २
मरुद्भ्यो वायवे मदः ॥८॥

یہ بھگتی رس سوم من اندریوں کو پاپوں سے ہر کر، بچا کر پوتر کرنے والا ہے، دیوتاؤں
کے پینے لائق ہے، اور بل شکتی کا داتا ہے، جیون کو آنند سے بھر دینے والا ہے۔

ے تم پاپ ہاری ہو سوم پربھو اس لئے ہری کہلاتے ہو
اس سوم پان سے دیوؤں کا جیون آنند بڑھاتے ہو

474 **मन और इन्द्रियों को पाप से बचाने वाला**

ये भक्ति रस सोम मन इन्द्रियों को पापों से हर कर पवित्र

करने वाला है देवताओं के पान के योग्य है और बल शक्ति का दाता हैं। जीवन को आनन्द से भर देने वाला है।

तुम पाप हारी हो सोम प्रभु इसलिये हरि कहलाते हो।
इस सोम पान से देवों का जीवन आनन्द बढ़ाते हो।

منتر نمبر ۴۷۵ **بھگتی رس میں بھرنے والے سوم** کھنڈ ۱

परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत्।
मदेषु सर्वधा असि ॥६॥

سوم پربھو شدھ پوتر آتما میں پیدا ہو کر ستیہ مارگ کی طرف رغبت دیتا ہے، اور تب بھگت آتما کے منہ سے اپنے آپ بھگتی پریم سنگیت بہہ نکلتا ہے۔ بانی میں پریم رس بھر جاتا ہے، جس کے دھارن سے وہ شکتی شالی ہو جاتا ہے۔

ے
پاکیزہ روح میں پیدا ہوئے سوم پریرنا دیتے ہو
بھگتوں کے جیون کو بھگتی رس میں بھر شکتی دیتے ہو

475 **भक्ति रस में भरने वाले सोम**

सोम प्रभु शुद्ध पवित्र आत्मा में उत्पन्न हो कर सत्य मार्ग की ओर प्रेरणा देते हैं। और तब भक्त आत्मा के मुख से स्वयं भक्ति संगीत झरने लगता है। वाणी में प्रेम रस भर जाता है, जिस के धारण से आत्मा शक्तिशाली हो जाता है।

शुद्ध आत्मा में पैदा हो सोम प्रेरणा देते हो।
भक्तों के जीवन को भक्ति रस में भर शक्ति देते हो।

منتر نمبر ۴۷۶ **بھگتی کے گیتوں سے بھگوان کی پراپتی!** کھنڈ ۱

परि प्रिया दिविः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः।
स्वानैर्याति कविक्रतुः ॥१०॥[५।१]

جیسے آسمان میں چمکنے والے پیارے پیارے تارے جو پکھشیوں کی شکل میں چاروں طرف اُڑان لیتے ہوئے دکھائی دیتے ہیں۔ ایسے ہی یہ بھگتی رس اُپاسک میں پیدا ہوکر اُس کے اندر شاعری کی اُڑان اور ترنگوں کو بھر دیتا ہے، جس سے عارف بھگتی کے گیت گاتا ہوا سوم پرمیشور کو حاصل کر لیتا ہے۔

ے جیسے لگتے تارے پیارے جو آسمان میں چمک رہے
ایسی ترنگوں سے بھگتی کی بھگوان بھگت کے پیارے ہوئے

476 **भक्ति गीतों से भगवान की प्राप्ति**

जैसे आकाश में चमकते तारे पंछियों के समान चहूं ओर उड़ान लेते हुये दिखाई देते हैं ऐसे ही यह भक्ति रस उपासक में पैदा हुआ उस के अन्दर कविता मय उड़ानों को भर देता है जिस से मुमुक्षु भक्ति के गीत गाता हुआ सोम परमेश्वर को प्राप्त कर लेता है।

जैसे लगते तारे प्यारे आसमान में चमक रहे।
ऐसी तरंगों से भक्ति की भक्त प्रभु के प्यारे हुये।

منتر نمبر ۴۷۷ **رُوحانی دَولتوں کے دینے والے!** کھنڈ ۲

प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम्।
सुता विदथे अक्रमुः ॥१॥

پربھو بھگتی کے یہ رس خوشیوں، آنندوں اور پریرناؤں کے دینے والے عالمِ عرفان کی رہنمائی کرتے ہوئے گیان وگیان کی طرف بڑھاتے جاتے ہیں۔

ے

بھگتی کے بڑھانے والے سوم آنندوں کو جو دیتے ہیں
رُوحانی دَولتوں کے عارف اِن ہی سے سب کچھ لیتے ہیں

477 **अध्यात्मिक ऐश्वर्य के दाता**

प्रभु भक्ति के यह रस हर्ष, आनन्दों और प्रेरणाओं के देने वाले उपासकों की अगवानी करते हुए ज्ञान विज्ञान की ओर बढ़ाते जाते हैं।

भक्ति के बढ़ाने वाले सोम आनन्दों को जो देते हैं।
अध्यात्म ऐश्वर्य इच्छुक इन से ही सब कुछ लेते हैं।

منتر نمبر ۴۷۸ **رُوحانیت کی لہروں کو پیدا کرتے** کھنڈ ۲

प्र सोमासो विपश्चितोऽपो नयन्त ऊर्मयः ।
वनानि महिषा इव ॥२॥

یہ بھگتی رس جیون میں آکر روحانیت کی لہروں کو پیدا کر کے بھگتی مارگ پر ایسے آگے بڑھاتے ہیں، جیسے کہ ہوا کے طوفان سمندر، ندی، نالوں میں پانی کی لہروں کو آگے دھکیلتے ہیں یا ہوائیں جل بھرے بادلوں کو آگے دھکیل لے جاتی ہیں۔

بخشش بھگوان کی جب ہوتی بھگتی رس جیون میں اُٹھتا
ادھیاتمک لہروں کو پاکر بھگتی کے مارگ پر تب جُٹتا

478 **अध्यात्म धारा के उत्पादक**

यह भक्ति रस जीवन में आकर अध्यात्मिकता की लहरों को पैदा करके भक्ति मार्ग पर ऐसे आगे बढ़ाते जाते हैं जैसे कि वायु के तूफ़ान सागर नदी नालों में पानी की लहरों को आगे धकेलते हैं या जैसे जल भरे बादलों को हवाए आगे धकेल ले जाती हैं।

अनुकम्पा ईश की जब होती भक्ति रस जीवन में उठता।
अध्यात्मिक आनन्दों को पा भक्ति के मार्ग पर तब जुटता।

کھنڈ ۲ — منتر نمبر ۴۷۹

بھگتی رس کیا کرتا ہے؟

पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने ।
विश्वा अप द्विषो जहि ॥३॥

چندرماں کے سمان شانتی دینے والا بھگتی رس ہمیں پوتر کر دیتا ہے۔ شانتی کی ورشا کرتا ہے، لوگوں میں لیشوی یعنی نیک نام بناتا ہے اور ہمارے دویش بھاؤ وغیرہ شترؤوں کو خاکستر کر دیتا ہے۔

ے چندرسمان سوم یہ رس جہوں اور شانتی کا داتا ہے
دویش آدی شترو خاک کرے یش کیرتی کو پھیلاتا ہے

479 — **क्या करता है सोम रस ?**

चन्द्र के समान अह्लादिक करने वाला यह सोम भक्ति रस हमें पवित्र कर देता है। लोक में यशस्वी बनाता और सभी द्वेष आदि शत्रुओं को बिनष्ट कर देता है।

चन्द्र समान सोम यह रस चहुं ओर शान्ति का दाता है।
द्वेषादि शत्रु नष्ट करे यश कीर्ति को फैलाता है।

کھنڈ ۲ — منتر نمبر ۴۸۰

سوم کی مہما

वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे ।
पवमान स्वर्दृशम् ॥४॥

یہ سوم بھگتی رس، یہ سوم امرت ویریہ بندو یقیناً سکھوں کو برساتا ہے، بھگوان کی بھگتی کا رس یا تیج ویریہ کی بوندیں نور سے چمک رہی ہیں اور جیون کو چمکا رہی ہیں۔ اس لیے ہم سوم رس کو چاہتے ہیں، جو ہمیں پاکیزہ، شدھ اور نرمل کر بھگوان کے راستے

پر چلاتا ہے۔

ے جیسے اپرم پار پربھو ہیں سوم روپ سب میں بستے
ویسے سوم شکتی امرت ہے جس کی مہما کہی نہ کہے

480 **सोम महिमा**

यह सोम भक्ति रस अमृत वीर्य बिन्दु निश्चित ही सुख वर्षक है। प्रभु भक्ति अमृत हो या तेज वीर्य बिंदु या सोम परमेश्वर यह सभी जीवन ज्योति को जगा देते हैं इसलिए हम सोम पान करना चाहते हैं जिससे प्रभु मिलन का मार्ग सुगम हो जाए।

जैसे अपरम पार प्रभु हैं सोम रूप सब में बसते।
वैसे सोम शक्ति अमृत है जो महिमा कथनी न कथे।

منتر نمبر ۴۸۱ **جیسے مسافر گاڑی کیلئے گھوڑوں کو تیار کرتا ہے!** کھنڈ ۲

इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मतिः।
सृजदश्वं रथीरिव ॥५॥

اُسی طرح یہ سوم ویریہ دھاتو بل، بدھی، گیان کا منبع یہ ایش بھگتی کا رس بھی ہمارے اندر نئی زندگی کو بھرتا ہے۔ شاعروں میں شاعری کو بلند کرتا ہے، نئے نئے اعلےٰ خیالات کو دیتا اور من کو اُپاسنا کے لئے ایسے تیار کرتا ہے، جیسے گاڑیبان رتھ کے لئے گھوڑوں کو تیار کر لیتا ہے، اس لئے اے سوم! تُو مجھے پیارا ہے۔

ے سوم پیارے جگمگاہٹ سے تیری ہے زندگی
تجھ سے بل بدھی ہے شکتی اور تجھ سے بندگی

481 **जैसे रथवान घोड़ों को सुसज्जित करता है**

उसी तरह यह सोम वीर्य धातु बल बुद्धि ज्ञान का स्रोत

भक्ति रस भी हम में नया जीवन भरता है। कवियों में काव्य-रस को उमड़ाता है नये नये विचारों को देकर मन को उपासना के लिए ऐसे तैयार करता है जैसे रथवान रथ के लिए घोड़ों को तैयार कर लेता है। अतः हे सोम ! तू मुझे प्यारा है।

सोम प्यारे जगमगाहट से तेरी है जिंदगी।
तुझ से बल बुद्धि है शक्ति और तुझ से बंदगी।

منتر نمبر ۴۸۲ **سَبْ کُچھ اِسی سوم میں ہے!** کھنڈ ۲

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ २
असृग्रत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया।
३ १ २ ३ १र २र
शुक्रासो वीरयाशवः ॥६॥

یہ سوم ہے تو سب کچھ ہے، سوم پربھو کی طرف بھی رغبت ہے، زندگی میں طاقت ہے، تیزی ہے، ہمت ہے، ساہس ہے، اُتساہ اور پُرشارتھ ہے، بانی میں شکتی، من میں شوسنکلپ اور آتما میں دھرم کا بل سب اِسی سوم (برہم چریہ، شکتی اور ایشور بھگتی) سے ہے۔

دھرم کا بل آتما میں اور شکتی جسم میں
گیان شکتی بدھی میں سب کچھ ہے پیارے سوم میں

482 **सब कुछ इसी से है**

यह सोम है तो सब कुछ है सोम भगवान की भक्ति भी है जीवन शक्ति और वेग भी है, उत्साह साहस और पुरुषार्थ भी है। वाग् बल शिव संकल्प मन और आत्मा में धर्म का बल आदि सब इसी में निहित हैं।

धर्म का बल आत्मा में और शक्ति पिण्ड में।
ज्ञान शक्ति बुद्धि में सब कुछ है प्यारे सोम में।

منتر نمبر ۴۸۳ **عُمرِ عزیز کا اعلیٰ دوست سوم** کھنڈ ۲

पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः ।
वायुमा रोह धर्मणा ॥७॥

پیارے دویہ بھگتی رس! تو میری عمرِ عزیز کا ساتھی سنگی ہو کر مجھے پوتر کرتا رہ، تیرا آنند اندریوں کے سوامی اندر آتما کو ہمیشہ حاصل رہے، تو اپنی شکتی سے میرے سارے جیون پر اپنا شاسن کرے، جس سے میری زندگی تیری شکتی سے سدا شرابور رہے۔

دویہ پیارا بھگتی رس ساتھی ہے میری عمر کا
جس سے میرا آتما رہتا ہے شدھ نرمل سدا

483 **आयु का प्यारा साथी**

प्यारे भक्ति रस ! तू मेरी आयु का उत्तम साथी है। मुझे पवित्र करता रह और मुझे बढ़ा। तेरा आनन्द इन्द्रियों के स्वामी इन्द्र को सदा प्राप्त रहे। तू अपनी शक्ति से मेरे सम्पूर्ण जीवन पर अपना शासन कर जिस से मैं तेरे आनन्द से सदा भरा रहूं।

दिव्य प्यारा भक्ति रस साथी है मेरी आयु का।
जिस से मेरा आत्मा रहता है शुद्ध निर्मल सदा।

منتر نمبر ۴۸۴ **گیان جیوتی سے سکھ کی پراپتی** کھنڈ ۲

पवमानो अजीजनद् दिवश्चित्रं न तन्यतुम् ।
ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ॥८॥

ہماری زندگی کو پاکیزہ بنانے والا یہ سوم رس دیو لوک میں پھیلی ہوئی اُدشا کی رنگین

جیوتی اور بجلی کی چمک کی طرح منوّر ہو کر چاروں طرف گیان کی روشنی کو بھر رہا ہے، جس سے سب لوک (لوگ) سُکھ کو پراپت کریں، سُکھ سوُروپ پرمیشور کو پراپت کریں۔

ے گیان کا دیپک جلاتا سوم سارے لوک میں
سب سُکھی آنند میں ہوں جس کے دوِ آلوک میں

484 ज्ञान ज्योति से सुख की प्राप्ति

हमारे जीवन को पवित्र बनाने वाला यह सोम रस द्यौलोक में फैली हुई उषा की रंगीन ज्योति और विद्युत जैसी चमक से सब ओर ज्ञान दीप्ति को भर रहा है जिस से सब लोक (लोग) सुख को और सुख स्वरुप परमेश्वर को प्राप्त करें।

ज्ञान का दीपक जलाता सोम सारे लोक में।
सब सुखी आनन्द में हूं जिस से दिव आलोक में।

منتر نمبر ۴۸۵ **شانتی اور شکتی داتا!** کھنڈ ۲

परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा।
मधो अर्षन्ति धारया ॥६॥

شانتی اور شکتی دینے والے یہ سوم (گیان جیوتی، ایش بھگتی اور برہم یعنی ویریہ کی طاقت) سارے شریر کے ایک ایک انگ میں پران شکتی کو دیتے ہوئے پربھو کی ویدبانی کے مدھر گان سے بھگتی کے رس اور آنند کو بھر رہے ہیں۔

ے شانتی اور شکتی داتا سوم ہے چاروں طرف
تیج سارے جسم میں ہے جلوہ جس کا سب طرف

485 शान्ति और शक्ति दाता

शान्ति और शक्ति देने वाले यह सोम (ज्ञान ज्योति, ईश भक्ति और ब्रह्म यानि वीर्य शक्ति) सम्पूर्ण शरीर के एक-एक अंग

में प्राण शक्ति को देते हुए भगवान की वेद वाणी के मधुर गान से भक्ति रस और आनन्द को भर रहे हैं।

शान्ति और शक्ति दाता सोम है चारों तरफ़।
तेज सारे पिण्ड में, है ज्योति जिस की सब तरफ़।

منتر نمبر ۴۸۶ سُوم پرمیشور سے ہی سُوم کی بخشش کی کھنڈ ۲

परि प्रासिष्यदत् कविः
सिन्धोरूर्मावधि श्रितः ।
कारुं बिभ्रत् पुरुस्पृहम् ॥१०॥[५।२]

سوم بھگوان کا دیا ہوا یہ سوم بھگتی رس جیون میں پیدا ہوتے ہی گیتی شکتی کو بھی جاگرت کر دیتا ہے۔ جس سے ہردے میں آنند کی لہریں سمندر کی طرح ٹھاٹھیں مارنے لگتی ہیں، جس سے جگت کا کرتا پرمیشور آتما میں پرگٹ ہو کر نہال کر دیتا ہے۔

سوم پربھو کا پریم پیالہ پیوے ہو جو قسمت والا
بھگتی رس کو دھارن کر کے بنے جگت میں سب سے اعلیٰ

486 सोम परमेश्वर से ही सोम की दात

सोम भगवान की दात यह सोम भक्ति रस जीवन में पैदा होते ही सोती शक्ति को भी जागृत कर देता है। जिस से हृदय में आनन्द की लहरें सागर समान ठाठें मारने लगती हैं जिस से जगत पिता परमेश्वर आत्मा में प्रगट होकर निहाल कर देता है।

सोम प्रभु का प्रेम प्याला पीवे हो जो किस्मत वाला।
भक्ति रस को धारण करके बने जगत में सब से आला।

منتر نمبر ۴۸۷ کھنڈ ۳

کِن کو وِصال میسّر ہے بھگوان کا

उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम् ।
इन्दुं देवा अयासिषुः ॥१॥

وید بانیوں کی حمد و ثناؤں سے ظاہر ظہور ہونے والے زندگی بخش گناہوں کی دیواروں کو توڑنے والے، آتما کو شُدھ پوِتّر کرنے والے آنند رُوپ پرماتما کو پرمیشور کے گنوں کو دھارن کرنے والے اُپاسک پراپت ہوتے ہیں۔

دوہا
وید بانیوں کے منتروں سے جو بھگوان رِجھاتے ہیں
وہی اُپاسک ہی ست چِت آنند پربھو کو پاتے ہیں

487 किन को प्राप्त होता है भगवान ?

वेद वाणी की ऋचाओं के गान से प्रगट होने वाले प्राणों के स्वामी पापों के महा पर्वतों को तोड़ देने वाले और आत्मा को शुद्ध पवित्र करने वाले आनन्द स्वरुप परमेश्वर को उनके गुणों को धारण करने वाले उपासक ही प्राप्त होते हैं ।

वेद वाणियों के मंत्रो से जो भगवान रिझाते हैं ।
वही उपासक ही सत् चित्र आनन्द प्रभु को पाते हैं ।

منتر نمبر ۴۸۸ کھنڈ ۳

عابِد کو پوِتّر کر دیتا ہے!

पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः ।
शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः ॥२॥

سب کو دیکھ رہا شانت رُوپ پرماتما سب بُرائیوں کو دُور کر کے اُپاسک کو پوِتّر کر دیتا ہے اور دھیان کرنے والوں کی منوکامناؤں کو پُورن کر دیتا ہے۔

ے سب کو دیکھ رہا بھگوان شانت روپا پری پُورن
دھیان میں بیٹھنے والوں کی کر دیتا کامنائیں پُورن

488 उपासक को पवित्र कर देता है

सब का द्रष्टा शान्त स्वरुप परमात्मा सब दोषों को दूर कर के उपासक को पवित्र कर देता है और ध्यान करने वालों की मनोकामताओं को भी पूर्ण कर देता है।

सब को देख रहा भगवान शान्त रूपा परिपूरण।
ध्यान में बैठने वालों की कामनायें कर देता पूरण।

منتر نمبر ۴۸۹ **اُپاسک کی آتما میں ساکھشات ہوتا ہے** کھنڈ ۳

आविशन् कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः।
इन्दुरिन्द्राय धीयते ॥३॥

ستتی، پرارتھنا، اُپاسنا کے ذریعے پرسن چندر سمان شانتی سرور بھگوان کا جب انتر آتما میں بھگت دھیان کرتا ہے تو پرمیشور روحانی دولتوں کی پریرنا دیتا ہوا اُس کے اندر ساکھشات ہو جاتا ہے۔

ے پُوجا ارچا کے منتروں سے بھگوان رِجھائے جاتے ہیں
تب ہی وہ آتما کے گھر میں ظاہر ظہور ہو پاتے ہیں

489 उपासक की आत्मा में साक्षात होता है

स्तुति प्रार्थना उपासना के द्वारा प्रसन्न चन्द्र समान शान्ति सरोवर भगवान का जब अन्तरात्मा में भक्त ध्यान करता है तो परमेश्वर आध्यात्म सम्पदा की प्रेरणा देता हुआ इसके अन्दर साक्षात हो जाता है।

पूजा अर्चा के मंत्रों से भगवान रिझाये जाते हैं।
तब ही वह आत्मा के अंदर जाहिर जहूर हो पाते हैं।

منتر نمبر ۴۹۰ کرم بھوگ کے مطابق کھنڈ ۳

جیو آتما سنسار میں وچرتا ہے!

असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे चम्वोः सुतः ।
काष्मन् वाजी न्यक्रमीत् ॥४॥

جیسے رتھ میں جوڑا ہوا گھوڑا میدانِ جنگ میں فوجوں کے درمیان چھوڑ دیا جاتا ہے، ویسے ہی انسانی جامے کو پاکر جیو آتما اس پوتر سنسار میں چھوڑ دیا جاتا ہے، جو کرم بھوگ کے انوسار پرتھوی اور دیولوک میں وچرتا رہتا ہے۔

جیسے رتھ میں جوڑا گھوڑا میدانِ جنگ میں آتا ہے
ویسے انسانی جامے میں آتما دنیا میں آتا ہے

490 कर्म भोग द्वारा जीव संसार में विचरता है

जैसे रथ में जोड़ा हुआ घोड़ा युद्ध स्थल में सेनाओं के मध्य में छोड़ दिया जाता है वैसे ही मानव शरीर को पाकर जीवात्मा इस पवित्र संसार में छोड़ दिया जाता है जो कर्म भोगानुसार पृथ्वी और द्यौ लोक में विचरता रहता है ।

जैसे रथ से जोड़ा घोड़ा युद्ध स्थल में आ जाता है ।
वैसे मानव चोले को पा आत्मा संसार में आता है ।

منتر نمبر ۴۹۱ کھنڈ ۳

اگیان کو مٹا کر گیان پھیلائیں

प्र यद्गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः ।
घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् ॥५॥

جس پرکار چمکتی ہوئی تیزی سے چاروں طرف پھیلتی سورج کی کرنیں کالا لباس

اوڑھے رات کے اندھکار کو مٹا دیتی ہیں، اسی طرح سوم پربھو کے بھگتی رس میں بھرے ہوئے بھگت وِدوان اگیان کا ناش کرتے ہوئے چاروں طرف پھیلتے رہتے ہیں۔

ے جس طرح سُوریہ کی کِرن مٹا دیتی ہے رات کا کالاپن
اِسی طرح گیان کی مشعل سے اگیان مِٹائیں بھگوت جن

491 अज्ञान को मिटा कर ज्ञान फैलाएं

जिस प्रकार चमकती हुई वेग पूर्ण सूर्य किरणों चारों ओर फैल कर काली रात्री के अंधकार को नष्ट कर देती हैं, इसी प्रकार सोम प्रभु के भक्ति रस से युक्त भक्त विद्वान अज्ञान का नाश करते हुए चहुं और फैलते रहते हैं।

जिस तरह सूर्य की किरन मिटा देती है रात का काला पन।
इस तरह ज्ञान की ज्योती से अज्ञान मिटाएं भगवद् जन।

منتر نمبر ۴۹۲ کھنڈ ۳

سوم حاصل نہیں ہوتا!

अपघ्नन् पवस मृधः क्रतुवित् सोम मत्सरः।
नुदस्वादेवयु जनम् ॥६॥

سوم پرمیشور، دھارن کیا ہوا برہمچریہ اور بھگتی رس، کام وغیرہ مخالف طاقتوں کو دُور ہٹا کر عارفوں کو پُرتر کر دیتا ہے، برہمچریہ کے پالن سے برگیا لوک یعنی چمتکاری بُدھی پیدا ہوتی ہے جو فرائض کی تکمیل کی طرف راغب کرتی ہے۔ اس طرح یہ سوم ہمت اور خوشیوں کا سمندر ہے جو ایشور دیوکرم اور دھرم پر شردھا نہ رکھنے والوں کو پراپت نہیں ہوتا۔

ے

سوم پربھو اور برہم چریہ بھگتی رس اندر آتے جب
سب طرف روشنی چھا جاتی سنتاپ پاپ دُب جاتے سب

492 सोम की प्राप्ति नहीं

सोम परमेश्वर, ब्रह्मचर्य, एवं भक्ति रस, कामादि पाप वासनाओं को दूर हटा कर उपासकों को पवित्र कर देता है। ब्रह्मचर्य पालन से प्रज्ञा लोक यानी प्रतिभा तथा मेधा बुद्धि पैदा होती है जो कर्तव्य परायणता की ओर प्रेरित करती है। अत: सोम साहस और हर्षों का सागर है। यह देव कर्म और धर्म पर श्रद्धा न रखने वालों को प्राप्त नहीं होता।

सोम प्रभु और ब्रह्मचर्य, भक्ति रस अन्दर आते जब।
सब तरफ़ रौशनी छा जाती सन्ताप पाप दब जाते सब।

منتر نمبر ۴۹۳ سوم پرمیشور پوتر کرتے ہوئے ہم میں رہو کھنڈ ۳

३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २
अया पवस्व धारया यथा सूर्यमरोचयः।
३ १र २र ३ २
हिन्वानो मानुषीरपः ॥७॥

ہے سوم پرمیشور! آپ پریرنا کے سرچشمہ ہیں، جس شکتی کی دھار سے سورج کو روشن کرتے ہو، اسی دھارا سے ہم انسانوں میں پران اور اندریوں کو پوتر کرتے ہوئے ہمیں سدا پراپت رہو۔

ے روشن کیا ہے سوریہ کو جس پریرنا سے ہے پربھو
ہم منشیوں میں رہو پاکیزہ کرتے شُدھ بسو

493 सोम प्रभु हम में सदा रहें

हे सोम परमेश्वर! आप प्रेरणा के स्रोत हैं। जिस अपनी शक्ति की धार से सूर्य को उजाला देते हो उसी धारा से आप मनुष्यों में प्राण शक्ति और इन्द्रियों को पवित्र करते हुए हमें सदा प्राप्त रहें।

रौशनी दी सूर्य को जिस प्रेरणा से हे प्रभु।
हम मनुष्यों में रहो कर शुद्ध निर्मल सू बसू।

منتر نمبر ۴۹۴ **بُرائیوں کو مارنے کیلئے شکتی دو!** کھنڈ ۳

स पवस्व य आविथेन्द्र वृत्राय हन्तवे ।
वव्रिवांसं महीरपः ॥८॥

شانت رُوپ سوم پرماتمن! میرے جیون کو پوتر کر، جس شکتی سے آپ جیو آتما کی رکھشا کرتے ہو، جس سے یہ آتما نیک خیالات کو دبانے والے پاپوں کو نشٹ کر دیتا ہے، ایسی طاقت ہمیں سدا دیتے رہیں۔

کس قدر بدیوں کے حملوں سے بچاتے ایشور
جس سے ہم ہوں شُدھ نرمل آپ سے جگدیشور

494 पाप के हनन की शक्ति दें

शान्त रूप सोम परमात्मन ! जिस शक्ति से आप जीवात्मा की रक्षा करते हो जिस से यह जीवात्मा शुद्ध प्रवृतियों को दबाने वाली ग्रासुरी शक्तियों को नष्ट कर देता है ऐसी शक्ति सदा देते रहें ।

किस कदर दुष्पृत्तियों से हैं बचाते ईश वर ।
जिस से हम हूं शुद्ध निर्मल आप से जगदीश वर ।

منتر نمبر ۴۹۵ **آپ کی بھگتی میں سرشار بدیوں سے دور رہیں** کھنڈ ۳

अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा ।
अवाहन्नवतीर्नव ॥९॥

پرمیشور دیو! جس آپ کے بھگتی رس میں مست ہو کر جیو آتما آپ کے دیئے ہوئے جسم کے نو ۹ دروازوں، دو ۲ آنکھ، دو ۲ کان، دو ۲ ناک نتھنے، ایک منہ اور پیشاب پاخانے کے

دُوسوراخ یا پانچ گیان اِندری (دیکھنا، سُننا، سُونگھنا، چکھنا اور چھُونا) اور من، بُدھی، چِت، اہنکار، ان سبھی نو۹ کو بس میں کر لیتا ہے، ویسے ہی ہم آپ کے آنند میں بھر کر ۸۱۰ قسم کی بُرائیوں سے دُور ہو کر سَو برس تک جئیں۔

بدیوں سے ہوں دُور اور سرشار آپ کی بھگتی ہیں
خُود کو اپنے بس میں کر سَو ورش جئیں شکتی ہیں

495 आप की भक्ति में लगे हुए पापों से दूर रहें

परमेश्वर देव ! जिस आप की ज्ञान भक्ति से युक्त जीवात्मा शरीर के नौ द्वारों आदि को वश में कर लेता है यथा-2 आंख-2 कान-2 नाक के नथने । मुख-2 मल मूत्र त्यागने के मार्ग वा पांच ज्ञान इन्द्रियां देखना, सुनना, सूंघना, चखना और स्पर्श तथा अन्तः करण चार मन बुद्धि चित अहंकार । इस प्रकार आप की कृपा से 810 पापों से रहित हो 100 वर्ष जियें ।

पापों से हो रहित और आनंद आप की भक्ति से ।
अपने को कर अपने वश, सौ वर्ष जीयें शक्ति से ।

منتر نمبر ۴۹۶ ہمارے جیون میں تو بہتا رہ ! کھنڈ ۳

परि द्युक्षं सनद्रयिं भरद्वाजं नो अन्धसा ।
स्वानो अर्ष पवित्र आ ॥१०॥[५।३]

ہے سوم پرمیشور، آپ اپنے سوم امرت رس سے ہمارے اندر بھگتی کے بل کو بھر دیجئے۔ تیرا دھیان ہمیں شانتی دینے والا ہو۔ ہمارے لئے اپنے امرت دھن کو دیتے اور آتم بل بڑھاتے ہوئے ہمارے ہردیہ میں سدا براجمان رہیں۔

ہے سوم وِشو واسی بھگون بھر دو اِس سوم کو ہم سب میں
جس سے پا آتم شکتی کو شانتی ہووے سب جن جن ہیں

496 हमारे जीवन में अमृत झरता रहे

हे सोम परमेश्वर ! आप अपने सोम रस से हमारे अन्दर भक्ति के बल को भर दीजिए । तेरा ध्यान हमें शान्ति देने वाला हो । हमारे लिए अपने अमृत धन को जो अविनाशी है देते और आत्म बल बढ़ाते हुए आप हमारे हृदयों में सदा विराजमान रहें ।

हे सोम विश्व वासी भगवन् भर दो इस सोम को हम सब में ।
जिससे पा आत्मिक शक्ति को शान्ति होवे सब जन-जन में ।

منتر نمبر ۴۹۷ — کھنڈ ۴

دوست کی طرح قابلِ دید

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १र २र ३ २
अचिक्रदद् वृषा हरिर्महान् मित्रो न दर्शतः ।
१र २र
सं सूर्येण दिद्युते ॥१॥

سب کی کامناؤں کو پورن کرنے والا، دُکھوں کو دُور کرکے سُکھوں کو لانے والا شانتی ساگر پرماتما، دوست کی طرح دیدار کے قابل اور سورج کی طرح روشنی پھیلانے والا ہے، جس کو میں بُلا رہا ہوں، پکار رہا ہوں۔

وہی ہے متر ہم سب کا، ہے سُکھ داتا سہارا ہے
اُسی کی شکتی سے سُورج چمکتا چندر تارا ہے

497 दर्शनयी मित्र

सब की कामना पूर्ण करने वाला दुखों का हनन करके सुखों की वर्षा लाने वाला शान्ति सरोवर परमात्मा मित्रवत दर्शनीय और सूर्यवत प्रकाश फैलाने वाला है । जिन को मैं आह्वान कर रहा हूं ।

वही है मित्र हम सब का, है सुख दाता सहारा है ।
उसी की शक्ति से सूरिज चमकता चन्द्र तारा है ।

منتر نمبر ۴۹۸ **ہم تجھے وَرن کرتے ہیں!** کھنڈ ۴

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे ।
२ ३ १ २ ३ १ २
पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥२॥

ہے سوم پربھو! تیرے سکھ دینے والے زر و مال کی بخشش کرنے والے، شتروؤں سے حفاظت کرنے والے اور سب لوگ جس کو چاہتے ہیں، اس تیرے بل کو ہم آج ہی ورن کرتے ہیں، اپنے اندر دھارن کرتے ہیں۔

ہے سوم پربھو سکھ داتا دھن کے دانی سب کا رکھشک تو
چاہتی ہے ساری دنیا جس کو ہم بھی چاہتے تو ہی تو

498 **हम तुझे वरण करते हैं**

हे सोम प्रभो ! तेरे सुख देने हारे और ऐश्वर्य प्रदान करने वाले, शत्रुओं से रक्षा करने वाले और जन-जन जिस को चाहते हैं उस तेरे बल को हम आज ही वरण करते हैं। अर्थात् अपने में धारण करते हैं।

सोम प्रभो सुख दाता, धन के दानी सबका रक्षक तू ।
चाहती है सारी दुनियां जिस को हम भी चाहते तू ही तू ।

منتر نمبر ۴۹۹ **گیان شانتی اور بھگتی کو آتما کی نذر کرو** کھنڈ ۴

१ २ ३ १ २ ३ १२ २२ ३ २ ३ १ २
अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ नय ।
३ १ २ ३ १ २
पुनाहीन्द्राय पातवे ॥३॥

ہنسا رہت اپاسنا یگیہ کو رچانے والے عابد! تو پہاڑوں کی کندراؤں، رشیوں کی بانیوں اور گوروؤں سے شانتی دائیک گیان اور بھگتی رس کو اپنے پوتر ہردے میں دھارن

کر کے جیو آتما اِندر کو یہ رس پان کرا۔

ے مانوشریر سے حاصل کر شانتی گیان اور بھگتی کو
نذر کرو پیاری رُوح کو چھوڑ اپناپن آسکتی کو

499 ज्ञान शान्ति और भक्ति आत्मा को भेंट

हिंसा रहित उपासना यज्ञ रचाने वाले उपासक तू पर्वतों की कन्द्राओं ऋषियों की वाणियों और गुरुओं से शान्ति दायक ज्ञान और भक्ति रस को अपने पवित्र हृदय में धारण करके जीवात्मा इन्द्र को पान करा वा भेंट कर।

मानव शरीर से पाकर के शान्ति ज्ञान और भक्ति को।
भेंट करो प्यारे आत्मा को छोड़ अपनापन आसक्ति को।

منتر نمبر ۵۰۰ — بھگتی مارگ کا پھل! — کھنڈ ۴

तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः।
तरत् स मन्दी धावति ॥४॥

بلاشک وہ اُپاسک عابد و عارف پاپ کی ندی (بھوساگر) کو تر جاتا ہے۔ سانوک اَنّ یا روحانی خوراک سے الیشور بھگتی کی دھارا اُس میں دوڑنے لگ جاتی ہے۔ جس سے بالضرور پاپ کی ندی کو پار کرتا اور آنند مگن ہوتا ہوا وہ بھگتی کے مارگ پر دوڑتا جاتا ہے۔

ے جس سمے ترنگیں بھگتی کی اُٹھتی ہیں مانس گاگر سے
سب پاپوں کو تر کر پار ہو جاتا وہ بھوساگر سے

500 भक्ति मार्ग का फल

निःसन्देह वह उपासक भव सागर को तर जाता है।

सात्विक तथा आध्यात्मिक आहार से ईश्वर भक्ति की धारा उसमें धावने लगती हैं। जिससे अवश्य वह पाप की नदी को पार करता और आनन्द मग्न होता हुआ भक्ति मार्ग पर अग्रसर हो जाता है।

जिस समय तरंगें उठती हैं भक्ति की मानस गागर से।
सब पापों को तर कर पार हो जाता वह भव सागर से।

کھنڈ ۴ ## بھگتی رس کی مہما ! منتر نمبر ۵۰۱

श्रा पवस्व सहस्रिणं रयिं सोम सुवीर्य्यम्।
अस्मे श्रवांसि धारय ॥५॥

یہ سوم بھگتی رس روحانی زر و مال کو عطا کرتا ہے جو دنیاوی دھن دولت سے ہزارہا درجے بہتر ہے، اُتم شکتی اور بل کا دینے والا ہے۔ نیک نامی اور اعلیٰ شہرت کا مالک بنا دیتا ہے۔

۵ تم خوب جھرو ہے سوم پربھو! یہ سوم بھگتی دل میں بھر دو
اوناشی روحانی دولت یش کو جیون میں بھر دو

501 भक्ति रस की महिमा

यह सोम भक्ति रस अध्यात्म सम्पदाओं को देता है जो संसारिक ऐश्वर्य से सहस्रशः श्रेष्ठ है उत्तम शक्ति और बल का देने वाला है यश और कीर्ति का स्वामी बनाता है।

तुम खूब झरो हे सोम प्रभु यह सोम भक्ति दिल में भर दो।
अविनाशी अध्यात्म सम्पदा, यश को जीवन में भर दो।

منتر نمبر ۵۰۲ اَمرت تتو کی پراپتی یوگ سے کھنڈ ۴

१२ ३१२ ३१२ ३१२ २२
अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः ।
३१ २ ३१२
रुचे जनन्त सूर्यम् ॥६॥

پرانے اُپاسک لوگ دیوجن پربھو پریم کے ذریعے بتدریج یوگ کی نئی نئی سیڑھیوں پر آگے قدم بڑھاتے رہے ہیں، اُس امرت تتو کی پراپتی کے لئے پرمیشور رُوپی سُوریہ کو ہردے میں دھارن کرکے ساکھشات کرتے رہے ہیں ۔

گتی شیل پرانے لوگوں نے ادھیاتم مارگ اپنایا ہے
اوناشی امرت ایشور کو درڑھ یوگ مارگ سے پایا ہے

502 अमृतत्व की प्राप्ति योग द्वारा

पुरातन उपासक लोग देव जन, प्रभु प्रेम के द्वारा योग की नूतन सीढ़ियों पर अग्रसर होते हैं । जिस से इस अमृतत्व की प्राप्ति के लिए परमेश्वर रूपी सूर्य को हृदय में धारण करके साक्षात कर लेते हैं ।

गतिशील पुराने लोगों ने अध्यात्म मार्ग अपनाया है ।
अविनाशी अमृत ईश्वर को दृढ़ योग मार्ग से पाया है ।

منتر نمبر ۵۰۳ پربھو کی بانی کو چاروں طرف گونجاؤ کھنڈ ۴

१ २ ३१२३ १२ २२ ३ १२
अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत् ।
२ ३ २ ३ २ ३ २
सीदन् योनौ वनेष्वा ॥७॥

بھکتی رس کے چاہک عابد اُپاسک! تو جنگلوں میں قدرت کی گود میں بیٹھ کر جگت جننی ماں سے میل کر اپنے اندر کی گیان جیوتی کو جلا اور سب دُنیا میں بھگوان کے

نام اور مہما کو گونجاتا چل ۔

ے بھگتی رس کے رسک عابد بن کی یکسوئی میں جا
ایش سے لے گیان جیوتی سب کو امرت دے پلا

503 वेद वाणी को गुंजाओ

भक्ति रस के इच्छुक उपासक तू बनों में प्रकृति मां की गोद में बैठ कर जगत जननी मां से उपासना के द्वारा ज्ञान ज्योति को जला और चहूं ओर ओम नाम की महिमा को गुंजाता जा ।

भक्ति रस के रसिक मानव बन की यकसूई में जा ।
ईश से ले ज्ञान ज्योति सब को अमृत दे पिला ।

منتر نمبر ۵۰۴ کلام الٰہی کے پھیلاؤ سے دھرم کا جماؤ کھنڈ ۴

वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः ।
वृषा धर्माणि दध्रिषे ॥८॥

پیارے ایشور بھگت! تو علم عرفاں سے منور ہے لہٰذا اُٹھ کر اپنے روحانی وعظوں یا اُپدیشوں سے اس صحیفۂ الٰہی کو چاروں طرف پھیلا۔ یہ تیرا برت (عہد) ہے پرمیشور کے اُپدیشوں کی ورشا کرنا ، اسی سے دُنیا میں دھرم کرم کا جماؤ ہو گا۔

ے پیارے ایشور بھگت تجھ میں علم عرفاں نُور ہے ۔ اس کو پھیلانے کا تیرا عہد ہے دستور ہے

504 ईश्वरी ज्ञान के प्रसार से धर्म स्थापना

प्यारे ईश्वर भक्त तू अध्यात्मिक ज्ञान से ज्योतिमान है अतः उठ और अपने आत्म ज्ञान के उपदेशों से इस ईश्वरी वाणी को सब ओर फैला । यह तेरा व्रत है भगवान के उपदेशों की वृष्टि करना । इस से ही संसार में धर्म की स्थापना होगी ।

प्यारे ईश्वर भक्त तुझ में ज्ञान ध्यान का नूर है ।
इसको फैलाने का तेरा व्रत है, दस्तूर है ।

منتر نمبر ۵۰۵ منن شیل ودوان آپکی کھوج کرتے ہیں! کھنڈ ۴

इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः ।
इन्दो रुचाभि गा इहि ॥६॥

چندر کی طرح شانتی سروپ پرمیشور! منن شیل وچاروان دھارنا اور دھیان سے آپ کی کھوج کرتے ہیں آپ ان کو آتم گیان کا روپ بخشیں۔ ہے پربھو اپنے تیج سے ہماری بانی اور سبھی اندریوں میں شکتی کی پریرنا دیں۔

چاند کا آنند دینا جیسے روز کا کام ہے
اس طرح ہے شانتی داتا ایش آنند دھام ہے

505 मनन शील विद्वान आप को खोजते हैं

चन्द्र के समान शान्ति रूप परमेश्वर ! मननशील विचार-वान धारणा और ध्यान से आप की खोज़ करते हैं । आप उनको ब्रह्म ज्ञान की ज्योति दें । हे प्रभो अपने तेज से हमारी वाणी आदि सभी इन्द्रियों में शक्ति की प्रेरणा दें ।

चान्द का आनन्द देना जैसे रोज़ का काम है ।
इस तरह है शान्ति दाता ईश आनन्द धाम है ।

منتر نمبر ۵۰۶ یہ بھگتی رس کھنڈ ۴

मन्द्रया सोम धारया वृषा पवस्व देवयुः ।
अव्या वारेभिरस्मयुः ॥१०॥

جو شانتی برساتا ہوا دیوتاؤں کے راستے سے پرمیشور کی طرف لے جاکر آنند کی دھارا کو بہاتا اور ہمیں پوتر کر دیتا ہے، ساتھ ہی وگھن وناشک بھگوان کے ساتھ

جوڑ دیتا ہے جس سے اُپاسک بدیوں سے دُور ہو کر نیکیوں کے ساتھ جُڑا رہتا ہے ۔

ے بھگتی رس کی برکات سے اُٹھ جاتا ہے دھرتی سے مانو
دیووں کے رستے پر چل کر بھگوان کو پا لیتا مانو

506 **यह भक्ति रस**

जो शान्ति बरसाता हुआ देवताओं के मार्ग से परमेश्वर की ओर ले जाकर आनन्द की धारा बहाता और हमें पवित्र कर देता है। साथ ही बिघ्न विनाशक भगवान से जोड़ देता है। जिस से उपासक पाप से रहित होकर धर्म के साथ युक्त रहता है।

भक्ति रस की महिमा से उठ जाता धरती से मानव।
देवों के रसते पर चल कर भगवान को पा लेता मानव।

منتر نمبر ۵۰۷ کھنڈ ۴

دھنیہ ہے تیری مہما!

३ १ २ ३ १ २ ३२उ ३क २र
अया सोम सुकृत्यया महान्त्सन्नभ्यवर्धथाः।
३ १र २र
मन्दान इद् वृषायसे ॥११॥

اَمرت سوم پرمیشور! مہان ہوتا ہوا بھی تو ہماری اِس سُتتی، اُپاسنا اور حمد وثنا سے ہمیں بڑھاتا ہے، جب ہم تیری مہما گاتے ہیں تو سُکھ کی ورشا کر ہمیں آنندت کر دیتا ہے دھنیہ ہے تیری مہما اور مہانتا ۔

ے اَمرت سوم مہان پربھو ورہم کو آپ بڑھاتے ہو
جب ہم تیری مہما گاتے سُکھ شانتی برساتے ہو

507 **धन्य है तेरी महिमा**

अमृत सोम परमेश्वर महान होता हुआ भी तू हमारी स्तुति प्रार्थना और उपासना से हमें बढ़ाता है और सुख की वर्षा कर हमें आनन्दित कर देता है। धन्य है तेरी महिमा और महानता।

अमृत सोम महान प्रभु वर, हमको आप बढ़ाते हो।
जब हम तेरी महिमा गाते सुख शान्ति बरसाते हो।

منتر نمبر ۵۰۸ بھائی چارے کی طرف راغب کرتا ہے! کھنڈ ۴

३ १२ २र ३ १२ २र ३ १ २
अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः स चेतति ।
३ १२ २र ३ २
हिन्वान आप्यं बृहत् ॥१२॥

یہ بھگتی رس بھگوان کے درشن کراتا ہے، سب کا ہت کرتا اور پوتر کرتا ہے۔ سب کو نئی زندگی دے کر عالمی بھائی چارے کی رغبت دیتا ہے۔

سب کا ہتکاری ہے سوم رس پربھو درشن کرواتا ہے
نئی زندگی سب کو دے کر بھراتری بھاو بڑھاتا ہے

508 सार्वभौमिक भ्रातृ भाव की प्रेरणा

यह भक्ति रस भगवान के दर्शन कराता है। सब का हित करता और पवित्र करता है। सबको नई चेतना देकर सार्वभौम भाई चारे की ओर प्रेरणा करता है।

सब का हितकारी है सोम रस, प्रभु दर्शन करवाता है।
नई चेतना सब को देकर भ्रातृभाव बढ़ाता है।

منتر نمبر ۵۰۹ تیری عظیم نوازش ہے! کھنڈ ۴

१ २ ३ १२ २र ३ १२ २र
प्र न इन्दो महे तु न ऊर्मिं न बिभ्रद र्सि ।
३ २ ३ २ ३ १ २
अभि देवाँ अयास्यः ॥१३॥

یہ تیری مہان کرپا ہے، چندر کی طرح شانتی اور آنند دینے والے پرمیشور! ہر ہر کار سے ہم کو بڑھانے کے لئے ترنگوں کی طرح ہمارے اندر آنند کی دھارا کو بہا رہا ہے، تیری

نوازش سے ہی اپنے آپ ہمارے اندر دیوتاؤں کے گُن کرم سوبھاؤ آ رہے ہیں ۔

ے تیری نوازشوں سے ہوں جا رہا بڑھتا ہوا
آنند رس لیتا ہُوا دِوگنوں کو بھرتا ہوا

509 **तेरी महान कृपा**

चन्द्र के समान शान्ति और आनन्द देने वाले परमेश्वर हर प्रकार से हमारी वृद्धि के लिए अपनी तरंगों से हमारे अन्दर आनन्द की धारा को बहा रहे हो। अनायास हमारे अन्दर दिव्य गुण कर्म स्वभाव आ रहे हैं। यह तेरी महान कृपा है।

तेरी अनुकम्पा से मैं हूं जा रहा बढ़ता हुआ।
आनन्द रस लेता हुआ और दिव्य गुण भरता हुआ।

منتر نمبر ۵۱۰ کھنڈ ۴

سوارتھ یا خُودغرضی کو دُور کرتا ہے!

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
अपघ्नन् पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः।
२ ३ १ २ ३ २
गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥१४॥[५।४]

یہ سوم رس جو وگھن بادھا وغیرہ سب رکاوٹوں کو دور کر پاکیزہ بنا دیتا ہے اور سوارتھ کو دور کر کے اندر بھگوان کے شُدھ سوروپ کو پراپت کراتا ہے ۔

ے دان سے بھٹکے ہوئے بادھاؤں میں پھنسے ہوئے
سوم اُن کو شُدھ کرتا دیتا ایشور کو ملا

510 **स्वार्थ के दोष को दूर करता है**

यह सोम रस जो विघ्न बाधाओं को दूर कर के पवित्र कर देता है और अदान वृत्ति स्वार्थ को दूर करके इन्द्र भगवान के शुद्ध स्वरुप को प्राप्त कराता है।

दान से भटके हुए बाधाओं में फंसे हुए।
सोम उनको शुद्ध करता देता ईश्वर को मिला।

منتر نمبر ۵۱۱ سوم پرمیشور امرت کا کنواں کھنڈ ۵

३ १ २ ३ १२ ३ १२ २२
पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि ।
१ २ ३ १२ २२ ३ १ २
आ रत्नधा योनिमृतस्य
३ १ २ ३ १ २३ १ २
सीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः ॥१॥

ہے سوم امرت پرمیشور! آپ اپنی شانتی امرت کی دھارا سے ہمیں پوتر کرتے ہوئے جیوآتما کے کرموں پر چھائے ہوئے ہیں اور پرتھوی، سُوریہ، چاند، موتی، جواہر، مونگا وغیرہ رتنوں کو دھارن کر سب طرف منوّر ہو رہے ہیں۔ آپ امرت کا کنواں بمثل سرچشمہ ہیں، اور ازلی وید گیان کے منبع ہو کر اپنی ہستی سے ہی ساری دُنیا کو گھیر رہے ہیں۔

ے چمکیلے جھرنے اَمرت کے سوم سدا بھرتے رہتے
سب طرف ہمارے کرموں پر چھائے پوتّر کرتے رہتے

511 अमृत का कूप सोम खण्ड 5

हे सोम परमेश्वर ! आप अपनी शान्ति अमृत की धारा से हमें पवित्र करते हुए जीवात्मा के कर्मों पर छाए हुए हैं । और पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, मोती, जवाहर, मोंगा आदि रत्नों को धारण कर सब ओर ज्योतिर्मान हैं । आप अमृत कूप या सरोवर है शाश्वत वेद ज्ञान के स्रोत हो कर अपनी सत्ता से ही विश्व पर आच्छादित हो रहे हैं ।

चमकीले झरने अमृत के हो सोम सदा भरते रहते ।
सब ओर हमारे कर्मों पर छाया पवित्र करते रहते ॥

منتر نمبر ۵۱۲ کھنڈ ۵

بھگتی دھارا کو زندگی میں ڈالو!

परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः ।
दधन्वान् यो नर्यो अप्स्वा३न्तरा
सुषाव सोममद्रिभिः ॥२॥

پیارے عارفو! اپنے اندر پیدا ہوئے سوم رس کو سب کے اندر ڈالو، یہی بھگتی رس تو بھگوان کو بھینٹ کرنے کا تحفہ ہے، جو پرمیشور ہمارے اندر اور باہر کے سبھی کرموں میں بسا ہوا سب کا ہتکاری ہے، پہاڑوں کی یکسوئی میں بیٹھ کر اُس کا دھیان کرتے ہوئے سوم رس کو اپنے اندر بڑھاؤ جو سب کے لئے شانتی دائیک امرت ہے۔

سوم رس پیدا ہوا بھگتی سے جو بھگوان کی
سب کو بانٹو بھینٹ کر دو پھر اسے بھگوان کی

512 भक्ति की धारा को जीवन में डालो

प्यारे उपासको ! अपने अन्दर पैदा हुए सोम रस को डालो । यही भक्ति रस तो भगवान को भेंट करना है । जो हमारे अन्दर और बाहर के सभी कर्मों में बसा हुआ सब का हितकारी है पर्वतों की तलहटी में बैठ कर उस सोम प्रभु का ध्यान करते हुए सोम रस को अपने में बढ़ाओ । जो सब के लिए शान्तिदायक अमृत है ।

सोम रस पैदा हुआ भक्ति से जो भगवान की ।
सबको बांटो भेंट कर दो फिर इसे भगवान को ।

منتر نمبر ۵۱۳ — رس سے ہی زندگی کی خوبصورتی — کھنڈ ۵

आ सोम स्वानो अद्रिभिस्तिरो
वाराण्यव्यया ।
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः
सदो वनेषु दध्रिषे ॥३॥

یہ سوم بھگتی رس اُپاسک میں انتر ناد یعنی ضمیر کی آواز یا اوم نام کی دُھن کو پیدا کرتا ہے، وِگھن بادھاؤں سے چھُڑانے والی سب کے رکھشک پرمیشور کی امر شکتی کو دے کر شریر آتما، من، اندریوں وغیرہ کو ایسے زندگی دیتا ہے، جیسے راجہ نگر میں داخل ہوتا ہے اور سارا نگر خوبصورت ہر طرف سے منوّر دکھائی دیتا ہے۔

سوم سے ہے زندگی کی خوش نمائی سُو بسُو
حواسِ خمسہ آتما اور جسم میں بسا پربھو

513 **सोम ही जीवन का सौंदर्य**

यह सोम भक्ति रस उपासकों में अन्तरनाद अर्थात् ओम् नाम की धुन को पैदा करता है। विघ्न बाधाओं से मुक्त कर सर्व रक्षक परमेश्वर की अमर शक्ति को दे कर शरीर, आत्मा, मन और इन्द्रियों में ऐसा जीवन देता है जैसे राजा के नगर में प्रवेश करने पर सारा नगर चहुँ ओर सौन्दर्य से जगमगाता दृष्य-मान होता है।

सोम से है ज़िन्दगी की खुशनुमाई सूबसू।
आत्मा मन इन्द्रियों में बस गया प्यारा प्रभु॥

منتر نمبر ۵۱۴ — کھنڈ ۵

بھگتی رس بھگوان کے ارپن کیلئے

प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा।
अंशोः पयसा मदिरो न
जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥४॥

یہ بھگتی رس بھگوان کی بھینٹ کے لئے بھگوان کے آنند رس سے بڑھ رہا ہے، جیسے آنند مگن منش پرمیشور کے درشن کے لئے سدا بے تاب رہتا ہے، ویسے یہ بھگتی رس بھی اُپاسک میں ہلوریں لیتا رہتا ہے اور میٹھے دِل کش آنند رس کے بھنڈار پرمیشور کو ہی پراپت ہو جاتا ہے۔

ے پیدا ہوتا بھگتی رس ہے آدمی میں اس لئے
کہ کرے ارپن اُسے وہ اُس کی بھگتی کے لئے

514 भक्ति रस भगवान के लिए

ये भक्ति रस भगवान की भेंट के लिए उसके दिए हुए ही आनन्द रस से बढ़ रहा है जैसे आनन्द मग्न मनुष्य परमेश्वर के दर्शन के लिए बेताब रहता है वैसे यह भक्ति रस भक्त में हिलोरें लेता रहता है और मधुरता के भण्डार परमेश्वर को ही प्राप्त हो जाता है।

पैदा होता भक्ति रस आदमी में इसलिए।
कि करे अर्पण उसे वह उस की भक्ति के लिए।

منتر نمبر ۵۱۵ جگت جننی ماں سے پایا ہوا کھنڈ ۵
دودھ سمان بھگتی رس

सोम उ ष्वाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम्।
अश्वयेव हरिता याति धारया
मन्द्रया याति धारया ॥५॥

یہ بھگتی رس بھگتوں کی انتر آتما میں پیدا ہوتا اور ماں کی دودھ دھاراؤں کی طرح جگت جننی ماں ایشور کی دی ہوئی شکتیوں سے بل شالی ہوتا ہے، جیسے گھوڑ سوار تیز گھوڑی سے تیزی سے سفر کرتا ہے، ویسے بھگتی رس کی طاقت سے بھگت پرمیشور کی طرف تیزی سے بڑھتا ہے۔ اور بھگتی میں آنند کے مل جانے سے اور تیزی سے بڑھنے لگتا ہے۔

ے

اشو روہی جس طرح تیزی سے بڑھتا راہ پر
بھگتی رس سے آتما بڑھتا پربھو کی راہ پر

515 जग जननी मां से पाया हुआ दुग्ध रुपी भक्तिरस

यह भक्ति रस भक्तों की अन्तर्तात्मा में ही पैदा होता और मां की दुग्ध धारा की तरह जगत जननी मां ईश्वर की दी हुई शक्तियों से बल शाली होता है। जैसे घुड़ सवार अश्वि से वेग पूर्ण मार्ग पर बढ़ता जाता है। वैसे भक्ति रस की शक्ति से भक्त परमेश्वर की ओर तीव्रता से बढ़ता है और फिर आनन्द की प्राप्ति पर तो और तीव्रता से बढ़ने लगता है।

अश्वरोही जिस तरह तेज़ी से बढ़ता राह पर।
भक्ति रस से आत्मा बढ़ता प्रभु की राह पर।

منتر نمبر ۵۱۶ — بھگتی مارگ کی بادھاؤں کو دور کیجئے! — کھنڈ ۵

त्वाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे।
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति
मामव पारधी रति ताँ इहि ॥६॥

وشو کے پالک، تمام زر و مال کے مالک پرمیشور! میں روزمرہ آپ کی متّرتا اور ساتھ ہونے کے احساس میں خوش خوش رہتا ہوں کہ تو میرے ساتھ ہے ہر وقت اور ہر جگہ پر۔ اس سے آپ کی حمد و ثنا کرتا رہتا ہوں، لیکن پھر بھی آپ کی بھگتی کے راستے میں انیک وگھن بادھائیں دکھی کرتی رہتی ہیں۔ ہے سوم پربھو! ان کو دور کر کے مجھے "شانتی" پردان کریں۔

ہے سوم دوستی تیری میں آنند کی لہریں چلتی ہیں
پر یہ بادھائیں دور کرو جو بھگتی مارگ میں اڑتی ہیں

516 भक्ति रस की बाधाओं को दूर कर दीजिए

विश्व पालक परमेश्वर ! मैं प्रतिदिन आपकी मैत्री और साथ होने के भाव से हर्षित रहता हूं तू मेरे साथ है हर समय और हर

स्थान पर। इस लिए आपकी उपासना करता रहता हूं किन्तु फिर भी आपके भक्ति मार्ग में अनेक विघ्न बाधाएं दुःखी करती रहती हैं। हे सोम प्रभो ! इन को दूर कर मुझे शान्ति दीजिए।

हे सोम मित्रता तेरी में आनन्द की लहरें चलती हैं।
पर यह बाधाएं दूर करो जो भक्ति मार्ग में अड़ती हैं।

منتر نمبر ۵۱۷ دُعاؤں کو منظور نظر کر کے اپنی بخشش کر ہمیں! کھنڈ ۵

३ १ २ ३ १र २र
मृज्यमानः सुहस्त्य समुद्रे वाचमिन्वसि ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं
१ २ ३क २र
पवमानाभ्यर्षसि ॥७॥

بنا ہاتھ کے ایسی خوبصورت دل کش اور عجیب وغریب دُنیا کے معمار پرماتمن! جب ہماری دُعاؤں کو تُو منظور کر لیتا ہے تو ہمارے خانۂ دل میں تیرا ظہور ہوتا ہے۔ اور ہمیں پتہ تب لگتا ہے، جب ہمیں دُنیا وعقبےٰ کی نعمتیں حاصل ہو جاتی ہیں۔ اور ہم خُوشیوں سے بھرپُور ہو جاتے ہیں۔

ے جب ہماری پرارتھنائیں تجھ سے ہیں منظور ہوتیں
نعمتیں دُنیا وعقبےٰ کی ہمیں حاصل ہیں ہوتیں

517 प्रार्थनाओं को स्वीकार कर हमें निहाल कर दें

बिना हाथ के ऐसा सुन्दर जगत रचने हारे विश्व कर्मा ! जब हमारी प्रार्थनाओं को स्वीकार कर लेते हो तो हमारे हृदय में तेरी ज्योति चमक उठती है और हमें लगता है कि हमें लोक और परलोक की सभी सम्पदाएं प्राप्त हो गई हैं जिस से हम हर्ष पूर्ण हो जाते हैं।

जब हमारी प्रार्थनाएं तुझ से हैं स्वीकार होतीं।
सम्पदाएं विश्व की सारी हमें हासिल हैं होतीं।

منتر نمبر ۵۱۸ **بھگتی کے رَس سے ہی شانتی اور آنند** کھنڈ ۵

अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम् ।
समुद्रस्याधि विष्टपे मनीषिणो
मत्सरासो मदच्युतः ॥८॥

بھگتی کے رس میں ڈوبے ہوئے من پر قابو حاصل کئے ہوئے شانتی کے سمندر اور سب پر سکھ شانتی کی ورشا کرنے والے یوگی، عابد، اُپاسک اپنے دل کے ساگر کی تفکرات سے خالی شانت گُفا میں مستی سے جھومتے ہوئے ایشوری آنند کو پراپت ہوتے ہیں۔

۵
عارفوں کے دل میں بستا سوم آنند کند ہی
جس سے اُن کو شانتی رہتی اور ہے آنند بھی

518 **भक्ति रस से ही शांति और आनन्द**

भक्ति रस में डूबे हुए मनीषी, शान्ति के सागर और सब पर सुख शान्ति की वर्षा करने वाले योगी जन उपासक अपने हृदय सागर की शान्त गुहा में मस्ती से झूमते हुए ईश्वरी आनन्द को प्राप्त होते हैं।

भक्तों के दिल में है बसता सोम आनन्द कन्द ही।
जिससे उनको शान्ति रहती और है आनन्द भी।

منتر نمبر ۵۱۹ **زندگی کے لمحے میٹھے ہوں!** کھنڈ ۵

पुनानः सोम जागृविरव्या वारैः परि प्रियः ।
त्वं विप्रो अभवोऽङ्गिरस्तम
मध्वा यज्ञं मिमिक्ष णः ॥९॥

ہے زندگی بخش سوم! تُو ہماری زندگیوں کو پاکیزہ بناتا ہے، ہماری خبرگیری کیلئے تُو ہمیشہ چوکس رہتا ہے۔ جس سے ہم اُپاسنا میں غفلت نہ کریں۔ سب کے دُکھوں کو دُور کرنے والے سب کے پیارے پرم گیانی ورن کرنے یوگیہ پرمیشور ازراہِ نوازش مدُھر سوم سے ہمارے جیونوں میں مدھرتا بھر دیجئے!

ع
جاگتے ہو خود جگاتے رہتے سب کو ایشور
ہوں ہمارے شُدھ جیون اور مدُھر جگدیشور

519 जीवन में मधुरता हो

हे जीवनदाता सोम ! तू हमें पवित्र करता है और हमारी सावधानी के लिए तू सदा चौकस रहता है जिससे हम आलस्य प्रमाद वश उपासना में ढील न करें। सब का दुःख हर्ता सबके प्रिय परम ज्ञानी वरणीय परमेश्वर कृपया अपने मधुर सोम से हमारे जीवनों में मधुरता भर दीजिए।

जागते हो खुद, जगाते रहते सब को ईश वर।
हों हमारे शुद्ध जीवन और मधुर जगदीश वर।

کھنڈ ۵ منتر نمبر ۵۲۰

سَب کی زِندگیوں کا سہارا

इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वते सुतः ।
सहस्रधारो अत्यव्यमर्षति
तमी मृजन्त्यायवः ॥१०॥

پیدا ہوا ایک ایک اعضا میں یہ سوم بھگتی رس بہ رہا ہے اور خوشیوں کو لا رہا ہے، لیکن ہے یہ اَمرت اِندر پرمیشور کے لئے جو پرانوں کا سوامی ہے اور یہ پیارا بھگتی رس بھگتوں، عارفوں کا جیون آدھار رکھشک پرمیشور کی افضل ترین نعمت ہے جو سب کو پوتر کرتا ہے۔

ے یہ سوم ہے بھگتی پان اِندر پرمیشور کا
جس کو پی ہوتا پوتر سارا جگ ایشور کا

सब का जीवन आधार

520

यह सोम भक्ति रस एक-एक अंग में बहता हुआ हर्षों को ला रहा है। किन्तु है यह अमृत, इन्द्र परमेश्वर के लिए, जो प्राणों का स्वामी है और ये आत्म प्रिय भक्ति रस उपासकों का जीवन आधार है और सर्व रक्षक परमेश्वर की श्रेष्ठ देन, जो सब को पवित्र करता है।

ये सोम है भक्ति पान इन्द्र परमेश्वर का।
जिस को पीकर होता पवित्र सारा जग ईश्वर का।

منتر نمبر ۵۲۱ — کھنڈ ۵

سَبْ سے پہلے دھَرم کے داتا

पवस्व वाजसातमोऽभिविश्वानि वार्या।
त्वं समुद्रः प्रथमे विधर्मन्
देवेभ्यः सोम मत्सरः ॥११॥

ہے سوم! اتُول شکتی کو پراپت کراتا ہے۔ ہمیں لے چلو بھگوان امرت کی پراپتی کے لیے۔ آپ آنند ساگر ہو، ہمیں دیوگنوں کی رُوحانی دولت کو حاصل کراؤ، سبھی بُرائیوں کو ہمارے اندر سے نکال دو۔ سب سے پہلے دھرم کو دینے والے ہو، جو اِنسانات کے لئے اعلےٰ بخشش ہے۔

ے دُنیا میں دھرم کے دینے کو سب سے پہلے بھگوان ہو تُم
ہم سبھی مانوؤں کے اُوپر سکھ شانتی شکتی مان ہو تُم

सर्वप्रथम धर्म दाता

521

हे सोम! तू बल शक्ति को देता है, अमृत की प्राप्ति के लिए भगवान हमें ले चलो अपने आनन्द सागर की ओर, और

हमें दिव्य गुणों की आत्मिक सम्पदा को प्राप्त कराओ । पाप आदि सभी दोषों को हमारे अन्दर से निकाल दो क्योंकि सबसे पहले धर्म के देने वाले आप हो जो मनुष्य मात्र के लिए सौभाग्यतम है।

दुनियां में धर्म के देने को सब से पहले भगवान हो तुम ।
हम सभी मानवों के ऊपर सुख शान्ति शक्तिमान हो तुम ।

منتر نمبر ۵۲۲ کھنڈ ۵

یہ سوم رس

१ २   ३ २ ३ २ ३   १ २
पवमाना असृक्षत पवित्रमति धारया ।
३ १ २   ३ १ २ ३ १र २र
मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रिया हया
३ २ ३ १र २र
मेधामभि प्रयांसि च ॥१२॥[५।५]

پوتّر کرنے والے، آنند کو بڑھانے والے، اندریوں (حواسِ خمسہ) کو شکتی شالی بنانے والے گھوڑوں کی طرح تیزی دینے والے، میدھا بُدّھی (عقلِ سلیم) کی طرف چلانے والے، جن کے ذریعے ہم کام، کرودھ، لوبھ وغیرہ اندرونی اور باہر کے دشمنوں پر فتح پا سکتے ہیں۔ یہ ہے ایشور بھگتی کا رس، برہم چریہ اور ایشور بانی وید کا گیان۔

یہ ہے عجیب نعمت ایشور کی جگ میں سوم کہاتا جو
پاکر کے سوبھاگیہ وان سب شکتیوں پر ہے پاتا وہ

522   **ये सोम रस**

पवित्र करने वाले आनन्द की वृद्धि और इन्द्रियों को शक्ति देने वाले ! अश्वों के समान वेग देने वाले और मेधा बुद्धि की प्रेरणा देने वाले जिन के द्वारा हम काम क्रोध लोभ आदि आंतरिक और बाह्य शत्रुओं पर विजय पा सकते हैं ये है (1) ईश्वर भक्ति रस (2) ब्रह्मचर्य और (3) ईश्वर वाणी वेद का ज्ञान ।

सर्वोत्तम देन है ईश्वर की जो जग में सोम कहाता है ।
पा कर के सौभाग्य वान सब शक्तियों पर जय पाता है ।

منتر نمبر ۵۲۳ اُپاسنا کے راستے پر تیزی سے گامزن ہو کھنڈ ۱

प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद

नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष ।

अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तोऽच्छा

बर्ही रशनाभिर्नयन्ति ॥१॥

ہے عابد اُپاسک تو تیزی سے چل اور اپنے دِل کے گوشہ میں یکسوئیت سے بیٹھ، اپنے کو پاک وصاف کرتا ہوا دھیان مارگ کے کامل عارفوں کی رہنمائی حاصل کر، جیسے مہارت حاصل کئے ہوئے گھوڑسوار بڑی ہوشیاری اور تیزی سے گھوڑوں کو اپنی منزلِ مقصود پر لے جاتے ہیں، ویسے عبادت یا اُپاسنا کی راہ کے ماہر مُرشدِ کامل تمہاری اِندریوں (حواسِ خمسہ) اور من کو دل کے پاک گوشہ میں روحانیت کی طرف لے جائیں گے ۔

ے اپنی منزل پر اُپاسک بڑھتا چل دِل پاک سے
یکسوئی رُوحانیت کی سیکھ مُرشدِ پاک سے

523 **उपासना मार्ग पर चल**

हे उपासक तू तीव्रता से चल और अपने हृदय की कोठरी में आसन जमा के बैठ। स्वयं पवित्र होता हुआ ध्यान मार्ग के नेताओं का मार्ग दर्शन ले। जैसे अश्व रोही प्रशिक्षण प्राप्त कर बड़े वेग से अपने घोड़ों को प्राप्ति स्थान पर ले जाते हैं। वैसे उपासना व अध्यात्म मार्ग के आचार्य तुम्हारी इन्द्रियों और मन को आत्मिकता की ओर ले जाएंगे।

अपनी मंज़िल पर उपासक बढ़ता चल दिल साफ से।
ब्रह्म के विज्ञान की ले सीख गुरुवर पाक से।

منتر نمبر ۵۲۴ بھگوان کا اُپاسک اُس کے کھنڈ ٦

ویدگیان کو پھیلاتا جائے!

प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो
देवो देवानां जनिमा विवक्ति ।
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः
पदा वराहो अभ्येति रेभन् ॥२॥

اپنی پرجا کی سُکھ کی ابھیلاشا کرتا ہوا پربھو جیسے اپنی کلیانی بانی وید کے ویاکھیان سے سب چیزوں کا گیان کراتا ہوا اُپدیش دیتا ہے، ویسے بھگوان کا پیارا بھگت مہان برت کو دھارن کر سب کو پوتّر وید بانی کا گیان کراتا ہوا بادلوں کی طرح چاروں طرف آتا جاتا رہے۔

ایش کے تم پُتر آرج اُس کی بانی کو کہو
اِس کے پھیلانے کی خاطر ہر طرف بڑھتے چلو

524 भगवान का उपासक उसके वेद ज्ञान को फैलाए

अपनी प्रजा के सुख की अभिलाषा करता हुआ परमेश्वर जैसे अपनी कल्याणी वाणी वेद के द्वारा सब पदार्थों का ज्ञान कराता हुआ उपदेश देता है वैसे भगवान का प्यारा पुत्र आर्य व्रत धारी भी सब को वेद वाणी का ज्ञान कराता हुआ मेघों की भांति सब ओर आता जाता रहे ।

ईश के तुम पुत्र आर्य उसकी वाणी को कहो ।
इसको फैलाने की खातिर हर तरफ बढ़ते चलो ।

منتر نمبر ۵۲۵ کھنڈ ٦

تینوں بانیوں سے اوم کا جاپ

तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य
धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम् ।
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः
सोमं यन्ति मतयो वावशानाः ॥३॥

اگنی کی طرح گیان کی روشنی سے منّور تین طرح کی گیان، کرم اَور اُپاسنا کو تبلانے والی وید بانی جو رِگ، یجُر، سام اَور اتھرو اِن چاروں ویدوں سے حاصل ہوتی ہے، پرمیشور کا پُتر سچی دھارنا سے اِس کا پرچار کرے، جیسے گئوئیں اپنے مالک کے پاس دوڑ کر جاتی ہیں، اُسی طرح ہماری حمد وثنا یا اُستتیاں اپنے سوامی بھگوان کو پراپت ہوتی ہیں۔ اوم کی یہ تین بانیاں آ، اُو اَور م، اِن کے ارتھ کو من میں وچار کرتا ہوا کہ وہ پیدائش، رکھشا اَور فنا کا واحد مالک ہے، بھگت اوم کا جاپ کرتا رہے۔

جَیسے گئوئیں اپنے پیارے گئوپال کے جاتی ہیں
اَیسے جاپ اُستتیاں بھی پیارے پربھو کو مِل جاتی ہیں

525 तीन वाणियों से ओम् का जाप

अग्नि के समान ज्ञान ज्योति से प्रकाशित तीन प्रकार ज्ञान कर्म और उपासना को बतलाने वाली वेद वाणी जो ऋग्, यजु, साम और अथर्व इन चारों वेदों से प्राप्त होती है। परमेश्वर का पुत्र सत्य धारणा से इस का प्रचार करे। जैसे गौवें गोस्वामी के पास दौड़ कर जाती हैं इस प्रकार हमारी स्तुतियां अपने स्वामी परमेश्वर को प्राप्त होती हैं। ओम् की यह तीन वाणियां अ, उ और म् इनके अर्थ को मन में विचारता हुआ कि वह उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का एकमात्र स्वामी है। भक्त ओम् का जाप करता रहे।

जैसे गौवें अपने प्यारे गो स्वामी के जाती हैं।
ऐसे ही जाप स्तुतियां भी प्रभु प्यारे को मिल जाती हैं।

منتر نمبر ۵۲۶ اپنے کو ارپن کرنے والا عابد کھنڈ ۶

جب چاہے پربھو کو پالیتا ہے!

३ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २
अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो
३ २ ३२३ १२ ३ १२
देवो देवेभिः समपृक्त रसम् ।
३१ ३२३ १२३ १२
सुतः पवित्रं पर्येति रेभन्
३२३ १२ ३२ ३ १ २
मितेव सद्म पशुमन्ति होता ॥४॥

پرمیشور کی پریرنائیں بھگت کو بڑھاوا دیتی اور پوتر کرتی ہوئیں اُس کے اندر دویہ گنوں (صفاتِ اعلیٰ) کو بھر دیتی ہیں، جس سے وہ اور اپنے عابد دوستوں کے ساتھ بھگتی کے اندر مدمست ہوتا اور حمد و ثنا گاتا ہوا اپنے آتما کو بھگوان کے ارپن کر جب چاہے اُس کے پاس پہنچ جاتا ہے اُسی طرح جیسے اپنی بنائی گئوشالہ میں اُس کا مالک جب چاہے چلا جاتا ہے۔

ے پریرنائیں اُس پربھو کی پا کے بڑھتا ہے اُپاسک
اپنے کو اُس کی نذر کر اُس کو پالیتا اُپاسک

526 आत्म समर्पण उपासक प्रभु को पा लेता है

भगवान की प्रेरणायें भक्त को बढ़ाती और पवित्र करती हुई उस में दिव्य गुणों को भरती हैं जिस से वह अपने उपासक मित्रों के साथ भक्ति मैं मदमस्त होता और ईश स्तोत्र गाता हुआ अपने आत्मा को भगवान के अर्पण कर जब चाहे उसको मिल लेता है उसी प्रकार जैसे अपनी बनाई गोशाला में गोस्वामी जब चाहे चला जाता है ।

प्रेरणायें उस प्रभु की पा के बढ़ता है उपासक ।
भेंट करके आत्मा को उसको पा लेता उपासक ।

منتر نمبر ۵۲۷ کھنڈ ۶

بُدّھی اَور وید گیان داتا

सोमः पवते जनिता मतीनां
जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः ।
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य
जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः ॥५॥

وہ پرمیشور بُدّھی کو اور وید گیان کو جنم دیتا ہے۔ برہمانڈ میں دیُولوک، پرتھوی، اگنی، سُورج، بجلی اَور یگیہ کو پیدا کرتا ہے اَور پنڈ (جسم) میں تیج، بانی، آنکھ، کان، پران اور دِل وغیرہ کو جنم دیتا ہے۔ وہ شانت پرمیشور سب کو پوتّر کرتا ہوا سب جگہ حرکت پذیر ہے۔

سب کے اُتپادک پربھو دیو سب جگہ وچرتے رہتے ہیں
برہمانڈ پنڈ کے سب انگوں کو اپنی شکتی سے بھرتے ہیں

527 **बुद्धि और वेद ज्ञान दाता**

वह परमेश्वर बुद्धि और वेद ज्ञान को जन्म देता है । ब्रह्माण्ड में द्यौ, पृथ्वी, अग्नि, सूर्य, विद्युत और यज्ञ को उत्पन्न करता है और पिण्ड में तेज, वाणी, चक्षु, श्रोत्र, प्राण हृदय आदि को जन्म देता है । वह सोम परमेश्वर सब को पवित्र करता हुआ सर्वत्र गतिमान है ।

सब के उत्पादक प्रभु देव सब जगह विचरते रहते हैं ।
ब्रह्माण्ड पिण्ड के सब अंगों को अपनी शक्ति से भरते हैं ।

منتر نمبر ۵۲۸ کھنڈ ۶

پرمیشور کو تین سے پکڑا جا سکتا ہے!

अभि त्रिपृष्ठं वृषणं
वयोधामङ्गोषिणामवावशन्त वाणीः ।
वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि
रत्नधा दयते वार्याणि ॥६॥

سُکھوں کی بارش برسانے والا بھگوان تینوں لوکوں دیو، آکاش اَور بھومی کی پیٹھ پر سوار ہے، ستتی، پرارتھنا اور اُپاسنا تین اُس کی پیٹھ ہیں۔ بانی، من اَور آتما اِن تینوں سے بھگوان کو ہاتھ لگا سکتے ہیں۔ ہمارا ہر ایک اعضاء اُس سے زندگی لیتا ہے۔ ویدبانیاں بار بار اُس کو بیان کرتی ہیں۔ بیش بہا رتنوں کو دھارن کرنے والا پربھو اعلیٰ سے اعلیٰ ترین اشیاء کو ہمارے لئے بخشش کر رہا ہے۔

سُکھ ورشک بھگوان آتما من بانی سے ملتا ہے
اُتم اُتم رتنوں سے بھگتوں کی جھولی بھرتا ہے

528 परमेश्वर को तीन से पकड़ा जा सकता है

सुखों की वर्षा करने वाला भगवान तीनों लोकों द्यौ, आकाश और पृथ्वी के पृष्ठ पर सवार है। स्तुति, प्रार्थना, उपासना ये तीन उसकी पीठ हैं। वाणी, मन और आत्मा इन तीनों से भगवान को स्पर्श कर सकते हैं हमारा प्रत्येक अंग उस से जीवन शक्ति लेता है। वेद वाणियां बारम्बार उस का वर्णन करती हैं। असंख्य रत्नों को धारण करने वाला प्रभु हमें सर्वोत्तम पदार्थ देता रहता है।

सुख वर्षक भगवान, आत्मा मन वाणी से मिलता है।
उत्तम-उत्तम रत्नों से भक्तों की झोली भरता है।

منتر نمبر ۵۲۹ رِشیوں کے ہردے میں وید کا ناد بجتا ہے! کھنڈ ۶

१ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १ ३
अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मञ्जनयन्
३ १र २र ३ २
प्रजा भुवनस्य गोपाः ।
१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १र
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्
२र ३ १र २र
सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः ॥७॥

دُنیا کا والی محافظ پرمیشور انسانات کو پیدا کرتا ہوا مختلف جڑ چیتن اشیار کو اپنے اندر دھارن کرنے والے آکاش (خلا) کے اندر بے شمار رس ورسائل کے سامان کو بھر دیتا ہے، جس سے اگنی، ہوا، بجلی اور پانی جیسے اُتم پدارتھوں سے ارض وسما پاکیزہ ہوتے رہتے ہیں، وہ سوم سرو ور رشیوں کے دل میں ویدوں کی بانی کو گونجاتا ہوا اپنی پیاری رعیتِ کُل کو بڑھاتا رہتا ہے۔

۵ سب کا رکھشک شانتی ساگر پرجا کو سب کچھ دیتا ہے
مُوجد ہو وید کی بانی کا رشیوں کے دل میں دیتا ہے

529 ऋषियों के हृदयों में वेद नाद बजाता है

विश्व रक्षक परमेश्वर मनुष्यों को जन्म देता हुआ असंख्य जड़ चेतन पदार्थों को अपने अन्दर धारण करने वाले आकाश में सब प्रकार के अग्नि वायु आदि सुख साधनों को भर देता है जिस से सब लोक पवित्र होते रहते हैं। वह सोम सरोवर ऋषियों के हृदयों में वेदों के नाद को आविष्कृत करता हुआ अपनी प्यारी प्रजा को बढ़ाता रहता है।

सब का रक्षक शान्ति सागर प्रजा को सब कुछ देता है।
आविष्कार कर वेद वाणी को ऋषि हृदयों में देता है।

منتر نمبر ۵۳۰ یوگ سے عابد کی نئی پیدائش کھنڈ ۶

कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः
सीदन् वनस्य जठरे पुनानः ।
नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजं गामतो
मतिं जनयत स्वधाभिः ॥८॥

یوگ کے مرحلوں کو طے کرتا ہوا عابد اُپاسک نیا جنم دھارن کرتا ہے اور بن کے اندر پربھو کے دھیان میں آسن جما کر اپنے کو پوتّر کرتا ہوا بھگوان کا آواہن کرتا ہے، یم نیم وغیرہ کا پالن کرتا ہوا اپنی بانی کو ستیہ کے پریوگ سے شُدھ کر لیتا ہے۔

۵ مرحلوں کو یوگ کے طے کرتا عارف رات دن
راست گو ہو ایشور کے دھیان میں رہتا مگن

530 योग साधनों से उपासक का नया जन्म

योग साधनों को धारण करता हुआ उपासक नया जन्म लेता है और वन के अन्दर प्रभु के ध्यान में आसन जमा अपने को पवित्र करता हुआ भगवान का आह्वान करता और यम नियमों का पालन करता हुआ सत्य के प्रयोग से अपनी वाणी को शुद्ध पवित्र कर लेता है।

योग साधन मार्ग पे चलता उपासक रात-दिन ।
सत्य वक्ता ईश वर के ध्यान में होता मग्न ।

منتر نمبر ۵۳۱ کھنڈ ۲

خوش قسمت انسانی روح

एष स्य ते मधुमाँ इन्द्र सोमो
वृषा वृष्णः परि पवित्रे अक्षाः ।
सहस्रदाः शतदा भूरिदावा
शश्वत्तमं बर्हिरा वाज्यस्थात् ॥९॥

اے پیارے جیو آتما۔ تُو بڑا خوش قسمت ہے جو میٹھے سُکھوں کی بارش برسانے والا اور تجھے بھگتی رس سے نہال کرنے والا تیرے پاکیزہ دِل میں سمایا ہوا ہے، اُس کی برکات اور دانوں کا کیا شمار، ہزاروں، لاکھوں، کروڑوں گُنا اور پھر بے شمار خوشیوں کے وسائل کو دیتا جاتا ہے اور ہمیشہ تیرے ہردیہ میں ہی رہتا ہے۔

رُوح انسانی جگت میں خوش نصیب خوش بخت ہے
جس کے ہاتھوں میں ہیں سب سُکھ اور خُدا کا تخت ہے

531 सौभाग्यवान जीवात्मा

ऐ प्यारे जीवात्मा ! तू बड़ा सौभाग्यवान है जो मधुर सुखों की वर्षा करने वाला और तुझे भक्ति रस से निहाल करने वाला तेरे पवित्र हृदय में समाया हुआ है । उसके श्रेष्ठतम दानों की क्या सीमा, हज़ारों लाखों कोटि-कोटि गुणा और फ़िर असंख्य सुख के साधनों को देता जाता है और सदा तेरे हृदय में ही रहता है ।

रूह इन्सानी जगत में खुश नसीब खुश बख़्त है ।
जिस के हाथों में है सब सुख और प्रभु का तख़्त है ।

منتر نمبر ۵۳۲ — کھنڈ ۶

مجھ کو پراپت ہوویں!

पवस्व सोम मधुमाँ ऋतावापो
वसानो अधि सानो अव्ये ।
अव द्रोणानि घृतवन्ति रोह
मदिन्तमो मत्सरः इन्द्रपानः ॥१०॥[५।६]

سوم پرمیشور مدھر آنند کے ساتھ پراپت ہوویں، آپ کرم بندھنوں کو جانتے ہیں سچائی کے گہوارہ ہیں، آپ کی حفاظت میں سب دُنیا زیادہ سے زیادہ سُکھ سادھنوں کو پا رہی ہے۔ گھی کے استعمال سے بلوان ہوئے پرانوں کے ساتھ آپ سدا جُڑے رہیں، آپ کے

دیئے ہوئے آنند سے میرا آتما ہمیشہ سرشار رہے ۔

۵ آپ ہو امرت کے سوامی مدھرتا بھنڈار ہو
آپ کے آنند میں یہ آتما سرشار ہو

532 **मुझ को प्राप्त होवें**

सोम परमेश्वर मधुर आनन्द के साथ प्राप्त होवें आप कर्म बन्धनों को जानते हैं । सत्य के स्रोत हैं आपकी रक्षा में सम्पूर्ण विश्व अधिकाधिक सुख को पा रहा है धृत से पुष्ट हुए प्राणों के साथ आप सदा युक्त रहें आप के दिए हुए आनन्द से मेरा आत्मा सदा आनन्दित रहे ।

आप हो अमृत के स्वामी मधुरता भण्डार हो ।
आप के आनन्द में यह आत्मा सरशार हो ।

منتر نمبر ۵۳۳ دیو اسُر سنگرام میں کھنڈ ۷

جب بھگوان اپنے بھگتوں کی رہنمائی کرتا ہے

१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
प्र सेनानीः शूरो अग्रे रथानां
३ १ २ ३ १२ ३ १ ५
गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना ।
३ २ ३ १ २ ३१२ २२ ३
भद्रान् कृण्वन्निन्द्रहवान्त्सखिभ्य
२उ ३ १ २ ३ १ २
आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते ॥१॥

جیسے بہادر کمانڈر ادھرمی دشمنوں کی لپسائی کر اُس کی حکومت کو لینے کے لئے اپنی فوجوں کے آگے چلتا ہے تو اُس کی سینا میں بھی خوشی کی لہر اُٹھتی ہے، ویسے ہی جب کام کرودھ وغیرہ پاپوں کے حملوں سے بچانے کے لئے پرمیشور اپنے بھگتوں کی سینا کے آگے آگے چلتا ہے، تو عابد عارف لوگ خوشیوں سے ناچنے لگ جاتے ہیں تب سوم پرمیشور اُن کے پرانے جسم روپ کپڑوں کو لے کر انہیں نجات دے دیتا ہے ۔

ـہ بھگتوں کے پاپوں کو ہرنے آگے چلتے ہیں بھگوان
کہن پرانے جسموں کو لے رُوح کو کرتے موکھش پردان

533 देवासुर संसार में भगवान का मार्ग दर्शन खंड 7

जैसे वीर सेनापति आतताई शत्रुओं के राज्य को अपने अधिकार में लेने के लिए सेना के आगे चलता है तो उस की सेना भी हर्ष उल्लास से भर जाती हैं। वैसे ही जब काम क्रोध आदि असुरों का आक्रमण उपासकों के मन इन्द्रियों पर होने लगता है। तो परमेश्वर भक्तों की सेना के आगे आ जाता है, तब उपासक भी हर्ष से नाच उठते हैं। तब सोम परमेश्वर उनके पुराने शरीर रुपी वस्त्रों को उतार कर पाप से शुद्ध हुई उन आत्माओं को मोक्ष दे देता है।

भक्तों के पापों को हरने आगे चलते हैं भगवान।
पिण्ड पुराने ले कर के आत्मा को करते मोक्ष प्रदान।

منتر نمبر ۵۳۴ کس طرح ہوتے ہیں بھگوان کے درشن کھنڈ ۷

प्र वे धारा मधुमतीरसृग्रन्
वारं यत्पूतो अत्येष्यव्यम्
पवमान पवसे धाम गोनां
जनयन्त्सूर्यमपिन्वो अर्कैः ॥२॥

اُپاسک (عابد) جب دُنیاوی عیش وعشرت سے منہ موڑ کر اس کے پار ہو جاتا ہے تو اُس کے آتما میں مدھر آنند کی لہریں چلنی شروع ہو جاتی ہیں، سب کو پوتر کرنے والا پرمیشور اُس کے اندر رُوحانی سُورج کے نُور کو پیدا کر کے اُس کی کرنوں سے بھگت کی آتما کو روشنی سے بھرپور کر دیتے ہیں، جس سے وہ آنند آنند ہو جاتا ہے (یوگ درشن اور اُپنشدوں میں آئے ہوئے دھیان دھارنا کے سادھنوں کا یہ مُول منتر ہے، جن میں

بتلایا گیا ہے کہ برہم کے درشن سے پہلے اُپاسک یا یوگی کو مختلف نظارے دکھائی دیتے ہیں۔ مثلاً سُورج، چاند، تاروں، جگنو کی سی روشنیاں دھوآں وغیرہ وغیرہ)۔

جب اُپاسک بھوگ سے منہ موڑ لیتا ہے نرنتر
آتما میں اُس کی پیدا ہوتا ہے ایشور کا منظر

534 **भगवान का साक्षात्कार कैसे ?**

उपासक जब संसारिक भोगों को लांघ जाता है तो उसके अन्दर मधुरता और आनन्द की लहरें बह उठती हैं। सब कों पावन करने वाला परमेश्वर उस की आत्मा में सूर्य जैसा प्रकाश करके उसको आत्म ज्योति से भर देता है, जिस से वह आनन्द-आनन्द हो जाता है।

(योगदर्शन तथा उपनिषदों में ध्यान धारणा के साधनों का यह मूल मन्त्र है जिन में बतलाया जाता है कि ब्रह्म साक्षातकार से पहले ध्यानी उपासक को अनेक दृष्य अन्तरात्मा में दिखाई देते हैं। यथा धूम, जुगनु, तारों, चांद, विद्युत और सूर्य प्रकाश आदि)

जब उपासक भोग से मुंह मोड़ लेता है निरंतर।
आत्मा में उसको पैदा होता है ईश्वर का मञ्ज़र।

منتر نمبر ۵۳۵ — کھنڈ ۷

موکھش دھن ہی دَولتِ عظیم

१ २ ३क २र ३१र २र
प्र गायताभ्यर्चाम देवान्त्सोमं
३१र २र
हिनोत महते धनाय ।
३१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३१
स्वादुः पवतामति वारमव्यमा
१ ३ १ २ ३१र २र
सीदतु कलशं देव इन्दुः ॥३॥

ہے عابدو عارفو! دولتِ عظیم جو موکھش مکتی یا نجات ہے۔ اِس کے پانے کے لئے سوم پرمیشور کو گاؤ۔ ستتی، پرارتھنا، ارچنا اور اُپاسنا سے اُس کو رِجھاؤ، اُس پر مٹھاس

پُرلُطف اَور چندر کی طرح شانتی اَور آنند کارک پرماتما کو پراپت ہوکر اِس فانی، خاکی جسم کی قید سے آزاد ہو جاؤ۔

ہے عارفو عابد جنو گاؤ پربھو کے گان کو
ارچنا حمد و ثنا سے پالو موکش کے دان کو

535 **मोक्ष ऐश्वर्य ही महान है**

हे उपासको ! मोक्ष धन ही महान धन है जिस के पाने के लिए सोम परमेश्वर को गाओ। स्तुति, प्रार्थना और उपासना से उसको रिझाओ। उस मधुरता पूर्ण आनन्द रस, अत्यन्त स्वादु और चन्द्र की भान्ति शान्ति और आनन्ददायक परमात्मा को प्राप्त होकर इस विनश्वर और पार्थिव शरीर के बन्धन से मुक्त हो जाओ।

स्तोता गणो आनन्द रस गाओ प्रभु के गान को।
अर्चना और प्रार्थना से पालो मोक्ष के दान को।

منتر نمبر ۵۳۶ **راہِ نجات کے راہی پر کرم کی بخشش** کھنڈ ۷

प्र हिन्वानो जनिता रोदस्योः
रथो न वाजं सनिषन्नयासीत् ।
इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो
विश्वा वसु हस्तयोरादधानः ॥४॥

زمین سے آسمان اَور عرشِ بریں تک سارے جہاں کو پیدا کرنے والا پرمیشور اُپاسکوں سے پرارتھنا کیا ہوا اُنہیں لافانی دولتیں دینے کے لئے بھرے ہوئے رتھ گاڑیوں کی طرح اپنا وصال بخشتا ہے اَور کام کرودھ وغیرہ دشمنِ جان کو دبانے کے لئے اپنے تیز ہتھیار رُوپ رُوحانی طاقتوں کو راہِ نجات پر چلنے والے اپنے بھگت کو عطا کر مالامال کر دیتا ہے۔

ے

پرارتھنا سے بس میں آتا مالکِ ارض وسما
دے کے دولت لافنا بھگتوں کو کرتا لافنا

536 मोक्ष मार्ग के यात्री पर अनुग्रह

पाताल से द्यौ लोक तक सम्पूर्ण पदार्थों को जन्म देने वाला परनेश्वर उपासकों से प्रार्थना किया हुआ उन्हें अमृत सम्पदा देने के लिए भरे हुए रथों के समान प्राप्त होता है और काम, क्रोध आदि शत्रुओं के हनन के लिए अपने शक्तिशाली आयुध रुप आत्मिक बलों को मोक्ष मार्गी भक्त को देकर निहाल कर देता है।

प्रार्थना से वश में होता जगत का माता-पिता।
करता भक्तों को अमर वह देके अमृत सम्पदा।

منتر نمبر ۵۳۷ کھنڈ ۷

کب اُس کا نُور برستا ہے؟

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वद्वद्‌यदी मनसो वेनतो वाग्
२२ ३ १ २ ३ १२ २२
ज्येष्ठस्य धर्मं द्युक्षोरनीके।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २३
आदीमायन् वरमा वावशाना
३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २
जुष्टं पतिं कलशे गाव इन्दुम् ॥५॥

ایشور پراپتی کی کامنا والے عارف یا بھگت جن جب اُس کے نُور کا ہر طرف احساس کرتے ہوئے اوصافِ حمیدہ، اعلےٰ خیالات اور پاکیزہ کاموں سے پاک ہوئے من میں اور زبانِ پاک سے اُس بھگوان کا جاپ کرتے ہوئے اُس کا ورن کرتے ہیں۔ تب پرمیشور جلدی ہی اپنے چاہنے والے اُپاسکوں کے دل میں ظاہر ظہور ہو جاتے ہیں۔

ے

ستوتا کی بانی جب من سے جاپ اور عبادت کرتی ہے
اُس کے پاکیزہ دل میں تب اُس نُور کی جھلک چمکتی ہے

537 **कब वह प्रगट होता है**

ईश्वर प्राप्ति की कामना वाले उपासक जब उसके प्रकाश को चहुं ओर देखते और अपने अन्दर सर्व उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव को धारण करते शुद्ध पवित्र जीवन से मानसिक और वाणी से भगवान का जाप करते हुए उसको वरण करते हैं तब परमेश्वर तुरन्त ही हृदयों में प्रकट हो जाता है।

स्तोता की वाणी जब मन से जाप और प्रार्थना करती है।
उसके पवित्र हृदय में तब ज्योति वह दिव्य चमकती है।

منتر نمبر ۵۳۸ **گیان اَور کرم کی شُدھی سے اِیشور کی کرپا** کھنڈ ۷

साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो
दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः।
हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं
ननक्षे अत्यो न वाजी ॥६॥

پرمیشور میں دھیان جمانے والے دھیانی جن کی پانچ گیان اَور کرم اِندریوں کی کی دسوں طاقتیں جب گیان اَور تپ سے شُدھ ہو جاتی ہیں اَور اوم نام کے جاپ روپ دھنش سے سب پاپوں پر فتح حاصل کر کے سب کی رکھشا کی طرف لگ جاتی ہیں۔ تب یہ دونوں بہنوں کی طرح پرمیشور کے لئے گیان دھیان اَور کرموں کو ارپن کر دیتی ہے۔ تب بھگوان اُن پر دیالو ہو کر اپنا کرم برسا کر رُوحانی سورج کی روشنی کو اُن کے خانۂ دِل میں بھر کر جلدی پرگٹ ہو جاتا ہے۔

ے

گیان اِندریاں اَور کرم کی دونوں جب شُدھ ہو جاتی ہیں
اپنے نِرمل گیان کرم سے ہردیہ میں درشن پاتی ہیں

538 ज्ञान और कर्म के मार्जन से प्रभु की दयालुता

परमेश्वर में ध्यान जमाने वाले ध्यानी जन को पांच ज्ञान और पांच कर्म इन्द्रियों की दशों शक्तियां जब ज्ञान और तप से शुद्ध हो जाती हैं। और प्रणव के जाप रुप धनुष्य से सब पापों पर विजय कर सब प्राणियों के हित में लग जाती हैं तब यह दोनों बहनों के समान अपने ज्ञान ध्यान कर्मों को भगवत् अर्पण कर देती हैं। तब भगवान उन पर दयालु होकर उनके हृदय रुपी घर को आत्मिक सूर्य के प्रकाश से भर कर तुरन्त प्रगट हो जाते हैं।

ज्ञान इन्द्रियां और कर्म की दोनों जब शुद्ध हो जाती हैं।
अपने निर्मल ज्ञान कर्म से हृदय में दर्शन पाती हैं।

منتر نمبر ۵۳۹ پرمیشور کب کرتا ہے منظور عابد کی کارکردگی کو کھنڈ ۷

अभि यदस्मिन् वाजिनीव शुभः
स्पर्धन्ते धियः सूरे न विशः।
अपो वृणानः पवते कवीयान्
व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म ॥७॥

گھوڑوں کی دوڑ میں جیسے مقابلے میں آئے ہوئے گھوڑے ایک دوسرے سے آگے نکلنے کی کرتے ہیں اور جیسے طلوع آفتاب پر لوگ اُٹھ کر اپنے اپنے کاموں میں ایک دوسرے سے ہوڑ لگاتے ہوئے آگے بڑھنے میں کوشاں رہتے ہیں، ویسے ہی اُپاسک جب شبھ کرموں اور پرمیشور کی مہاگان کرنے میں آگے آگے بڑھنے میں لگ رہے ہوتے ہیں، تب بھگوان عارف کے شریشٹھ کرموں کو منظور کرتا ہوا ویسے اُس کی طرف بڑھتا ہے، جیسے مویشیوں کی سُدھ سنبھال کر اُن کی بڑھوتری میں دلچسپی لیتا ہوا

مالک اپنے مویشی خانہ کی طرف بڑھتا ہوا دِکھائی دیتا ہے ۔

ے کرنی شُبھ کرتے اُپاسک گاتے گُنُ جگدیش کے
بڑھتے ہیں اُن کی طرف کو ہاتھ پیارے اِیش کے

539 परमेश्वर कब स्वीकारता है उपासक की उपासना

घुड़ दौड़ में स्पर्धा से जैसे घोड़े एक दूसरे से आगे निकलने को करते हैं । और जैसे सूर्य निकलते ही सब लोग उठ कर अपने-अपने कार्यों में एक दूसरे से होड़ लगाते हुए आगे बढ़ने में संघर्ष-रत रहते हैं । वैसे ही उपासक जब शुभ कर्मों के साथ परमेश्वर की महिमा गान करने में भी स्पर्धा से आगे बढ़ रहे होते हैं तब भगवान भक्तों के शुभ कृत्यों को स्वीकारता हुआ वैसे उसकी ओर बढ़ता है जैसे पशुशाला में उनकी वृद्धि के निमित्त पशु स्वामी प्रवेश करता है ।

करनी शुभ करते उपासक, गाते गुण जगदीश के ।
बढ़ते हैं उनकी तरफ़ को हाथ प्यारे ईश के ।

منتر نمبر ۵۴۰ اپنے بھگت کی تمام بُرائیوں کو دُور ہٹا دیتا ہے ۔ کھنڈ ۷

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३
इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे
१ ३ २ ३ २ ३ १ २
सोमः सह इन्वन्मदाय ।
१ ३ २ ३ १ २ ३ १२ २२ ३
हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
वरिवस्कृण्वन् वृजनस्य राजा ॥८॥

چاند کی طرح شیتل روشنی کا بھنڈار ۔ ہم سب کی خوشیوں کے لئے بیشمار سُکھوں کی باڑھ لگا دینے والا سوم پتا پرمیشور جیو آتما کے بَل کو بڑھاتا، اُس کی رکاوٹوں اور راکھشسی جذبات خود غرضی، مطلب براری اور کنجوس پن کو بھی پوری طرح ہٹاتا ہوا دُنیا بھر کی طاقتوں کا منبع اپنے پیارے بھگت کو رُوحانی خزانوں سے بھرپور کر دیتا ہے ۔

سے اپنے پیارے بھگتوں کی رکھشا میں وہ پرماتما
وگھن بادھا سوارتھی پاپوں کو دیتا ہے ہٹا

540 उपासक के पाप ताप संताप दूर कर देता है

चन्द्र के समान शीतल प्रकाश का स्वामी परमेश्वर हमारे भरपूर हर्ष के लिए अमित सुखों की बाढ़ लगा देते हैं और जीवात्मा के बल को बढ़ा कर विघ्न बाधाओं स्वार्थ और राक्षसी दुर्भावों को पूरी तरह से हटाता हुआ सर्व शक्तिमान सोम पिता अपने प्यारे उपासक को अध्यात्म सम्पदा से भर देता है ।

अपने प्यारे भक्तों की रक्षा में वह परमात्मा ।
विघ्न बाधा स्वार्थी पापों को देता है हटा ।

منتر نمبر ۵۴۱ — **کرتے آپ کی جستجو** — کھنڈ ۷

अया पवा पवस्वैना वसूनि
मांश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व ।
ब्रध्नश्चिद्यस्य वातो न जूतिं
पुरुमेधाश्चित्तकवे नरं धात् ॥६॥

سب کے دلوں میں شانتی اور رس بھرنے والے بھگوان اپنی رس دھارا سے ہمارے پرانوں کو پوتر کیجیے۔ اور آپ کی بھگتی پریم سے بھرے ہوئے ہمارے خانۂ دل میں براجمان ہو جئے۔ اندریوں کو اپنے قواعد میں باندھنے والا دایو کی طرح یہ جیو آتما بھی آپ کے ہی بل کو دھارن کرتا ہے۔ تب یہ عقلِ سلیم کو پاکر آپ والی دُنیا کے درشن اپنے اندر کر پاتا ہے۔

سے
شانتی رس آنند داتا دل میں لو آسن پربھو ۔ آپ سے ہی پاک ہو کر کرتے آپ کی جستجو

541 **करते आप की जुस्तजू**

सब के हृदयों में शान्ति और आनन्द रस भरने वाले भगवान अपनी रस धारा से हमारे प्राणों को पवित्र कीजिए और प्रेम भक्ति से हमारे हृदय में विराजमान होजिए। इन्द्रियों को अपने बन्धन से रखने वाला वायु समान यह जीवात्मा भी आप के ही बल को धारण करता है। तब यह मेधावी होकर आप जगत नियन्ता को अपने अन्दर साक्षात कर लेता है।

शान्ति आनन्द दाता दिल में लो आसन प्रभु।
आप से ही पवित्र होकर करते आप की जुस्तजू।

منتر نمبر ۵۴۲ — عظیمُ العظم — کھنڈ ۷

३१र २र ३१ २ ३१र
महत् तत् सोमो महिषश्चकारापां
२र ३ २
यद्गर्भोऽवृणीत देवान् ।
१ २ ३ २ ३ १२ ३ १र २र ३
अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽजनयत्
२ ३ २ ३ १ २
सूर्ये ज्योतिरिन्दुः ॥१०॥

عظیمُ العظم اور لامحدود پرماتمانے یہ کارِ عظیم کیا کہ مادی ذرّوں (پرمانوؤں) جو گربھ کی طرح اُسی کے اندر جمع تھے، اُن کو ظاہر کیا یعنی باہری دُنیا کو بنایا اور پھر اگنی وغیرہ رشیوں کو وید گیان کی روشنی بخشی، پھر اُس آنند سروپ پرمیشور نے اُپاسکوں کے اندر آتم بل (روحانی طاقت) دیا اور سُوریہ کو منوّر کیا۔

کتنا عظیم پرمیشور ہے جسکے اندر یہ سب کچھ تھا۔ پیدا دُنیا کی، سُوریہ بنا اور ویدوں کا پرکاش کیا

542 **महानतो महान**

महान से महान सर्व व्यापक परमात्मा ने यह महान अद्‌भुत कार्य किया जो प्रकृति के परमाणुओं को जो गर्भ की भांति उस के अन्दर समाए हुए थे उनको बाहर कार्य जगत में व्यक्त किया और फिर अग्नि आदि ऋषियों को वेद ज्ञान का प्रकाश दिया।

फिर उसी आनन्द स्वरुप परमेश्वर ने उपासकों के अन्दर आत्मिक बल को भरा और सूर्य को प्रकाशित किया ।

कितना महान परमेश्वर है जिस के अन्दर यह सब कुछ था ।
पैदा दुनिया को, सूर्य बना और वेदों का प्रकाश किया ।

منتر نمبر ۵۴۳ قرارِ حمل سے لے کر نجات دہندہ کھنڈ ۷

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २
असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
धिया मनोता प्रथमा मनीषा ।
२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३
दश स्वसारो अधि सानो
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अव्ये मृजन्ति वह्निं सदनेष्वच्छ ॥११॥

وہ پرمیشور جس نے قرارِ حمل سے لے کر پیدائش اور نجات تک کے اعلےٰ ترین علم معرفت اور ارواحِ عالم کے سُکھ کلیان کے لئے ابتدائے آفرینش سے وید گیان کو تبلایا ہے، دھیان یوگ، سُتتی، پرارتھنا، اُپاسنا کا راستہ کھولا ہے، عقلِ سلیم کے ذریعے دسواں اِندریوں حواسِ خمسہ اور من کو ضبط میں رکھنے کی پریرنا دی ہے، اور جو خداوندِ کریم موکھش (نجات) کو لے جانے والا ہے، اُس کو اُپاسک عارف لوگ اپنے دِلوں میں ہمیشہ منّور کرتے رہے ہیں۔

بار بار کے جنم مرن اور دُکھوں سے نجات دہندہ
اُس کی جوت جگائے دل میں تب ہے وہ ایشور کا بندہ

543 **गर्भ से लेकर मोक्ष पर्यन्त**

वह परमेश्वर जिसने गर्भाधान से लेकर जन्म और मोक्ष तक के श्रेष्ठतम कर्म और प्राणीमात्र के कल्याण के लिए आदि सृष्टि से वेद ज्ञान को कथन किया । ध्यान, योग और उपासना का मार्ग खोला, प्रज्ञा बुद्धि के द्वारा दसों इन्द्रिय और मन को वशीभुत रखने की प्रेरणा दी और जो मोक्ष तक ले जाने वाला है

उसको उपासक जन अपने हृदयों में प्रकाशित करते हैं।
बारम्बार जन्म मरण और दुखों से मुक्ति का दाता।
उसकी जोत जगाओ दिल में है वह ईश्वर सबका भ्राता।

منتر نمبر ۵۴۴ کیسے بڑھتی ہے آتما پرماتما کی طرف کھنڈ ۷

३ २ ३२३२ ३ १ २ ३
अपामिवेदूर्मयस्ततुराणाः
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
प्र मनीषा ईरते सोममच्छ।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १र २र
नमस्यन्तीरुप च यन्ति सं चाच
३ २ ३ १ २
विशन्त्युशतीरुशन्तम् ॥१२॥[५।७]

پانی کی ترنگوں کے سمان عارف کی پاکیزہ عقل یا یکسوئیت کے جذبات (دھیان ورتیاں) بڑھتی ہوئی طاقت پکڑ کر پرماتما کے حضور میں رسائی کر لیتی ہیں، اُس میں سما بھی جاتی ہیں۔ اور پھر اُوپر بھی آ جاتی ہیں، جیسے جیسے یہ مشق بڑھتی جاتی ہے ویسے ویسے آتما آنند میں مدمست ہوتی جاتی ہے۔

جل ترنگوں کی طرح اُٹھتی ہے اُوپر آتما
دھیان تپ کی کشش سے ملتا ہے تب پرماتما

544 कैसे बढ़ती है आत्मा परमात्मा की ओर

जल की तरंगों के समान उपासक की प्रज्ञा और ध्यान वृत्तियां बढ़ती हुई शक्ति पाकर प्रभु की शरणागत हो जाती हैं। उसमें विलीन भी हो जाती हैं और फिर ऊपर भी आ जाती हैं जैसे-जैसे यह अभ्यास बढ़ता जाता है वैसे-वैसे आत्मा आनन्द में मग्न हो जाता है।

जल तरंगों की तरह उठती है ऊपर आतमा।
ध्यान तप के यत्न से मिलता है तब परमातमा।

منتر نمبر ۵۴۵ پرماتما کے وِصال کا راستہ صاف کر دو کھنڈ ۸

पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे ।
अप श्वानं श्नथिष्टन
सखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥१॥

پیارے دوستو! اس انسانی جامہ میں اُتم اَنّ وغیرہ ساتوک کھان پان کے ذریعے شدھ، پوتّر من سے جو آنند سروپ پرماتما کی پراپتی ہوتی ہے، اُس من میں کُتّے کی طرح لوبھ لالچ اور کام واسنا کو مار ڈالو۔ تاکہ بھگوان کے وصال میں کوئی رکاوٹ نہ رہے۔

بھگوان ملن کی ویلا ہے یہ جنم منش کا ملا ہے جو
حرص و ہوس اور کام واسنا چھوڑ کے اُس کو اب پا لو

545 भगवान के मिलन का मार्ग बनाओ खण्ड 8

प्यारे उपासक मित्रो ! इस मानव शरीर में तुम उत्तम आहार सात्विक खान पान के द्वारा शुद्ध पवित्र मन से जो आनन्द स्वरुप परमात्मा का मिलन होता है । उस मन में कुत्ते की भांति लोभ लालच और काम वासना को मार डालो ताकि भगवान की प्राप्ति में कोई विघ्न बाधा न रहे ।

भगवान मिलन की वेला है यह जन्म मानुष्य का मिला है जो ।
तृष्णा व लोभ कामवासना छोड़ के उस को अब पा लो ।

منتر نمبر ۵۴۶ حرکت پذیر رہتا سب جا۔ کھنڈ ۸

अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति ।
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे ॥२॥

سب کا پالک یہ سوم دُنیا کو پیدا کرنے والا، شانتی اَور زر و مال کا مالک پرمیشور، عابدوں، عارفوں کو پوتّر کرتا ہوا اُن کے دلوں میں ظاہر ظہُور ہوتا ہے۔ اَرض و سما کو بنا کر ظاہر کرنے والا سب جگہ حرکت پذیر ہو رہا ہے۔

سب کا پالک سب کا رکھشک ایشوریہ وان ہے سوم سکھا
سب کو پوتّر کرتا جاتا حرکت پذیر رہتا سب جا

546 **सर्वत्र गतिमान**

सब का पालक यह सोम जगत को उत्पन्न करने वाला शान्ति और ऐश्वर्यों का स्वामी उपासकों को पवित्र करता हुआ उनके हृदयों में प्रगट होता है और पृथ्वी, द्यौ लोक को रचना कर के कार्य जगत को प्रगट करने से सर्वत्र गतिमान रहता है।

सबका पालक सबका रक्षक ऐश्वर्यवान है सोम सखा।
सब को पवित्र करता जाता और गतिमान रहता सब जा।

منتر نمبر ۵۴۷ **جس کا دِیا ہُوا ہے اُسی کے حوالے** کھنڈ ۸

सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः ।
पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान्
गच्छन्तु वो मदाः ॥३॥

بہت میٹھا اَور تسکین دینے والا یہ بھگتی رس اِندر پرمیشور کے لئے پیدا ہوا ہے جو اِن حواس خمسہ دیوتاؤں کو بھی پوتر کرتا ہوا شانتی دے گا۔ آخر میں تو یہ بھگوان کا ہی دیا ہوا ہے، اُس کے ہی ارپن ہے۔

بھگتی کا یہ رس جو پیدا ہُوا ہے ۔ اُسی کا دِیا ہے اُسی کی دُیا ہے
کرتا ہوا شُدھ اِندری و من کو ۔ آخر میں پھر سے ہے اُس کے حوالے

547 जिस का दिया उसी के हवाले

अत्यन्त मधुर और शान्ति देने वाला यह भक्ति रस इन्द्र परमेश्वर के लिए उत्पन्न हुआ है जो इन्द्रिय देवों को भी पवित्र करता हुआ शान्ति दे रहा है और अन्त में तो यह भगवान का ही दिया हुआ उस के अर्पण है।

भक्ति रस जो पैदा हुआ है उसी का दिया है उसी की दया है।
करता हुआ शुद्ध इन्द्रिय मन को आखिर में फिर से उसी के हवाले।

منتر نمبر ۵۴۸ کھنڈ ۸

یہ بھگتی رس

सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः।
मित्राः स्वाना अरेपसः
स्वाध्यः स्वर्विदः ॥४॥

شانتی دینے والے یہ سوم رس پوتر کرتے ہوئے گیان جیوتی کو جنم دے کر زندگی کی شاہراہ کو دکھلاتے ہوئے دوست کی طرح بھگتی کے گیتوں کو سناتے اور ہمیں برائیوں سے بچا کر بھگوان کے دھیان میں مددگار ہوتے ہوئے سکھ پہنچا رہے ہیں -

بھگتی رس ہیں شانتی داتا گیان جوت جگاتے ہیں
راہ نمائی کرتے جاتے ایش کو پہنچاتے ہیں

548 यह भक्ति रस

शान्ति देने वाले ये सोम रस पवित्र करते हुए ज्ञान ज्योति को जन्म देकर जीवन मार्ग पर चलाते हुए मित्र के समान भक्ति के गीतों को गुंजाते और हमें पाप आदि दोषों से बचा कर भगवान के ध्यान में सहायक होकर सुख पहुँचा रहे हैं।

भक्ति रस हैं शान्ति दाता ज्ञान की ज्योत जगाते हैं।
मार्ग दर्शन करते जाते ईश को पहुंचाते हैं।

منتر نمبر ۵۴۹ **ہماری رُوحانی طاقت کو بڑھائیے!** کھنڈ ۸

अभी नो वाजसातमं रयिमर्ष शतस्पृहम् ।
इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभासहम् ॥५॥

ہے روشن بالذّات! آپ بے شمار عابدوں سے چاہنے والے ہو، ہمیں ایسی رُوحانی دولت دو جو ہماری طاقت کو پُرزور بڑھا وادے، جس سے ہم بھی لوگوں کا پالن پوشن کر سکیں، جس سے ہمارا یش ہو اور ہم آپ کے دیئے تیج اور بل سے سب کے آگے بڑھ سکیں۔

روشن مینار! ایسا دھن دو جو آتمک بل کا داتا ہے
جس سے یش کیرتی بڑھے جگ میں جو سب سے آگے بڑھاتا ہے

549 **हमारी अध्यात्म शक्ति को बढ़ाइये**

ज्योति स्वरुप परमेश्वर ! असंख्य उपासक आप की कामना करते हैं । हमें ऐसी अध्यात्म सम्पदा दो जो हमारी आत्मिक शक्ति को अत्यन्त बढ़ाये । जिस से हम भी लोगों का पालन पोषण कर सकें और यशस्वी हों । आप के दिये तेज और बल से हम आगे बढ़ते हुये सब को पीछे छोड़ दें ।

ज्योति स्वरुप ऐसा धन दो जो आत्मिक बल का दाता है ।
जिस से यश कीर्ति बढ़े जग में जो सबसे आगे बढ़ाता है ।

منتر نمبر ۵۵۰ **بھگوان کی بھگتی کیسے کریں؟** کھنڈ ۸

अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
वत्सं न पूर्व आयुनि
जातं रिहन्ति मातरः ॥६॥

پرمیشور کی بھگتی دروہ، چھل، کپٹ، دِکھاوے وغیرہ سے رہت ہوکر اننیت پیار

بھرے ہر دیہ سے اُس کے تعریفی نغمے گاتے ہوئے کرنی چاہیئے جیسے کہ ماں اپنے نوزائیدہ بچے کی لطف آمیز باتوں اور اُس کی تعریفوں کو گاتے ہوئے کرتی ہے اور چومتی چاٹتی بھی جاتی ہے۔

۵ دروہ اور دکھاوے سے اوپر اُپاسک پربھو بھگتی کا مارگ ایسا اپنائے کہ ماں جیسے نوجات بچے کو لے اُس کو گاتی رہے اور جھُولا جھولائے

550 भगवान की भक्ति कैसे करें ?

परमेश्वर की भक्ति द्रोह छल कपट दिखावे आदि से रहित होकर अत्यन्त प्यार भरे हृदय से उसकी स्तुति गान से करनी चाहिए। जैसे माता अपने नवजात की प्रशंसा करते हुए स्वादिष्ट बातों से गाती छाती से लगाती और चूमती चाटती जाती है।
द्रोह और दिखावे से ऊपर उपासक प्रभु भक्ति का मार्ग ऐसा बनाए। मां जैसे नवजात बच्चे को ले उसको गाती रहे और झूला झूलाए।

منتر نمبر ۵۵۱ کھنڈ ۸

نجات کے خواہش مند

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
आ हर्यताय धृष्णवे धनुष्टन्वन्ति पौंस्यम् ।
१ २ ३ ३ १ २ ३ १ २
शुक्रा वि यन्त्यसुराय निर्णिजे
३ १ २ ३ १ २
विपामग्रे महीयुवः ॥७॥

موکھش پد کے اچھک عارف، عابد، شانت سورڈپ اور سب کامناؤں کو پُورن کرنے والے، گناہوں کو کاٹ دینے والے، پرمیشور کی پراپتی اور اُس کے آنند امرت رس کو پانے کے لئے "اوم" نام کے بلدان دھنش اوم جاپ کو ارتھ کے ساتھ ہر وقت ہر جگہ تانے رکھتے ہیں، چڑھائے رکھتے ہیں اور سدا امر ودا پرارتھنا بھی کرتے رہتے ہیں۔

۵

نجات کے چاہنے والے عابدو پرمیشور کی شرن گہو۔ اوم نام کے دھنش کو تانے جاپ اور دھیان میں مگن رہو

551 मोक्ष मार्ग के इच्छुक

मोक्ष पद के इच्छुक उपासक शान्त स्वरुप और सब की कामनाओं की पूर्ति के केन्द्र दोषों का हनन करने वाले परमेश्वर की प्राप्ति और उसके आनन्द अमृत को पाने के लिए 'ओम्' नाम के शक्तिशाली धनुष का सब देश और काल में ताने रखते हैं। और नाम का अर्थ सहित मानसिक जाप भी करते रहते हैं।

मोक्ष के चाहने वाले भक्तो ! परमेश्वर की शरण गहो ।
ओम् नाम के धनुष को ताने जाप और ध्यान में मग्न रहो ।

منتر نمبر ۵۵۲ کھنڈ ۸

بھگوان کے دیئے آنندوں میں مست رہتے ہیں

२३ १ २ ३१२ २र ३१ २ ३ १२
परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण ।
२ ३१२उ ३ २उ
या देवान् विश्वा इत्
३ १२ ३१२ २र
परि मदेन सह गच्छति ॥८॥

اُپاسک لوگ اپنی تامسک اور راجسک چت ورتیوں کو ضبط میں کر کے سب کے دُکھوں کے ہرتا، سب کے رکھشک، جیوتی سورُوپ پرمیشور کو ظاہر ظہور کر لیتے ہیں۔ اور بھگوان کے دیئے ہوئے آنندوں کو پا کر سب دن مست رہتے ہیں۔

ے
آؤ اُپاسکو بھگت جنو اچت ورتیوں پر قابُو پا لو
تمُ رج کو دُور ہٹا کر کے بھگوان کے آنند کو پا لو

552 भगवान के दिए आनंदों में मस्त हैं

उपासक लोग अपनी तामसिक और राजसिक चित्त वृत्तियों को नियन्त्रण में करके दुःख हर्ता, सर्वरक्षक, ज्योति स्वरुप परमेश्वर को प्रगट कर लेते हैं और भगवान के दिए हुए आनन्दों को पाकर सब दिन मस्त रहते हैं।

आओ उपासको भक्त जनो चित्त वृत्तियों पर काबू पा लो ।
तम रज को दूर हटा करके भगवान के आनन्द को पालो ।

منتر نمبر ۵۵۳ **بھگوان کی بھگتی کو پا لینے والے** کھنڈ ۸

प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद्वचः ।
अप श्वानमराधसं
हता मखं न भृगवः ॥६॥[५।८]

بھگوان کی بھگتی کو جس نے پا لیا۔ اُس سادھک عارف کی اناہت بانی کو عام آدمی حاصل نہیں کرسکتا۔ ودّیا کے تپ سے اگیان کو نشٹ کرنے والے اُپاسکو! تم اُپاسنا یگیہ کی ہنسا مت کرو اُس کو چھوڑو مت، توڑو مت، ناغہ مت ڈالو، لوبھ رُوپی کُتّے کو مار ڈالو، جس سے تمہاری اُپاسنا کا راستہ ہمیشہ بے روک رہے۔

ایشور کی بھگتی پائی جس نے وہ جگ کو تار گیا
ہنسا ناغہ نہ ہو اُس میں جب لوبھی کتّا مار دیا

553 **प्रभु की भक्ति को पा लेने वाले**

भगवान की भक्ति को जिसने पा लिया उस साधक की अनाहत वाणी को सब लोग नहीं प्राप्त कर सकते विद्या के तप से अज्ञान को नष्ट करने वाले उपासको तुम उपासना यज्ञ की हिंसा मत करो। अपितु लोभ रुपी कुत्ते को मार डालो जिससे तुम्हारा भक्ति मार्ग निर्बाध हो जाए।

ईश्वर की भक्ति को जिसने पाया, वह जग को तार गया।
हिंसा, नागा और विघ्न न हो, जब लोभी कुत्ता मार दिया।

منتر نمبر ۵۵۴ **سُورج کے رتھ پر سوار** کھنڈ ۹

अभि प्रियाणि पवते चनोहितो
नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते ।

आ सूर्यस्य वृहतो वृहन्नधि रथं
विष्वंञ्चमरुहद् विचक्षणः ॥१॥

جسمانی، ذہنی اور رُوحانی انّ وغیرہ خوراک دے کر سب کو سُکھ دینے والا مہان پرمیشور
پوتّر بدّھی والے اُپاسکوں، عارفوں کو حاصل ہوتا ہے، اُن کی آتماؤں پرگٹ ہو اُن میں
آنند رس کو بہاتا ہے، وہ برہم تمام برہمانڈ کا دیکھنے یعنی نرکھشن کرنے والا ہے، مہان
سُورج کی وسیع ترین پھیلی ہوئی کِرنوں کے رتھ پر سوار ہے، یعنی سُورج اُس کے قاعدے
میں چلتا ہے۔

شاریرک، مانسک اور آتمک انّ دے کر جو ہِت کرتا ہے
بدّھی پوتّر بھگتوں میں بس کر سُوریہ سواری کرتا ہے

554 ब्रह्माण्ड का निरीक्षक खण्ड 9

शारीरिक मानसिक और आत्मिक अन्नादि देकर सब का सुख दाता महान परमेश्वर ! मेधावी उपासकों को प्राप्त होता है। उनकी आत्मा में प्रगट हो आनन्द रस बहाता है। वह ब्रह्म तमाम ब्रह्माण्ड का निरीक्षक है। महान सूर्य के विशाल किरणों के रथ पर सवार हैं अर्थात् सूर्य देवता जिसके नियंत्रण में चलता है।

शारीरिक मानसिक और आत्मिक अन्न देकर जो हित करता है
मेधावी भक्तों में बस करके सूर्य सवारी करता है।

منتر نمبر ۵۵۵ دُکھ دائیک خُودغرضی اور لالچ کا جذبہ دُور ہو کھنڈ ۹

अपोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः प्र
स्वानासो बृहद् देवेषु हरयः ।

वि चिदश्नाना इषयो अरातयोऽर्यो
नः सन्तु सनिषन्तु नो धियः ॥२॥

دُکھ ہرتا اَور سُکھ داتا مہربانِ عظیم پرماتما ظاہر ظہور ہو کر ہمیں جیون مُکت بنا دے ہمارے دُکھ دینے والے سوارتھی بھاؤ اور لالچی اِندریاں (حواسِ خمسہ) جو ہمارے شترُو (دشمن) ہیں، وہ ہم سے دُور ہو جائیں اور ہماری رُوحانی خواہشات عقلِ پاک کے ساتھ ہمیشہ حاصل رہیں۔

ح
دُکھ ہرتا سُکھ داتا اِیشور کو پاکر جیون مُکت بنیں
کامی اور لالچی اِندریوں کو جانی دُشمن سم دُور کریں

555 स्वार्थ और लोभ, लालच महान शत्रु

दुःख हर्ता सुख दाता कृपालु परमात्मा साक्षात् होकर हमें जीवन मुक्त बना दे। दुःख देने वाले स्वार्थी भाव और लालची इन्द्रियां हमारे शत्रु हैं, हम से दूर हो जायें और हमारी अध्यात्म इच्छायें प्रज्ञा के साथ हमें सदा प्राप्त रहें।

दुःख हर्ता, सुख दाता ईश्वर को पाकर जीवन मुक्त बनें।
कामी और लालची इन्द्रियों को जानी दुश्मन सम दूर करें।

کھنڈ ۹ — منتر نمبر ۵۵۶

پَرَم آنند کا اُمرت رَس

एष प्र कोशे मधुमाँ
अचिक्रददिन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टमः।
अभ्यृ३तस्य सुदुघा घृतश्चुतो
वाश्रा अर्षन्ति पयसा च धेनवः ॥३॥

یہ سوم رس اندر جیو آتما کا بجر ہے جو اس کا محافظ ہے نہایت خوبصورتی کو دینے والا یہ مدھر رس ہردیہ میں اناہت ناد کرتا رہتا ہے (پیارے اوم نام کی دھن لگائے رکھتا ہے) جیسے سرلی گائیں بھرپور دودھ اور مکھن دینے والیں باسرے بھرے ہوئے تھنوں کے ساتھ رنبھاتی ہوئی بچھڑوں کے پاس پہنچتی ہیں، ویسے ہی رت یالی ستیہ کا بھرپور دودھ دینے والے گیان جیوتی کو پھیلا رہے اناہت ناد سے پیارے سادھک عابد کو پکار رہے یہ پرم آنندرس ہردیوں میں مستی لا رہے ہیں۔

یہ ہردیہ کلش ہے آنند مئے جس میں پربھو بانی جھرتی ہے
گئو دودھ سم پاکر پربھو سے امرت رس کو بھرتی ہے

556 परम आनंद का अमृत रस

यह सोम रस इन्द्र जीवात्मा का वज्र है जो इस का रक्षक है अतीव सौंदर्य को देने वाला यह मधुर रस हृदय में अनाहत नाद करता रहता है। (ओम् नाम की धुन) जैसे दुधारु गायें भरपूर दूध, माखन, घी देने वाली भरे हुए थनों के साथ रंभाती हुई बछड़ों के पास पहुंचती है वैसे ही ऋत् (सत्य) का भरपूर दूध देने वाले ज्ञान ज्योति को फैला रहे अनाहत् नाद से प्यारे साधक को पुकार रहे। यह परम आनन्द रस हृदयों में मस्ती ला रहे हैं।

यह हृदय कलश है आनन्दमय जिसमें प्रभु वाणी झरती हैं।
गौ दूध सम पाकर प्रभु से अमृत रस को भरती है।

منتر نمبر ۵۵۷ کھنڈ ۱

پرماتما اپنے دوست آتما کو دیئے وعدوں کو نہیں بھولتا!

प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा
सख्युर्न प्र मिनाति सङ्गिरम्।
मर्यइव युवतिभिः समर्षति सोमः
कलशे शतयामना पथा ॥४॥

چندرماں کی طرح شانت رُوپ پرماتما اِندریوں کے مالک جیو آتما کے ناپاک خیالات سے مبرّا پاکیزہ دل میں ہی داخل ہوتا ہے اور اپنے دوست جیو آتما کو دیئے وعدوں کو بھی نہیں بھُولتا ہے، جیسے خانہ دار اہلِ عیال سبھی خانہ داروں بیٹے بیٹیوں بہنوں وغیرہ سے ملتا رہتا ہے، اسی طرح سینکڑوں طریقوں سے بھگوان جیو آتما کو خانۂ دل میں ملتا رہتا ہے۔

ے چندرماں سم شانت ایشور پاک دل میں جاتا ہے
اپنے وعدوں کو نبھانے روز روز ہی آتا ہے

557 परमात्मा आत्मा को दिया वचन नहीं भूलता

चन्द्र सम शान्त परमात्मा इन्द्रियों के स्वामी जीवात्मा के पाप विचारों से रहित शुद्ध पवित्र हृदय में ही प्रवेश करता है और अपने सखा जीवात्मा को दिये गये वचनों को भी भंग नहीं करता। जैसे गृहस्थी सभी गृहस्थ परिवारों से बे रोकटोक मिलता रहता है वैसे ही शतशः उपायों से भगवान जीवात्मा को हृदय में मिलता रहता है।

चन्द्रमा सम् शान्त ईश्वर साफ दिल में जाता है।
अपने वचनों को निभाने रोज़ रोज़ ही आता है।

منتر نمبر ۵۵۸ کھنڈ ۹

بھگوان کے بے شمار کام

धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो
दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः।

دیولوک کا دھارن کرنے والا سب جگہ حرکت پذیر بے بطالت کو دور کر کے

وہ آنند رس بھگوان اوصافِ حمیدہ اُپاسکوں کو طاقت دیتا ہے وہ عارف نواز ہے۔ اور مہربان ہے، سب کو پیدا کرتا، سب کے دُکھوں کو دُور کرتا ہے، ہوا کی طرح سب جگہ موجود ہو کر ایسے اپنے کاموں میں مشغول ہے جیسے ندی کی لہریں بنا کسی کوشش کے اُچھلتی اور کودتی رہتی ہیں۔

ے ساری دُنیا کو بنا کر سب کو ہے حرکت میں لینا
عارفوں کے دُکھ مٹا، آنند رس، آنند دیتا

558 **भगवान के अगणित महान कार्य**

द्यौ लोक का धर्ता. सर्व व्यापक अविद्या को दूर करके आनन्द रस भगवान, दिव्य गुण उपासकों को शक्ति देता है। वह उपासकों पर अत्यन्त कृपालु है। सब का जन्म दाता और सब के दुःखों का हर्ता है। वायु रूप सर्वत्र गतिमान होकर, अपने अनन्त कर्मों में स्वभाव से ऐसे लगा रहता है जैसे नदी की लहरें बिना किसी प्रयास के उछलती कूदती रहती हैं।

सारी सृष्टि को रचा कर सबको है गतिमान करता।
दुःख मिटा भक्तों को आनन्द रस है नन्द प्रदान करता।

منتر نمبر ۵۵۹ **دِلوں میں داخل ہو نام کو گونجا دیتا ہے** کھنڈ ۹

१ २३ १ २ ३ १ २
[illegible]र्याविशन्मनीषिभिः ॥६॥

عقل کا دھنی گیان کی بارش برسانے والا، سب کو حقیقی نظر سے دیکھنے والا سوم پرمیشور، جگت کا پیدا کرتا سب کو پوتر کر رہا ہے، دِن، اُوشا اور دیولوک (سوریہ) یہ تینوں

آسمان کے سمندر میں تیرنے والے جہاز ہیں، جو ہمارے لئے اُس نے تین حصّے کئے ہیں۔ زمین پر بہنے والے سمندروں اُور ہمارے دِل کے سمندر کا بھی وہ پران ہے، زندگی ہے۔ یوگیوں کی مدد سے وہ ہمارے ہِردیوں میں پرویش (داخل) کر جیوآتما کے پانچ کوشوں کو اپنی دھونی سے گونجا دیتا ہے۔

عقل عِلم و گیان کا مخزن ہے وہ پرماتما
روشنی اُوشا میں دِن میں اَور شُوریہ میں بھر رہا

559 **हृदयों में प्रवेश कर नाम को गुंजाता है**

बुद्धि की वृद्धि करने हारा ज्ञान की वर्षा कर सब का द्रष्टा सोम परमेश्वर जगत को उत्पन्न करके सबको पवित्र कर रहा है। दिन, उषा और द्यौलोक (सूर्य) यह तीनों आकाश के समुद्र में तैरने वाले विमान है। जो हमारे लिए उसने तीन भाग किए हैं। पृथ्वी के सागर और हृदय सागर का भी वह प्राण जीवन है। योगियों की सहायता से वह हमारे हृदयों में प्रवेश कर जीवात्मा के पांच कोषों को अपने नाम की ध्वनि से गुंजा देता है।

बुद्धि ज्ञान और शिक्षा का है स्रोत वह परमात्मा।
ज्योति उषा में, दिन में और सूर्य में है भर रहा।

منتر نمبر ۵۶۰ — کھنڈ ۹

وید بانیوں سے بھگوان کا ستیہ آشیرباد

त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रिरे
सत्यामाशिरं परमे व्योमनि ।
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे
चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत ॥७॥

سات چھندوں گایتری ترشٹپ وغیرہ والی وید بانیاں اُپاسک (عابد) کے دو لتخانہ رُوپ ہِردیہ میں بیٹھے پرماتما سے دن رات میں تین بار سچی آشیرباد دیتی ہے۔ آگے جب اس

راہِ راست پر عارف یوگ مارگ پر ترقی کرتا جاتا ہے، تب رجوگُن، تموگُن کو ہٹا کر اس کو پاک تر بنانے کے لئے عارف کے انّ مئے کوش کو چھوڑ کر پران مئے منو مئے گیان مئے اور آنند مئے چاروں کوشوں کو پرماتما شُدھ پوتّر کر دیتا ہے۔

نوٹ :۔ اس منتر پر انیک وِدوانوں کے انیک مت ہیں اور سبھی ہیں گیان کی کھوج سے بھر پور، جو میں لکھ رہا ہوں (۱) "تری" کا مطلب تین وقت صبح وشام دو سندھیا سمئے اور تیسرا رات کا سمئے۔ اس کے لئے اتھر وید کا پرمان بھی دیا ہے۔ پراتہ اور شام کو سندھیا کال ہیں ہی، ساتھ ہی وید نے رات کو بھی یوگ ابھیاس کے لئے بہت اُتم مانا ہے، کیونکہ وہ شانت سمئے ہوتا ہے، "یوگی لوگ راتری کو انوشٹھان کرتے ہیں اور پرانیوں کے سونے پر ہی انوشٹھان کے لئے جاگتے رہتے ہیں" (اتھروید ۵ ۔ ۴۸ ۔ ۱۹) اور بھگوت گیتا کا شلوک تو سبھی جانتے ہی ہیں، جس میں لکھا ہے کہ پرانیوں کی جو رات ہوتی ہے یوگی اُس میں جاگتا رہتا ہے۔ (۲) سر میں سات پران یعنی گیان اِندریاں من اور موُردھا (کپال) تین اوستھا پیدائش ہستی اور فنا۔ ادھیاتمک ادھی بھوتک ادھی دیوِک، گنی، مِرتا اور پیار، سُتتی پرارتھنا اُپاسنا، جاگرت سوپن سُوشُپتی، بچپن جوانی بڑھاپا، چار گیان کے سادھن (وسائل) من بُدھی چت اہنکار، چار بھُوون کو کہا ہے کہ جیو آتما کے نواس کے لئے چار بھُودن ہیں شریر اندریاں ہردیہ اور مستشک۔

ے ۔ وید کی بانی سے ملتا ایشر کا آشیرباد
رج تموگن چھوٹ جاتے سنتوسے ہو جاتا شاد

560 **भगवान के सत्य आशीर्वाद**

सात छन्दों गायत्री त्रष्टुप आदि, वाली वेद वाणियां उपासक के श्रेष्ठ हृदय आकाश में बैठे परमात्मा से दिन रात में तीन बार

सत्य आर्शीवाद मिलता है। आगे जब इस योग मार्ग पर उपासक उन्नति प्राप्त कर लेता है तब रजोगुण, तमोगुण को हटा कर परमात्मा इसको शुद्ध पवित्र बनाने के लिए अन्नमय कोष को छोड़ प्राणमय, मनोमय, ज्ञानमय आनन्दमय चारों कोषों को शुद्ध पवित्र कर देता है।

"टिप्पणी" इस मन्त्र पर अनेक पूज्य विद्वानों के अनेक मत हैं और सभी हैं ज्ञान की खोज से भरपूर, इन्हें मैं बहुत संक्षेप से लिख रहा हूं। (त्रि) का अर्थ तीन समय प्रातः सायं और रात्रि दिया है। प्रात और सायं तो सन्ध्या काल माने ही जाते हैं वेद ने रात्रि को भी योगाभ्यास के लिए बहुत उत्तम माना है क्योंकि वह शान्त समय होता है। मन्त्र का अर्थ यह है 'जो रात को अनुष्ठान करते हैं और प्राणियों के सोने पर ही अनुष्ठान के लिए जागते रहते हैं' (अथर्ववेद 19, 48, 5) और भगवद्गीता का श्लोक तो सभी जानते ही हैं जिस में लिखा है कि प्राणियों की जो रात होती है योगी उस में जागता रहता है। (2) सिर में सात प्राण यानि ज्ञानन्द्रियां, मन और मूर्धा (कपाल व ब्रह्मरन्ध्र) (3) त्रि अर्थात् तीन अवस्था-उत्पति, स्थिति और प्रलय अध्यात्मिक, अधिभौतिक, अधिदैविक गति नम्रता और स्नेह स्तुति प्रार्थना, उपासना-जागृत, स्वप्न, सुशुप्ति बचपन, युवा, वृद्धपन (4) चार भुवन-चार ज्ञान के साधन मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार जीवात्मा के निवास के लिए चार भुवन यह हैं शरीर इन्द्रियां, हृदय और मस्तिष्क।

वेद की वाणी से मिलता ईश का आर्शीवाद।
रज, तमोगुण छूट जाता सत्व से हो जाता शाद।

منتر نمبر ۵۶۱ راکھشسی بھاؤ اور کرم دُور ہوں کھنڈ ۹

ہے والی جہان سوم پرمیشور ! اُپاسک کے ہردیہ میں پرگٹ ہوکر آپ آنند کی دھار کو بہائیں تاکہ بیچارہ منش شیطانی جذبات اور کرموں سے دُور ہوکر اس کی یہ لاعلاج بیماری کٹ جائے، شک وشبہات میں پڑے ہوئے باطل پرست آپ کے آنند کی مستی کو نہیں پاسکتے، گیان کی روشنی کو دینے والے بھگتی رس ہمیں آپ کا درشن اور موکھش پراپت کرائیں۔

ے بھگت سجنوں کے لئے ہے بھکتی دھارا آپ کی
دھرم اور ایشور وِرودھی پاسکیں نہ اِسے کبھی

561 राक्षसी भाव और कर्म दूर हों

जगत पिता सोम परमेश्वर ! उपासक के हृदय में प्रगट हो कर आप आनन्द की धारा बहायें, ताकि राक्षसी भाव और कर्मों में फंसा हुआ तेरे मार्ग का इच्छुक मानव इस महारोग से दूर हो जाये। संशय में पड़े हुए अविद्या में घिरे हुए, आप के आनन्द को नहीं पा सकते। ज्ञान ज्योति को देने वाले भक्ति रस हमें आपका दर्शन और मोक्ष प्राप्त करा सकेंगे।

भक्त सजनों के लिए है भक्ति धारा आपकी।
धर्म और ईश्वर विरोधी पा सकें न इसे कभी।

منتر نمبر ۵۶۲ بھگتوں کی طرف کھِچا ہُوا بھگوان کھنڈ ۹

राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
पुनानो वारमत्येष्यव्ययं श्येनो
न योनिं घृतवन्तमासदत् ॥६॥

دُکھ ہرتا شانت روپ پرماتما سُکھ داتا کے رُوپ میں ساکھشات ہوتا ہے، ہردیہ

میں راجہ کی طرح دیکھنے کے یوگیہ ہے، جیسی ستتیاں وید نے گائی ہیں، اُسی کے مطابق اُپدیش دیتا ہے اور شریشٹھ آتما عارف کی بھگتی سے کھچا ہوا شریر کے اندر آتما میں داخل ہوکر بھگت کے ہردیہ میں بیٹھ جاتا ہے۔

ے دُکھ ناشک سُکھ ورشک ایشور جیوتی سے دل میں چمکتا ہے
راجہ سم درشن یوگیہ وہی بھگتوں میں آنند بھرتا ہے

562 भक्तों से आकर्षित भगवान

दुःखहर्ता सुखदाता शान्त रूप परमात्मा ! भक्त के हृदय में साक्षात होता है जो राजा के समान दर्शनीय है। वेद स्तोत्रों के रुप में उपदेश देता है, और पवित्र आत्मा उपासक की भक्ति से आकर्षित हुआ शरीर के अन्दर आत्मा में प्रवेश कर उपासक के हृदय में बैठ जाता है।

दुःख नाशक सुख वर्षक ईश्वर ज्योति से दिल में चमकता है
राजा सम दर्शन योग्य वही भक्तों में आनन्द भरता है।

منتر نمبر ۵۶۳ کھنڈ ۹

عابد کا چلن اور بھگتی رس

२ ३२उ ३ १२ ३
प्र देवमच्छा मधुमन्त
२ ३ १ २ ३ २३ २उ ३ १२
इन्दवोऽसिष्यदन्त गाव आ न धेनवः।
३ १२ ३ १२ ३ १२
बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः
३ १२३ १ २ ३ १ २
परिस्रुतमुस्रिया निर्णिजं धिरे ॥१०॥

میٹھے سوبھاؤ یکت شدھ پوتر عابد اپنے معبود کے لئے ویسے ہی اچھی طرح بھگتی کو نذر کرتے ہیں، جیسے دُودھار و گئوئیں اپنے بچھڑوں کے پاس جاکر شوق سے دُودھ بہاتی ہیں۔ برہم میں وچرنے والے ویدانوسار چلن والے سُوریہ کی شعاعوں کی طرح منوّر عابد اپنے دل میں روشن اتی شُدھ بھگتی رس کو اُسی طرح دھارن کرتے ہیں، جیسے گئوئیں اپنے تھنوں

میں چھلکتے ہوئے دودھ کو دھارن کرتی ہیں ۔

ے جیسے بچھڑوں کو دودھ پلا گئو ئیں آنند کا پان کریں
بھگوان بھگت نرمل جیون بھگتی رس ایسے بھینٹ کریں

563 उपासक का व्यवहार और भक्ति रस

मधुर स्वभाव शुद्ध निर्मल उपासक ! अपने उपास्य देव के लिए उसी प्रकार उत्तम रूप से अपनी भक्ति भेंट करते हैं, जैसे दुधारु गौवें वात्सलय भाव से अपने बछड़ों को दूध पिलाती हैं। ब्रह्म वेता वेदानुसार चलने वाले, सूर्य किरणों की भांति ज्योतिर्मान उपासक अपने हृदय में प्रकाशित अति शुद्ध भक्ति रस को उसी तरह धारण करते हैं जैसे गौवें अपने स्थनों में छलकते हुए दूध को धारण किए रखती हैं।

जैसे बछड़ों को दूध पिला गौवें आनन्द का पान करें।
भगवान भक्त निर्मल जीवन भक्ति रस ऐसे भेंट करें।

منتر نمبر ۵۶۴ آتم سمرپن سے دل میں آنند کی آبیاری کھنڈ ۹

अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते
क्रतुं रिहन्ति मध्वाभ्यञ्जते ।
सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं
हिरण्यपावाः पशुमप्सु गृभ्णते ॥११॥

آتمک شکتی پا جانے والے اُپاسک سرو اُتم کرم شیل گیان وگیان کے بھنڈار اور آتمک شکتی کے بانی شانت پرمیشور کی مہما کو سُن سمجھ اور اُس پر غور کرکے اُس کا ساکھشات کار کرتے اُسے اپنے جیون میں ڈھالتے ہیں اور اپنے آپ کو اُس کی نذر کرکے اُسے اپنی طرف کھینچتے ہوئے اُس کا امرت رس پان کرتے ہیں۔ جس سے اُن کا ہردیہ آنند جل سے آبیار ہو جاتا ہے ۔

ے آتم بھاؤ پالینے سے عابد تیار ہو جاتا ہے
اپنی ساری بھگتی شکتی پربھو ارپن کر سُکھ پاتا ہے

564 आत्म समर्पण से आनन्द की धारा बहती है

सोने की तरह चमकदार शुद्ध हुए आत्मभाव को पा जाने वाले उपासक जन, सर्वोत्तम कर्मशील ज्ञान विज्ञान के भण्डार और आत्मिक शक्ति के दातार, भगवान का पठन, पाठन श्रवण और निदिध्यासन और साक्षात्कार करते हैं। और आत्म समर्पण से उसे अपनी ओर आकर्षित करते हैं और उसके अमृत रस से अपने हृदय को सींचते रहते हैं।

आत्म भाव पा जाने से तैयार भक्त हो जाता है।
अपनी सारी भक्ति शक्ति प्रभु अर्पण कर सुख पाता है।

منتر نمبر ۵۶۵ ریاضت سے خالی کچّا عابد تجھے حاصل نہیں کر سکتا! کھنڈ ۹

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते
प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास
इद्वहन्तः सं तदाशत ॥१२॥[५।६]

برہمانڈ اور وید گیان کے مالک امرت آنند کے سوامی! آپ کا شُدھ پوتّر برہمانڈ، وید گیان پھیلا ہوا ہے، آپ اُس کے پربھو یعنی مالک ہیں، عابد کے ایک ایک اعضاء میں اور دُنیا کے ذرّے ذرّے میں سمائے ہوئے ہیں، جس نے اپنے آپ کو ریاضت یا تپ میں نہیں تپایا۔ وہ آپ برہم کو نہیں حاصل کر سکتا۔ اچھی ریاضت سے پکّے عابد ہی اِن انسانی جسم رُوپ رتھوں کے ذریعے آپ کے وصلِ مُبارک کو حاصل کر لا انتہا آنند کا بھوگ کرتے ہیں۔

ے ویداور دُنیا کے والی ذرّے ذرّے میں رمے ہوئے
آپ کا وصل نصیب ہے اُن کو جو تپ میں ہیں تپے ہوئے

565 तप से रहित उपासक को प्रभु की प्राप्ति नहीं

ब्रह्माण्ड, वेद और अमृत आनन्द के स्वामी परमात्म देव ! आपका पवित्र ब्रह्माण्ड और वेद ज्ञान सर्वत्र फैला हुआ है आप उसके प्रभु हैं। उपासक और ब्रह्माण्ड के एक-एक अंग, कण प्रति कण में व्याप्त हो रहे हैं। जिसने तपश्चर्या के द्वारा अपने आप को तपाया नहीं है अर्थात् कच्चा है वह आप ब्रह्म को प्राप्त करने में असमर्थ है परिपक्व उपासक ही अपने शरीर रथों के द्वारा आप को प्राप्त कर अमृत आनन्द का उपभोग कर सकते हैं।

ब्रह्माण्ड वेद के स्वामी ईश्वर कण कण में हैं रमे हुए।
साक्षातकार है उनके भाग्य में जो तप में हैं तपे हुए।

منتر نمبر ۵۶۶ — یہ آنند رس — کھنڈ ۱۰

इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः।
श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥१॥

اِندریوں کو وِشیوں سے ہٹانے والے، علم عرفان کی روشنی دینے والے، آتمک شانتی اُور ایشوریہ داتا یہ بھگتی رس پیدا ہو کر جلد ہی آنند رس کے برسانے والے بھگوان کو پہنچ جاتے ہیں۔

ے پیدا ہوتا بھگتی رس جب دُور ہوتی واسنائیں
جا پہنچتا ایش وَر کے دھام اُمرت واسنا میں

566 यह आनन्द रस

इन्द्रियों को विषयों से हटाने वाले, अध्यात्मिक ज्योति को देने वाले आत्मिक शान्ति और ऐश्वर्य दाता ये भक्ति रस उत्पन्न

होकर शीघ्र ही आनन्द रस वर्षक भगवान को पहुंच जाते हैं।

पैदा होता भक्ति रस जब दूर होती वासनायें
जा पहुंचता ईश्वर के धाम अमृत वासना में

منتر نمبر ۵۶۷ **عارِف کو اَمرِت موکھش دیجئے** کھنڈ ۱۰

प्र धन्वा सोम जागृविरिन्द्रायेन्दो परि स्रव।
द्युमन्तं शुष्ममा भर स्वर्विदम् ॥२॥

آنند رس سے بھرپُور شانتی کے ساگر پرماتما! یہ اُپاسک آپ کا بھگت جس نے حواسِ خمسہ پر قابُو پالیا ہے۔ اِس کے اندر باہر سب جگہ پرگٹ ہو کر اسے امرت رُوپ موکھش پراپت کرانے والے تیجسوی بل کو پردان کیجیے۔

ے آنند امرت سے بھرے ہوئے بھگوان بھگت کو اَمرت کر
جو اِندری جت اَور گیانی بنا سب وِشے واسنا سے ہٹ کر

567 **उपासक को अमृत मोक्ष दीजिए**

आनन्द रस से परिपूर्ण शान्ति सागर परमात्मा! ये उपासक आप का भक्त जिसने इन्द्रियों पर नियंत्रण पा लिया है। इसके अन्तःकरण और बाह्य करण सब जगह प्रगट होकर इसे अमृत रूप मोक्ष प्राप्त कराने वाले तेजस्वी बल को प्रदान कीजिए।

आनन्द अमृत से भरे हुए भगवान, भक्त को अमृत कर
जो इन्द्रिजीत और ज्ञानी बना सब विषय वासना से हट कर।

منتر نمبر ۵۶۸ **آؤ! پیارے دوستو آؤ!!** کھنڈ ۱۰

सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत।
शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये ॥३॥

پیارے اُپاسک متر و! اُپاسنا بھگتی یگیہ میں آؤ اور آسن جاکر بیٹھو، اُس پوتّر کرنے والے پرماتما کے لئے اور اپنے کلیان کے لئے بھگوان کی ستتی کیرتن گاؤ، ایسی مہما گاؤ جیسے کہ نوجات بچے کے گیت گائے جاتے ہیں۔

آؤ پیارے مترو آؤ، پربھو بھگتی کے یگیہ میں آؤ
سُکھ شانتی کلیان ہِت ایشور پوتّر کرتا کو گاؤ

568 **आओ प्यारे मित्रो आओ**

प्यारे उपासक मित्रो उपासना भक्ति यज्ञ में आओ और आसन लगाकर बैठो। उस पवित्र करने वाले परमात्मा के लिए और अपने कल्याण के लिए भगवान को स्तुति कीर्तन गाओ। ऐसी महिमा गाओ जैसे कि नवजात बालक के गीत गाए जाते हैं।

आओ प्यारे मित्रो आओ प्रभु भक्ति के यज्ञ में आओ।
सुख शान्ति कल्याण निमित ईश्वर पवित्र कर्ता को गाओ।

منتر نمبر ۵۶۹ **بھگوان کو پرسن کرو!** کھنڈ ۱۰

तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत।
शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ॥४॥

عابد عارف دوستو! خوشیوں اور آنند کی لہروں میں مستی لینے کے لئے اُس پوتّر کرنے والے بھگوان کے گیت گاؤ، جیسے مختلف کھانے کی چیزوں سے بچوں کو خوش کیا جاتا ہے، ویسے یوگ، سادھنا، تپ، ریاضت سے بھگوان کو پرسن کرو۔

اپنی خوشیوں کے لئے تم پاک کردہ ایش گاؤ
یوگ مارگ کے راہی بن تپ سے پربھو ور کو رجھاؤ

569 भगवान को प्रसन्न करो

उपासक मित्र जनों ! हर्ष उल्लास और आनन्द में मस्ती लेने के लिए उस पावन परमेश्वर के गीत गाओ जैसे पृथक-पृथक खाने के उत्तम पदार्थों से बालकों को प्रसन्न किया जाता है । वैसे योगसाधना और तपश्चर्या से भगवान को प्रसन्न करो ।

अपनी खुशियों के लिए पावन पवित्र ईश्वर को गाओ ।
योग के राही बनों तप से प्रभु वर को रिझाओ ।

منتر نمبر ۵۷۰ کھنڈ ۱۰

دو حصوں میں بٹا ہوا بھگوان

क्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम् ।
विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता ॥५॥

وشو کا پران اور وید بانیوں میں پرتشٹھت پرماتما وید کے ذریعے تمام سچائیوں کا اظہار کر سب کو ترغیب دیتا ہے اور تمام انسانات کے دو حصوں میں منقسم ہے، ایک وہ جو دُنیاوی خوشیوں، عیش اور آرام میں لگے ہوئے ہیں، دوسرے وہ جو راہِ نجات پر چلتے ہوئے رُوحانی سمپداؤں کو چاہتے ہیں، پھر بھی دُنیا کی تمام پیاری اشیا میں پرمیشور موجود ہے۔

وشو کا ہے پران جیون وید کا پرکاش کرتا
دُنیوی رُوحانی دولت دے کے سب کلیان کرتا

570 दो भागों में बटा हुआ भगवान

विश्व का प्राण और वेद वाणियों में प्रतिष्ठित परमात्मा वेद के द्वारा सम्पूर्ण सत्यों को प्रगट कर सब को प्रेरणा देता है और मनुष्य मात्र के दो भागों में बटा हुआ दोनों की सुनता है। एक वह जो सांसारिक बन्धनों में अपनी खुशियां मानते हैं और दूसरे वे जो मोक्ष मार्ग पर चलते हुए आत्मिक सम्पदाओं को

चाहते हैं। फिर वह परमेश्वर संसार की सभी प्रिय वस्तुओं मे ग्राप्त हैं।

विश्व का है प्राण जीवन वेद का प्रकाश कर्ता।
दुनयवी, रूहानि दौलत दे के सब कल्याण कर्ता।

منتر نمبر ۵۷۱ **ہمارے دِلوں کو پُر مٹھاس کیجئے** کھنڈ ۱۰

१२ ३१२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा।
२ ३ २ ३ १२
आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः ॥६॥

چندر رُوپ آنند داتا پرمیشور ! دویگُنوں کی پراپتی کے لئے اپنی آنند رس کی دھاراؤں اور اپنے تیج کے ساتھ آپ ہمیں پراپت ہوویں ۔ ہے سوم آپ تو مدھر رُوپ ہیں ۔ آؤ ! ہمارے خانۂ دِل میں براجمان ہو جاؤ ۔

ہے چندر رُوپ آنند رُوپ اور مدھر رُوپ رس کے بھنڈار
ہم بھگت جنوں کے ہردیوں میں بیٹھو مدھرتا کے سرجن ہار

571 **हमारे हृदयों में मधुरता दीजिए**

चन्द्र सम आनन्द दाता परमेश्वर दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए अपनी ग्रानन्द रस की धाराओं और तेज के साथ हमें प्राप्त होवें। हे सोम आप तो मधुर रूप हैं ग्राग्रो हमारे हृदय में विराजमान हो जाग्रो।

हे चन्द्र रूप आनन्द रूप ग्रौर मधुर रूप रस के भंडार।
हम भक्त जनों के हृदयों में बैठो मधुरता के सिरजन हार।

منتر نمبر ۵۷۲ کھنڈ ۱۰

سوم رُوپ اُپاسک

सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं वि धावति ।
अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥७॥

سوم کی طرح خُوبرُو اور ناپاکیزگی سے مبّرا، آنندرس سے بھرپُور، من چِت، بُدّھی والا یوگی کامل یوگ مارگ پر چلتا ہوا اگیان کے پردے کو ہٹا آگے بڑھتا ہوا مزید پاک پوِتّر ہوکر وید بانی کے رازوں کو جانتا ہوا اِن کے ساتھ بھگوان کی حمد و ثنا میں مست ہو جاتا ہے۔

۵

سوم شُدھ نرمل ہو کر یوگی پوِتّرتا پا لیتا
اگیان دُور کر وید گیان سے پرمیشور کو گا لیتا

572 **सोम रूप उपासक**

सोम की भांति सौंदर्य, पवित्रता और आनन्द रस से युक्त अन्तःकरण योगी, योग अंगों को अपना कर मोक्ष मार्ग पे चलता हुआ अज्ञान के पर्दे को छिन्न भिन्न कर आगे बढ़ता और निर्मल शुद्ध जीवन के साथ वेद वाणी रहस्यों को जानता हुआ भगवान के स्तोत्रों में आनन्दित हो जाता है ।

सोम शुद्ध निर्मल होकर योगी पवित्रता पा लेता ।
अज्ञान दूर कर वेद ज्ञान से परमेश्वर को गा लेता ।

منتر نمبر ۵۷۳ کھنڈ ۱۰

بھگوان کی نوکری

प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उच्यते ।
भृतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते ॥८॥

پوِتّر کرنے والے جگت بنانے والے پرمیشور کے لئے پرارتھنا کی جاتی ہے کہ ہے میرے مالک پربھو! ہم آپ کی سُنتی وچنوں (قابلِ تعریف کلمات) اپنی بدھیوں کے ذریعے

آپ کی سیوا میں اپنی نوکری کر رہے ہیں، کب منظور ہوگی ہماری چاکری اور ہمیں آپ کی طرف سے پھل ملے گا۔

ے آپ کی سیوا میں بیٹھے دن رات پرارتھنا کرتے ہیں
نوکری ہماری لگی ہوئی دیکھیں کیسے پھل جھڑتے ہیں

573 **भगवान की नौकरी**

पवित्र करने वाले जगत पिता परमेश्वर के लिए प्रार्थना की जाती है कि हे प्रभु ! हम आप की स्तुति बचनों से अपनी बुद्धियों के द्वारा आपकी सेवा में अपनी भृति कर रहे हैं कब स्वीकार होगी हमारी चाकरी और हमें उसका फल मिलेगा।

आपकी सेवा में बैठे दिन रात प्रार्थना करते हैं।
नौकरी हमारी लगी हुई देखें कैसे फल झड़ते हैं।

منتر نمبر ۵۷۴ کھنڈ ۱۰

تین عرضیاں

गोमन्न इन्दो अश्ववत् सुतः सुदक्ष धनिव ।
शुचिं च वर्णमधि गोषु धारय ॥६॥

طاقت اعلیٰ کے مالک اور چندر کی طرح ٹھنڈی روشنی سے شانتی دینے والے آپ ظاہر ظہور ہوکر (۱) جیسے گئوئیں دودھ دیتی ہیں، ویسے آتم گیان دیجئے، (۲) جیسے گھوڑوں میں تیزی دی ہے، ویسے یوگ کی راہ پر تیزی دیجئے (۳) اور ہماری اندریوں میں اپنی کرپا سے پوترتا بھر دیجئے۔

ے آتم بل کے داتا چاند سم شانتی دیتے ہوئے آؤ
آتم گیان، یوگ، شکتی، پاکیزگی اندریوں میں لاؤ

574 **तीन प्रार्थनाएं**

सर्वोत्तम शक्ति के स्वामी और चन्द्र सम शीतल शान्तिमय

प्रकाश देने वाले आप प्रगट होकर (1) जैसे गौवें दूध देती हैं वैसे आत्म ज्ञान भर दीजिए (2) जैसे अश्वों में वेग दिया है वैसे योग मार्ग में भी हमें संवेग दीजिए (3) और हमारी इन्द्रियों में अपनी कृपा से पवित्रता भर दीजिए ।

उत्तम बल के दाता चान्द सम शान्ति देते हुए आओ ।
आत्म ज्ञान योग शक्ति निर्मलता इन्द्रियों में लाओ ।

منتر نمبر ۵۷۵ کھنڈ ۱۰

آپ کے آنند رُوپ کو اپنے میں بسائیں

अस्मभ्यं त्वा वसुविदमभि वार्णीरनूषत ।
गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि ॥१०॥

رُوحانی خزانوں کے دینے والے! ہمارے سُکھ شانتی کلیان کے لئے وید بانیاں آپ کی سُتتیاں گا رہی ہیں ۔ اِن بانیوں کے ذریعے ہم آپ کے آنند سوروپ کو اپنے میں بساتے ہیں ۔

ہم کو سب سُکھ دینے والے ہے سوم! تمہیں کو گاتے ہیں
اِس بھگتی بھری بانی سے ہمارے پاپ مَیل دھل جاتے ہیں

575 आप के आनन्द रूप को अपने में बसाएं

आत्म सम्पदाओं के देने वाले ! हमारे सुख शान्ति कल्याण के लिए वेद वाणियां आप की स्तुति गा रही हैं । इन वाणियों के द्वारा हम आप के आनन्द स्वरूप को अपने में बसाते हैं ।

हमको सब सुख देने वाले हे सोम तुम्हीं को गाते हैं ।
इस भक्ति भरी वाणी से हमारे पाप मैल धुल जाते हैं ।

منتر نمبر ۵۷۶ **بُری خصلتوں کو دُور کر یش بَل کو دیتا ہے!** کھنڈ ۱۰

पवते हर्यतो हरिरति ह्वरांसि रंह्या ।
अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः ॥११॥

کامنا کرنے یوگیہ اتی سُندر سب کے پیارے دُکھ ناشک شانت روپ پرماتما بڑی تیزی سے اپنے پیارے اُپاسکوں کی پاپ واسناؤں اَور بُری خصلتوں کو دُور کرتا ہوا آتمک بَل ویریہ اَور یش کو دیتا ہے۔

عابدوں کی خصلتیں اَور واسنائیں جو بُری
دُور کرنا پاپ موچن شکتی دیتا ہر گھڑی

576 पाप वासनाओं को दूर कर यश बल को देता है

अति सुन्दर कमनीय सत्यप्रिय, दुःखनाशक, शान्त रूप परमात्मा ! बड़ी तीव्रता से अपने प्यारे उपासकों की पाप वासनाओं और दुष्टवृत्तियों को दूर करता हुआ आत्मिक बल वीर्य और यश को देता है।

वासनाएं प्यारे भक्तों की जो होती हैं बुरी ।
दूर करता, पाप मोचन, शान्ति से हर घड़ी ।

منتر نمبر ۵۷۷ **بھگت کے ہِردیہ میں ویدبانی کو بھر دیتا ہے** کھنڈ ۱۰

परि कोशं मधुश्चुतं सोमः पुनानो अर्षति ।
अभि वाणीर्ऋषीणां
सप्ता नूषत ॥१२॥[५।१०]

مدھر بھگتی رس کے منبع خانۂ دِل کو پاک پوتر کرتا ہوا سوم پرمیشور اُپاسک کے سارے گھر کو اپنے ماحول سے بھر لیتا ہے اَور چار رِشیوں کے ذریعے سات چھند دل

میں، نازل ہوئی وید بانیوں کو اُن کے ہردیہ رُوپ گھر میں بھر دیتا ہے ۔

ے عابد پر ہو پرسّن پربھو اُس کے دِل میں لبس جاتا ہے
اور اپنی آشیش کو دے جیوتی اُس میں بھر پاتا ہے

577 भक्त के हृदय में वेद वाणी को भर देता है

शुद्ध भक्ति रस के स्रोत हृदय रुपी कोष को पवित्र करता हुआ सौम परमेश्वर उपासक के सारे हृदय रुपी घर में छा जाता और ऋषियों के द्वारा आई हुई वेद वाणियों को उनके अन्दर भर देता है।

प्रसन्न उपासक पर होकर प्रभु उसके हृदय बस जाता है।
और अपनी *आशीश को दे ज्योति उस में भर पाता है॥*

منتر نمبر ۵۷۸ **اِندریوں کے سوامی آتما کو پوتّر کیجئے** کھنڈ ۱۱

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय
सोम क्रतुवित्तमो मदः।
महि द्युक्षतमो मदः ॥१॥

جگت کو پیدا کرنے والے سوم ! آپ اِندریوں کے سوامی اِندر آتما کو پوتر کیجئے
آپ نے ہی تو جیو کو عقلِ سلیم بخشی ہے، قوتِ ارادی اور راہِ راست کی ترغیب، آپ آنند
مئے مدھُر رُوپ، عظیم العظم اور جیوتی کے بھنڈار ہیں ۔

ے جیوتی کے بھنڈار آنند رُوپ آپ مہان ہیں
اِندریوں کے سوامی آتما کو پوتّر تا دیجئے

578 इन्द्रियों के स्वामी आत्मा को पवित्र कीजिए खंड 11

जगत के उत्पादक सोम परमेश्वर ! आप इन्द्रियों के स्वामी इन्द्र, आत्मा को पवित्र कीजिए। आपने ही जीव को प्रज्ञा और संकल्प से युक्त किया है और सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा

भी दी, आप आनन्द रूप मधुर स्वरूप, महान और ज्योति के भण्डार हैं।

ज्योति के भण्डार आनन्द रूप आप महान हैं।
इन्द्रियों के स्वामी आत्मा को पवित्रता दीजिए।

منتر نمبر ۵۷۹ کھنڈ ۱۱

تیری طَرَف چلنے وَالوں کو تُو راہ دیتا ہے!

अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते
दिदीहि देव देवयुम् ।
वि कोशं मध्यमं युव ॥२॥

سب کی کامناؤں کو پُورن کرنے والے بھگوان! جو تیری راہ پر چل پڑتا ہے، تو اُس کی رہنمائی کرتا ہوا اُسے دولتِ نجات (موکھش دھن) جو کہ لافانی ہے، اُسے عطا کرتا ہے اور اُس کے من میں اس راہ ابدی کے لئے اُتساہ، محبت اور جوش بھرتا جاتا ہے۔

ے کامنائیں اُٹھتی من میں جو پُورا تجھ بن کوئی کیسے کرے
مُکتی کے راہی عابد کو لافانی دَولت بھر بھر دے

579 तेरी ओर जाने वाले तुझ से ही राह पाते है

सब कामों को पूर्ण करने वाले भगवान! जो तेरी राह पर चल पड़ता है तू उसका मार्ग दर्शन करता हुआ उसे अविनाशी मोक्ष धन प्रदान करता है। और उसके मन में इस अध्यात्मिक मार्ग के लिए असीम उत्साह श्रद्धा भक्ति भरता जाता है।

कामनाएं उठती मन में, पूरा तुझ बिन कौन करे।
मुक्ति के राही मुमुक्षु को अविनाशी दौलत भर दे।

منتر نمبر ۵۸۰ کھنڈ ۱۱

دِلی عقیدت سے اُسے دھارن کرو!

आ सोता परि षिञ्चताश्वं
न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम् ।
वनक्रक्षमुदप्रुतम् ॥३॥

ہے عابد و عارفو! آپ آنند رس کو بہانے والے، حمد و ثنا کے لائق، زندگی دینے والے، بل داتا، کام کرودھ وغیرہ کی طرف ترغیب دینے والے رجوگن کو مٹا کر علم عرفان کی روشنی کو دینے والے، نجات کے رہنما، سب جگہ موجود پرماتما کو دل میں ظاہر ظہور کر کے دلی عقیدت سے اُسے دھارن کرو۔

بل داتا گیان کی جوت کو دیتا جلا ہر کس میں جو
اُس کو پرگٹ کر عارفو دل میں، اُسے دھارن کرو

580 अत्यन्त श्रद्धा से उसे धारण करो

हे उपासको! आप आनन्द रस को बहाने वाले अर्चनाओं के योग्य, प्राण दाता, बल दाता, रजोगुण को विध्वंस कर अध्यात्मिक ज्योति को देने वाले, मोक्ष के प्रेरक, सर्वव्यापक, परमेश्वर को हृदय में प्रगट करके अत्यन्त श्रद्धा से उसे धारण करो।

बल दाता ज्ञान की जोत को देता जला मानव में जो।
उपासको ! उसको प्रगट कर हृदय में धारण करो।

منتر نمبر ۵۸۱ کھنڈ ۱۱

عرشِ برّیں سے روشنی کو لانے والے!

स त्वं सदच्युतं सहस्रधारं
वृषभं दिवोदुहम् ।
विश्वा वसूनि बिभ्रतम् ॥४॥

خانۂ دل میں اور تمام دُنیا کے باسی سالنسارک عیش وعشرت سے چھڑانے والے، بے شمار لوک لوکانتروں کو دھارن کرنے والے، آنندرس کو برسانے اور دیولوک سے روشنی کو لے آنے والے، تمام زر و مال کے مالک واحد بھگوان کو ہے عابدو! اپنے بھگتی رسوں سے سینچ دو۔

ے دُنیا کے ہر دل کے باسی آنند رس برساتے ہیں
دیولوک سے جیوتی کو لا دھرتی کو چمکاتے ہیں

581 द्यौ लोक से ज्योति को लाने वाले

प्रत्येक हृदय और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के वासी संसारिक भोगों से छुड़ाने वाले ! असंख्य लोकों के धारण कर्ता, आनन्द रस को वर्षाने और द्यौ लोक से प्रकाश को ले आने वाले, सब सम्पदाओं के एक अधिपति भगवान को, हे उपासको ! अपने भक्ति रसों से सींच दो।

सब हृदयों के वासी ईश्वर आनन्द रस बरसाते हैं।
देवलोक से ज्योति को ला भूलोक चमकाते हैं।

منتر نمبر ۵۸۲ کھنڈ ۱۱

شریروں کا نرماتا

स सुन्वे यो वसूनां यो
रायामानेता य इडानाम् ।
सोमो यः सुक्षितीनाम् ॥५॥

جو تمام زر و مال، سب کے پرانوں، سُوریہ وغیرہ لوکوں، سبھی دھرتیوں، سبھی علموں کا مخزن اور غلّہ وغیرہ کو حاصل کراتا ہے، جو عجیب و غریب اجسامات کا معمار ہے وہ سومیہ پرماتما دل کے اندر ہی پرگٹ کیا جاتا ہے۔

؎ سب زَر و مال اَور پرانوں سے ہے جیون داتا ہم سب کا
اُس کو دِل میں ہم پرگٹ کریں معمار ہے جو اِن جسموں کا

582 शरीरों के निर्माता

जो सभी सम्पदा और सब के प्राणों को देता है सूर्यादि लोकों, सभी धरतियों, सब ज्ञानों का स्रोत और अन्न आदि को प्राप्त कराता है। भिन्न-2 प्रकार के अद्भुत शरीरों का निर्माता है। वह सोम परमात्मा हृदय के अन्दर ही प्रगट किया जाता है।

सब धन दौलत और प्राणों से है जीवन दाता हम सब का।
उसको हृदय में प्रगट करें जिसने है हमको जन्म दिया।

منتر نمبر ۵۸۳ کھنڈ ۱۱

موکھش کی راہ دِکھانے والے

त्वं श्रां३क्क दैव्यं
पवमान जनिमानि द्युमत्तमः।
अमृतत्वाय घोषयन् ॥६॥

جنم اَور موت کا وید کے گیان سے وِدھان کرنے والے، پوِتر تا کے داتا پیارے پرماتمن! آپ ہی روزِ اوّل سے سمپُورن گیان کی روشنی سے منوّر کرنے والے، موکھش کی راہ دِکھانے والے دِویہ سوروپ یعنی نُورالحق ہیں!

؎ جنم اَور موت کے پنجے سے چُھڑانے والے
گیان دیپک سے رہِ موکھش دِکھانے والے

583 मोक्ष मार्ग दिखाने वाले

वेद के ज्ञान से जन्म और मृत्यु का विधान करने वाले पावन कर्ता प्यारे परमात्मन्! आप ही सृष्टि के आदि में ज्ञान की ज्योति से प्रकाशमान करने वाले मोक्ष का मार्ग दिखाने वाले दिव्य स्वरूप हैं।

जन्म और मौत के पंजे से छुड़ाने वाले ।
मोक्ष के मार्ग की ज्योति को दिखाने वाले ।

منتر نمبر ۵۸۴ کھنڈ ॥

یہ وُہی پَرماتما ہے

एष स्य धारया सुतोऽव्या
वारेभिः पवते मदिन्तमः ।
क्रीळन्नूर्मिरपामिव ॥७॥

یہ وہی پرماتما ہے جو ہر ایک دِل میں بھی ہے اوَر برہمانڈ میں بھی، دُکھوں میں پھنسانے والے بھوگوں سے چُھڑانے کے لئے ظاہر ہوکر آنند رس دھارا سے حاصل ہوتا ہے، وہ ہی ہماری پرارتھناؤں کو سُننے کا ادھیکاری ہے، جو دُنیا میں ایسے کھیل رہا ہے، جیسے پانی کی لہریں!

ے ہے وہی سوامی جگتی تل کا جو ہے دِل میں برہمانڈ میں بھی
دُکھ بھوگ سے چُھڑوانے کیلئے جو کھیل رہا جل لہروں سی

584 **यह वही परमात्मा है**

जो प्रत्येक हृदय में भी है ब्रह्माण्ड में भी, दुःख भोगों में फंसाने वाले दुरित कर्मों से छुड़ाने के लिए आनन्दमयी रसधारा से प्राप्त होता है वह ही हमारी प्रार्थनाओं को श्रवण करने का पात्र है जो विश्व में ऐसे क्रीड़ारत है जैसे जल की लहरें ।

वही है स्वामी जगती तल का हृदय में है ब्रह्माण्ड में भी
दुःख भोग से छुड़वाने के लिए जो खेल रहा जल लहरों सी ।

منتر نمبر ۵۸۵ مَن اَور اِندریوں کے دوشوں کو نَشٹ کریں کھنڈ ॥

य उस्रिया अपि या अन्तरश्मनि

निर्गा अकृन्तदोजसा ।
अभि व्रजं तत्निषे गव्यमश्व्यं
वर्मीव धृष्णवा रुज ॥८॥[५।११]

جو پرماتما اُوشا کی کرنوں کو اپنی عظیم طاقت سے نکال کر چاروں طرف روشنی
کو پھیلا دیتا ہے اور بادلوں کو کاٹ کر پانی کو نکال زمین پر گراتا ہے، اس طرح جو
ارض و سما کو ہرا بھرا وسیع ترین کر دیتا ہے، ایسے ہے پرمیشور! آپ ہمارے من
اور اندریوں میں ہونے والے بگاڑ کو وِنشٹ کر دیجئے، جیسے فوجوں کا کمانڈر اپنے
دشمنوں کا صفایا کر دیتا ہے، ہے اوم پاپ ناشک اِن سے ہماری رکھشا کیجیے!

سورج سے شعاعوں کو لے کر میگھوں سے پانی برسا کر
کی ہری بھری دُنیا جیسے دو پاپ مِٹا دیسے آ کر

585 मन और इन्द्रिय दोषों को नष्ट करे

जो परमात्मा उषा की किरणों को अपनी महानशक्ति से सूर्य से निकाल कर चहुं ओर प्रकाश को फैला देता है और मेघों को काट कर जल को निकाल भूमि पर गिरा सारे भूलोक को हरा भरा कर देता है। ऐसे हे परमेश्वर! आप हमारे मन और इन्द्रियों में होने वाले विकारों को नष्ट कर दीजिए जैसे सेनापति अपने शत्रुओं का सफ़ाया कर देता है। हे ओम् पापनाशक इन से हमारी रक्षा कीजिए।

सूरज से किरणों को लेकर मेघों से पानी बरसा कर,
की हरी भरी दुनियां जैसे दो पाप मिटा वैसे आकर।

آرنیہ کانڈ ۔ چھٹا ادھیائے

منتر نمبر ۵۸۶ کھنڈ ۱

اَرض وسَما کے مالک

इन्द्र ज्येष्ठं न आ भर ओजिष्ठं पुपुरि श्रवः ।
यद्दिधृक्षेम वज्रहस्त रोदसी
उभे सुशिप्र पप्राः ॥१॥

عظیم طاقتوں کے مالک، بُرائیوں کے ناشک، دولت ہائے دُنیا کے مالک پرمیشور! ہمارے لئے عظیم الشان جاہ وجلال، زر ومال اَور روحانی دولت یوگ دھن کو دیجئے، جس کے لئے ہم شوق رکھتے ہیں، آپ ارض وسما دونوں میں بھرپُور ہو رہے ہیں، ہمیں بھی آنند بھوگ سے بھر دیجئے!

ے ارض وسَما میں بھر رہے افضل واعلےٰ تر پربھو
خوشحال جس سے ہوں سدا زر مال ایسا دو پربھو

अध्याय 6 आरण्य काण्ड खण्ड 1

586 पृथ्वी और द्यौ लोक के स्वामी

हे इन्द्र परमेश्वर हमें ऐसा कीर्तिमान कीजिए कि जिस से हम यशस्वी हों हम योग मार्ग पर बढ़ते जाएं जिस की हमें तीव्र इच्छा रहती है अपने न्याय वज्र के द्वारा पापों के विनाशक ईश्वर आप भू लोक और द्यो लोक दोनों में भर रहे हैं हमें भी सांसारिक और पारलौकिक आनन्द को दीजिए ।

भर रहे भू लोक में द्यौ लोक में प्यारे प्रभो ।
भोग योग में तृप्त हों ऐसी कृपा कर दो विभो ।।

منتر نمبر ۵۸۷ کھنڈ ۱

آتم سَمَرپن کرنے وَالوں کو آنند کر دیتا ہے!

२ ३ २ ३ १ २ ३ १र २र
इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधि
३ २ ३ १ २ ३ १ २
क्षमा विश्वरूपं यदस्य ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३
ततो ददाति दाशुषे वसूनि
२ ३ २ ३ १ २ ३ २
चोदद्राध उपस्तुतं चिदर्वाक् ॥२॥

وہ اِندر راجہ ہے جگت میں بسنے والے تمام انسانات وغیرہ کا، دھرتی پر جو دھن مال وغیرہ ہے، وہ سب کچھ اُسی ایشور راجہ کا ہے، ان دولتوں کو وہ اُن کو دیتا رہتا ہے، جو اپنے آپ کو اُس کے حوالے یا اُس کی نیاز نذر کرتے رہتے ہیں۔ من چاہی روحانی دولت کو بھی اُنہیں کو دیتا رہتا ہے۔

ے وہ ہے اِندر جگت کا راجہ اُن کو سب کچھ دیتا جاتا
شرن میں اُن کی جو جاتے ہیں اندر پربھو بھرتا جاتا

587 आत्म समर्पित को आनन्दित कर देते हैं

वह इन्द्र राजा है विश्व जगत का और प्राणीमात्र का। धरती पर जो सम्पदायें है वह सब उसी परमेश्वर राजा की हैं। इन सम्पदा को वह उन्हें देता रहता है जो शरणागत होकर उस को आत्म समर्पण कर देते हैं। उनके लिए मन चाही अध्यात्मिक सम्पत्ति भी परमेश्वर उनको दे देता है।

वह है इन्द्र जगत का राजा उनको सब कुछ देता जाता।
शरणागत में उनको जो जाते हैं वह भरता जाता ॥

منتر نمبر ۵۸۸ کھنڈ ۱

اِسی دُنیا سے ہی اِیشور موکھش آنند دیتا ہے!

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २३क २र
यस्येदमा रजोयुजस्तुजे जने वनं स्वः ।
१ २ ३ १ २ ३ २
इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत् ॥३॥

تمام لوک لوکانتروں میں آپسی تعلق جوڑنے والے جس پرماتما کا خوبصورتیوں سے بھرا یہ دُنیا رُوپی باغ ہرا بھرا ہو رہا ہے، اسی کے ذریعے سے ہی وہ محافظِ کُل پرماتما عارفوں کو مُکتی یا نجات کا مہان سُکھ بخشش کرتا ہے۔

ے اِس رنگ رنگیلی دُنیا کا نِرمان کیا جس ایشور نے
اِسکے ہی ذریعے موکھش آنند بھگتوں کو دیا جگدیشور نے

588 संसारिक मार्ग से ही मोक्ष की प्राप्ति

सभी लोक लोकान्तरों में परस्पर सम्बन्ध जोड़ने वाले, जिस परमात्मा का सौंदर्य पूर्ण यह विश्व बग़ीचा लह लहा रहा है। इसके द्वारा ही वह सर्व रक्षक भगवान, मुमुक्षु व उपासकों को मोक्ष प्रदान करता है।

अद्‌भुत सुन्दर सृष्टि का निर्माण किया जिस ईश्वर ने ।
इसके ही द्वारा मोक्ष आनन्द भक्तो को दिया जगदीश्वर ने ।

منتر نمبر ۵۸۹ کھنڈ ۱

تینوں بندھنوں کی گرفت سے چُھڑائیے

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १
उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं
२ ३ १ २
वि मध्यमं भथाय ।
१ २ ३ २ ३ १र
अथादित्य व्रते वयं
१र ३ २ ३ १ २
तवानागसो अदितये स्याम ॥४॥

ہے ورون بُرائیوں کو نکالنے والے اعلیٰ ترین ایشور! ہم سے اُتم، درمیانے اور نچلے تینوں طرح کی گرفت کو دُور کیجئے۔ آپ اوِدیا، اندھکار کو دُور کرنے والے آدتیہ مہان سُورج ہیں،

آپ کی کرپا سے ہم اِن تینوں گرفتوں سے چھوٹ کر گناہوں سے مبرّا، پاکیزہ، شُدھ ہو کر آپ کے ویدک برتوں (قواعد و ضوابط) میں چلتے ہوئے موکھش کے دائمی سُکھ آنند کو حاصل کرنے کے لائق بن سکیں۔

نوٹ:۔ سَتھُول (کثیف)، سوکھشم (لطیف) اور کارن (بنیادی) تینوں اجسام کے بندھن (۱) اوِدیا (جہالت)، (۲) راگ دویش وغیرہ، (۳) اسمتا یعنی ہمیشہ جیتے رہنے کی خواہش۔ (۱) عقل، (۲) نفس اور (۳) حواسِ خمسہ اِن تینوں سے چھوٹ کر بھگوان کے نیموں میں چلتے ہوئے ہی مُکتی یا نجات کے قابل ہو سکتے ہیں!

ے اُتم مدھیم ادھم ہمارے۔ کاٹو بندھن ورُن پیارے

589 तीनों बन्धनों से मुक्त कीजिए

पाप निवारक वरुण परमेश्वर ! हमें उत्तम मध्यम और अधम तीनों बन्धनों से मुक्त कीजिए। आप अविद्या अन्धकार को दूर करने वाले सहस्रों सूर्य के भी महान सूर्य हैं। आपकी कृपा से हम इन तीनों से छूट कर पाप रहित शुद्ध पवित्र होते हुए आप के वैदिक व्रतों को धारण कर मुक्ति के शाश्वत आनन्द को प्राप्त कर सकें।

टिप्पणी : स्थूल सूक्ष्म और कारण तीनों शरीर के बन्धन और (1) अविद्या (2) राग द्वेष आदि (3) अस्मिता अर्थात् मृत्यु का भय और सदा जीने की इच्छा। तथा बुद्धि, दस इन्द्रियां और मन इन तीनों के पाप बन्धनों से छूट कर ईश्वरीय नियमों में चलते हुए ही मोक्ष हो सकता है।

उत्तम मध्यम, अधम हमारे।
काटो बंधन वरुण प्यारे॥

منتر نمبر ۵۹۰ کھنڈ ۱

ہماری فتوحات قابلِ تعریف ہوں!

त्वया वयं पवमानेन सोम भरे
कृतं वि चिनुयाम शश्वत् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः
सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥५॥

جگت پِتا پرماتما! آپ ہمیں پاک وصاف بنا کر نیکی اور بدی کے جھگڑوں میں اپنی مدد سے ہی فتوحات دِلاتے ہیں، ایسی فتح یابیاں ہم ہمیشہ کرتے رہیں، جس سے ہمارے دوست، قابلِ تعظیم اُستاد، زمین پر بسنے والے سبھی ذی روح، ہمارے دِلوں کے سمندر، دھرتی ماتا کی طرح اَنّ سے پالن کرنے والے ماتا پِتا اور روشنِ عالم بزرگوار ہماری اِن فتوحات کی تعریف کرتے ہوئے ہمارے حوصلے بلند کرتے رہیں۔

ے
پاک عالم سوم جو دیتے ہیں فتح یابیاں
نیک و بَد کے جھنجھٹوں پر ہوتی ہیں وہ حاویاں

590 हमारी विजय यात्राएं प्रशंसनीय हों

जगत पिता परमात्मन् ! आप हमें शुद्ध पवित्र बना कर देवासुर संग्राम में हमें विजय दिलाते हैं। ऐसी विजय यात्रा आप की कृपा से हम सदा करते जाएं, जिस से हमारे मित्र, आदरणीय आचार्य भूमि माता के समान अन्नादि से पालन करने वाले माता पिता, धरती पर बसने वाले सभी प्राणी और विद्या आदि सत्य ज्ञान से आयुष्मान विद्वान, हमारी इन विजय यात्राओं की प्रशंसा करते हुए उत्साह बढ़ाते रहें।

शांत सोम स्रोत ईश्वर जय कराते जो हमारी ।
देवासुर संग्राम से कर मुक्त, देते शांति प्यारी ॥

منتر نمبر ۵۹۱ کھنڈ ۱

عارفوں کو اِیشور کی ہدایت

इमं वृषणं कृणुतैकमिन्माम् ॥६॥

بدی اور نیکی میں فتح حاصل کرنے والے عابدو! اِن فتوحات کے لئے سُکھوں کی کی بارش برسانے والے مجھ خدا وند کریم کو ہی اپنا واحد سچا دوست اور رہنما سمجھو!

شعر
ہے عارفو ملی ہے جو تم کو کامرانی
بخشش ہے یہ میری تم پہ ہے نگہبانی

591

भगवान का उपदेश

देवासुर संग्राम में विजय प्राप्त करने वाले उपासको ! इन विजयों के लिए सुख वर्षक मुझ न्यायकारी दयालु परमात्मा को ही अपना अद्वितीय सच्चा सखा और प्रेरक समझो ।

हे भक्त जन मिली है जो तुमको विजय रानी ।
वरदान है यह मेरा है तुम पे निगहबानी ।

منتر نمبر ۵۹۲ کھنڈ ۱

دَولتِ نجات کے داتا

स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।
वरिवोवित् परिस्रव ॥७॥

ہے پربھو! آپ ہمارے اندر بیٹھ کر یوگ یگ کی طرف مائل کرنے والے ہیں نَدیوں سے چھڑا کر ہماری بہبودی کے لئے زندگی بخشش ہو کر دائمی آنند کی دھارا کو بہاتے رہیں کیونکہ آپ ہی دولتِ نجات کے داتا ہیں۔

شعر
یوگ دھن سے موکش تک پہنچانے ہو بھگوان ہیں ۔ آپ کی بخشش سے آنند کی دھاریں بہیں

592 मोक्ष दाता

हे प्रभु आप अर्न्तयामी रूप हो कर अन्दर बैठे हुए हमें योग मार्ग की ओर प्रेरणा देते रहते हैं। कृपया पापों से छुड़ा कर हमारी उन्नति के लिए प्राणदाता रूप में हमारे अन्दर आनन्द की धारा को सदा बहाते रहें। आप ही मोक्ष सम्पदा के दाता हैं।

योग धन से मोक्ष तक पहुंचाते हो भगवान हमें
आप के वरदान से आनन्द की धारें बहें ॥

منتر نمبر ۵۹۳ **بھگوان کی دولتوں کو بانٹ کھائیں!** کھنڈ ۱

३ १र २र ३१उ ३ २ ३ १ २
एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम् ।

१ २
सिषान्सतो वनामहे ॥८॥

شانتی کے ساگر پرماتما! ہم آپ کے عطا کئے غلّہ اور سبھی زر و مال کو آپ کی ہی نذر کے لئے سب کو بانٹتے ہوئے مل کر اسے بھوگ کریں اور آپ کی عبادت کرتے رہیں۔

ہم سب مانش آپ کے دھن کو، پریم سے بانٹیں سب جن جن کو
مل کر کھائیں اور کھلائیں، بھگت بنیں تیرے گن گائیں

593 भगवान की सम्पदा को बांट कर खाएं

शांत रूप परमेश्वर ! हम आपके प्रदान किए धन धान्य को आप के ही समर्पण कर सब को बांटते हुए मिल कर इसे भोग करें और आपकी भक्ति में लीन रहें।

हम सब मानुष्य आपके धन को प्रेम से बांटें सब जन-2 को।
मिल कर खाएं और खिलाएं भक्त बनें तेरे गुण गाएं।

کھنڈ ۱ منتر نمبر ۵۹۴

بھگوان کا اُپدیش ہے!

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
देवेभ्यो अमृतस्य नाम ।
२ ३ १ २ ३ २उ
यो मा ददाति स
३ १ २ ३२उ ३ १ २ ३ १ २
इदेवमावदहमन्नमन्नमदन्तमद्मि ॥६॥[६।१]

کہ مَیں ہی سَتیہ گیان (صحیفۂ الٰہی) کا سب سے پہلے جنم داتا ہوں، سُورج، چندر وغیرہ دیوتاؤں سے بھی مَیں پہلے ہوں، موکھش کا دینے والا ہوں، جو عابد اپنے کو میرے حوالے کر دیتا ہے، وہی میرے وصل کو حاصل کر لیتا ہے، اُس کی مَیں رُوحانی خوراک بن جاتا ہوں، اور جو صرف قُدرتی غلّے اور دھن دَولت کو بھوگتا رہتا ہے اُسے مَیں کھا جاتا ہوں۔ یعنی وہ زندگی اور موت کے چکر میں ہمیشہ چلتا رہتا ہے۔

ے ایشور کا اُپدیش ہے لوگو! مَیں دیوؤں کا دیو ہُوں پہلے
نذر مجھے اپنی کر کے تُم جنم مرن سے رہو اکیلے

594 परमेश्वर का वाक्य है

कि मैं ही सत्य ज्ञान का सर्वप्रथम जन्म दाता हूं। सूर्य चन्द्रमा आदि देवों से भी पहले और मोक्ष का देने वाला हूं। जो उपासक मुझे समर्पित हो जाता है, वही मुझे पा लेता है। मैं ही उस का अन्न बन जाता हूं और जो केवल प्राकृतिक धन धान्य को भोगता रहता है उसे मैं खा जाता हूं। यानि वह जीवन मरण के जाल में फँसा रहता है।

ईश्वर का उपदेश है लोगो ! मैं देवों का देव हूं पहले।
मुझे समर्पित होकर के तुम जन्म मरण से रहो अकेले ॥

منتر نمبر ۵۹۵ تینوں فطرتوں میں رُوحانی نور کھنڈ ۲

त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च ।
परुष्णीषु रुशत् पयः ॥१॥

ہے پرمیشور! آپ نے ہمارے اندر تموگن، رجوگن اور ساتوک گنوں (اوصافِ حمیدہ) میں گیان کی روشنی کو دینے والا دودھ بھر رکھا ہے۔

تشریح:- تینوں فطرتوں تم، رَج اور ستو میں ساتوک اوصاف تو ہوتے ہی ہیں، لیکن وہ اُبھرتے ہیں گیان کی کمی بیشی سے، گیان کی روشنی بڑھ جانے پر ستو گُن دوسروں سے اُوپر آجاتے ہیں اور یوگ کی مشق سے تمَ اور رَج یعنی بُرے، ناپاک اور انتہائی غصیل خیالات دب کر ستو گن یعنی اوصافِ حمیدہ چمک اُٹھتے ہیں، جس سے بھگوان کے مِلن کا راستہ عارف کے لئے صاف ہو جاتا ہے۔

ع
فطرتیں انسانی تینوں جس میں جکڑا ہے منش
گیان کی شمع کو روشن کرکے تر جاتا منش

595 प्रकृति के तीन गुण खण्ड 2

इन्द्र परमेश्वर आपने हमारे अन्दर तमोगुण, रजोगुण और सात्विक गुणों में ज्ञान प्रकाश रूपी दूध भर रखा है ।

व्याख्या—इन तीनों गुणों में सात्विक भाव ज्ञान की न्यूनता अधिकता से दबते और उभरते रहते हैं । ज्ञान की ज्योति बढ़ जाने पर सत्व गुण दूसरों से ऊपर आ जाते हैं और योगाभ्यास से तम और रज यानि अपवित्र ओर अशुभ पापमय क्रोधी चित्त वृत्तियां या विचार दब कर सत्व गुण चमक उठते है जिससे प्रभु मिलन का मार्ग साफ हो जाता हे ।

प्रकृति के तीन गुण जिन में यह जकड़ा है मनुष्य ।
ज्ञान की ज्योति जला तर जाता है इन पर मनुष्य ॥

منتر نمبر ۵۹۶ کھنڈ ۲

یوگی وِدوان رُوحانیت کی شمع کو جلائے رکھیں

अक्रुरुचदुषसः पृश्निरग्रिय
उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः ।
मायाविनो ममिरे अस्य मायया
नृचक्षसः पितरो गर्भमादधुः ॥२॥

سُورج کی طرح سب طرف جس کا منہ ہے، اُس روشن بالذّات پرماتما نے آغازِ دُنیا میں رُوحانی نُور اور قدرتی اُوشا کی روشنی کو بھی چمکایا اور وید گیان کا صحیفہ عطا کیا، لوک لوکانتروں میں چلنے کی طاقت بخشی، جس سے عارف اور یوگی وِدوان بُدھی مان یا دانشور بنتے ہیں، وہی یوگی علمِ عرفان کو پا کر سب لوگوں کے لئے رُوحانیت کو کھولتے ہیں۔ اُنہی کے گربھ رُوپی دِلوں یا منوں میں بھگوان سدا بھرا رہتا ہے۔

؎ دُنیا کو چلانے والے پربھوُ یوگی کو گیان سے بھر دیتے
اُس شمعِ نُور کو پا کر وہ سب کا کلیان ہیں کر دیتے

596 योगी विद्वान अध्यात्म प्रकाश देते रहें

सूर्य की भांति सर्वत्र जिस का मुख है उस ज्योति स्वरुप परमेश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में अध्यात्म प्रकाश और प्राकृतिक उपा को भी रोशन किया। तथा वेद ज्ञान का उजाला किया। लोक लोकान्तरों में भ्रमण की शक्ति दी ; जिससे उपासक विद्वान और बुद्धिमान बनते हैं। वही योगी अध्यात्म का प्रकाश सब के लिए देते रहें जिन के गर्भ रुप मनों में भगवान सदा भरा रहता हैं।

संसार चलाने वाले ईश योगी को ज्ञान से भर देते।
उस ज्योति को पाकर के वे सब का कल्याण है कर देते ॥

منتر نمبر ۵۹۷ ہمارے وسائل کے ذریعے ہی کھنڈ ۲

ایشور ہمیں بدی سے چھڑاتا ہے!

इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा ।
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥३॥

پرمیشور ہی اپنے ازلی قانونِ قدرت کے ذریعے حواسِ خمسہ یعنی گیان اور کرم اندری رُوپی گھوڑوں کے ساتھ اُن کے کاموں میں ساتھی بن کر ایسا گھُل مل جاتا ہے، کہ جس سے بدی پر اپنی طاقت سے حاوی ہو کر ہمیں چمتکاری معلوم ہوتا ہے، مثلِ معجزہ۔

کام کارُو اِندریوں کے ساتھ مل جاتا ہے اِیش
بدیوں پر قابو جما اُن سے بچا لیتا ہے اِیش

597 इन्द्रिय मन द्वारा ही ईश्वर हमें निष्पाप करता है

परमेश्वर ही अपने विधान के द्वारा ज्ञान और कर्म इन्द्रिय रुपी घोड़ों के साथ उनके कर्मों में साथी बन कर ऐसा घुल मिल जाता है कि जिस से पापों पर विजय प्राप्त कर हमें चमत्कारी प्रतीत होता है ।

काम कारू इन्द्रियों के साथ मिल जाता है ईश ।
पापों पर सत्ता जमा उनसे बचा लेता है ईश ।।

منتر نمبر ۵۹۸ کھنڈ ۲

نیکی اور بدی کی جنگ میں ہمارے محافظ بنیں

इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्त्रप्रधनेषु च ।
उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥४॥

ہے اِندر! ہر وقت اندر چلنے والے دیو اسُر سنگرام (نیکی بدی کی جنگ) میں اور ہزاروں ایسے سنگراموں میں آپ ہماری رکھشا کیجیے۔ آپ بُرائیوں کو روندنے

کے لئے اُگر روپ ہیں، اِنہی طوفانی طاقتوں کے ذریعے ہماری حفاظت کیجیے۔

ے دیواسُر سنگرام کے جھگڑے، چلتے رہتے گھر کے تگڑے
اِن سے ایشور ہمیں بچاؤ، اپنا اُگر رُوپ دکھلاؤ

598 देवासुर संग्राम में हमारे रक्षक हों

हे इन्द्र ! हर समय अन्दर चलने वाले देवासुर संग्राम में और हजारों ऐसे संग्रामों में आप हमारी रक्षा कीजिए। पापों को पदाक्रान्त करने के लिए आप उग्र रुप हैं इन्हीं उग्र शक्तियों के द्वारा ही हमारी रक्षा कीजिए।

देवासुर संग्राम के झगड़े चलते रहते घेरे तगड़े।
इनसे ईश्वर हमें बचाओ उग्र रूप अपना दिखलाओ ॥

منتر نمبر ۵۹۹ **پرمیشور یگیوں میں افضل ترین یگیہ ہے** کھنڈ ۲

प्रयश्च यस्य संप्रथश्च
नामानुष्टुभस्य हविषो हविर्यत् ।
धातुर्द्युतानात् सवितुश्च विष्णो
रथन्तरमा जभारा वसिष्ठः ॥५॥

جس پرمیشور کا نام پرتھ اور سپرتھ ہے یعنی وسیع ترین سب اطراف میں پھیلاؤ ہے، جو یگیوں میں افضل ترین یگیہ ہے۔ جس کی آہوتی آتما اگنی میں پڑنے سے ہی یہ منوّر ہو سکتی ہے، اُس گیان کے علمبردار، روشنی کے مینار ہر جگہ حاضر ناظر سب کو پریرنا دینے والے پرمیشور میں عارف، یوگی دھیان لگانے سے ہی اِس شریر رُوپی گاڑی کے ذریعے اِس بھوساگر یعنی زندگی موت کے جھنجھٹوں کو پار کر لیتا ہے۔

ے پھیلاؤ ہر طرف ہے، یگیوں کا یگیہ افضل
اُس میں رما کے دُھونی تر جاتا یوگی افضل

599 यज्ञों में परम यज्ञ परमेश्वर है

जिस परमेश्वर का नाम प्रथ सप्रथ है अर्थात् विशालतम जिस का फैलाव है वही यज्ञों में परम यज्ञ है। और जिस की हवि रुप आहुति आत्म अग्नि में पड़ने से ही यह आत्मा ज्योतिमय हो सकती है उस ज्ञान ज्योति के स्तम्भ सर्वव्यापक और सर्व प्रेरक परमेश्वर में योगी उपासक ध्यान लगाने से ही इस शरीर रुपी रथ के द्वारा भव सागर से तर जाता है।

यज्ञों का यज्ञ ईश्वर फैला हुआ है सब जा।
उस में रमा के धूनी योगी है भव से तरता ॥

منتر نمبر ۶۰۰ **ہمارے خانۂ دِل میں ظاہر ظہور ہوں** کھنڈ ۲

३ १ २उ   ३ १ २ ३ २ ३ १ २
नियुत्वान् वायवा गह्ययं शुक्रो अयामि ते ।
१ २   ३ २ ३२
गन्तासि सुन्वतो गृहम् ॥६॥

ہوا کے سمان سب کو زندگی دینے والے پرمیشور! آپ ہزاروں لاکھوں طاقتوں کے مالک ہو، نوازش مان کر میرے اندر ظاہر ظہور ہوویں۔ آپ کی نظرِ کرم سے میری زندگی پاک و صاف ہے۔ اور مجھے یہ یقین بھی کامل ہے کہ آپ اپنے عابد کے خانۂ دِل میں ضرور پہنچتے ہیں۔

ے یہ یقین کامل ہے مجھ کو تُم بھگتوں کے گھر جاتے ہو
نظرِ کرم سے اپنی اُن کے سارے کشٹ مٹا آتے ہو

600 हमारे हृदय मन्दिर में प्रगट होवें

वायु के समान सबके प्राणधार परमेश्वर ! आप असंख्य शक्तियों के स्वामी हैं कृपा करके मेरे अन्दर प्रगट होवें, आपकी दयालुता से मेरा हृदय शुद्ध पवित्र है और मुझे यह निश्चय है कि आप अपने उपासक के हृदय मन्दिर में अवश्य ज्योतिर्मय होते हैं।

यह निश्चय पक्का है मुझको तुम भक्तों के घर जाते हो।
दया दृष्टि से अपनी उनके सारे कष्ट मिटा आते हो॥

منتر نمبر ۶۰۱ ارض وسما کو پیدا کر کے پھیلانے والے کھنڈ ۲

१२ २२ ३ १ २ ३ १ २
यज्जायथा अपूर्व्य मघवन् वृत्रहत्याय।
१ २ ३ १ २ ३ २ १
तत् पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्ना
३ १२ २
उतो दिवम् ॥७॥[६१२]

ہے ازلی واحد لاشریک پرمیشور! آپ پرلے کے اندھکار کو مٹانے کے لئے ارض وسما کو پیدا کر کے اُس کو توسیع دیتے ہیں اور دونوں پرتھوی اور دیو کو دھارن بھی کرتے ہیں۔

ے اندھکار پرلے کا چیر کر سرشٹی کو جب کرتے ہو
پیدا کر کے ارض وسما کو وسعت اِن کی کرتے ہو

601 द्यौ और पृथ्वी को फैलाने वाले

अनादि अद्वितीय परमेश्वर आप प्रलय के अन्धकार को मिटाने के लिए द्यौ और पृथ्वी को उत्पत्ति करके उसको सब ओर फैलाते हो और इनको धारण भी करते हो।

अन्धकार प्रलय का चीर कर सृष्टि को जब करते हो।
द्यौ और पृथ्वी पैदा कर फलाव इन का करते हो॥

منتر نمبر ۶۰۲ یرشم تیج یا اپنا خدائی نور بخشیں! کھنڈ ۳

१ ३ २ ३ २ ३ १२ २२ ३ २ ३ १२ २२
अपि वर्चो अथो यशोऽथो यज्ञस्य यत्पयः।
३ २ ३ १ २ ३ १२ २२
परमेष्ठी प्रजापतिर्दिवि द्यामिव दृंहतु ॥१॥

روح کے اندر روح پرورسب کا پالک پرمیشور اپنا خدائی نور بخشش کر کے یوگ دھیان کے ذریعے میرے اندر نجات کے جذبہ کو مضبوط کر دیں، ایسے جیسا آسمان میں سورج اور تاروں کو مضبوطی سے باندھ رکھا ہے۔

نورِ تجلّی دو اپنا خداوند
مکتی کا دل میں لگا دیجئے پیوند

602 **ब्राह्म तेज स्थापित करें**

जीव में निवास करने वाला प्रजापति मुझ में ब्राह्म तेज यश और ध्यान यज्ञ के सार मोक्ष को ऐसा दृढ़ स्थापित करें जैसे लोक में सूर्य और तारागण को दृढ़ किया है।

ब्रह्म तेज अपना दो मुझको।
और मोक्ष को भी दृढ़ कर दो॥

منتر نمبر ۶۰۳ — کھنڈ ۳

مغرور انسانوں اور خیالات کو دبانے والے

सं ते पयांसि समु यन्तु वाजाः
सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः ।
आप्यायमानो अमृताय सोम
दिवि श्रवांस्युत्तमानि धिष्व ॥२॥

ہے سوم جگت اُتپادک! آپ کا پوتر دان موکھش پھل ہمیں حاصل ہو، جسمانی ذہنی، روحانی اور ویریہ بل کی طاقتیں حاصل ہوں۔ آپ امرت جیو آتما (ازلی روح) کی ترقی کے لئے ہمارے مغرور برے خیالات اور مغرور انسانوں کو دبانے رہتے ہیں ازراہِ نوازش روزمرہ ہمیں نیک نامی کی شہرت بخشتے رہیئے!

سبھی طاقتیں اور موکھش کی بخشش ہم کو دو ابھی رام
مغروری اہنکاری وِرتیوں کو شکست دے کرتے ہو رام

603 **क्रूर वृत्तियों को दबाने वाले**

हे सोम जगत उत्पादक ! आपका पवित्र दान मोक्ष फल हमें प्राप्त हो, शारीरिक मानसिक आत्मिक और वीर्य बल शक्तियां प्राप्त हों । आप अमृत जीवात्मा की उन्नति के लिए हमारी अभिमानी चित्त वृत्तियों को और अभिमानी मनुष्यों को दबाते रहते हैं । कृपया प्रतिदिन हमें यश कीर्ति देते रहें ।

सभी शक्तियां और मोक्ष का दान हमें दीजे अभिराम ।
अभिमानी अंहकारी वृत्तियों को पराजय दे करते हो राम ।

منتر نمبر ۶۰۴ **شکریہ، صد بار ہزار بار** کھنڈ ۳

त्वमिमा ओषधीः सोम
विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः ।
त्वमातनोरुर्वा३न्तरिक्षं
त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ ॥३॥

سوم پرمیشور آپ نے ہی ان سبھی اَنّ وغیرہ اوشدھیوں، من (چِت) کے اندر ساتوِک شُدھ ورتیوں کو پیدا کیا، جن کے ذریعے سب کا پالن پوشن اور خیالاتِ بد کی بھی پریشانیاں دُور ہوتی ہیں، گئو آدی جانوروں اور پاکیزہ کلام وید کی بانی کو ہمارے لئے پیدا کیا۔ جس سے دودھ، گھی وغیرہ اور صحیفۂ پاک (وید بانی) کے نُور سے روشن ہو رہے ہیں، جہاں آپ نے وسیع ترین آسمان (خلا) بنایا، وہاں دِل کا آسمان (ہردیہ آکاش) بھی بنایا، جس میں ساری دُنیا بستی ہے۔

اُور دُنیا کے بیشمار ارواح کا پیار اُور محبّت رہتی ہے، اُور جہاں سُورج دیوتا کی روشنی سے اندھکار کو دُور کیا، وہاں گیان کی روشنی سے جہالت کو ہٹایا، شکریہ صد بار ہزار بار۔

ع سرچشمہ علمِ عرفاں خالق ہو سب جہاں کے
اَرض و سما کے دیووں، دُنیا کے رُوح رواں کے

604 **शत्-शत् बार धन्यवाद**

सोम परमेश्वर आपने ही अन्नादि औषधियों मन चित्त के अन्दर सात्विक शुद्ध वृत्तियों को पैदा किया जिन के द्वारा सब का पालन पोषण होकर दूषित विचार भी दूर होते हैं। गौ आदि पशुओं को और पावन वेद की वाणी को हमारे लिए दिया जिससे दूध घी आदि और वेद ज्ञान से ज्योतिरमान हो रहे हैं। आप ने ही बाहर का विशाल अंतरिक्ष और हृदय आकाश भी अन्दर ऐसा बनाया कि जिस में सारे विश्व के प्राणियों का भाई चारा और प्यार बसता है। सूर्य देवता के प्रकाश से अन्धकार को दूर किया। ज्ञान के प्रकाश से अविद्या को हटाया। शतश: धन्यवाद सहस्रश: धन्यवाद।

वेद ज्ञान के स्वामी हो मालिक खालिक पालक सब के
द्यौ पृथिवी आकाश पशु मानुष असुरों और देवों के।

منتر نمبر ۶۰۵ — کھنڈ ۳

کائناتِ عالم کا پُروہت

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम् ॥४॥

پرماتما دُنیا کے یگ کا پُروہت ہے اُور اکیلا ہی اسے دھارن کر رہا ہے، دیو اُور داتا ہے، بھوگ اُور نجات دہندہ ہے، عابد کی عبادت کی نذر کو قبول

کرتا ہے، ہر ایک موسم کو بنانے والا اور سب کا سربراہ ہے، دُنیا کے سبھی رتنوں سورج، چندر، سونے، چاندی، ہیروں سے بھری دھرتی اور لعل وگوہر، جواہر موتیوں سے بھرے سمندروں کو دینے والا رتن دھام وہی ہے۔ میں اُسی کی ہی عبادت، حمد و ثنا کرتا ہوں۔

سے اگنی تم ہو یگ پُروہت جس سے چلتا ہے جگ سارا
دینے لینے والے "ہوتا" رتن دھام ہو، بھگت پُکارا

605 **जगत का पुरोहित**

परमात्मा विश्व यज्ञ का पुरोहित है और इसे धारण कर रहा है। देवों का देव और दाता है। भोग और मोक्ष को देता है उपासक की उपासना और भेंट को स्वीकार करता और प्रत्येक ऋतुओं का निर्माता है। संसार के सभी रत्नों सूर्य चन्द्रमा, सोना चांदी, हीरे मोती, लाल जवाहर से भरे समुद्रों को देने वाला रत्न धाम वही है। मैं उसकी ही उपासना करता हूं।

अग्नि ! तुम हो यज्ञ पुरोहित जिस से चलता है जग सारा
देने लेने वाले "होता" रत्न धाम हो भक्त पुकारा।

منتر نمبر ۶۰۶   کھنڈ ۳

اُوم نام کی عظمت

१ २ ३ २उ ३ २ ३
ते मन्वत प्रथमं नाम गोनां
२ ३ १ २ ३ १र २र
त्रिः सप्त परमं नाम जानन् ।
१ २ ३ २ ३क २र ३ २
ता जानतीरभ्यनूषत द्या
३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
आविर्भुवन्नरुणीर्यशसा गावः ॥५॥

وِدوان، اُپاسک، عابد، عارف ویدمیں بیان کردہ ایشور کے افضل نام "اوم" کو مانتے ہیں، ویدمنتروں کے ۲۱ چھند (۳×۷) اُسی "اوم" کو بیان کرتے ہیں، جو

اس طرح ہیں۔ گایتری، اُشنِک، انوشٹپ، برہتی، پنکتی، ترشٹپ، جگتی یہ سات
اتی جگتی، شکوری، اتی شکوری، اشٹی، اتی اشٹی، دھرتی، اتی دھرتی یہ سات اور
کرتی، پرکرتی، اکرتی، وکرتی، سنسکرتی، اتی کرتی، اُت کرتی یہ سات۔ سب مل کر
۲۱ ہیں۔

دھرتی کے باسی اوم نام کو ہی اعلےٰ وافضل جان کر جاپ کے ذریعے اُس کی
حمد وثنا کرتے ہیں۔ اس پرکار عابد و عارف نیک شہرت سے دُنیا میں عزت و آبرو
پاتے ہیں۔

۵

اوم نام سب سے بڑا اس سے بڑا نہ کوئے
جو اس کا سمرن کرے شدھ آتما ہوئے

606

ओम् नाम की महिमा

विद्वान उपासक वेदों में लिखे ओम् नाम को ही मानते हैं वेद मन्त्रों के इक्कीस छन्द (3×7) उसी ओम् नाम का वर्णन करते हैं जो इस प्रकार हैं—(1) गायत्री (2) उष्णिक (3) अनुष्टुप (4) बृहती (5) पंक्ति (6) त्रिष्टुप (7) जगती—(1) अति-जगती (2) शक्वरी (3) शक्वरी (4) अष्टी (5) अतिअाष्टी (6) धृति (7) अति धृति—(1) कृति (2) प्रकृति (3) आकृति (4) विकृति (5) संस्कृति (6) अतिकृति (7) उत्कृति यह हैं वेद मंत्रों के इक्कीस छन्द ।

धरती के वासी ओम् नाम को ही सर्वोत्तम सर्वश्रेष्ठ जान कर जाप के द्वारा उसकी स्तुति उपासना करते हैं, इस प्रकार उपासक यश और कीर्ति को प्राप्त होते हैं ।

ओम् नाम सबसे बड़ा इस से बड़ा न कोय ।
जो इस का सिमरन करे शुद्ध आत्मा होय ॥

منتر نمبر ۶۰۷   کھنڈ ۳

آخر تو پیارے معبود سے
وصال ہو ہی جاتا ہے!

२ ३ १र   २र   ३   १
समन्या यन्त्युपयन्त्यन्याः
२ ३ २ ३ २ ३क २र
समानमूर्वं नद्यस्पृणन्ति ।
२ ३   २ ३   १ २
तमू शुचिं शुचयो
३ १ २ ३ १र २र ३ १ २ ३   १ २
दीदिवांसमपान्नपातमुप यन्त्यापः   ॥६॥

کئی ندیاں سفر کرتی ہوئیں اپنی منزل سمندر تک پہنچ جاتی ہیں تو کئی راستے میں رہ جاتی ہیں، اِسی طرح کئی پاکیزہ رُوحیں چلتی چلتی اپنی منزل مقصود بھگوان تک پہنچ جاتی ہیں اور کئی عبادت وغیرہ حمد و ثنا تک رہ جاتی ہیں، لیکن یہ دونوں ندیاں اور پوتر آتمائیں سچے دل سے اپنے آپ کو سمندر یا پرم پتا پرمیشور کو سونپ چکی ہوتی ہیں۔ دریں چہ شک مسلسل موت اور پھر جنم کے بعد آخر تو اپنے پیارے معبود سے وصال ہو ہی جاتا ہے!

ے   اِدھر اُدھر سے چلتی ندیاں رہ جاتیں ساگر میں ملتیں
اِسی طرح پاکیزہ رُوحیں ایشور کو ہیں پا لیتیں

607 अन्ततः प्यारा सखा ईश्वर मिल ही जाता है

कई नदियां यात्रा करती हुई अपने घर सागर तक पहुंच जाती हैं और कई मार्ग में रह जाती हैं। इसी प्रकार कई पवित्र आत्माएं चलती-चलती अपने घर भगवान तक पहुंच जाती हैं और कई स्तुति प्रार्थना उपासना तक रह जाती हैं। किन्तु यह दोनों नदियां और पवित्र आत्मायें सच्चे हृदय से अपने आप को समुद्र व परमपिता परमेश्वर को सौंपी जा चुकी होती हैं। इस में कुछ सन्देह नहीं। इन्हीं यात्राओं के भाग्य से अनेक बार जन्म और मृत्यु के चक्कर से छूट कर आखिर तो अपने प्यारे सखा भगवान से मिल ही जाती हैं।

इधर उधर से चलती नदियां, रह जातीं सागर में मिलती
इसी प्रकार पवित्र आत्मा रुकतीं, ईश्वर को पा लेतीं ।

منتر نمبر ۶۰۸ جہالت کی رات سخاوت ہوگئی کھنڈ ۳

आ प्रागाद्भद्रा युवतिरह्नः केतून्त्समीर्त्सति ।
अभूद्भद्रा निवेशनी
विश्वस्य जगतो रात्री ॥७॥

جہالت کی رات نے جوانی میں بھرپور حملہ کیا اور ہم پھنس گئے، لیکن بھر تباہی و بربادی کے نتائج سے ہوش میں آئے اور ترغیب ملی کہ اُٹھو! سحر کا تارہ نمودار ہوگیا گیان کی روشنی مل گئی، دن کا اُجالا ہوگیا سویا ہوا پرانی جگت اُٹھ بیٹھا، عارفوں کو راحت نصیب ہوئی۔ آہا! یہ نسیم سحری کی برکات۔

رات سُلاتی بڑے پیار سے اور جگانے میں کتراتی
پربھاتی تارے کو دیکھ کر نئی دُلہن سی شرما جاتی
مل جاتا بھگتوں کو سہارا۔ اِس دم ملتا پریتم پیارا

608 अविद्या रुपी रात सौभाग्य हो गई

अविद्या की रात ने युवा अवस्था में भरपूर आक्रमण किया और हम फंस गए किन्तु विनाश के परिणाम से होश में आए और प्रेरणा मिली कि उठो प्रभाती तारा निकल आया । ज्ञान ज्योति मिल गई, दिन का उजाला हो गया, सोया हुआ प्राणी उठ बैठा उपासकों का सौभाग्य जागा । ब्रह्म महूर्त में उषा आई ।

रात सुलाती बड़े प्यार से और जगाने से कतराती ।
प्रभाती तारे को देख कर नई दुल्हन सी शर्मा जाती ।
मिल जाता भक्तों को सहारा, इस क्षण मिलता प्रियतम प्यारा।

منتر نمبر ۶۰۹ کھنڈ ۳
پرماتما کے لئے ہماری پاکیزہ بدھیاں منتظر ہیں!

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३
प्रत्नस्य वृष्णो अरुषस्य नू महः
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र नो वचो विदथा जातवेदसे ।
३ १ २ ३ १२ २२ ३ २ ३
वैश्वानराय मतिर्नव्यसे शुचिः
१ २ ३ १ २ ३ १ २
सोम इव पवते चारुरग्नये ॥८॥

اُستادِ رُوحانیت اگیان کی روشنی کے لئے پاپ ناشک، سُکھ ورشک سب کے معبود پیارے بھگوان کا ہمیں گیان دیجئے، جو نُورِ جہاں ہے، عالمِ کُل ویدکی روشنی کو دینے والا، سب کا پاسباں، روز نیا اور راہ نما ہے۔ اُس کے لئے ہماری پوتر بدھیاں منتظر ہو رہی ہیں۔

ے اُس پیارے پروردگار نُورِ جہاں کا مِل جائے گیان
پاپوں کا ناشک سُکھ ورشک عالمِ کُل جو ہے بھگوان

609 हमारी पवित्र मतियां भगवान के लिए हों

हमारे आचार्य प्रवर ! ज्ञान ज्योति के लिए पाप नाशक सुख वर्षक, सब के पूज्य, प्यारे भगवान का हमें मार्ग दरशाइए, उपदेश कीजिए, जो विश्व ज्योति है, सर्वज्ञ है वेद ज्ञान दाता है, सर्व रक्षक है, प्रतिदिन नया है और हमारा नेता है उसके लिए हमारी पवित्र मतियां सदा प्रेरित रहें।

उस प्यारे परमेश्वर, विश्व की ज्योति का मिल जाए ज्ञान।
पापों का नाशक, सुख वर्षक जो आलिम कुल है भगवान ॥

منتر نمبر ۶۱۰ کھنڈ ۳
کسی کے مُتعلق گھٹیا باتیں نہ بولیں!

१ २ ३ १२ २२
विश्वे देवा मम शृण्वन्तु
३ २ ३ १२ २२ ३ १२ २२ ३ १ २
यज्ञमुभे रोदसी अपां नपाच्च मन्म ।

मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि
वोचं सुम्नेष्विद्वो अन्तमा मदेम ॥९॥

ہے پرمیشور ! نیک کاموں کے محافظ !! سارے عالم اور زمین آسمان کے اندر سبھی بسنے والے راجہ، پرجا، امیر، کبیر، فقیر ہمارے یگ آدی نیک کاموں کو دیکھیں اور سُنیں، ہم آپ کی نِندا (گھٹیا باتیں) کے کلمات کبھی نہ بولیں۔ آپ کے نزدیک رہ کر سکھی ہوں۔

۵ یگ کرتے ہم، دیکھیں سب جن اور سُنیں اِس کی بانی
بُری زبان نہ کہیں کسی سے رہیں نکٹ تیرے جگ بانی

610 निन्दित वाणी न बोलें

हे परमेश्वर सत्य कर्मों के रक्षक ! सम्पूर्ण विश्व के वासी राजा प्रजा अमीर ग़रीब हमारे यज्ञ आदि शुभ कर्मों को देखें और सुनें। हम आप की निन्दा न करें न किसी के लिए भी निकृष्ट वाणी बोलें। आप के निकट रह कर सुखी हों।

यज्ञ करते हम, देखे सब जन और सुनें इसकी वाणी।
निन्दित वाणी कभी न बोलें रहे निकट तेरे जग बानी॥

نیک نام ہوؤں اور نیک نام بھگوان کو حاصل کروں

منتر نمبر ۶۱۱ — کھنڈ ۳

यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्रबृहस्पती ।
यशो भगस्य विन्दतु
यशो मा प्रति मुच्यताम् ।
यशस्व्या३स्याः संसदोऽहं
प्रवदिता स्याम् ॥१०॥

ماں باپ کی خدمت گزاری میں نیک نام بنوں، شِشیہ اُور گورو (طالب علم اور اُستاد) مجھے نیک نام بنائیں، دھرم، گیان، شری، لکشمی (زر و مال) مجھے یش (نیکنامی) کے ساتھ حاصل ہو۔ نیک نامی میرا دامن نہ چھوڑے کبھی بدنامی نہ ہو، بالآخر یش رُوپ بھگوان مجھے پراپت ہو' اُور مَیں یش رُوپ ہو کر انسانات میں روحانی گیان کا وعظ کرتا رہوں۔

ے مات پتا شِشیہ گورو کی سیوا سے ہو یش یہ چاہوں مَیں
گیان اُور بَل دھن سب یش سے پا ایش اُپدیش سناؤں مَیں

611 **यश की प्राप्ति**

माता पिता की सेवा में यश प्राप्त करूं शिष्य और गुरु मुझे यशस्वी बनायें। धर्म, ज्ञान, श्री, लक्ष्मी मुझे यश के साथ प्राप्त हो, यश मेरा साथ न छोड़े। अपयश कभी न हो। अन्तोगत्वा यश रूप भगवान मुझे प्राप्त हो और मैं यशस्वी होकर मनुष्य समाज में अध्यात्म प्रवचन करता रहूं।

पिता मात शिष्य गुरु की सेवा से हो यश यह चाहूं मैं।
ज्ञान और बल धन सब यश से पा ईश उपदेश सुनाऊं मैं ॥

منتر نمبر ۶۱۲ کھنڈ ۳

مَیں چاہتا ہُوں کہ

१ २ ३ २ ३क २र ३ १ २ ३
इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्रवोचं
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
यानि चकार प्रथमानि वज्री ।
२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा
३ १ २
अभिनत् पर्वतानाम् ॥११॥

اِندر پرمیشور کے بہادرانہ عظیم کارناموں کا وعظ (اُپدیش) کرتا جاؤں، جس بہادری سے پاپ کے سانپ کا سر کچل دیتا ہے اُور ہماری اندرونی کوفتیں سب دُور ہو جاتی ہیں' بُرائیوں کا ایسا تحس نحس کیا کہ اودّیا کے پانچ پرد اودّیا، اسمتا، راگ، دویش اور ابھی نویش

پانچوں قسم میں بٹی ہوئی اِس جہالت میں اضافہ نہ ہونے پائے، پرمیشور اپنے عابدوں پر ایسا کرم کرتا رہتا ہے!

عظمت ہے یہ اندر کی یہ بُرائیوں کے اژدھا کو
طاقت سے سر کچلتا، جگ پاتا خیریت کو
کیوں نہ سناؤں گھر گھر میں اُس کا یہ فسانہ

612 **मैं चाहता हूं कि**

इन्द्र परमेश्वर के वीर कर्मों का उपदेश करता जाऊं। जिस वीरता से वह पाप के सांप का सिर कुचल देता है और हमारी अन्त: चित्त वृत्तियां निर्मल हो जाती हैं और अविद्या के पांच पर्व अर्थात् अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश नष्ट हो जाते हैं, बढ़ने नहीं पाते। परमेश्वर अपने उपासकों पर ऐसी कृपा सदा करता रहता है, करता रहे।

महिमा है इन्द्र की यह पापों के अयदहा को।
शक्ति से सिर कुचलता जग पाता शान्ति को।
क्यूं न सुनाऊं घर-घर मैं उसका यह फ़साना॥

منتر نمبر ۶۱۳ **بھگوان خود فرماتے ہیں!** کھنڈ ۳

अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा
घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन्।
त्रिधातुरर्को रजसो विमानोऽजस्रं
ज्योतिर्हविरस्मि सर्वम् ॥१२॥

میں سب سے پہلے تھا اور ہوں، سب کا اگوا، سچائی کے راستے پر لے جانے والا، گیان کا مخزن اور سبھی اشیاء میں موجود ہوں، چمکتا ہوا سورج میری آنکھ ہے دید گیان امرت میرے منہ میں ہے یعنی میں اُس کا واعظ ہوں، تینوں لوکوں کا دھارن

پالن کرتا ہوں، سُورج کی طرح تیجسوی ہوں اور پُوجا کے یوگیہ (قابلِ عبادت) ارض وسما وغیرہ سبھی لوگوں کا معمار ہوں میری جیوتی (نُور) اکھنڈ (اٹُوٹ) ہے، سب یگیوں کی آہُوتی میں ہوں۔

ے

راہ نما ہوں پہلا جگ کا اور نرماتا ازل ابد سے
سُورج میری آنکھ سمجھ لو پُوجا یوگیہ ہوں سدا سدا سے

613 भगवान स्वयं कहते हैं कि

मैं सब से पूर्व वर्तमान था और हूं जगत का नेता । अर्थात् सत्य मार्ग पर चलाने वाला हूं, ज्ञान का स्रोत, सभी पदार्थों में वर्तमान चमकता हुआ सूर्य मेरी आँख है । वेद ज्ञान अमृत मेरा मुख है जिस से मैं वेद ज्ञान का उपदेश करता हूं त्रिलोक का धारण पालन करता हूं । सूर्य की भांति तेजस्वी हूं और पूज्यनीय । लोक लोकान्तरों का निर्माता हूं । मेरी ज्योति अखण्ड है यज्ञों की आहुति मैं हूं ।

हूं मैं नेता पहला जग का और निर्माता विश्व भवन का ।
सूरिज मेरी आंख समझ लो पूजा योग्य हूं मैं जन-जन का ।।

منتر نمبر ۶۱۴ کھنڈ ۳

سَبْ کا مُحافِظ سَبْ کا رکھشک

२ ३ २ ३ १र २र ३ १र
पात्यग्निर्विपो अग्रं पदं वेः
२र ३ १र २र ३ १ २
पाति यह्वश्चरणं सूर्य्यस्य ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र
पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः
२र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
पाति देवानामुपमादमृष्वः ॥१३॥[६१३]

میدھاوی عقلِ سلیم کا مالک بھگوان اُڑتے ہوئے پنچھی کے اگلے قدم کی حفاظت کرتا ہے، یعنی موت کے بعد نئی زندگی میں قدم رکھنے والے جیو آتما کی رکھشا کرتا ہے، اور اُسے نئی زندگی دیتا ہے۔ وہ پربھو سُورج کو اپنے ازلی قواعد میں چلاتا ہوا رکھشا کرتا

ہے، سب کا اگوا پرمیشور نیا جنم دھارن کرنے والے سات سروں والے جیوآتما (رُوح) کی حفاظت کرتا ہے، وہ رُوح کے سات سر ہیں، پانچ گیان اِندریاں حواس خمسہ، من اَور وِدّیا یا دُو آنکھ، دُو کان، دُو ناک کے سوراخ اَور ایک مُنہ، اِن کے ذریعے سے جیوآتما کا بچاؤ کرتا رہتا ہے اَور سب جگہ موجود پرمیشور اپنے عابد، عارفوں کی خوشیوں کی حفاظت کرتا رہتا ہے کہ زیادہ سے زیادہ یہ دیر پا رہیں۔

ؔ یہ اگنی ہے جو سب کے آگے چلتا رکھشا کرتا ہے
بن سب جیوؤں کا محافظ وہ سب کے کاموں کو کرتا ہے

614 **अग्नि-अग्रणी सब का रक्षक**

मेधावी भगवान उड़ते हुए पक्षी के अगले पाद की रक्षा करता है अर्थात् मृत्यु के पश्चात् नए जीवन में कदम रखने वाले जीव आत्मा का रक्षक है वह प्रभु सूर्य को अपने विधान में चलाता हुआ रक्षा करता है। अग्नि-सबका अग्रणी होकर नया जन्म लेने वाले सात शिरोधार जीव की पांच ज्ञान इन्द्रियों, मन और विद्या या दो आंख दो कान दो नाक के नथने और एक मुख के द्वारा रक्षा करता रहता है। और सर्वव्यापक परमेश्वर अपने उपासकों के सुखों और हर्ष को बढ़ाता रहता है।

यह अग्नि है जो सब के आगे चलता रक्षा करता है।
बन कर के जीवों का रक्षक सब के कामों को करता है॥

منتر نمبر ۶۱۵ **تاکہ ہم آپ کا دَرشن کر سکیں!** کھنڈ ۴

आजन्त्यग्ने समिधान दीदिवो
जिह्वा चरत्यन्तरासनि।
स त्वं नो अग्ने पयसा
वसुविद्रयिं वर्चो दृशेऽदाः ॥१॥

چاروں طرف روشنی پھیلائے ہوئے نورِ جہاں اگنی پرماتما! ہماری زبانیں آپ کی عظمت گاتی ہوئیں ہمیں سُکھی کر دیتی ہیں۔ آپ تو دُنیا کے والی اور بسانے والے اوصافِ حمیدہ کے بھنڈار ہیں، اِس لئے انسانی جامہ پہنا کر رُوحانی دُودھ امرت دھن اور برہم تیج ہمیں دے دیا ہے تاکہ ہم آپ کا درشن کر سکیں!

ے اگنی دیو یہ زباں ہماری گاتی آپ کی مہما نیاری
امرت دھن پانے کا جامہ دیکر کی بخشش ہے بھاری

615 ताकि हम आपका दर्शन कर सकें खंड 4

ज्योति स्तम्भ अग्नि परमात्मन्! हमारी वाणियां आप की महिमा गाती हुई हमें सुखी कर देती हैं। हे जग नेता और सद्-गुणों के भण्डार परमेश्वर, आपने मानवी चोला पहना कर हमें अध्यातम दुग्ध अमृत सम्पदा और ब्रह्म तेज प्रदान किया है। ताकि हम आपका दर्शन कर सकें।

अग्नि देव यह वाणी हमारी गाती आपकी महिमा प्यारी।
अमृत धन पाने का चोला देकर कृपा कीनी है भारी॥

منتر نمبر ۶۱۶ کھنڈ ۴

سبھی موسم صحت بخش ہیں
اِن کی پرشنسا مت کرو!

वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः
शिशिरः इन्नु रन्त्यः ॥२॥

ایشور کی عجیب و غریب دُنیا کی خوبصورت تعمیر ہیں یہ چھ موسم بسنت، گریشم، ورشا، شرد، ہیمنت اور ششر یہ سبھی موسم بہار، گرمی، بارش، ٹھنڈی میٹھی، کڑکتی سردی برف جمنے کی اور پھر پت جھڑ یا خزاں صحت بخش اور نہایت سُکھ دائیک ہیں، بہار جہاں چاروں

طرف پھولوں کا راج ہے آ کر سب کو لبھاتی ہے، تو گرمی اجسام سے پسینہ نکال کر
شریروں کو بیماریوں سے صاف کرتی ہے وہاں ماحول میں بھی سبھی بدبودار عناصر
سورج کی تپش سے جل کر سب پرانی شکھی ہو جاتے ہیں اور پھر بارش کا موسم
دنیا کو ہرا بھرا کر دیتا ہے، لہٰذا ان سب کا بغور مطالعہ کرنے سے ہم پورن طبعی عمر
کے ساتھ صحت مند رہیں گے، جس کے لئے بھگوان کا لاکھ لاکھ شکر گزار ہونا چاہیئے،
اور ہر سمے خوش رہنے کی مشق کرنی چاہیئے، جیسا بھی موسم یا لمحاتِ زندگی ہوں، کسی نے
بہت ٹھیک کہا ہے کہ ؎

نہ خزاں میں کوئی تیرگی نہ بہار میں کوئی روشنی
یہ نظر نظر کے چراغ ہیں کہیں جل گئے کہیں بجھ گئے

616 ऋतुएं सभी स्वास्थ्य दायक हैं

परमेश्वर के अद्भुत सृष्टि निर्माण में ये छः ऋतुएं बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शर्द, हेमन्त और शिशर यह सभी अति सुखदायक, और सौंदर्यपूर्ण हैं। बसन्त जहां चहूं ग्रोर पुष्पों का जाल बिछा कर सबको बसाता है वहां गर्मी आकर शरीरों से पसीना निकाल रोगों को दूर कर देती है। ग्रौर वातावरण में रोगों के कीटाणु भी सूरज की तपिश से जलकर भस्म हो जाते हैं। फिर वर्षा ऋतु आकर सूरज की प्रचण्डता को ठण्डा कर सब को हरा भरा कर देती है अतः इन सबका गम्भीर अध्ययन करते हुए भगवान का धन्यवाद करना चाहिए कि जिस ने स्वास्थ्य पूर्ण दीर्घ आयु जीने के साधन हमें प्रदान किए हैं। और हर ऋतु में खुश रहने का मन बनाना चाहिए न कि ऋतुओं के ग्राधार पर दुःख सुख का ग्राभास। ठीक कहा है किसी ने—

न खिज़ा में कोई तीरगी न बहार में कोई रोशनी।
ये नजर-2 के चिराग हैं कहीं जल गए कहीं बुझ गए॥

منتر نمبر ۶۱۷ — کھنڈ ۴

ہزار سر، آنکھیں، پیر یعنی بے شمار اعضاء والا پرماتما

३ १ २   ३   १ २   ३ २   ३ १ २
सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
१२   २२ ३ १ २ ३ १ २   ३ २
स भूमिं सर्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥३॥

دُنیا کے ذرّے ذرّے میں سمایا ہوا بھگوان مانو ہزاروں سروں، ہزاروں آنکھوں اور ہزاروں پیروں والا ہے، تب ہی تو وہ سب جا موجود ہے اور ہر ایک کو اپنی آنکھوں سے دیکھتا اور جان رہا ہے، سر کا وصف خاص گیان ہے تو آنکھ کا دیکھنا اور پیروں کا سب جگہ متحرک ہونا، پھر وہ پرمیشور اِس ساری دُنیا کو اندر باہر سب طرف سے گھیرے ہوئے ہو کر اِس دس اُنگل والے برہمانڈ میں رہتا ہے۔ دس انگ یا حصّے برہمانڈ کے ہیں۔ اگنی، جل، ہوا، زمین اور آسمان اور اِن کے وِشے یا مضامین ہیں۔ شبد (آواز) سپرش (چھُونا)، رُوپ، رَس، گندھ (بُو، خوشبُو، بدبُو)۔

ے
ہزاروں سر ہیں ہزاروں آنکھیں ہزاروں سروں سے سب جگہ ہے
گھیر رکھا ہے سب جہاں کو جو اُنگلی دس میں یہ سب بسا ہے

617   **सहस्र शीर्षा: पुरुष:**

सर्व व्यापक परमेश्वर मानो हज़ारों सिर, हजारों आंखें और हजारों पैरों वाला है अर्थात् अनन्त उसके अंग हैं तब ही तो वह सब जगह व्याप्त होकर सब को जानता और अपनी आंखों से देखता रहता है फिर वह परमेश्वर इस सारे जगत को अन्दर बाहर सब ओर से घेरे हुए होकर पृथिवी और आकाश के पांच तत्व और इनके विषय शब्द, स्पर्श, रूप, रस गन्ध । यह है ब्रह्माण्ड के 10 अंग वा अंगुल ।

हज़ारों सिर हैं हज़ारों आंखें हज़ारों पैरों से सब जगह है ।
घेर रखा है सब जहां को जो अंगुली दस में यह सब बसा है ।

منتر نمبر ۶۱۸ کھنڈ ۴

جگت کی پُری میں رہنے والا بھگوان

३ २३२उ ३ १२३
त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः
१ २ ३ १२३ १२
पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।
२ ३ २३क
तथा विष्वङ्
२र ३ २ ३ २
व्यक्रामदशनानशने अभि ॥४॥

دُنیا کے پُر (پوری) میں رہنے والا بھگوان اپنے تین حصّوں کی شکل میں دُنیا سے بالکل الگ تھلگ ہوکر ظاہر ظہور رہے، ایک حصّہ اس جگت میں بار بار پیدائیش، بقا اور فنا کے چکر میں ظاہر ہوتا رہتا ہے بعد از پیدائیش جڑ اور حرکت پذیر، اِن دونوں میں رَما ہوا اپنے بنائے سنسار کو چلا رہا ہے۔

تین انش ہیں اندر جس کے ایک انش ہے باہر جس کا
ایک انش میں پرم پُرش وہ سارے جگ کی لیلا کرتا

618 **जगत पुरी में रहने वाला भगवान**

यह संसार ब्रह्म पुरी है जिस में भगवान अपने तीन अंशों में जगत से अलग थलग होकर प्रकाशमान हैं शेष एक अंश इस जगत की उत्पति, स्थिति और प्रलय के चक्र में दृष्टि गोचर रहता है । उत्पति के पश्चात् जड़ और चेतन जगत में रमा हुआ परमेश्वर अपने बनाए संसार को चलाता रहता है ।

तीन अंश हैं जिसके अन्दर एक अंश है बाहर जिस का ।
एक अंश में परम पुरुष वह सारे जग को लीला करता ॥

منتر نمبر ۶۱۹ بھگوان کے رُوپ کے تین حصّے کھنڈ ۴

اُس کے اکھنڈ پرکاش میں رہتے ہیں!

१ २ ३ २ उ ३ २ ३ २ उ ३ १ २
पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम् ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
पादोऽस्य सर्वा भूतानि
३ १ २ ३ १ २ ३ २
त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥५॥

یہ جو ماضی، حال اور مستقبل جگت ہے، ان سب کے لئے وہ مالک کُل اپنا جگت کاربہ کر رہا ہے، یہ ساری دُنیا بھگوان کا ایک انش (حصّہ) ہی ہے اُس رہنمائے دُنیا کے تین انش (حصّے) جن کا کہ جگت کے جنم مرن کے ساتھ تعلق نہیں ہے، وہ اس کے اپنے پرکاش میں ہی ہیں۔

۵ جو کچھ تین زمانوں میں ہے پرم پُرش ہے اُس کا کرتا
ایک پیر اُس کا جگ رچنا تین پیر ہیں جیوتی سرُوپا

619 ईश्वर के तीन अंश अपने अखंड प्रकाश में

जो यह भूत, भविष्यत और वर्तमान जगत है इस सबके लिए वह ब्रह्माण्ड पति अपना जगत कार्य कर रहा है यह विश्व भगवान का एक अंश मात्र है । उस जगत नियन्ता के तीन अंश जिन का कि जगत के जन्म मरण के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है । वे इस के अपने प्रकाश में ही रहते हैं ।

तीन कालों में जो कुछ भी है परम पुरुष है उस का कर्ता ।
एक अंश उसका जग रचना तीन अंश हैं ज्योति रूपा ॥

منتر نمبر ۶۲۰ کھنڈ ۴

پرمیشور کی عظیم عظمت

१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
तावानस्य महिमा ततो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
३ १ २ ३ १र २र ३ १र २र ३ १ २
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥६॥

یہ باہری دُنیا کا پھیلاؤ جو منظر پر ہے اور منظر سے دُور ہے۔ یہ تو اُس بھگوان کی عظمت کو ہی دِکھا رہا ہے، ورنہ تو وہ پرماتما پُرش جو دُنیا پوری میں رہتا ہے، وہ اس ظاہر اور غائب دونوں جگتوں سے کہیں بڑا ہے اور مُکتی یا امرت کا بھی سربراہ ہے اور سب کے کرموں کا بھوگ دُکھ سُکھ وغیرہ پھلوں کا دینے ہارا۔

ے جتنی یہ ایشور مہما ہے، اِس سے بھی وہ بہت بڑا ہے
مُکتی دھام کا اِیش وہی ہے، اِنسانوں کا پوجیہ وہی ہے

620 दृश्य और अदृश्य ब्रह्माण्ड उस की महिमा

यह जगत का विस्तार दिखाई देने और न देने वाला तो उस भगवान की महिमा को दर्शा रहा है या सूचक है। अन्यथा तो वह परम पुरुष इस ब्रह्म पुरी में रहता हुआ इन दोनों प्रकार के ब्रह्माण्ड से कहीं बड़ा है और मोक्ष अमृत का स्वामी तथा सबके कर्मों का न्याय रूप से फल व्यवस्था करने हारा।

जितनी यह ईश्वर महिमा है ।
इस से भी बढ़ कर गरिमा है ।
मोक्ष धाम का ईश वही है ।
सब जन का भी पूजा वही है ।

منتر نمبر ۶۲۱ **ساری دُنیا کی بناوٹ کا عظیم کارنامہ** کھنڈ ۴

तंतो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत
पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥७॥

اُس پرماتما نے خصوصی چمک دمک سے عظیم ترین انڈے کی شکل جیسی ہزاروں سُورجوں جیسی روشنی پیدا ہوئی، جس کا سربراہ اور والی پرماتما تھا۔ وہ انڈے کی طرح چمکتا گولا بیشمار ٹکڑوں میں منقسم ہوگیا، جس سے زمین اور اُس کے بعد رُوحوں کے رہنے کے گھر شریروں (اجسام) کو پرماتما نے پیدا کیا۔

ے　ایشور سے برہمانڈ بنا جو بڑا انڈہ کہلاتا ہے
پھر ارض و سما اور رُوحوں کے رہنے کے شریر بناتا ہے

621　**सृष्टि निर्माण का कार्यक्रम**

परम पिता परमेश्वर से विशेष ज्योति के रूप में गोल अण्डाकार उत्पन्न हुआ जिसकी चमक चहूं ओर फैलती गई वह यहां तेजस्वी गोला असंख्य खण्डों में बंट गया । जिसके पश्चात् भूमि और फिर आत्माओं के निवास यानि शरीरों को परमेश्वर ने उत्पन्न किया ।

ईश्वर से ब्रह्माण्ड बना जो बड़ा अण्डा कहलाता हैं ।
फिर पृथ्वी द्यौ और जीवों के घर रूप शरीर बनाता है ।

منتر نمبر ۶۲۲ **دیئو اور پرتھوی (ارض و سما) ماں باپ کی طرح** کھنڈ ۴

मन्ये वां द्यावापृथिवी सुभोजसौ
ये अप्रथेथाममितमभि योजनम् ।

१ २   ३ १ २   ३ १र
द्यावापृथिवी भवतं स्योने
२र   ३ १ २
ते नो मुञ्चतमंहसः ॥८॥

یہ اَرض وسما (زمین اَور آسمان) دونوں ماتا پِتا کی طرح ہزاروں کھانے پینے کے سامان دے کر ہمارے ازلی ابدی محافظ یا پالک بنے ہوئے ہیں، جن کا پھیلاؤ بے شمار کوس یعنی لامحدود ہیں۔ ہم ان کی چھتر چھایا میں رہتے ہوئے بُرائیوں اَور حرام سے ہمیشہ دُور رہیں، کیونکہ یہ بھرپُور روشنی، بارش اَور غلّہ وغیرہ دے کر ہمارا پیٹ بھرتے رہتے ہیں۔ تو ہم آپسی چھینا جھپٹی، چوری چکاری، لُوٹ کھسوٹ کر کے پرماتما کی خوب صورت جنّت نما دُنیا کو دوزخ کیوں بنائیں؟

۸ یہ اَرض وسما ماں باپ ہمارے پالن کرتے سدا سے ہیں
توکیوں آپس میں لڑتے جب یہ دیتے بھر بھر سدا سے ہیں

622 पृथ्वी और द्यौ लोक हमारे माता पिता

ये दोनों द्यौ और पृथ्वी माता-पिता वत् अगणित खाने-पीने के पदार्थ देकर अनादि काल से हमारे पालक बने हुए है। जिनका फैलाव असंख्य योजन अर्थात् अनन्त है। हम इनकी छत्र छाया में रहते हुए पापों और हिंसा से दूर रहें। ये दोनों प्रकाश वर्षा और अन्न आदि देकर हमारा पेट भरते रहते हैं तो हम परस्पर छीना झपटी चोरी चकारी और लूट खसोट क्यों करें।

द्यौ पृथ्वी पितु मात हमारे पालन करते सदा से हैं।
तो क्यों आपस में लड़ते जब देते भर-भर सदा से हैं।

منتر نمبر ۶۲۳ سبھی نعمتیں تیری ہی دین کھنڈ ۴

१ २   ३   १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
हरी त इन्द्र श्मश्रूण्युतो ते हरितौ हरी।
१   २   ३ १ २
तं त्वा स्तुवन्ति कवयः
३ १ २ ३ १ २
पुरुषासो वनर्गवः ॥९॥

ہے اندر پرمیشور! رگ وید منتر اور سام وید کے گیت تیری دین ہیں، جسم میں سبھی طاقتیں دی ہوئی آپ کی ہیں، یہ وید گیان اور منتروں کے گان ہمارے اگیان کو مٹا کر ہمیں رُوحانی روشنی عطا کر کے ہمارے مصائب کو دُور کرتے ہیں۔ عابد عارف اور جنگلوں میں ریاضت کرنے والے بان پرستھی آپ کی ہی حمد و ثنا کرتے رہتے ہیں!

ے یہ برکاتِ دُنیا جو بخشی ہیں ساری
نذر اِس لئے ہیں دُعائیں ہماری

623 सभी सम्पदायें तेरी ही देन

हे इन्द्र परमेश्वर ! ऋग्वेद की ऋचाएं और सामगान यह तेरी ही देन हैं । शरीर की सभी शक्तियां दी हुई आपकी हैं वेदों की ऋचाएं और मन्त्रों के गान हमारे अज्ञान को मिटा कर अध्यात्मिक प्रकाश देते हुए हमारे कष्ट क्लेश दूर करते हैं । योगी उपासक वनों में तपस्वी वानप्रस्थी और कवि आपकी महिमा का ही कीर्तन करते हैं ।

जगत सम्पदा आपने दी जो सारी, अतः भेंट हैं प्रार्थनाएं हमारी ।

منتر نمبر ۶۲۴ ایشور کا تیج، سچائی کا نور اور کھنڈ ۴

سونے کی چمک ہم میں ہو!

यद्वर्चो हिरण्यस्य यद्वा वर्चो गवामुत ।
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन
मा सं सृजामसि ॥१०॥

سونے کی چمک، گئوؤں، سورج کی کرنوں، وید بانیوں کی روشنی اور عظیم العظیم پرماتما، خداوند تعالےٰ کی سچائیوں کا تیج (علم عرفان کا نور) مجھ میں اور ہم سب میں سدا رہے، جس سے ہم گئوؤں کی طرح گیان دودھ امرت سب کو پلاتے رہیں۔ وید بانیوں کی طرح دھرم کا اُپدیش کرتے رہیں اور سچائی کے منبع پرمیشور کی طرح سچّائی کے پرستار ہوں!

ے سونے کی چمک، سُورج کی دمک، ویدوں کے گیان سے جُڑے رہیں
گئوؤں کا امرت دُودھ بہا، سچ کا پرچار ہم کیا کریں

624 हिरण्य, गौवों का तेज और वेद वाणी का ज्ञान

हिरण्य और गौवों का तेज सूर्य किरणों की चमक, वेदवाणी का ज्ञान प्रकाश और सत्य स्वरूप परमेश्वर का तेज मुझ में और हम सब में सदा रहे जिससे हम गौवों की भान्ति ज्ञान दुग्ध अमृत सब को पिलाते रहें, वेद वाणियों का ज्ञान उपदेश करते रहें और सत्य के स्रोत परमेश्वर की भांति सत्य मार्ग पर चलें और चलाएं ।

सोने की चमक, सूरिज की दमक वेदों के ज्ञान से जुड़े रहें ।
गौवों का अमृत दूध बहा, सत्य का प्रसार हम किया करें ।

منتر نمبر ۶۲۵ نفسِ اَمّارہ غصہ تکبّر وغیرہ کو دَبا سکیں! کھنڈ ۴

सहस्तन्न इन्द्र दद्ध्योज ईशे
ह्यस्य महतो विरप्शिन् ।
क्रतुं न नृम्णं स्थविरं च वाजं
वृत्रेषु शत्रून्त्सहना कृधी नः ॥११॥

ہے اِندر پرمیشور! ہمیں کام وغیرہ اندرونی دشمنوں کو دبانے کی طاقت بخشیں، دُنیا کی تمام طاقتوں کے سرتاج بلا شک وشبہ آپ ہی ہیں، ہمیں ادائیگی فرائض کے مُصمّم ارادے اور ایسی عقلِ سلیم عطا کریں، جس سے رُوحانی طاقتوں کو آپ سے پا کر خیالاتِ بد پر پوری طرح فائض ہوسکیں۔

ے اِندر ہمیں بَل دو بُدھی دو بَدیوں کو مغلوب کریں ہم
اور تجھ سے پا رُوحانی دولت نیکیوں کے کچھ کام کریں ہم

625 काम क्रोध आदि शत्रुओं को दबा सकें

हे इन्द्र परमेश्वर हमें ऐसी शक्ति दो जिस से हम कामादि शत्रुओं को पराजित कर सकें। क्योंकि शक्तियों के भण्डार आप ही हैं। हमें दृढ़ संकल्प मेधा बुद्धि और कर्म करने की ताकत देवें। आपसे अध्यात्म सम्पदाओं को पाकर दूषित चित्त वृत्तियों को पूरी तरह दबा सकने में समर्थ हों।

इन्द्र हमें बल दो बुद्धि दो पापों पर काबू पालें हम।
अध्यात्म सम्पदा तुझ से पा नेकियों के कुछ काम करें हम।

کھنڈ ۴

منتر نمبر ۶۲۶ عورتوں کیلئے سُکھ شانتی کا مرکز خانہ داری

३ १ २   ३ १ २   ३ २ ३
सहर्षभाः सहवत्सा उदेत
१ २ ३ २ ३   १ २
विश्वा रूपाणि बिभ्रतीर्द्व्यूध्नीः ।
३ २   ३ २ ३ १   २   ३ २
उरुः पृथुरयं वो अस्तु लोक
३ १ २   २ २   ३ २ ३ १   २
इमा आपः सुप्रपाणा इह स्त ॥१२॥[६।४]

عورتیں اپنے پیارے خاوندوں اور بچوں کے ساتھ خانہ داری کی زندگی کو خوش حال اور ایشور کے آنند سے بھی بھرپور رکھیں، اعلےٰ اوصاف والی اور چھائیوں میں بچوں کے لئے امرت دودھ رکھتی ہوئیں لمبے چوڑے وسیع گھروں میں اَنّ جل اور دودھ وغیرہ کی افراط کے ساتھ رہتی ہوئیں اِسے سورگ دھام یا جنّت بنائے رکھیں۔

نوٹ :- اِس منتر کی تشریحات کئی ایک عالم مترجموں نے گئوؤں اور اِندریوں کے لئے بھی کیں ہیں۔

ے

اہلِ خانہ ہے عورت اوّل جس نے گھر چمکانا ہے
اپنے اعلےٰ اعمالوں سے جنّت نشاں بنانا ہے

626 स्त्रियों के लिए सुख शान्ति का केन्द्र घर

स्त्रियां अपने प्रिय पतियों ओर सन्तानों के साथ गृहस्थ के जीवन को सांसारिक और पारलोकिक आनन्द से भरपूर रखें। सद्गुणों से युक्त छातियों में बच्चों के लिए अमृत दूध रखती हुई और अन्न जल दूध घृत आदि की सुविधाओं के साथ अपने विशाल घरों में रहती हुई इसे स्वर्ग धाम बनाए रखें। (इस मन्त्र की व्याख्या अनेक विद्वानों ने गौवों और इन्द्रियों के लिए भी की है)

घर की अग्रणी देवी गृहणी जिसने घर चमकाना हैं।
अपने उत्तम गुण कर्मों से स्वर्ग समान बनाना है।

منتر نمبر ۶۲۷ **عمرِ دراز اور نجات کے وسائل بخشیں!** کھنڈ ۵

अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥१॥

اگنے روشن بالذّات پرمیشور! ہمیں لمبی عمر کے ساتھ پاکیزہ زندگی بخشیں، طاقت، بلند حوصلہ اور رُوحانی طاقتوں کے ساتھ نجات کے وسائل عطا فرمائیں، کتّوں جیسی بُری حرکات والے شیطانی عناصر کو ہم سے دُور کیجئے!

ے ہے اگنے پرمیشور ہم کو لمبی آیُو دو پوتّر کرو
بلند حوصلہ ہمت دے کر شیطانوں سے دُور کرو

627 पापों से रहित दीर्घ जीवन प्रदान करो खंड 5

प्रकाशमान परमात्मन्! हमें पवित्र जीवन के साथ दीर्घ आयु प्रदान कीजिए और बल, ओज, ज्ञान और अध्यात्मिक धनों के साथ मोक्ष मार्ग की प्रेरणा दीजिए। कुत्तों जैसी दूषित वृत्ति वाले पापियों को भी हम से दूर करें।

हे अग्ने परमेश्वर हमको दीर्घ आयु दो पवित्र करो।
बल बुद्धि और ओज को देकर अधर्मियों से दूर करो।

منتر نمبر ۶۲۸ یگ کرنیوالے کو بدیوں سے چھڑا دیتا ہے! کھنڈ ۵

विभ्राड् बृहत् पिबतु सोम्यं
मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् ।
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः
पिपर्त्ति बहुधा वि राजति ॥२॥

ہزارہا سورجوں کی روشنی سے بھی زیادہ منوّر پرماتما ہماری سچی پاکیزہ عبادتوں کو منظورِ نظر کرتا ہے اور یگ کرم کرنے والے کو بدیوں سے چھڑا دیتا ہے۔ اپنے قدرتی قاعدے سے سبھی انسانات کی ہردم رکھشا کرتا ہوا سب کا پالن پوشن کرتا ہوا سب جگہ حاضر ناظر ہے۔

سورجوں سا چمکیلا ایشور، بھگتی کو سویکار ہے کرتا
دور ہٹا عارف کو بدی سے سب کی ہے وہ رکھشا کرتا

628 **यज्ञ कर्म करने वाले पाप रहित**

असख्य सूर्यों से भी अधिक प्रकाशमान परमेश्वर हमारी पवित्र हृदय उपासनाओं को स्वीकार करता है और यज्ञ करने वालों को पापों से मुक्त कर देता है । अपने स्वभाव से सबकी रक्षा में तत्पर सब के पालन पोषण में सब जगह व्याप्त है ।

ज्योतियों की ज्योति परमेश्वर, भक्ति को स्वीकार है करता ।
यज्ञ कर्ता को पाप रहित कर सबकी है वह रक्षा करता ।

منتر نمبر ۶۲۹ جگمگاتی عظمت والا پرمیشور کھنڈ ۵

चित्रं देवानामुदगादनीकं
चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं
१ २ ३ १र २र ३ १ २
सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥३॥

ایشور عابدوں اور عارفوں کی روحانی طاقت ہے جو اُن کو ترقی کے راستے پر گامزن رکھتا ہے، ارض وسما اور وایُو (ہوا) دیوتا وغیرہ کو دکھانے والی آنکھ ہے، سُورجوں کا عظیم سُورج اور زمین آسمان عرش بریں کا مالک ہے۔ اِن پر چھایا ہوا جان دار اور غیر جان دار دُنیا کی آتما یعنی عظیم رُوح ہے۔

ے جڑ چیتن کا پران یہی ہے، سب دُنیا کی شان یہی ہے
بھگتوں کو بل دینے والا، رکھوالا بھگوان یہی ہے

629 **चित्र विचित्र परमेश्वर**

विचित्रताओं से युक्त परमात्मा विद्वानों देव जनों का अध्यात्म बल है। द्यौ पृथ्वी और अन्तरिक्ष को दिखाने वाली परम चक्षु है। सूर्यों का सूर्य और पृथ्वी अन्तरिक्ष और द्यौ लोक का अधिपति और जड़ चेतन की आत्मा है।

जड़ चेतन का प्राण यही है, सब दुनियां की शान यही है।
भक्तों को बल देने वाला रखवाला भगवान यही है।

منتر نمبر ۶۳۰ کھنڈ ۵

ماتا پِتا کی طرح بھگوان

१र २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः।
३ १ २ ३ १ २
पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥४॥

سب جگہ موجود پرماتما ماتا پِتا کی طرح ہم سب کے خانۂ دِل میں بیٹھا ہوا ہر وقت حاصل ہے، جو عابد اُپاسک اُس کی طرف قدم بڑھاتے بڑھتے چلے جاتے ہیں، اُنہیں اُس کا وِصال نصیب ہو جاتا ہے۔

ے ہر جگہ موجود ہے پر وہ نظر آتا نہیں
یوگ سادھن کے بنا اُسکو کوئی پاتا نہیں

630 माता पिता के समान भगवान

सर्व व्यापक परमेश्वर ! माता पिता की भांति हम सब के हृदत निवास में बैठा हुआ हर समय प्राप्त है । योग रत जो उपासक उसकी ओर अग्रसर होता चलता जाता है, उसे भगवान का समागम हो ही जाता है ।

हर जगह मौजूद है पर वह नजर आता नहीं ।
योग साधन के बिना उसको कोई पाता नहीं ।

منتر نمبر ۶۳۱ — **زندگی کی حرکات کا محرّک** — کھنڈ ۵

३ १ २ ३ २ उ ३ १ २ ३ २
अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती ।
२ उ ३ १ र २ र
व्यख्यन्महिषो दिवम् ॥५॥

پرماتما کی بھگتی میں یکسوئی کو پائے ہوئے عارف کے صرف پران اور اپان ہی حرکت میں رہتے ہیں، جب کہ من اور اندریوں کا تمام کاروبار ختم ہو جاتا ہے یہ تحریک پرماتما کی دی ہوئی روشنی اور طاقت سے ہی جگت میں جاری رہتی ہے ۔ یہی روشنی سارے جگت اور سورج کو روشن کرتی ہے ۔

ے ایشور کے دھیان میں سرشار جب ہوتا اُپاسک
اندریاں سو جائیں سب پران اور اپان ہوتے ہیں رکھشک

631 विश्व की गतिविधि का संचालक

भगवान की भक्ति में धारणा ध्यान समाधि को प्राप्त किए हुये योगी उपासकों में केवल प्राण और अपान ही गति में रहते हैं । जबकि मन और इन्द्रियों का सम्पूर्ण कार्य कलाप समाप्त हो जाता है । जबकि प्राण और अपान की गति विधि परमेश्वर से ही चलती रहती है और यही ईश्वरी ज्योति सूर्य को और सारे

ब्रह्माण्ड को प्रकाशमान करतो है।

परमेश्वर के ध्यान समाधि में जब होता मस्त उपासक।
मन इन्द्री सो जाते है सब प्राण अपान होते हैं रक्षक।

منتر نمبر ۶۳۲ بھگتوں میں بھگوان کی بھگتی بھری رہتی ہے کھنڈ ۵

त्रिंशद्धाम वि राजति वाक् पतङ्गाय धीयते।
प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥६॥

سُورج جیسے تیج وان اَور سب جگہ جلوہ گر پرماتما کے لئے عابد بھگت لوگ اس کی حمد و ثنا یا بھگتی کے گیت گاتے رہتے ہیں جو روزانہ دن کے ۳۰ مہورتوں یا گھڑیوں میں اُن کے اندر سمندر کی لہروں کی طرح ٹھاٹھیں مارتی رہتی ہیں۔

بھگتوں کے اندر بستا ہے چوبیسوں گھنٹے بھگوان
جلوہ گر سُورج میں ہے اَور سب جگہ ویاپک ہے مہان

632 **भक्तों के अन्दर भगवान की भक्ति**

सूर्य समान तेजस्वी और सर्वव्यापक परमात्मा के लिए भक्त उपासक उसकी स्तुति के स्त्रोत गाते रहते हैं। जो प्रतिदिन के तीस महूर्तों (घड़ियों) में उनके हृदय सागर में ठाठें मारती रहती हैं।

भक्तों के अन्दर बसता है चौबीसों घण्टे भगवान।
ज्योतिर्मान है सूर्य में वह और व्यापक सब जगह महान।

منتر نمبر ۶۳۳ بھگوان کے دھیان سے سب پاپ دُور کھنڈ ۵

अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः।
सूराय विश्वचक्षसे ॥७॥

جیسے سورج نکلنے پر چور، رات اور تارے چھپ جاتے ہیں۔ ایسے ہی سب کو دیکھنے ہارے پرمیشور کے من میں آجانے سے سب چور کرم غلط کام، برائیاں وغیرہ دور ہو جاتی ہیں۔

ے رات اندھیرا چور تارے چھپ جاتے سورج آنے پر
اسی طرح سب پاپ برائی بھاگ جاتے ایشور آنے پر

633 भगवान के ध्यान से पापों से मुक्ति

जैसे सूर्य उदय होते ही रात्री, तारे और चांद लुप्त हो जाते हैं ऐसे ही सर्व द्रष्टा परमेश्वर के मन में उदय हो जाने पर सब पाप ताप संताप दूर हो जाते हैं।

रात अन्धेरा चोर, तारे छुप जाते सूर्य निकलने पर।
इसी तरह सब पाप बुराई भागते हैं ईश्वर आने पर।

منتر نمبر ۶۳۴ عابدوں کی خدا دوستی کھنڈ ۵

अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ अनु।
भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥८॥

جیسے آگ کے بلند شعلے دور سے سب کو دکھائی دیتے ہیں، ویسے ہی بھگت جنوں کو بھگوان کو ہر وقت صاف صاف دکھلانے والی جھنڈیاں سورج چاند تارے وغیرہ کو دیکھ اُن کا اعتقاد یا خدا دوستی مضبوط ہوتی جاتی ہے۔

ے آگ کی لپٹیں دیکھ کے جیسے مطمئن ہوتے انسان
ویسے ہی بھگتوں کو نظر آتا ہر رنگ میں بھگوان

634. उपासकों की प्रभु मैत्री

जैसे प्रचण्ड आग सब को प्रत्यक्ष दिखाई देती है वैसे ही परमेश्वर के मार्ग को दर्शाने वाली सूर्य चांद नक्षत्र वायु रूपी झंडियों को देख कर उपासक जनों की प्रभु मैत्री सुदृढ़ होती जाती है।

आग की लपटें देख के जैसे तुष्टि पाते हैं इन्सान।
ऐसे ही भक्तों को नजर आता है हर रंग में भगवान।

منتر نمبر ۶۳۵ کھنڈ ۵

دُکھوں سے تَرانے وَالی بیڑی

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य ।
विश्वमाभासि रोचनम् ॥९॥

وہ سُورج پر ماتما سب کو دُکھوں سے تَرانے والا بیڑا اور سب کے لیئے درشن کرنے یوگیہ ہے، آتما کے اندر گیان جیوتی یوگ جیوتی کو دینے والا اور سُورج بجلی چاند تارے وغیرہ روشن اشیا میں روشنی کو دینے والا ہے، اُس کی عبادت سے ہی لافنا خوشیاں حاصل ہوتی ہیں۔

روشنی مینار ایشور دُکھوں سے ہے پار کرتا
گیان جیوتی دے کے سب کو لافنا خوشیوں سے بھرتا

635 **दुखों से तराने वाली नौका**

वह सूर्यों का सूर्य परमात्मा सब को दुःख सन्ताप से पार करने वाली नौका या तरणि है और सबके लिए दर्शन योग्य आत्मा में ज्ञान ज्योति योग ज्योति आदि शुभ प्रेरणाओं का दाता सूर्य चांद विद्युत और तारों में रौशनी देने वाला है और उसकी उपासना है अमृत आनन्द को देने वाली ।

रौशनी मीनार ईश्वर दुखों से है पार करता।
ज्ञान ज्योति अपनी दे आनन्द अमृत से है भरता।

منتر نمبر ۶۳۶ کھنڈ ۵

سَب میں ظاہر ظہُور

प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषान् ।
प्रत्यङ् विश्वं स्वर्दृशे ॥१०॥

سُورجوں کے سُورج پرمیشور! آپ عالموں میں پہنچے ہوئے، عوام میں بھی پہنچے ہوئے اور سبھی نیک اعمال سُکھی آدمیوں میں بھی ظاہر ظہور رہو رہے ہو۔ تاکہ سب دُنیا کے لوگ آپ کا احساس دِلی عقیدت سے کرسکیں۔

دیوگنوں میں چمکتے رہتے سب میں آپ دمکتے رہتے
نیک اعمال اور سُکھی جنوں میں بن خوشبو مہکتے رہتے

636 **सब जगह पहुंचे हुये**

सूर्य रूप तेजवान भगवान ! आप देवगणों में प्राप्त और साधारणजनों में भी तथा शुभ कर्मा सुखी मानवों में भी उदयमान हो रहे हैं ताकि सब जन आप का अनुभव सच्चे हृदय और श्रद्धा से कर सकें।

देव गणों में चमकते रहते सब में आप दमकते रहते।
शुभ कर्मी और सुखी जनों में सौरभ बन महिकते रहते।

منتر نمبر ۶۳۷ **اِنتخاب کے لائق مُنصفانہ نظریہ** کھنڈ ۵

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु ।
त्वं वरुण पश्यसि ॥११॥

سب کو پوِتّر کرنے والے ورن یعنی منتخب کرنے لائق اور سب کی بُرائیوں کو قلع قمع کرنے والے پرمیشور! جس نظریے سے سب عالمِ ارواح کا بھرن پوشن آپ کرتے ہیں، بلاشک وشبہ وہ نہایت قابلِ احترام اور قابلِ تعریف ہے۔ اِسی مُنصفانہ آنکھ سے ہی سب کو دیکھتے ہوئے اُن کے کرم پھل یا نتائج کو دیتے ہو۔

ورُون آپ ہو ورنے لائق بدیوں کے سنگھارک ہو
جس نظریے سے دیکھتے سب کو اُس سے سب کے پالک ہو

637 **वरण करने योग्य**

सबको पवित्र करने वाले वरण करने योग्य, पाप नाशक परमेश्वर ! जिस दृष्टि से आप प्राणी मात्र का भरण पोषण करते हैं निसंदेह वह प्रशंसनीय है इसी न्याय दृष्टि से सब को देखते हुए कर्म फल भोग देते हो ।

वरुण आप हो वरणे योग्य, पापों के संहारक हो ।
जिस दृष्टि से देखते सबको उस से सब के पालक हो ।

منتر نمبر ۶۳۸ — کھنڈ ۵

نظرِ مہر ہے سب پر تیری

उद् द्यामेषि रजः पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः ।
पश्यञ्जन्मानि सूर्य ॥१२॥

پوتّر کرنے والے اور پاپوں سے چھڑانے والے پرمیشور! جس نظرِ مہر سے سب کی خدمت کرنے والے، اُسی خدمت گزار کو، پر اُپکاری کو دیکھتے ہو، جو سب کی رکھشا میں لگ رہا ہے، اُسی اپنی نظر سے زندگی موت کے درمیان بندھے ہوئے سبھی جان داروں کو دیکھ رہے ہو اور اُسی نظرِ مہر سے پرتھوی، انترکھش اور دیُو تینوں لوکوں ارض وسما، عرشِ بریں کو بھی دیکھتے ہوئے دن اور راتیں بنا رہے ہو۔

نظرِ مہر ہے سب پر تیری تینوں لوکوں میں ہیں رہتے جو
اُس نظر ہی سے سب کی رکھشا پالن اور پوشن کرتے ہو

638 **तेरी कृपा दृष्टि हो**

पापों से छुड़ा पवित्र करने हारे पावक परमेश्वर ! जिस कृपा दृष्टि से परोपकारी जनों को आप देखते हो जो सब की सेवा में तत्पर है, उस कृपा दृष्टि से जीवन और मृत्यु के बीच बंधे हुए सभी प्राणियों को देख रहे और उसी कृपा से तीनों लोकों को देखते हुए रात्रि और दिवस बना रहे हो ।

कृपा दृष्टि है सब पर तेरी तीन लोकों में रहते जो ।
उस दृष्टि से सबकी रक्षा पालन और पोषण करते हो ।

منتر نمبر ۶۳۹ **اِنسانی جامے میں اِیشور کی دی سات طاقتیں** کھنڈ ۵

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः ।
१ २ ३ १ २
ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥१३॥

سُورج سمان روشنی کی طرف ترغیب دینے والے پرمیشور نے پوتر کرنے والی سات طاقتوں کو ہمارے جسم میں مقرر کر دیا ہے جو اس خوب صُورت شریر کو پاپ کے گڑھے میں گرنے سے بچاتی ہیں، پانچ گیان اندریاں (دیکھنا، سُننا، سُونگھنا، چکھنا اور چھُونا) من اور بُدھی۔ جب یہ عبادت بھگتی اور ست سنگ سے شُدھ ہو جاتی ہیں تو یہ شریر کو بُرائی کی غار میں گرنے نہیں دیتیں۔ ان کو ساتھ ملا کر ایشور آتما پر راج کرتا ہے۔

ے سات طاقتیں رب نے بخشیں ان کو پیارے رکھو سنبھال
گیان دھیان سے شُدھ بنا کر کر لو اپنے نیک اعمال

639 मानवी शरीर में ईश्वर की दी हुई सात शक्तियां

सूर्य के समान प्रकाश मार्ग की प्रेरणा देने वाले परमेश्वर ने सात पावन शक्तियों को हमारे सुन्दर शरीरों में नियुक्त कर दिया है । जो इन को पाप के गढे में गिरने से बचाती हैं। यह है पांच ज्ञान इन्द्रियां मन और बुद्धि । जब यह भगवद् भक्ति में लगकर सत्संग से शुद्ध निर्मल हो जाती है तो इस शरीर को पाप में फंसने नहीं देती । फिर ईश्वर का राज आत्मा पर सुदृढ़ हो जाता है ।

सात शक्तियां दी ईश्वर ने इनको प्यारे रखो सभाल ।
ज्ञान ध्यान से शुद्ध बनाकर कर लो अपने नेक आमाल ।

منتر نمبر ۶۴۰ جسم کی گاڑی پر کب ہماری حکومت ہوگی کھنڈ ۵

सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य ।
शोचिष्केशं विचक्षण ॥१४॥[६।५]

इति षष्ठः प्रपाठकः षष्ठोऽध्यायश्च समाप्तः ॥

सामवेद-संहितायां पूर्वार्चिकः समाप्तः ॥

سب دُنیا کے دیکھنے والے اوصافِ حمیدہ، سُورجوں کے سُورج پرمیشور! جب ہماری یہ سات اِندریاں گیان کے وسائل سبھی بدکرداروں سے ہٹ جاتی ہیں، تب آپ روشنی کے مرکز سُورج کی کِرنوں کے سمان بنکر اِس شریر کی گاڑی پر اچھے سدھے ہوئے گھوڑوں کی طرح ہم کو آپ کی طرف لیجانے میں سمرتھ ہوسکتی ہیں اور تب آتما کا راج شریر پر ہوتا ہے اور تب ہم مستی میں جھومتے ہوئے گا اُٹھتے ہیں کہ ؎

پربھو پیارے سے جس کا سمبندھ ہے۔ اُسے ہردم آنند ہی آنند ہے

سام وید میں پُوروآرچِک ختم شد

640 शरीर पर हमारा राज कब होगा

सर्व द्रष्टा अनन्त गुण सूर्य परमेश्वर जब यह आपकी दी हुई उपरोक्त सातों शक्तियां अपराधों से मुक्त हो जायेंगी तब ही आप आदित्य रूप परमेश्वर की ओर शरीर रथ को ले जाने में समर्थ हो सकेंगी और तब होगा शरीर पर हमारा पूर्ण राज्य । तब हम भाव विभोर होकर गा उठेंगे ।

प्रभु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है ।

इत्ति पंचम खण्ड आरण्य काण्ड

★ साम वेद में पूर्व अर्चिक समाप्त हुआ । ★

مہانامنی آرچک

منتر نمبر ۶۴۱

وید بانی کی شکھشا دیجئے!

अथ महानाम्न्यार्चिकः

*(१) विदा मघवन् विदा
गातुमनुशंसिषो दिशः ।
(२) शिक्षा शचीनां पते
पूर्वीणां पुरूवसो ॥१॥

رُوحانی خزانوں کے مالکِ اعلےٰ پرمیشور! آپ سب کچھ جانتے ہیں، ہمیں سام وید کے گان کا اُپدیش دیجئے، ہماری زندگیاں کس طرف کو چلیں، اس کی راہ بتائیں اور چلائیں۔ بے شمار دولتوں کے دھنی اور ازل سے چلے آرہے وید گیان کے سوامی پرماتما! ہمیں وید بانی کی اصلی شکھشا دیجئے۔

ے رُوحانی دولتوں کے اطراف کے مالک ہو آپ
کون سی راہ پر چلیں، وید کی شکھشا دو آپ

*(१) द्वावुपसर्गौ पादौ ।
(२) त्रयः शाकरा अष्टाक्षराः पादाः ।
(३) द्वावुपसर्गौ पादौ ।
(४) अष्टाक्षरः शाकरः पादः ।
(५) उपसर्गः पादः ।
(६) त्रयः शाकरा अष्टाक्षराः पादाः ।
(७) उपसर्गः पादः ।

महानाम्नीआर्चिक

641 वेद वाणी की शिक्षा दीजिये

अध्यात्म सम्पदा के स्वामी परमेश्वर ! आप सर्वज्ञ है। हमें सामवेद के गान का उपदेश कीजिये। हमारी जीवन धारा किस ओर चले यह दिशा बतायें। आप असीम सम्पदाओं के धनी हैं और अनादि वेद ज्ञान के स्वामी हैं। हमें वेद वाणी की यथार्थ शिक्षा दीजिये।

अध्यात्म सम्पदा और दिशाओं के स्वामी हो आप।
कौन सी राह पर चलें, वेद की शिक्षा दो आप।

منتر نمبر ۶۴۲

اِنسان کی قُدرتی خواہش نجات

आभिष्ट्वमभिष्टिभिः
(३) स्वा३ऽन्नाँशुः।
प्रचेतन प्रचेतये
(४) न्द्रद्युम्नाय न इषे ॥२॥

ہے اندر آپ سُوریہ کرنوں کی طرح گیان کی شعاعوں کو روشن کرنے والے ہیں اُور بے شمار علمیّت کے مخزن، آپ اِس وید گیان کے دان سے جو ہماری قُدرتی خواہش ہے، ہمیں زندگی بخشیں، جس سے ہم فرائض کی تکمیل کو جان کر اپنی منو کامنا مُکتی نجات کے آنند کو حاصل کر پائیں۔

ے

فرض کی تکمیل عدم تکمیل کیسے جانیں ہم
نُور بخشو گیان کا جس سے کہ مُکتی پائیں ہم

642 **मानव की स्वाभाविक इच्छा मोक्ष**

हे इन्द्र ! आप सूर्य किरणों के समान ज्ञान ज्योति को देने वाले हैं। और अनन्त ज्ञान के भण्डार, आप इन वेद मन्त्रों के ज्ञान से हमारी मनोकामना मुक्ति के आनन्द को प्राप्त करायें और हमें ऐसा जीवन दें। जिस से हम कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का जान सकें।

करना क्या न करना, यह कर्त्तव्य कैसे जानें हम।
ज्ञान की ज्योति दो जिस से मुक्ति का धन पायें हम।

منتر نمبر ۶۴۳ **آپ ہمیشہ ہم پر خوش رہیں!**

(५) एवा हि शक्रो
(६) राये वाजाय वज्रिवः।
शविष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे मंहिष्ठ वज्रिन्नृञ्जस
(७) आ याहि पिब मत्स्व ॥३॥

بُرے خیالات پر اپنا قہر برسانے والے بجر دھاری! رُوحانی دولتوں اور طاقتوں کی بخشش کرنے کے لئے آپ مختارِ کُل ہیں۔ گناہوں اور بُرائیوں کا قلع قمع کرنے میں بھی آپ ہتھیار بند ہیں۔ عظیم عظمت والے پرمیشور ہم پر ہمیشہ خوش رہیں۔ آؤ ہمیں اپنا ظہور عطا کرو اور ہماری محبّت، عقیدت اور عبادت کو منظور فرما کر ہمیں خوشیاں بخشو!

اپنی دولت، طاقتوں کی ہم پر بخشش کیجئے
بھگتی رس منظور فرما درس ہم کو دیجئے

643 आप सदा हम पर प्रसन्न रहें

पाप चित वृतियों पर वज्र प्रहार करने वाले इन्द्र ! अध्यात्म सम्पदा और शक्तियो को देने के लिये आप समर्थ हैं । आसुरी वृत्तियों के विनाशक आप वज्र धारी हैं । अपनी अनुग्रह से हमें दर्शन दीजिए और उपासना भक्ति को स्वीकार कर हम पर प्रसन्न हूजिये ।

अपनी सम्पद शक्तियों का दान हम पर कीजिये ।
भक्ति रस स्वीकार कर के दर्श अपना दीजिय ।

منتر نمبر ۶۴۳ رُوحانی دَولتوں کیلئے ہمیں طاقتور کیجئے!

†(१) विदा राये सुवीर्यं भवो
वाजानां पतिर्वशाँ अनु ।
(२) मंहिष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे
यः शविष्ठः शूराणाम् ॥४॥

رُوحانی دھنوں کے حصُول کے لئے ہمیں بل وِیریہ عطا کریں۔ آپ ہی تمام طاقتوں کے منبع ہیں اور ہم آپ کے دیرینہ عبادت گزار ہیں، لہٰذا اپنی نُورانی زیارت فرمائیں۔ بُرائیوں کو خاکستر کرنے والے بجر دھاری ایشور! ہم پر اپنی رحمت برسائیں، کیونکہ آپ ہی تو دُنیا میں واحد عظیم طاقت ہیں!

سرچشمہ طاقتوں کے ہو طاقت وہ دیجئے ہمیں
جس سے کہ آتم بل کو پا درشن تمہارا کر سکیں

644 आध्यात्मिक सम्पदा के लिये हमें शक्ति दें

हे प्रभो आध्यात्मिक सम्पदा के लिये हमें बल वीर्य सर्व उत्तम प्रदान करें । आप ही सभी सम्पदाओं के स्वामी हैं और चिरकाल से चले आ रहे हम आप के उपासक हैं । अतः हमें

† द्वितीयतृचस्य पूर्ववत् ।

अपनी ज्योती के दर्शन करायें। पापों के विनाशक वज्र धारी ईश्वर ! हम पर अपनी आर्शीवाद बरसायें क्योंकि आप ही विश्व में महान्तोमहान शक्ति हैं।

शक्तियों के स्रोत हो शक्ति वह दीजिये हमें।
जिस से आत्म बल को पा दर्शन तुम्हारा कर सकें।

منتر نمبر ۶۴۵ اُس کی پُوجا نِت کِیا کر!

यो मंहिष्ठो मघोनाम्
(३) अंशुर्न शोचिः।
चिकित्वो अभि नो नये
(४) न्द्रो विदे तमु स्तुहि ॥५॥

جو اِندر پرمیشور بے کنار دھنوں کا مالک ہے، سُورج کی طرح دانی ہوکر چاروں طرف چمک رہا ہے۔ اے عابد! تُو اُس مہا دھنی پرمیشور کی پُوجا کیا کر، ہے عالِم کُل ایشور ہمیں اپنی طرف لے چل، جس سے ہم زندگی میں فیض یاب ہوسکیں!

نُور کا دریا بہاتا دان کرتا اِیشور
ہے وہی معبود سب کا اُس کی تو پُوجا کیا کر

645 **उस की पूजा किया कर**

जो इन्द्र परमेश्वर ! सब ऐश्वर्यों का स्वामी है। सूर्य समान दानी हो कर चहूं ओर अपनी ज्योति फैला रहा है। ऐ उपासक तू उस महा धनी की स्तुति उपासना कर। हे सर्वज्ञ परमेश्वर ! हमें अपनी ओर ले चलो, जिस से हमारा मानव जीवन सफल हो।

ज्योति का दरिया बहाता, दान करता ईश वर।
पूज्यनीय है सब का वह जब, उस की तू पूजा किया कर।

منتر نمبر ۶۴۶ سَبْ کا مُحافظ جہاںْ پناہ!

(५) ईशो हि शक्रस्

(६) तमूतये हवामहे जेतारमपराजितम् ।

स नः स्वर्षदति द्विषः

(७) क्रतुश्छन्द ऋतं बृहत् ॥६॥

کیونکہ وہ پرماتما سب کا راجہ ہے اور تمام طاقتوں کا مالک ہے، اس لئے ہم اُسے اپنی حفاظت کے لئے بُلاتے ہیں، فریاد کرتے ہیں، اور وہ ایسا فاتح ہے کہ جس کو کوئی مغلوب نہیں کرسکتا، وہ ہی ہمارے اندر رہتا ہوا اپنی پاک ترغیب سے کام کرودھ وغیرہ سے چھڑا کر شانتی دیتا ہے اور اپنی عظیم عقلِ سلیم اور عظیم کاموں سے ہی مہان، سچائی مجسّم اور فطرتاً آزاد ہے!

ھ جو سب کا فاتح شہنشاہ جس کو نہ کوئی ہرا سکا
فریاد اُس سے رکھشا کی کرتے ہیں جو ہے جہاں پناہ

646 **सब का रक्षक सर्वाधीश**

सर्वशक्तिमान परमेश्वर सब का राजा सर्वाधीश है इस लिये हम उसे अपनी रक्षा के लिये बुलाते हैं जो ऐसा विश्व विजयी है कि जिसे कोई पराजित नहीं कर सकता। वह ही हमें राग द्वेश से छुड़ा कर शान्ति प्रदान करता है और स्वाभाविक ही कर्मशील सत्य स्वरूप, स्वछन्द और सब से महान है।

सब पर विजयी, शाहों का शाह जिसको न कोई हरा सका।
फर्याद उस से रक्षा की करते हैं, हर दम बरमला।

منتر نمبر ۶۴۷ راگْ دْویشْ سے بچانے کی نوازِشْ بنی رہے!

منتر نمبر ۶۴۷ راگ دویش وغیرہ دشمنوں سے بچائیں

‡(१) इन्द्रं धनस्य सातये

हवामहे जेतारमपराजितम् ।

(२) स नः स्वर्षदति द्विषः

स नः स्वर्षदति द्विषः ॥७॥

دُنیوی اَور عقبٰے دَولتوں کے حصُول کے لئے ہم اندر پرمیشور کی پُکار کرتے ہیں، جو اندر ہمیشہ ہمیں فتح دلاتا ہے کبھی ہرانا نہیں اَور راگ دویش وغیرہ اندرونی دُشمنوں سے بھی چھُڑا کر خوشیوں کو دیتا ہے۔

ے زر و مال کے لئے اُس کو پُکارتے ہیں ہم
راگ دویش چھُوٹ جائیں اِسلئے بُلاتے ہم

647 राग द्वेश से मुक्त कीजिये

लौकिक और पारलौकिक सम्पदा की प्राप्ति के लिये हम इन्द्र का आह्वान करते हैं जो सदा ही विजय करता रहता है कभी हारता नहीं और राग द्वेश आदि आत्मिक शत्रुओं से भी छुड़ा कर सुख प्रदान करता है।

सम्पदाओं के लिये उसको पुकारते हैं हम।
राग द्वेश छूट जाये इसलिये बुलाते हम।

منتر نمبر ۶۴۸ اپنے مبارک وصل کو بخشئے

पूर्वस्य यत्ते अद्रिवो

(३) ऽशुर्मदाय ।

सुम्न आ धेहि नो वसो

(४) पूर्तिः शविष्ठ शस्यते ।

‡ तृतीयतृचे ७ उपसर्गौ द्वौ पादौ, शिष्टं पूर्ववत् ।

(५) वशी हि शक्रो
(६) नूनं तन्नव्यं संन्यसे ॥८॥

دھرم کرم کی بارش برسا کر راحت دینے والے کریم! آپ کی توحید سے جو آنند ملتا ہے، وہ سرور پاکیزگی سدا بنا رہے۔ دُنیا کی سبھی طاقتوں کے سرچشمہ پرمیشور! ہمیں یوگ (اپنے وصل) کے دھن سے مالامال کیجئے، لہٰذا آپ کے نغمہ توحید کو گاتا ہوا اپنے کو آپ کے حوالے کرتا ہوں۔

اے وسُو! سُکھ دو ہمیں جیوتی کی تیری چاہ ہے
یوگ کا دھن تجھ سے پائیں جو ہماری راہ ہے

648 **योग सम्पदा पूर्ण हो**

धर्म मेघ बरसा कर शान्ति देने वाले भगवान ! आप की स्तुति से जो आनन्दित करने वाली ज्योति मिलती है वह पवित्र मद सदा बना रहे,सर्वतो बलवान परमेश्वर हमें योग सम्पदा से पूर्ण कीजिये । आपके स्तोत्र गाता हुआ मैं अपने आप को समर्पित करता हूं ।

हे वसो सुख दो हमें ज्योति की तेरा चाह है ।
योग सम्पद तुझ से पायें जो हमारी राह है ।

منتر نمبر ۶۴۹ **مخلوقات کا پیارا محبوب سُکھ داتا!**

प्रभो जनस्य वृत्रहन्त्समर्येषु ब्रवावहै ।
(७) शूरो यो गोषु गच्छति
सखा सुशेवो अद्वयुः ॥९॥

سب کے پیارے سکھا سوامی بُرائیوں پر قہر برسانے والے ایشور! ہم تیرے رُوحانی پیغاموں کو پھیلاتے رہتے ہیں۔ آپ ارض وسما، گئوؤں، وید بانی اور سارے جہاں میں رم رہے

ہو، اور سب کے پیارے دوست ہو کر سب کو سُکھ دیتے ہو۔ ایسے لاثانی ہو کہ جس کا کوئی ثانی نہیں ہے۔

ے پاپ ناشک سب کے مالک دوست سچّے سب کے ہو
گئوؤں میں ارض وسما میں رم رہے سُکھ دیتے ہو

649 **सब के सखा सुखदाता**

सब जनों के स्वामी पाप हनता परमेश्वर हम सब जने तेरी ही आध्यात्मिक शिक्षा का उपदेश करते है जो आप गौवों, भूमि वेद वाणी, और लोक लोकान्तरों में रम रहे सब के सच्चे मित्र सखा हो कर सब को उत्तम सुख देते हो। और एक ही अद्वितिय हो जिस के समान और कोई नहीं है।

पाप नाशक सब के मालिक दोस्त सचे सब के हो।
गौवों में, द्यौ पृथिवी में हो रम रहे सुख देते हो।

منتر نمبر ۶۵۰ **آپ ہی خالق و مالک اور سب کچھ ہیں!**

+एवाह्येऽ३ऽ३ऽ३वं।

एवा ह्यग्ने।

एवाहीन्द्र।

एवा हि पूषन्।

एवा हि देवाः

ہے روشن بالذات یقیناً آپ ایک روشنی ہیں (۲) آپ اندر یعنی تمام زر و مال کے مالک کُل ہیں، (۳) سب کے خالق اور پالک ہیں، (۴) آپ ہی سب دیوی دیوتاؤں کے نام دلانے ہو، اور (۵) لاثانی سب کو اُتم راحتوں کے دینے والے ہو!

یہ منتر پانچ فقروں والا "پُرِیش" کہلاتا ہے۔

+ पञ्च पुरीषपदानि।

جو کچھ کہا ہے منتر میں درحقیقت سچ ہے
خدا ہی سچ سچ ہے اوم نام سچ ہے
پڑھ کے سُن کے ہم سبھی زندگی سنوار لیں
وید کی بانی سے اپنے آپ کو سُدھار لیں

مہانامنی آرچک ختم شُد

650 **त्वमेव सर्वं मम् देव देव**

हे अग्ने निश्चय ही आप ज्योतिर्मान हो (2) हे इन्द्र निश्चय ही आप सब ऐश्वर्यों के स्वामी हो। (3) हे पूषण ! आप ही सब के पालक हो (4) आप ही सब देवों के नाम वाले हो और (5) हे अद्वितीय परमेश्वर ! आप ही सब के सखा और उत्तम सुख देने वाले हो ।

(यह मंत्र पांच पदों वाला "पुरपि" कहलाता है)
जो कुछ कहा है मंत्र में वस्तुत: वह सत्य है ।
प्रभु ही सत्य-सत्य है ओम नाम सत्य है ।
पढ़ के सुन के हम सभी ज़िदगी संवार लें ।
वेद की वाणी से अपने आप को सुधार लें ।

महानाम्नीआर्चिक समाप्त

आदरणीय दानी महानुभावों की सात्विक भेंट

2500 सर्व श्री धर्म वीर जी कपूर तथा भ्राता गण चण्डीगढ़ ।

1100 सर्व श्री नारायण दास जी ऐंड सन्ज़ नारायण मिल्ज़ राम दरबार चंडीगढ़ ।

501 सर्व श्री अमर नाथ बलदेव राज सेठी पूज्य मंगल दास जी की पुण्य स्मति में टिम्बर मारकिट चंडीगढ़ ।

501 चौ० रूप चंद जी ऐडवोकेट सुपुत्र दिनेश वाणी के शुभ विवाह पर चंडीगढ़ ।

501 श्री हंस महता जी संस्थापक महा गायत्री प्रचार समिति चंडीगढ़ ।

501 श्री 108 बावा मोहन देव जी रघुनाथ मंदिर जालंधर

501 श्री दर्शन कुमार जी कोछड़ जालंधर नगर ।

501 श्री राम गोपाल खोसला की पुण्य स्मृति में पुत्र श्री तेज बहादुर ने दिये चंडीगढ़ ।

500 श्रीमति आशा, सुशमा जी 170/11-ए चंडीगढ़, अपने पूज्य पिता श्री चेतना नंद जी की पुण्य स्मृति में ।

501 अमेरिका से मान्य श्री गनपत राय महाजन जी तथा प्रेम कुमार चड्डा जी ।

250 श्रीमती प्रथमा देवी जी की पुण्य स्मृति में सुपुत्र विनोद कुमार जी कौशल पटियाला ने ।

250 श्री देश राज जी तनेजा 1521/34-डी चंडीगढ़, पुत्री मधु (अमरीश भाटिया) की पुण्य स्मृति में ।

201 श्री के. एल. पोसवाल जी भूत पूर्व मंत्री हरियाणा ।

101 पं. राजगुरू जी उ. प्र. सविदेशिक सभा दिल्ली ।

550 श्री रविन्द्र जी विन्दलेश एडवोकेट चण्डीगढ़ ।

501 सर्वश्री ज्ञानचंद अशोककुमार जी चण्डीगढ़ ।

500 मातृ मंदिर कन्या गुरुकुल वाराणसी थैली भेंट डा० पुष्पवती जी आचार्य द्वारा ।

101 श्री गिरधारीलाल जी तनेजा रुड़की ।

1100 स्व० कशमीरी लाल वर्मा चंडीगढ़ की पुण्य स्मृति में परिवार की ओर से ।

402 मिलाप परिवार दिल्ली की ओर से श्री नवीन जी द्वारा ।